

भारतीय नवदम्पति के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर समाधान



महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
की विद्यारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

दिसम्बर - २००६



अनुसंधात्री

रश्मि गुप्ता

परिसर जबलपुर

निर्देशक

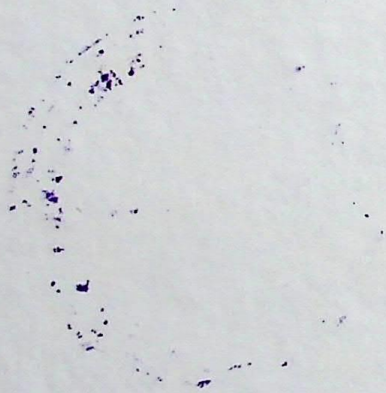
डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव

एम. ए. (मनोविज्ञान), एम. एड.
पी-एच. डी. भेषाविज्ञान प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं अद्वैत महाविद्यालय,
जबलपुर (म. प्र.)
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता -
शिक्षा अंकुर विनोद गोमोहन विश्वविद्यालय,
विनोद (अनन्त)
निदेशक -
प्रमोद शर्मा अद्वैत, डॉ. डी. ठाकुर,
जबलपुर (म. प्र.)

निर्देशक

डॉ. बालगोविंद तिवारी

व्याकरणार्थ, ज्योतिषाचार्य
एम. ए., पी-एच. डी.
प्राम्थाधाम, पोलीगाथव,
गवादीघाट बोंड, जबलपुर



भूतयाज्ञान हेतु अग्रणीत

(Charved.)
२५.१२.०२

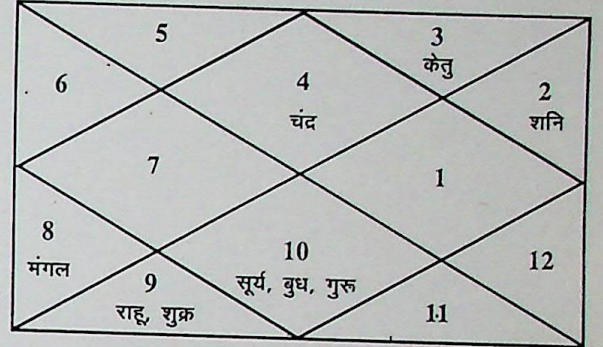
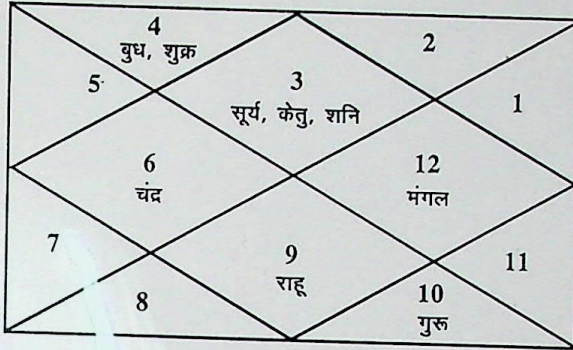
जी. वि. भा. Asst. Director
Research Dept
Maharshi Mahesh Yogi Vaidic Vishavidyalaya
JABALPUR (M.P.)

यह पुस्तक देय नहीं है।



सन्दर्भ पुस्तक

भारतीय नवदम्पति के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर समाधान



महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

दिसम्बर - २००२



अनुसंधात्री

रश्मि गुप्ता

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव

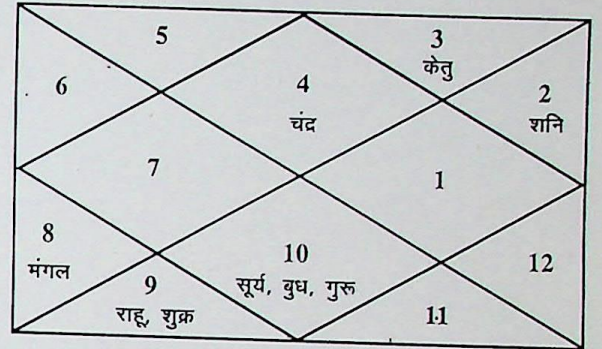
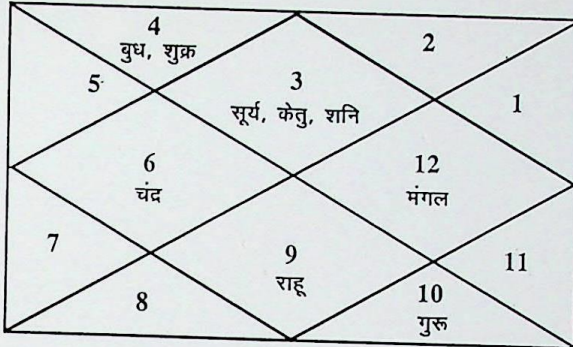
एम.ए. (मनो वैज्ञान), एम.एड.,
पी-एच.डी. सेवा निवृत्त प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा व मनोवैज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-
शिक्षा संकाय, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (म.प्र.)
निदेशक -
प्रणयानंद संस्थान, वाइट टाउन,
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. बालगोविंद तिवारी

व्याख्याकार्य, ज्योतिषाचार्य
एम. ए., पी-एच. डी.
पराम्थाधाम, पोलीपाथर,
गवादीघाट रोड, जबलपुर

भारतीय नवदम्पति के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर समाधान



महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
की विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

दिसम्बर - २००२



अनुसंधात्री

रश्मि गुप्ता

परिसर जबलपुर

निर्देशक

डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव

एम.ए. (मनोविज्ञान), एम.एड.,
पी-एच.डी., सेवा निवृत्त प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-
शिक्षा संकाय, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (सतना)
निदेशक -
प्रणयानंद शोध संस्थान, वाइट टाउन,
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

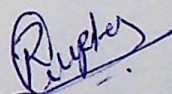
डॉ. बालगोविंद तिवारी

व्याकरणार्थ, ज्योतिषाचार्य
एम. ए., पी-एच. डी.
पराम्थाधाम, पोलीपाथर,
गवादीघाट रोड, जबलपुर

घोषणा पत्र

मैं **रश्मि गुप्ता** घोषणा करती हूँ कि “भारतीय नवदम्पति के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर समाधान” शीर्षक पर मनोवैज्ञानिक एवं ज्योतिष के अंतर्गत किया गया शोध कार्य डॉ. श्री आर. पी. श्रीवास्तव एवं डॉ. श्री बालगोविंद तिवारी के निरीक्षण व मार्गदर्शन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, शोध केन्द्र से किया गया व शोध उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है।

मैं यह घोषणा करती हूँ कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार पी-एच. डी. शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध के कार्य में कोई भाग ऐसा नहीं है जो बिना उचित दृष्टांत के प्रस्तुत किया गया है।


(**रश्मि गुप्ता**)
शोधच्छात्रा

निर्देशक

डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव
एम.ए. (मनोविज्ञान), एम.एड.,
पी-एच.डी., सेवा निवृत्त प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन
महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-
शिक्षा संकाय, चित्रकूट ग्रामोदय
विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (सतना)
निर्देशक -
प्रणवानंद शोध संस्थान, वाइट टाउन,
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

डॉ. बालगोविंद तिवारी
व्याख्याणाचार्य, ज्योतिषाचार्य
एम. ए., पी-एच. डी.
पराम्बाधाम, पोलीपाथर,
गवादीघाट रोड, जबलपुर

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **रश्मि गुप्ता** (शोधच्छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर जबलपुर) ने शोध-प्रबंध में निदेशन में लिखा है। इस शोध-प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धांतों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय की न्यूनतम अवधि एवं उपस्थिति को पूर्ण किया है।

अतः शोध-प्रबंध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

निदेशक

डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव 22/12/2002

एम.ए. (मनोविज्ञान), एम.एड.,
पी-एच.डी., सेवा निवृत्त प्राचार्य एवं आचार्य
शा. शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन
महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-
शिक्षा अंकाय, चित्रकूट ग्रामोदय
विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (अतना)
निदेशक -
प्रणवानंद शोध संस्थान, वाइट टाउन,
जबलपुर (म.प्र.)

निदेशक

डॉ. बालगोविंद तिवारी
व्याख्याणाचार्य, ज्योतिषाचार्य
एम. ए., पी-एच. डी.
पराम्बाधाम, पोलीपाथर,
गवादीघाट रोड, जबलपुर

आभार

वरतुतः कोई भी चयनित कार्य बिना आत्मविश्वास ईश्वर की कृपा व गुरु के आशीर्वाद के पूर्ण नहीं हो सकता । अतः सर्वे प्रथम मेरा कोटि-कोटि प्रणाम परम ब्रम्ह परमेश्वर श्री गुप्तेश्वर भगवान व मां आदि शक्ति के चरणों में समर्पित है, जिनकी अनन्य कृपा व अनंत आशीर्वाद से मैं इस दुरूह कार्य को करने में सक्षम हो पाई । प्रस्तुत शोध "भारतीय नवदम्पति के वैवाहिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर समाधान" को यथा संभव वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया है । मुझे विश्वास है कि निश्चित रूप से यह शोध कार्य समाज एवं राष्ट्रोन्नय में उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगा ।

परम पूज्य गुरुदेव महर्षि महेश योगी जी के चरण कमलों में मेरी पुष्पांजलि समर्पित है, जिनकी शिक्षा संबंधी प्रेरणा से मैं हमेशा अभिभूत रहूंगी । तत्पश्चात् प्रातः स्मरणीय परम पूज्य मेरे गुरुदेव स्वामी मुकुन्ददास जी महाराज के चरण कमलों में मेरा शत कोटि नमन जिन्होंने मेरे जीवन में व्याप्त तिमिर को तिरोहित कर हर पग में मेरे प्रेरणा स्रोत बन कर मुझे सफलता के द्वार तक पहुंचाने में अमूल्य सहयोग प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया । मैं सदैव उनके वरहस्त व आशीषानुकम्पा के लिये चिरऋणी रहूंगी ।

यथा सूर्य की अनंत कोटि रश्मियां राजी के तमस को दूरकर उज्ज्वल भोर प्रदान करती हैं, वैसे ही सुयोग्य विवेकशील एवं विनम्र मेरे श्रद्धेय गुरुजन डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव एवं डॉ. बालगोविन्द तिवारी जी को हृदय से मेरा नमन है कि जिन्होंने मुझे अपने मार्ग दर्शन में शोध कार्य करने की स्वीकृति प्रदान की। इस शोध में उनके अमूल्य योगदान के अभाव में यह कार्य संभव ही नहीं था उनके इस अमूल्य योगदान के लिये मैं चिरंतन काल तक उनके इस त्रेण से उत्तरेण नहीं हो पाऊंगी।

मेरी परम आदणीया माता श्रीमति राधा गुप्ता को मैं शत-शत नमन करती हूं जो मुझे हमेशा धैर्य प्रदान कर मेरा मनोबल बढ़ाती रही। चिरस्थिति रहूंगी जिनकी प्रेरणा और उन्हीं से आहूत पोषित धैर्य का परिपक्व परिणाम यह शोध प्रबन्ध है, वे मेरे पूज्य पिताजी श्री जी. एल. गुप्ता जिनकी प्रेरणा मेरी सफलता का प्रमाण है। मेरे पूज्य दादा जी श्री एन. पी. गुप्ता का आशीर्वाद भी मेरे लिये अत्यंत सहयोगी रहा।

मैं हृदय से आभारी हूं डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (आगरा) के श्री चन्द्रवीर सिंह जी की जिनके प्रेरणास्पद व उत्प्रेरक ज्ञानवर्धक वचनों ने शोध कार्य में प्रेरक का कार्य किया।

मैं आभारी हूँ महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय के निवर्तमान कुल पति प्रो. श्री आदया प्रसाद मिश्र जी की जिनके सदैव विनम्र सहयोग ने शोध कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

वर्तमान कुलपति श्री भुवनेश शर्मा जी एवं कुलसचिव श्री ताराचंद पाठक का प्रेरक सहयोग भी शोध कार्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, मैं इनकी हृदय से आभारी रहूंगी ।

मेरी प्रेरणा के स्थायी उत्स मेरे जीवन साथी श्री प्रीतेश सिंह जिनका इस शोध प्रबंध के पूर्ण करने में बीज रूप से लेकर वृक्ष तथा फल तक साथ रहा, उनकी प्रेरणा व अमूल्य सहयोग के लिये मैं चिरन्तरकाल तक इस ऋण से उन्मूलन नहीं हो पाऊंगी । आभारी हूँ मैं मणिकांति की जिनका वात्सल्य मेरे शोध में अत्यंत सहयोगी रहा । आभारी हूँ संस्वा स्वरूप भगिनी रेखा व अनुज चन्द्र प्रकाश व रनेहिल मनोज व दीपा की जिनके रनेहायुक्त सहयोग ने मेरे शोध कार्य में प्रेरक का कार्य किया ।

वेद विज्ञान संकायाध्यक्ष डॉ. श्रीमति चन्द्रा चतुर्वेदी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ जिनका उत्साह वर्धक एवं रनेहिल वात्सल्य मुझे बल प्रदान करता रहा ।

मेरा नमन है पूज्य स्वामी श्यामदास जी महाराज, स्वामी मृत्युंजयदास जी महाराज एवं प्रह्लाद दास जी महाराज के चरण कमलों में जिनके प्रेरक संदेश मेरे शोध में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।

डॉ. एस. के उपाध्याय, श्री दत्ता सर, डॉ. यशवीर सिंह, (विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग सेन्ट जॉन्स कॉलेज आगरा एवं डॉ. अमित अब्राहम, डॉ. पूनम दास (सेन्ट जॉन्स कॉलेज आगरा) डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी, डॉ. राजेन्द्र चन्द्र सूठा, श्रीमति क्षमा माण्डवीकर, डॉ. सीमा श्रीवास्तव, डॉ. श्री सुदर्शन जी, श्री हेमंत मंशासमनी, श्री बी. के. शुक्ला जी हृदय से कृतज्ञ हूँ जिनकी सहयोग सदैव शोध में सहायनीय रहा ।

श्रद्धांजली समर्पित है मेरी स्व. रमाशंकर झा (पुस्तकाध्यक्ष) जिनके अमूल्य सहयोग को मैं कभी नहीं भुला पाऊंगी । पुस्तकालय के प्रवीण भारद्वाज, रीता मैडम, मनोज तिवारी का भी आभार ज्ञापन मेरा दायित्व है जिनका सहयोग भी शोध में अपना एक स्थान रखता है ।

मैं उन दम्पतियों की भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने आंकड़ों के एकत्रीकरण करने हेतु संबंधित परीक्षण में व्यक्तिगत जानकारीयों प्रदान कर शोध में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो कि शोध का आधार है ।

...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...

इस शोध कार्य को सफल रखने एवं उच्च कोटि का बनाने हेतु अनेक संस्थाओं एवं पुरस्कारों से सहायता ली जिनमें क्रमशः महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, शिक्षा मनोविज्ञान व संदर्शन महाविद्यालय जबलपुर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, गांधी भवन पुरस्कारालय, केन्द्रीय ग्रंथालय जबलपुर, प्रणवानंद शोध संस्थान, राइट टाउन जबलपुर, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा, सेन्ट जॉन्स कॉलेज आगरा आदि सभी के समस्त अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ ।

मुझे शोध काल में मेरे आग्रणि मित्रों, तृप्ति, संध्या, आरती, अनिता, ऋतु, रश्मि, प्रियंका, रूपांजलि, प्रीति, महेश, संदीप आशीष, राजेश आदि का भी भावनात्मक सहयोग मिलता रहा जो कि मेरा प्रेरक बना । साथ ही ज्ञात-अज्ञात, सहयोगी-विरोधी सभी परिस्थितियों की भी मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनके अथोचित सहयोग से मैं अपना शोध पूर्ण करने में सफल हो सकी ।

मैं आभारी हूँ श्री जयंत रंगारी के सांख्यिकी सहयोग के लिये व अशोक परमार के कम्प्यूटर सहयोग के लिये जिन्होंने मेरे शोध को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने में मेरा सहयोग किया ।

जबलपुर

रश्मि गुप्ता

दिनांक

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
अध्याय - 1	सम्प्रत्यात्मक रूपरेखा	1-62
	1.1 भूमिका	1-26
	1.2 समस्या की व्याख्या आवश्यकता एवं महत्व	26-29
	1.3 चर या परिवर्त्य	29-34
	1.3.1 वैवाहिक समायोजन	34-36
	1.3.2 वैवाहिक समायोजन का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन	37-38
	1.3.3 वैवाहिक समायोजन का ज्योतिषीय मूल्यांकन	39-44
	1.4 उद्देश्य	44
	1.5 पूर्व संबंधित अनुसंधानात्मक साहित्य	45-62
अध्याय - 2	विधि-विज्ञान	63-85
	2.1 परिकल्पना	63-72
	2.2 न्यादर्श	72-81
	2.3 उपकरण	81-82
	2.3.1 मनोवैज्ञानिक उपकरण (वैवाहिक समायोजन परीक्षण)	82-84
	2.3.2 ज्योतिषीय उपकरण (विभिन्न जन्म पत्रिकाएं)	84-85
अध्याय - 3	प्रदत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या	86-136
	3.1 सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	86-90
	3.1.1 सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	91-92
	3.1.2 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	93-95
	3.1.3 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	96-97
	3.1.4 पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	98-100
	3.1.5 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	101-102
	3.2 सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	103-106



अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
3.2.1	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	107-108
3.2.2	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	109-111
3.2.3	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	112-113
3.2.4	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	114-116
3.2.5	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	117-118
3.3	विभिन्न चरों के मध्य सह संबंधात्मक विवरण	119
3.3.1	नव दम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षा प्राप्तांकों के मध्य सह-संबंध	119
3.3.2	पति-पत्नि के ज्योतिषीय प्राप्तांकों के मध्य सह-संबंध	120
3.3.3	पति-पत्नि के मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों के मध्य सह-संबंध	121
3.3.4	हिन्दू पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	122
3.3.5	हिन्दू पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	123
3.3.6	मुस्लिम पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	124
3.3.7	मुस्लिम पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	125
3.3.8	सिक्ख पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	126
3.3.9	सिक्ख पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	127



अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
	3.3.10 ईसाई पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	128
	3.3.11 ईसाई पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	129
	3.3.12 जैन पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	130
	3.3.13 जैन पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों संबंधी सह-संबंधात्मक परिणाम	131
	3.4 परिकल्पनाओं का सत्यापन	132-138
अध्याय - 4	नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या (ज्योतिष एवं मनोविज्ञान के आधार पर)	139-172
	4.1 हिन्दू नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या	141-146
	4.2 मुस्लिम नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या	147-152
	4.3 सिक्ख नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या	153-158
	4.4 ईसाई नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या	159-164
	4.5 जैन नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या	165-170
अध्याय - 5	निष्कर्ष एवं सुझाव	173-179
	5.1 निष्कर्ष	173-179
	5.2 सुझाव	176
	(I) मार्गदर्शन हेतु	176-178
	5.2.1 पति के लिये	
	5.2.2 पत्नि के लिये	
	5.2.3 नव दम्पतियों के लिये	
	5.2.4 अभिभावकों के लिये	
	5.2.5 समाज शास्त्रियों के लिये	
	5.2.6 मनोवैज्ञानिकों के लिये	
	5.2.7 ज्योतिष अध्येताओं के लिये	
	5.2.8 समाज सेवी संस्थाओं व कानून के लिये	
	(II) अनुसंधान हेतु	179
	5.2.9 न्यादर्श के आकार में वृद्धि कर	
	5.2.10 अन्य प्रकार के चरों का समावेश कर	
	5.2.11 अन्य क्षेत्रों का न्यादर्श के लिये चयन कर	
	संदर्भ ग्रंथ सूची	180-188
	परिशिष्ट	189-200
	प्राप्तांकों का विवरण	189-196
	उपकरण	197-200



[Faint, illegible text, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

तालिका सूची

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	3.01	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	88
2.	3.02	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	91
3.	3.03	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	93
4.	3.04	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	96
5.	3.05	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	98
6.	3.06	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	101
7.	3.07	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	103
8.	3.08	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	107
9.	3.09	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	109
10.	3.10	पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	112
11.	3.11	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण	114
12.	3.12	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता	117
13.	3.13	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के मध्य सह संबंधात्मक विवरण	119
14.	3.14	पति-पत्नि के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों के मध्य सह संबंध परिणाम	120

क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
15.	3.15	पति-पत्नि के वैवाहिक समायोजन के संबंध में मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के मध्य सह संबंध परिणाम	121
16.	3.16	हिन्दू पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	122
17.	3.17	हिन्दू पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	123
18.	3.18	मुस्लिम पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	124
19.	3.19	मुस्लिम पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	125
20.	3.20	सिक्ख पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	126
21.	3.21	सिक्ख पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	127
22.	3.22	ईसाई पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	128
23.	3.23	ईसाई पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	129
24.	3.24	जैन पति-पत्नि के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	130
25.	3.25	जैन पति-पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम	131



क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	प्र.सं.
१	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१	१
२	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	२	२
३	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	३	३
४	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	४	४
५	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	५	५
६	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	६	६
७	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	७	७
८	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	८	८
९	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	९	९
१०	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१०	१०
११	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	११	११
१२	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१२	१२
१३	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१३	१३
१४	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१४	१४
१५	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१५	१५
१६	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१६	१६
१७	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१७	१७
१८	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१८	१८
१९	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	१९	१९
२०	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	२०	२०

आरेख सूची

आरेख क्रमांक	तालिका क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	3.01	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	89
2.	3.01	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	90
3.	3.03	पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	94
4.	3.03	पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	95
5.	3.05	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	99
6.	3.05	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	100
7.	3.07	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	105
8.	3.07	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	106
9.	3.09	पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	110
10.	3.09	पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	111
11.	3.11	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख	115
12.	3.11	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख	116
13.	3.02	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	92
14.	3.04	पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	97
15.	3.06	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	102
16.	3.08	सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	108
17.	3.10	पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	113
18.	3.12	पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख	118

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

क्र.सं.	संज्ञा	पृ.सं.	अ.सं.
१	अक्षरं	१०८	१
२	अक्षरं	१०८	२
३	अक्षरं	१०८	३
४	अक्षरं	१०८	४
५	अक्षरं	१०८	५
६	अक्षरं	१०८	६
७	अक्षरं	१०८	७
८	अक्षरं	१०८	८
९	अक्षरं	१०८	९
१०	अक्षरं	१०८	१०
११	अक्षरं	१०८	११
१२	अक्षरं	१०८	१२
१३	अक्षरं	१०८	१३
१४	अक्षरं	१०८	१४
१५	अक्षरं	१०८	१५
१६	अक्षरं	१०८	१६
१७	अक्षरं	१०८	१७
१८	अक्षरं	१०८	१८
१९	अक्षरं	१०८	१९
२०	अक्षरं	१०८	२०
२१	अक्षरं	१०८	२१
२२	अक्षरं	१०८	२२
२३	अक्षरं	१०८	२३
२४	अक्षरं	१०८	२४
२५	अक्षरं	१०८	२५
२६	अक्षरं	१०८	२६
२७	अक्षरं	१०८	२७
२८	अक्षरं	१०८	२८
२९	अक्षरं	१०८	२९
३०	अक्षरं	१०८	३०

अध्याय - 1

सम्प्रत्यात्मक रूप रेखा

1.1 भूमिका

1.2 समस्या की व्याख्या, आवश्यकता एवं महत्व

1.3 चर

1.3.1 वैवाहिक समायोजन

1.3.2 वैवाहिक समायोजन का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन

1.3.3 वैवाहिक समायोजन का ज्योतिषीय मूल्यांकन

1.4 उद्देश्य

1.5 पूर्व संबंधित अनुसंधानात्मक साहित्य



1 - 10000
10000 10000 10000 10000

10000 1.1

10000 10000 10000 10000 1.1

10000 1.1

10000 1.1

10000 10000 10000 10000 1.1

10000 10000 10000 10000 1.1

10000 1.1

10000 10000 10000 10000 1.1

सम्प्रत्यात्मक रूपरेखा

1.1 भूमिका

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय समाज और उसके चिंतन में कुछ तीव्र परिवर्तन दिखाई देते हैं । व्यक्ति अधिक से अधिकतम आत्मकेन्द्रित होता चला जा रहा है, और भविष्य के प्रति उसकी चिन्ता और समायोजन और भी कठिन होता चला जा रहा है । किन्तु इस दौर में एक अच्छी बात यह है कि आज से कुछ वर्षों तक जिन संबंधों में व्यक्ति निराशा और कुंठा से ग्रस्त होकर भी केवल कुछ धर्मिक और सामाजिक मान्यताओं को निभाने के लिये बाध्य था अब उन्हें वह केवल निभाता नहीं है, अपितु या तो उन्हें सहज बनाने का प्रयास करता है, या फिर उसे त्याग देता है ।

वैवाहिक संबंधों के बारे में यही बात लागू होती है । वर्तमान में युवा वर्ग विवाह को मात्र एक धार्मिक संस्कार, सामाजिक संविदा अथवा मात्र आवश्यकता की पूर्ति मानने को तैयार नहीं है । अनिश्चितताओं के दौर में भावनात्मक सहयोग एवं संवेदनायुक्त साहचर्य विवाह के आवश्यक तत्व बनते जा रहे हैं । इन परिस्थितियों में वैवाहिक समायोजन और इसका अध्ययन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है । वैवाहिक संबंध सदैव ही मनोविज्ञान के अध्येताओं के लिये जिज्ञासा का विषय रहे हैं, एवं इन पर विभिन्न शोध कार्य किये जाते हैं । तथापि या तो इन शोध कार्यों का क्षेत्र अभिजात्य वर्ग तक सीमित रहा है। अथवा इनका इतना अधिक सामान्यीकरण कर दिया गया है कि इनके निष्कर्ष वस्तुस्थिति की व्याख्या कर पाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं । पुनश्च ज्योतिष विषय के लिये वैवाहिक संबंध एवं इनका अध्ययन एक आवश्यक तथा अपरिहार्य भाग रहा है । किन्तु यह अध्ययन कतिपय सिद्धांतों पर आधारित विवाह पूर्व कुंडली मिलान में ही स्वयं को संतुष्टि करता रहा है ।

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

संज्ञा-संग्रहः १.१

संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१

संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१
संज्ञा-संग्रहः १.१

वर्तमान परिदृश्य में ज्योतिष विद्वानों के बीच थोड़ी सी जिज्ञासा और बहुत से विवादों का कारण बनता जा रहा है । तथापि तत्संबंध में आवश्यक शोध परक अध्ययन के स्थान पर पूर्वाग्रह युक्त व्याख्याएँ ही अधिक दिखाई देती हैं । मनोविज्ञान जहाँ एक ओर व्यक्ति के क्रिया कलाप और व्यवहार के आधार पर उसके व्यक्तित्व की व्यक्तिगत एवं सामाजिक उपयोगिता निर्धारित करता है वहीं ज्योतिष ब्रम्हाण्डीय पिण्डों की स्थितियों एवं गतियों के आधार पर उसके जीवन में आने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान करता है । दोनों ही विषय समेकित रूप में मानव मात्र के उपयोगिता आधारित रूप एवं महत्व के अध्ययन में पूर्णतः सहायक हो सकते हैं । यह शोध कार्य एक ऐसा ही अध्ययन है जिसमें दोनों ही विषयों की मान्यताओं, सिद्धान्तों एवं विधियों के आधार पर नवीन पद्धति को स्थापित करने का प्रयास है ।

विज्ञान के अपने तकाजे हैं और मनोविज्ञान की अपनी सीमाएँ हैं किन्तु फलित ज्योतिष का अध्ययन व्यक्ति को भविष्य दृष्टा बना सकता है, किन्तु वास्तव में भविष्य दृष्टा बन सकने की क्षमता कुछ एक लोगों में ही आ पाती है । वस्तुतः फलित के सूत्रों का सम्यक अध्ययन और व्यवहार व्यक्ति को निश्चित अवधारणा बनाने की क्षमता तो देता ही है ।

आज का विज्ञान अपनी पद्धति और परिकल्पना के अनुसार काम कर रहा है, और वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषण किये जाने वाले विषय नित नूतन सिद्धान्त भी प्रतिपादित कर रहे हैं । मानव मनोविज्ञान एवं व्यवहार मनोविज्ञान भी एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित विषय है जो अवलोकन — प्रेक्षणों एवं विभिन्न प्रेक्षणों के सहसंबंध और स्वतंत्र अस्तित्व के आधार पर मानव, बुद्धि, मन और क्रिया कलाप की समय एवं परिस्थिति के आधार पर विवेचना करते हैं । ये दोनों तर्क आधारित विषय यदि ज्योतिष के सूत्रों को अपने परीक्षणों का विषय बना सकें और पूर्वाग्रह मुक्त होकर समर्पित भाव से प्रयोग करें तो सिद्धान्तों में संभवतः मानव जीवन और जीवन मूल्यों के संबंध में और अधिक जानकारी प्राप्त करना आसान होगा ।

विवाह एक पवित्र बन्धन माना गया है जो दो प्राणियों को अनंत व अटूट रिश्ते में बांधता है और यही कारण है कि वैवाहिक परिस्थितियों व परम्पराओं को बिना किसी शिकायत व शर्त के स्वीकारा गया इसीलिए विवाहित जीवन में सामंजस्य की समस्या कभी सामने नहीं आई क्योंकि पति पत्नी अपने पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर व अपनी निजी अपेक्षाओं व आकांक्षाओं को कम महत्व देते हैं व संम्बन्ध विच्छेद की अपेक्षा पारस्परिक समझौते करते हुए दूसरे की रुचियों व रुझान में तालमेल बिठाने का प्रयास करते थे । पति और पत्नी के पारस्परिक व्यवहार के बारे में मनुस्मृति में निर्धारित निर्देश देते हुए प्रभु (1958) लिखते हैं "मनु ने आगे लिखा है एक बार पाणिग्रहण संस्कार संपन्न हो जाने पर उन्हें सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए कि उनमें परस्पर कभी भी कलह न हों और वे सदा एक दूसरे के प्रति वफादार रहें। " p- 224

परम्परागत हिन्दू विवाह और पारिवारिक जीवन की धारणा पर विचार करते हुए कापडिया (1958) ने लिखा है " परिवार और समुदाय के प्रति विवाह एक सामाजिक कर्तव्य होता था और इसमें व्यक्तिगत स्वार्थों की कतई गुंजाइश नहीं होती थी । पति पत्नी के आपसी संबंधों में एकाधिकारवादी संयुक्त परिवार प्रणाली और जीवन सर्वव्यापी प्रभुत्व रखने वाली जाति प्रथा ने किसी भी निजी पहलू निजी रुचियों और आकांक्षाओं को मान्यता देने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी।" p- 169.

परम्पराओं में जकड़े भारतीय परिवारों में वैवाहिक सामंजस्य की समस्या प्राकृत रूप से सामने ना आने का एक अन्य कारण हमारे परंपरागत हिन्दू पारिवारिक ढाँचे में अपेक्षतया सुखी वैवाहिक सामंजस्य प्राप्त करना कैसे संभव था ।

"विशाल संयुक्त परिवारों में पति और पत्नी को समान यौन वर्ग के समन्वयक मिल जाते थे जिनसे उन्हें साहचर्य का संतोष मिल जाता था । अतः दोनों के परस्पर अच्छे संबंध होने का यह भी संभवतः एक कारण था

क्योंकि अटूट स्नेह अथवा साहचर्य के लिये वे पूर्णतः आश्रित नहीं रहते थे" । संभवतः परंपरागत हिन्दू परिवारों में वैवाहिक सामंजस्य को सहज बनाने के लिये एक प्रेरक तत्व रहा होगा । *रौस (1961) p-155*

वैवाहिक सामंजस्य एक समस्या के रूप में सामने न आने का कारण पति — पत्नी की आपसी भूमिका में कहीं किसी संघर्ष का न होना था क्योंकि उनके दायित्व व कार्य क्षेत्र निश्चित थे । परिवार में सभी सदस्यों को चाहे वे स्त्री हों या पुरुष सभी को अपनी भूमिका व दायित्व का अच्छी तरह भान था ।

वैवाहिक सामंजस्य पर विचार करते हुए गूडे (1965) ने लिखा है कि "केवल कुछ ही समुदायों में विवाह का आयोजन पति-पत्नी की निजी प्रसन्नता के लिए किया जाता है अन्यथा सभी को अधिक यह देखने से सरोकार रहता है कि वे दोनों अपना कर्तव्य ठीक से निभाते हैं अथवा नहीं तथा एक दूसरे को अपेक्षित आदर देते हैं या नहीं" ऐसा करना अधिक सरल था विशेष कर अपेक्षता एक विशाल समाज में जबकी उनमें सभी के भूमिका संबंध भली भांति निर्धारित होते थे और सभी सदस्यों में अपने कार्यों व अधिकारों के बारे में अपेक्षाकृत अधिक पारस्परिक समझौता रहता था इस तरह प्रत्येक सदस्य पर अपने कर्तव्य निर्वाह का सतत दबाव रहता था ।

इस प्रकार दोनों की भूमिका एक दूसरे की पूरक होने से संघर्ष का कोई स्थान नहीं रहता था इस संबंध में *कापडिया* लिखते हैं " एक दूसरे के प्रति पुरुष व स्त्री के कार्यों तथा इसी हेतु अधिकारों व विशेषाधिकारों के रूप भी स्वाभावतः सदा असमान माने जाते थे । निश्चित ही दर्जे का कोई भेद उनमें नहीं था । " *कापडिया (1958) p-72*

उपर्युक्त परिस्थितियों में पति पत्नी दोनों ही अपनी अपेक्षित भूमिकाओं के निर्वाह में अपने अहं की तुष्टि पाते हैं । *कॉरमैक* लिखती है, कि नारी सुलभ शक्ति तथा नारीत्व की सार्थकता में मूलभूत तत्व लिंग व कार्य की भिन्नता है । जिसमें प्रतिस्पर्धा नीहित नहीं हुई । *प्रमिलाकपूर (1976)*

इस प्रकार पुरुष व स्त्री के कार्य अंग में प्रतिस्पर्धा न होने से वैवाहिक सामंजस्य की समस्या प्रकट नहीं हुई।

परंपरागत भारतीय नारी का वर्णन करते हुए डॉ. राधाकृष्णन लिखते हैं— “शताब्दियों से चली आ रही परंपराओं ने भारतीय नारी को विश्व की सर्वाधिक निःस्वार्थी, आत्म त्यागी तथा सर्वाधिक धैर्य वान नारी बना दिया है। कष्ट उठाना ही जिसका आत्म गौरव है। यह इसका आत्म गौरव ही है। जिसने इस वैवाहिक गठबंधन को स्थिर रखा है। या कम से कम वैवाहिक सामंजस्य को एक समस्या बनने से रोका है।”

रौस (1961) के अनुसार —पति—पत्नी के गठबंधन के कुछ अनिवार्य तत्व थे—दोनों के बीच कार्यों का सुस्पष्ट विभाजन, गृहस्थी में दोनों की आवश्यक भूमिका तथा अपेक्षित अधीनस्थ स्थिति जिसके कारण पारस्परिक तनाव व विरोध टलें रहते थे। p-157

विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है। यह एक विश्व व्यापी संस्था है। जिसके अभाव में परिवार के विषय में सोचा भी नहीं जा सकता है। हिन्दुओं में विवाह संस्था का एक विशिष्ट स्थान है। विवाह संस्था केवल परिवार का ही निर्माण नहीं करती बल्कि यह व्यक्ति को एक विशेष सामाजिक स्थिति भी प्रदान करती है। विवाह एक सामाजिक संस्था ही नहीं बल्कि यह एक सांस्कृतिक संस्था भी है। इसी कारण प्रत्येक समाज में विवाह का स्वरूप एक समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं द्वारा निर्धारित होता है। सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण विवाह के स्वरूप में विभिन्नता पाई जाती है। कुछ समाजों में विवाह का स्वरूप धार्मिक होता है, जबकि कुछ संस्कृतियों में विवाह को एक संविदा (contract) के रूप में देखा जाता है।

५-१०

भारतीय समाज में विवाह का आधार धार्मिक ही रहा है। स्मृतियों में गृहस्थाश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम बताया गया है। क्योंकि स्मृतियों में वर्णित चारों पुरुषार्थों :- धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष, की पूर्ति केवल गृहस्थाश्रम में रहकर ही संभव है। चारों पुरुषार्थों में अन्तिम पुरुषार्थ (मोक्ष) की पूर्ति किये बिना अन्तिम लक्ष्य (मोक्ष) की ओर पहुंचना संभव नहीं है। और यह तभी संभव है जब व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार विवाह करे क्योंकि यौन संतुष्टि मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में से एक है। अन्य प्राणी भी इन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं किन्तु उनका आधार मात्र दैहिक होता है। किन्तु मानव में यह आधार दैहिक होने के साथ साथ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भी है। विवाह तभी वैध माना जाता है जब इसे समाज द्वारा मान्यता प्राप्त हो ।

विवाह एक बहुत ही नाजुक एवं बहुमुखी घटनाओं का बंधन है जिसमें पति पत्नी के पारस्परिक सामंजस्य की अहम् भूमिका रहती है । विवाह एक ऐसा पवित्र एवं अटूट बंधन है जिसके आधार पर पति पत्नी के मध्य एक स्थायी, दैहिक, आत्मिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संबंध निर्मित होता है। पति पत्नी के मध्य यह संबंध ही "दाम्पत्य जीवन" कहलाता है। दाम्पत्य जीवन सरस सुखद स्नेहपूर्ण एवं सफल हो सके इसके लिए यह आवश्यक है कि पति व पत्नी के शारीरिक गुणों, स्वभाव प्रकृति, विचारधारा, मनोवृत्ति, मान्यताओं, आस्थाओं तथा जीवन में समानता हो । एक सुप्रसिद्ध कवि का प्रचलित दोहा है ।

कि — कै समसों कै अधिक सों , करिये बैर विवाह ।

जीते हारे होत है , दोनों भाँत निवाह ॥

किन्तु वर्तमान में यह समानता जाति, कुल, आर्थिक सामाजिक स्तर तक ही सिमट तक रह गई है । अब प्रश्न यह उठता है कि दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिये क्या पारंपरिक विधि से विवाह करना आवश्यक है ? बिना

पारंपरिक विधि जैसे (कोर्ट, मंदिर, गिरजाघर) में संपन्न विवाह प्राचीन काल में गंधर्व विवाह की श्रेणी में रखेजाते थे । वर्तमान में इन्हें प्रेम विवाह (लव मैरिज) कहा जाता है ।

सुखी दाम्पत्य जीवन में ज्योतिष अर्थात् कुण्डली मिलान एक महत्वपूर्ण व सार्थक भूमिका निभाता है । सभी पक्ष यथा आर्थिक, सामाजिक आदि अनुकूल हों किन्तु दम्पतियों की कुण्डलियों में ग्रहों की स्थितियां प्रतिकूल हो तो सुखी दाम्पत्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । अतः सभी पक्षों के महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी विवाह में ज्योतिष की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता । हिन्दुओं में विवाह को धार्मिक संस्कार के रूप में स्वीकार किया जाता है परंतु आधुनिक काल में विवाह का अर्थ परिवर्तित होता जा रहा है ।

विवाह का अर्थ एवं परिभाषा - जिन साधनों द्वारा मानव समाज यौन संबंधों का नियमन करता है उन्हें विवाह की संज्ञा दी जा सकती है । विवाह स्त्री व पुरुष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की एक संस्था है । यह सामाजिक आदर्श मानदंडों की वह समग्रता है जो विवाहित व्यक्तियों के आपसी संबंधों को उनके रक्त संबंधियों, सन्तानों तथा समाज के साथ संबंधों को परिभाषित और नियंत्रित करती है ।

कापडिया ने हिन्दू विवाह को एक संस्कार मानते हुए कहा है — “हिन्दू विवाह एक संस्कार है।” P-168

कापडिया (1958) ने आगे कहा है — “ विवाह प्राथमिक रूप से कर्तव्यों की पूर्ति के लिये होता है इसलिये विवाह का भैतिक उद्देश्य धर्म था । ”



१-१०२

मेघातिथि के अनुसार — “विवाह कन्या को पत्नी बनाने के लिए एक निश्चित क्रम से की जाने वाली अनेक विधियों से संपन्न होने वाला पाणिग्रहण संस्कार है जिसकी अंतिम विधि सप्तर्षि दर्शन है । ”

विवाह का शाब्दिक अर्थ-

शब्द *कल्पद्रुम* में — विवाहः विशिष्टं वहनम् और विवाह के आधार पर विवाह संस्कार को आत्मसंरक्षण, जीवन के सातत्य तथा कामतुष्टि के लिए सभी सामाजिक परिवेशों में अनिवार्य माना गया है।

विवाह संस्कार के स्वरूप में, प्रकारों में नियम, देशकाल, परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता चला आया है। प्राचीन शास्त्र परम्परा में विवाह के लिए उद्वाह, परिणय, पाणिग्रहण पाणिपीडणम् इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

विवाह— वधु को विशेषता के साथ ले जाना ।

परिणय— किसी को निकट लाकर अपना बनाना ।

पाणिग्रहण— वधु का हाथ पकड़ना ।

हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार

कापड़िया ने लिखा है कि — “हिन्दु विवाह एक संस्कार है यह पवित्र समझा जाता है क्योंकि यह तभी पूर्ण होता है जब यह पवित्र कृत्य पवित्र मंत्रों के साथ किया जाए।” विवाह अनेक संस्कारों में एक विशिष्ट स्थान रखता है यह गृहस्थाश्रम का प्रवेश द्वार है । अधोलिखित विशेषतायें विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में प्रकट करती हैं। 1958, P-167-169



1758. 4-10-19

1. **विवाह का धार्मिक आधार** - हिन्दुओं के लिए प्रतिदिन पाँच महायज्ञ करना आवश्यक है और ये यज्ञ बिना पत्नी के पूर्ण नहीं माने जाते । इस प्रकार विवाह एक हिन्दू के लिए आवश्यक धार्मिक कर्तव्य है।

कापड़िया ने अपनी पुस्तक में लिखा है — “यह स्पष्ट है कि जब हिन्दू विचारकों ने धर्म को विवाह का प्रथम तथा सर्वोच्च उद्देश्य तथा सन्तानोत्पादन को इसका दूसरा श्रेष्ठ उद्देश्य माना तो स्वाभाविक रूप से विवाह पर धर्म का आधिपत्य हो गया। विवाह की इच्छा रति या सन्तानोत्पत्ति के लिए इतनी अधिक नहीं की जाती थी जितनी अपने धार्मिक कर्तव्यों के पालनार्थ एक साथी प्राप्त करने के लिए ।” ये तथ्य निश्चित ही विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में प्रकट करते हैं। p-168-169

2. **विवाह की अविच्छेद्य प्रकृति** - हिन्दू विवाह पति-पत्नी का जन्म जन्मान्तर का पवित्र एवं अटूट बंधन माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जो इस जन्म में पति पत्नी है वे अगले जन्म में भी पति-पत्नी होंगे। भारतीय धर्मशास्त्रों में तलाक एवं परित्याग का कोई स्थान नहीं है। पत्नी के लिए पति परमेश्वर, पतिव्रत एवं सतीत्व की धारणा दी गई है साथ ही पति के लिए भी पत्नी व्रत की। इसकी पुष्टि के लिए हमारे धर्म शास्त्रों में अनेकों कथाओं का उल्लेख मिलता है जिनका उद्देश्य पति - पत्नी में संघर्ष की स्थिति को टालना व उनमें आपसी सामंजस्य बनाये रखना है।

3. **ऋणों से उऋण होने के लिए विवाह आवश्यक है** - धर्म शास्त्रों में विवाह को स्वर्ग का द्वार माना गया है। विवाह के द्वारा ही व्यक्ति गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है जो कि सभी आश्रमों का आधार है। गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना गया है । विवाह के द्वारा ही अपने देव ऋण, पितृ ऋण एवं ऋषि

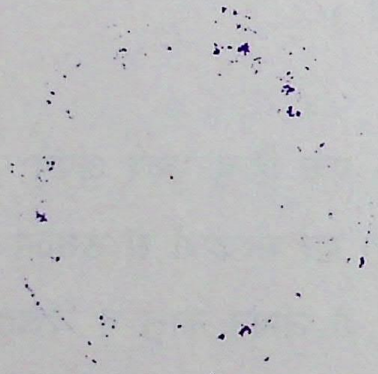
ऋण से उऋण हो सकता है। धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की पूर्ति भी विवाह के द्वारा ही संभव है। विवाह को मनु स्वर्ग की सीढ़ी बताते हैं। धर्म ग्रंथों में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो यह प्रकट करते हैं कि विवाह के अभाव में तपस्या करके भी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकी।

4. **पतिव्रत का आदर्श** - एक हिन्दू स्त्री से यह अपेक्षा की जाती है कि पति व्रत धर्म का पालन करे। स्वपन में भी पर पुरुष का चिंतन न करे। धर्म शास्त्रों में लिखा है-“ जिस प्रकार नदी समुद्र में जाकर अपने व्यक्तित्व को खो देती है उसी प्रकार पत्नी अपना व्यक्तित्व पति में खो देती है। “पति चाहे कितना भी व्यक्तित्वहीन व अत्याचारी क्यों न हो पत्नी के लिए वही सब कुछ है। पति व्रत के आदर्श का परिणाम था सती प्रथा। पतिव्रत का यह आदर्श भी विवाह को धार्मिक आधार प्रदान करता है।

5. **स्त्री के लिए एक मात्र संस्कार** - एक हिन्दू पुरुष अपने जीवन काल में अनेक प्रकार के संस्कार सम्पन्न करता है इन संस्कारों से उसका शुद्धिकरण एवं व्यक्तित्व का विकास होता है किंतु स्त्री के जीवन काल में विवाह ही एक मात्र संस्कार है अन्य संस्कार उसके द्वारा सम्पन्न नहीं किये जाते।

6. **पत्नी के संबोधक शब्द** - पत्नी के संबोधित करने के लिए “धर्म पत्नी” एवं “सहधर्मचारिणी” आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ है धार्मिक कार्यों में सहयोग प्रदान करने वाली।

7. **धार्मिक अनुष्ठान एवं विधि विधान** - हिन्दु विवाह को एक संस्कार बनाने के लिए सारे अनुष्ठान और विधि विधान भी हैं जो विवाह के दौरान किए जाते हैं।



पी. वी. काणे ने हिन्दु विवाह के दौरान सम्पन्न किए जाने वाले 39 प्रमुख अनुष्ठानों एवं विधिविधानों का उल्लेख किया है । इन धार्मिक कृत्यों के अभाव में विवाह को पूर्ण नहीं माना जाता ।

1. **वाग्दान** — यह वह संस्कार है जिसमें वर पक्ष की ओर से रखा जाता है और कन्या पक्ष द्वारा इसे स्वीकारा जाता है । वैदिक मंत्रों एवं गृह्य सूत्रों में वर पक्ष द्वारा प्रस्ताव रखने एवं कन्या पक्ष द्वारा स्वीकार किये जाने की व्यवस्था है । किंतु वर्तमान समय में विवाह का प्रस्ताव कन्या पक्ष के द्वारा रखा जाता है । एवं वर पक्ष द्वारा स्वीकार किया जाता है । ऐसा माना जाता है कि मध्य काल में स्त्रियों की सामाजिक प्रतिष्ठा कम हो गई थी तभी ये प्रस्ताव वर के स्थान पर कन्या पक्ष द्वारा प्रस्तुत किया जाने लगा । नारद स्मृति, ऋग्वेद 10/59/9/15/33 , वीर मित्रोदय संहिता भाग - 2 (पृष्ठ 810), में भी इस प्रकार के विधि विधानों का उल्लेख मिलता है ।

2. **कन्यादान** - इसमें कन्या का पिता धार्मिक एवं पवित्र भाव से अपनी कन्या का दान वर को करता है । कन्या दान को धर्मशास्त्रों में श्रेष्ठ दान बताया गया है । कन्यादान करते समय कन्या को पिता वर से कहता है कि अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक नाम वाली आभूषणों से युक्त इस कन्या को तुम स्वीकार करो । पिता वर से यह आश्वासन मांगता है कि वह कोई भी धार्मिक कार्य बिना पत्नी के नहीं करेगा । इसका अर्थ है कि पत्नी आजीवन पुरुष की संगिनी रहेगी । गृह्य सूत्रों में वधू के पिता द्वारा कन्या दान का उल्लेख मिलता है ।

याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार — पिता, पितामह, भाई, सजातीय व्यक्ति तथा माता ये यथाक्रम पूर्व-पूर्व के नाश होने पर कन्यादान के अधिकारी हैं ।



3. **विवाह होम** - विवाह के समय अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है और उसकी साक्षी में विवाह सम्पन्न होता है । वर एवं वधू अग्नि में अनेक आहुतियाँ देते हैं तथा अग्नि से याचना की जाती है कि वह कन्या की रक्षा करे । उसकी संतान को चिरायु करे । स्त्री बांझ होने के दोष से बची रहे और जीवित रहने वाली संतानों की माता बने और पुत्र संबंधी आनंद को प्राप्त करे ।

4. **पाणिग्रहण** - अब पाणिग्रहण आता है । पाणिग्रहण का अर्थ है वर वधु द्वारा एक दूसरे के हाथ को स्वीकार करना । इस समय छः मंत्रों का उच्चारण किया जाता है और वर वधू परस्पर प्रतिज्ञायें करते हैं । इन मंत्रों में वर वधू से कहता है - "मैं ऐश्वर्य सुसंतान एवं सौभाग्य के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ तू (मुझ) पति के साथ वृद्धावस्था को सुख पूर्वक प्राप्त हों।"

5. **अग्नि प्रदक्षिणा** - इसके पश्चात वर वधु अग्नि की प्रदक्षिणा करते हैं । और वर अधोलिखित मंत्र का उच्चारण करता है । "उन लोगों ने वधू यात्रा (वहतु) के साथ सूर्या द्वारा के प्रदक्षिणा कराई । हे अग्ने, तू पुनः पतियों को प्रजा या संतति सहित पत्नी (जाया) प्रदान कर । लाजाहोम से लेकर समस्त क्रियाएँ पुनः दुहराई जाती हैं । और वधु अग्नि में लाजाओ की टोकेरी से "भगाय स्वाहा" कहती हुई आहुति देती है ।

6. **अश्मारोहण** - अपने प्रति भक्ति तप पतिव्रत्य में पत्नी को सुदृढ करने के लिए वर, अग्नि के उत्तर में निम्न लिखित मंत्र को दोहराते हुए, वधु का दाहिना पैर पत्थर पर रखवाता है । इस पत्थर (अश्मन) पर तू आरुढ हों, तू पत्थर के समान स्थिर हो, तू शत्रुवत् आचरण करने वालों को अपने पैरों से रोंद डाल तथा शत्रुओं से मुक्ति दे । यहाँ पत्थर शत्रुओं के दमन की शक्ति तथा उनमें दृढता का प्रतीक है । इस क्रिया को अश्मारोहण कहा जाता है ।

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

7. **लाजाहोम** - इसमें वर और वधू पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हो जाते हैं । और फिर वधू अपने भाई से खीलें (भुने हुए चावल) लेकर अग्निकुंड में डालते हुए तीन मंत्रों का उच्चारण करतीं हैं। कन्या कहती है कि वह ईश्वर की आज्ञा पालन के लिए अपने पिता के कुल को छोड़कर पति के कुल में जाने को तैयार है । मेरे पति दीर्घजावी हों, पितृकुल एवं पति कुल के लोग धन धान्य से सम्पन्न हों । वह ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उसका पति के साथ प्रेम बढ़े ।

8. **सप्तपदी** - तदन्तर सप्तपदी होती है। पति - पत्नी को उत्तर दिशा में नि. लि. शब्दों के साथ सात पग चलाता है। ऐश्वर्य के लिए एक पदी हो, ऊर्जा के लिए द्विपदी हो, भूति के लिए त्रिपदी हो, सुखों के लिए चतुष्पदी हो, पशुओं के लिए पंचपदी हो, ऋतुओं के लिए षट्पदी हो, हे सखे मुझसे सख्य के लिए सप्तपदी हो। इस प्रकार तू मेरी अनुव्रता हो । उपर्युक्त पंदार्थ सुखी पारिवारिक जीवन के लिए अनिवार्य है । वैधानिक दृष्टि से यह किया अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि सप्तपदी के पश्चात वैध रूप से विवाह पूर्ण समझा जाता है।

9. **ब्राम्हणों की उपस्थिति**— हिन्दू समाज व्यवस्था में ब्राम्हणों को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। विवाह कार्य उन्हीं के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है किसी कार्य में ब्राम्हण की उपस्थिति उस कार्य की पवित्रता एवं गरिमा को बढ़ाने वाली होती है।

10. **वेद मन्त्रों का उच्चारण** - विवाह के समय वैदिक रीति रिवाजों का पालन और वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया जाता है वेदों को हिन्दुओं में बहुत पवित्र ही माना जाता है और उनमें जो कुछ लिखा है वह ईश्वर के मुख से निकले वाक्य माने जाते हैं। अतः वैदिक मन्त्रों का उच्चारण भी विवाह को धार्मिक संस्कार बनाते हैं।



...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

11. **अग्नि की साक्षी** - ब्राम्हणों एवं वेदों की भांति अग्नि को भी पवित्र माना जाता है। उसकी साक्षी में ही वर - वधू विवाह बंधन में बंधते हैं। विवाह के समय जो अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है उसको ग्रहस्थ सदैव अपने घर में जलाए रखते हैं साथ ही वर - वधू के सुखी एवं सम्पन्न जीवन के लिए अग्नि से कई प्रकार की प्रार्थनाएं भी की जाती हैं।

12. **सूर्यदर्शन व ध्रुवदर्शन**- यद्यपि अब विवाह संस्कार समाप्त होता जाता है किंतु अभी विवाह से संबंधित अनेक क्रियायें करने को शेष रहती हैं। उनमें से कुछ तो स्वाभावतः प्रतीकात्मक हैं। यदि विवाह दिन में होता है तो "वह नेत्र आदि" शब्दों के साथ सूर्य की ओर देखना होता है। रात्रि में निम्न लिखित शब्दों के साथ वर वधू को ध्रुव तारा दिखाता है "तू ध्रुव है मैं इस ध्रुव को देखता हूँ, हे चपले तू मेरे साथ ध्रुव हो। बृहस्पति ने तुझे मेरे हाथ सौपा है तू मुझ पति से संतान प्राप्त करती हुई सौ शरद ऋतु पर्यंत जीवित रहा है। अन्य आचार्यों के अनुसार वधू को अरुन्धति तथा सत्तर्षि मण्डल भी दिखाना चाहिए। भले ही वह उन्हें देखती हो या नहीं प्रश्व करने पर उससे देखती हूँ यह उत्तर देने के लिए कहा जाता है। ये क्रियाएं दाम्पत्य जीवन की दृढता की सूचक थीं।

उपर्युक्त सभी तथ्यों से हिन्दू विवाह की धार्मिक प्रकृति स्पष्ट हो जाती है इसी आधार पर पी. एच. प्रभु ने लिखा है "अतः हिन्दू के लिए विवाह एक संस्कार है तथा इस कारण विवाह संबंध में जुड़ने वाले पक्षों का संबंध संस्कार रूपी है न कि प्रसंविदा की पद्धति का" किंतु वर्तमान में हिन्दू विवाह अधिनियम 1955 में पारित हो जाने के बाद हिन्दू विवाह की संस्कारात्मक प्रकृति समाप्त हो गई है। और यह मात्र एक सामाजिक समझौता रह गया है। यद्यपि न्यायालय ने हिन्दू रीति से सम्पन्न विवाह को एक संस्कार के रूप में स्वीकार किया है। किन्तु अब विवाह विच्छेद की स्वीकृति के कारण विवाह अटूट बंधन नहीं रहा है। हिन्दू संस्कार, पृ. 263-281

विवाह के उद्देश्य -

विवाह को धार्मिक एवं सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये एक आवश्यक कर्तव्य के रूप में स्वीकार किया गया है । हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में अनेक कारणों से विवाह का विशेष महत्व है - जैसे विवाह के द्वारा ही व्यक्ति गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता है पुरुषार्थों का निर्वाह करता है समाज के प्रति अपने दायित्वों को निभाता है विभिन्न प्रकार के संस्कारों को सम्पन्न करता है सन्तति को जन्म देता है और मोक्ष प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है । हिन्दू विवाह का उद्देश्य केवल कामवासनाओं की तृप्ति करना ही नहीं है।

के. एल. दफ्तरी ने लिखा है - "कामवासना की तृप्ति ही विवाह का एक मात्र उद्देश्य नहीं समझा जाता था। " हिन्दू विवाह में धर्म पुत्र प्राप्ति एवं यौन सुख प्रमुख उद्देश्य माने गए हैं । हिन्दू विवाह के उद्देश्य को बताते हुए कापडिया लिखते हैं - "हिन्दू विवाह के उद्देश्य धर्म, प्रजा (सन्तान) तथा रति (आनंद) बतलाए गये हैं। " P- 160

1. धर्म तथा धार्मिक कार्यों की पूर्ति - हिन्दू विवाह में धर्म एवं धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति को सर्वोपरी स्थान दिया गया है धार्मिक कार्यों की पूर्ति के लिए पत्नी का होना अनिवार्य है अन्यथा वे अपूर्ण ही माने जायेंगे। प्रत्येक गृहस्थ से यह अपेक्षा की जाती है कि वह प्रतिदिन ब्रम्हयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ एवं नृयज्ञ आदि पाँच महायज्ञ करें। यज्ञ में पति एवं पत्नी का होना आवश्यक माना है । मर्यादा पुरुषोत्तम राम जब अश्वमेध यज्ञ करने के लिए उन्हें सीता जी की अनुपस्थिति के कारण यह संभव न हुआ । यज्ञ करने के लिए उन्हें सीता जी की सोने की प्रतिमा बनानी पड़ी थी । याज्ञवल्क्य के अनुसार एक पत्नी के मरने पर तुरंत दूसरा विवाह करना चाहिए अन्यथा धार्मिक कार्य सम्पन्न नहीं किये जा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

सकते। कालीदास ने लिखा है कि कामदेव को जीतने वाले शिवजी के सम्मुख जब सप्तर्षि और अरन्धती आयीं तो उनकी इच्छा अरन्धती से विवाह करने की हुई क्योंकि धर्म संबंधी क्रियाओं के सम्पादन के लिए पतिव्रता स्त्री मूल आवश्यकता है। यही कारण है कि पत्नी को पुरुष की धर्म पत्नी कहा जाता है।

कापडिया (1958) ने लिखा है - "हिन्दू विचारकों ने धर्म को विवाह का प्रथम उद्देश्य माना है।" विवाह की इच्छा धार्मिक कृत्यों के सम्पादन हेतु एक साथी प्राप्त करने के लिए की जाती थी। विवाह के समय यज्ञ की पवित्र अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है। और गृह स्वामी का यह कर्तव्य हो जाता है के वह पंच महायज्ञ में अपनी पत्नी के साथ नित्य आहुति प्रदान करे। इन उत्तरदायित्वों की समाप्ति गृहस्वामी की मृत्यु पर ही होती पत्नी की मृत्यु हो जाने पर इसमें व्यवधान पड़ जाता था और इस लिये गृहस्वामी के लिए तुरंत ही दूसरी पत्नी प्राप्त करने का विधान था।"

2. **प्रजा अथवा पुत्र प्राप्ति** - विवाह का दूसरा उद्देश्य संतानोत्पत्ति माना गया है। हिन्दुओं में पुत्र का विशेष स्थान है वही पिता के लिए तप्राण और पिण्डदान करता है उसे मोक्ष दिलाता है। मनुसंहिता तथा महाभारत में पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है कि पुत्र वह है जो पिता को पुत्र अर्थात् नरक से बचाए। "परिवार में पुत्र की स्थिति इतनी ऊँची रखी गई है कि संतानउत्पादन परिवार तथा समुदाय के हित में एक कर्तव्य माना गया है।"

ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर पुत्र की आकांक्षा व्यक्त की गई है। पाणिग्रहण करते समय वर वधू को कहता है कि "मैं उत्तम संतान प्राप्त करने के लिए तेरा पाणिग्रहण करता हूँ। "अग्नि से याचना करते हुए पति कहता है कि हक अग्नि में संतानों द्वारा अमृत्यु का उपभोग करूँ।" पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति विवाह करके संतानों को जन्म दे।



3. रति आनंद - हिन्दु विवाह का तीसरा उद्देश्य यौन संतुष्टि है। उपनिषदों में यौन सुख को सबसे बड़ा सुख कहा गया है। वात्स्यायन में रति आनंद की तुलना ब्रम्हानंद से की है। इस प्रकार धर्मशास्त्रों में यौन इच्छाओं की पूर्ति को आवश्यक माना गया है किंतु यह मनमाने ढंग से नहीं वरन् समाज द्वारा स्वीकृत तरीकों से होनी चाहिए विवाह के द्वारा ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की पूर्ति होती है। विवाह में रति आनंद को तीसरा स्थान दिया गया है और इसका उद्देश्य उत्तम धार्मिक संतानों की प्राप्ति है।

कापडिया ने लिखा है-" यद्यपि काम अथवा यौन संबंध विवाह का एक कार्य है किन्तु इसे तीसरा स्थान दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि यह विवाह का अत्यंत कम वांछनीय उद्देश्य है। विवाह में यौन संबंध की निरंतर भूमिका पर बल देने के लिए यह कहा जाता है कि शूद्र का विवाह केवल यौन संबंध के लिए होता है।" P-167.

विवाह के उपर्युक्त तीन उद्देश्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य उद्देश्य भी हैं। जो इस प्रकार हैं।

1. हिन्दू विवाह स्त्री-पुरुषों के व्यक्तित्व के समुचित विकास में योग देता है उन्हें जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराता है और वैयक्तिक जीवन को संगठित करता है।
2. हिन्दू विवाह का एक अन्य उद्देश्य स्त्री पुरुषों को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कराने तथा चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति में योग देता है।
3. एक धार्मिक संस्कार के रूप में हिन्दू विवाह व्यक्ति में त्याग की प्रेरणा देता है पारिवारिक दायित्वों के निर्वाह की प्रेरणा देता है।



...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

१६७

...
...

...
...
...

...
...

...
...

4. हिन्दू विवाह समाज में व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण करता है। यहाँ उसी व्यक्ति को पूर्ण माना गया है जो पत्नी प्राप्त करता है और संतानों को जन्म देता है।
5. यौन संतुष्टि प्रदान करना ।
6. यौन संबंधों को व्यवस्थित व नियंत्रित करना।
7. संबंधों को स्थायित्व प्रदान करना।
8. विवाह समाज कल्याण में सहायक होता है।
9. विवाह सांस्कृतिक निरंतरता को बनाये रखने में सहायक होता है। अर्थात् विवाह के द्वारा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण किया जा सकता है।
10. विवाह के द्वारा एक परिवार का निर्माण करना विवाह का उद्देश्य होता है।

विवाह के आठ प्रकारों का ऐतिहासिक विकास —

स्मृतियों ने विवाह के आठ प्रकारों को मान्यता प्रदान की है। वे इस प्रकार हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापात्य, आसुर गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच । यद्यपि इसमें से अनेक प्रकारों का मूल वैदिक काल में भी मिलता है किन्तु प्राक्-सूत्र साहित्य में उनका इस रूप में उल्लेख नहीं किया गया है। अधिकांश गृह्य सूत्र उक्त आठ प्रकारों से अपरिचित हैं । मानव गृह्य सूत्र में केवल ब्राह्म तथा शुल्क (आसुर) प्रकारों का वर्णन किया गया है । वाराह गृह्य सूत्र में ही



केवल विवाह के आठों प्रकारों का उल्लेख मिलता है। उल्लेख न होने का यह अर्थ नहीं है कि ये प्रकार प्राचीन काल या गृहस्थसूत्रों के निर्माण काल में प्रचलित नहीं थे। ये न्यूनाधिक रूप में कर्मकाण्ड-साहित्य क्षेत्र से परे सामाजिक समस्या थे।

स्मृतियों ने विवाह को दो भागों में विभक्त किया है।

1. प्रशस्त 2. अप्रशस्त ।

प्रथम चार प्रकार प्रशस्त हैं, तथा शेष अप्रशस्त । प्रथम चार प्रकार प्रशंसनीय माने जाते थे। जिनमें प्रथम सर्वोत्तम था। पंचम तथा षष्ठम किसी प्रकार सह्य थे तथा अंतिम दो वर्जित थे। किंतु वे सभी वैध माने जाते थे। इस समय केवल ब्राह्म और आसुर प्रकार ही समाज में स्वीकृत हैं । जो प्रकार जितना ही अप्रशस्त था वह उतना ही अधिक प्राचीन है। इन का प्रशस्त से अप्रशस्त के क्रम में वर्णन किया जा रहा है ।

1. **ब्राह्म** — विवाह का सर्वाधिक प्रशस्त प्रकार ब्राह्म विवाह माना जाता है। यह विवाह का शुद्धतम एवं सर्वाधिक विकसित प्रकार है। यह केवल ब्राह्मणों के ही योग्य होने के कारण इसे ब्राह्म विवाह की संज्ञा दी गई है । इस विवाह में पिता स्वयं सुयोग्य एवं विद्वान वर को आमंत्रित कर सत्कार करके यथा शक्ति आभूषणों से अलंकृत कर कन्या का दान करता है ।

स्मृतियों धर्म सूत्रों में इस विवाह को सबसे अधिक सम्मानित व उत्कृष्ट प्रकार माना गया है। क्योंकि इसमें बल प्रयोग , कामुकता व धन लिप्सा आदि का समावेश नहीं था ऋग्वेद में वर्णित " सोम " के साथ " सूर्या " का विवाह ब्राह्म विवाह का पूर्ण रूप है।

वर्तमान में यह सर्वाधिक प्रशंसनीय व लोकप्रिय व प्रचलित है।

...
...
...

...
...

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...

...

समयानुसार इसमें दहेज जैसी निंदनीय प्रथा का भी समावेश हो गया। तथापि यह विवाह का सर्वश्रेष्ठ प्रकार था।

2. **दैव विवाह** — आर्ष की अपेक्षा प्रशस्त प्रकार था दैव । यज्ञानुष्ठाने सम्प्रवन्ते सम्पक् कर्म कुर्वते ऋत्विजे अलंकृत कन्या दानं देवो विवाहः । अर्थात् इस विवाह में पिता कन्या को अलंकृत करके आने आरब्ध यज्ञ में पौरिहित्य करने वाले ऋत्विज को दे देता था । *इदं च दानं वेद्यामेव भवति* । अर्थात् इस प्रकार का दान देव यज्ञ के अवसर पर किया जाता था ।

ऋग्वेद में वर्णित दाल्भ की पुत्री रथवीति का विवाह भी इसी श्रृंखला में सम्मिलित था । यज्ञों में सेवा के लिये पुरोहित बहुधा अपने संरक्षक राजाओं से सुंदर कन्याओं अथवा दासियों को प्राप्त कर लेते थे जो कि वधू कहलाती थी इस प्रक्रिया के दुष्परिणाम स्वरूप बहु विवाह प्रथा का प्रचलन बढ़ गया । कालान्तर में यज्ञ व धर्म में हास के साथ यह प्रथा समाप्त हो गई । तदन्तर विवाह में दान का भाव न होकर कन्या के सम्पूर्ण जीवन कल्याण का भाव समाप्त हो गया ।

3. **आर्ष विवाह** — धर्म शास्त्रों के अनुसार आर्ष विवाह प्रजापत्य की अपेक्षा प्रशस्ततर है । इस प्रकार के विवाह में कन्या का पिता वर से यज्ञ और धर्मिक कार्य को सम्पन्न करने के लिये एक अथवा दो गो-मिथुन प्राप्त करता था स्पष्टतः यह कन्या का मूल्य तो नहीं था किन्तु धन प्राप्ति का कुछ अंश अवश्य था । यद्यपि कन्या का पिता उसका सौदा नहीं करता चाहता था ।

मनु के अनुसार — जिस विवाह में संबंधी कन्या के लिये शुल्क नहीं स्वीकार करते वह विक्रय नहीं है वह तो केवल अर्हण — मात्र है ।

वीर मित्रोदय के अनुसार — यह कन्या का मूल्य नहीं है क्योंकि इसका परिमाण सीमित है इसके अतिरिक्त यह कन्या के साथ ही वर को वर को दे दिया जाता था । यह प्रकार आर्ष कहलाता था क्योंकि यह मुख्य रूप से ऋषि परंपरा के पुरोहितों अथवा ब्राह्मणों के कुल में प्रचलित था जैसा कि इसके नाम से ही ज्ञात होता है कि विवाह की यह पद्धति पहले प्रशंसनीय थी किन्तु आगे चलकर गो-मिथुन का नाम मात्र का आदान भी कन्यादान की भावना के विपरीत माना जाने लगा । कालान्तर में कन्या के पिता की ओर से आदान शब्द ही विवाह के क्षेत्र में बहिष्कृत हो गया ।

4. **प्राजापत्य विवाह** — आसुर के पश्चात् विपरीत क्रम से प्राजापत्य विवाह आता है । इसके अनुसार पिता योग्य वर के साथ अपनी कन्या का पाणिगृहण इस उद्देश्य से करता था कि वे दोनों नागरिक व धर्मिक कर्तव्यों का साथ-साथ पालन करें ।

आश्वलायन ने इसकी परिभाषा इस प्रकार की है — विवाह का वह प्रकार जिसमें तुम दोनों धर्म का साथ-साथ आचरण करे । यह आदेश दिया जाता है, प्राजापत्य कहलाता है । गौतम मनु ने भी विवाह उपर्युक्त परिभाषा ही दी है । इसी प्रकार सह धर्म चरताम् इत्युक्त्वा कन्यादानं प्राजापत्यः । प्रजापति के ऋण चुकाने के लिये अर्थात् संतान उत्पन्न करके व उसके पालन-पोषण के लिये एक सूत्र में बंधते थे । कालान्तर में विवाह पिता की ओर से वर को दिया जाने वाला एक विशुद्ध दान बन गया ।

5. **आसुर विवाह** — आसुर गन्धर्व की अपेक्षा विवाह का श्रेष्ठतम प्रकार था । मनु के अनुसार जिस विवाह में पति कन्या तथा उसके संबंधियों को यथा शक्ति धन प्रदान कर स्वच्छंदता पूर्वक कन्या से विवाह करता है उसे आसुर कहते हैं ।

आदिमकाल से पितृसत्तात्मक परिवार में संतान एक प्रकार की पारिवारिक संपत्ति समझी जाती थी तथा धन के लिये किसी पुरुष के साथ कन्याओं का विवाह किया जा सकता था । वैदिक काल में हमें कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें यदा-कदा सौदा

निश्चित कर लिया जाता था और व्यवहार में कन्या धन के लिये बेच दी जाती थी । प्रारंभ में यह प्रथा दोषपूर्ण नहीं मानी जाती थी किन्तु आगे चलकर इसके प्रति अरुचि व हीनता की भावना उत्पन्न हो गई । महाभारत से ज्ञात होता है कि भीष्म ने कपितय कुछ राजकुमारों के लिये क्रम द्वारा पत्नियां प्राप्त की थी ।

कालान्तर में विवाह का स्वरूप धार्मिक होने से कन्यादान जैसे पवित्र शब्द का प्रचलन हो गया ।

6. गान्धर्व विवाह — पत्नी प्राप्त करने का तीसरा प्रकार था गान्धर्व । आश्वलायन के अनुसार "विवाह का वह प्रकार जिसमें पुरुष और स्त्री परस्पर निश्चय कर, एक दूसरे के साथ गमन करते हैं गान्धर्व कहलाता है ।"

हारीत और गौतम के मतानुसार—विवाह का वह प्रकार जिसमें कन्या स्वयं अपने पति का चुनाव करती है गान्धर्व कहा जाता है । इस विषय में मनु की परिभाषा सबसे अधिक व्यापक है जबकन्या और वर कामुकता के वशीभूत होकर स्वेच्छापूर्वक परस्पर संयोग करते हैं तो विवाह के उस प्रकार में वर तथा कन्या के माता पिता नहीं अपितु वर तथा कन्या के माता-पिता नहीं अपितु वर और वधू कामुकता के वशीभूत होकर विवाह का निश्चय करते थे । गान्धर्व विवाह पैशाच और राक्षस के समान या उससे भी प्राचीन है क्योंकि यह किसी भी अन्य प्रकार की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक है । कालान्तर में इस प्रक्रिया में बदलाव आया वर और कन्या अपने विवेक और अधिकार का प्रयोग

नहीं कर सकते थे । यह अधिकार माता-पिता ने ले लिया । अतः अन्त में हिन्दू समाज से विवाह का यह प्रकार लुप्त हो गया और सम्प्रति इस वैध नहीं माना जाता ।

7. **राक्षस विवाह** — राक्षस विवाह विवाह का एक दूसरा प्रकार था । मनु के अनुसार रोती पीटती हुई कन्या का उसके संबंधियों को मार कर या क्षत विक्षत कर बल पूर्वक हरण करना विवाह का राक्षस प्रकार कहा जाता था । विष्णु तथा याज्ञवल्क्य तो स्पष्ट रूप से कहते हैं कि राक्षस विवाह का उद्भव युद्ध से हुआ ।

कुछ विद्वानों की धारणा है कि यह विवाह का प्राचीनतम प्रकार है जो आदिम जनों में प्रचलित था । उन्हें आधुनिक काल की बारात में उस मूलभूत युद्ध का अवशेष दिखाई देता है । यह कल्पना भी कि विवाह संस्कार के आयोजन युद्ध के ही अवशेष है सुदृढ प्रमाणों पर आधारित नहीं है तथा उसकी अन्य व्याख्याएं भी की जा सकती हैं । यह अधिक संभव है कि बारात का कारण विवाहोत्सव और उसकी धूमधाम है तथा जन समुदाय के एकत्र होने का मूल संबंधियों के सामूहिक दायित्व में नीहित है उसके फल स्वरूप अपने समुदाय के वैवाहिक संबंधों की सुरक्षा में विशिष्ट व्यक्तियों की रुचि सहज ही उत्पन्न हो गई ।

8. **पैशाच विवाह** — सर्वाधिक अप्रशस्त प्रकार था पैशाच । इस प्रकार के अनुसार सोई हुई उन्मत्त, घबराई हुई, मदिरापान की हुई अथवा राह में जाती हुई कन्या का हरण पैशाच विवाह कहा जाता है । “सुप्तेभ्यः प्रमत्तेभ्योऽसावधानेभ्यः कन्यामहत्य यो विवाहः स पैशाचसंज्ञकः ।” इत्युक्तम् आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार सुप्त मत्त अथवा अचेतन कन्या का हरण पैशाच विवाह कहा जाता था । यद्यपि कन्या का बालात् हरण राक्षस तथा पैशाच

दोनों में समान था किन्तु कन्या तथा उसके संरक्षकों की अचेतनता व अनवधानता के कारण पैशाच को एक स्वतंत्र रूप से दे दिया गया । गौतम तथा विष्णु की परिभाषा के अनुसार अचेतन, सुप्त या मत्त कन्या के साथ मैथुन करना ही पैशाच विवाह है । याज्ञवल्क्य और देवल भी किसी कन्या के साथ छलपूर्वक किये गये हैं । ऐसा लगता है कि पश्चिमोत्तर भारत की पिशाच जाति में इसका प्रचलन था जिससे इसका नाम पैशाच पड़ा । परवर्ती काल में कहीं शायद ही कोई इस प्रकार की घटना हो जाती अन्त में इसे पूर्णतः अमान्य कर दिया गया । हि-इ संस्कार - P-204-217

वर्तमान युग में विवाह के स्वरूप

1. परंपरागत विवाह
2. प्रेम विवाह
3. अन्तर्जातीय विवाह
4. अन्तर्राष्ट्रीय विवाह

1. **परंपरागत विवाह** - परंपरागत विवाह से तात्पर्य है कि इस विवाह में माता पिता की विशेष भूमिका होती है । वैवाहिक संबंध माता पिता द्वारा तय किया जाता है। व इसमें युवक युवतियों की कोई विशेष भूमिका नहीं होती है।

2. **प्रेम विवाह** - प्रेम विवाह परंपरागत विवाह से भिन्न होता है । इसमें परिस्थितियां भी विपरीत होती है युवा युवतियों की भूमिका मुख्य होती है व माता पिता पृष्ठभूमि में रहते हैं। इस प्रकार के विवाह में प्रेम की प्रधानता पाई जाती है । इसमें युवक युवतियां एक दूसरे के प्रेम के वशीभूत होकर विवाह करते हैं अर्थात् प्रेम ही विवाह का प्रमुख कारण होता है।

3. अन्तर्जातीय विवाह - हमारे समाज में अपनी जाति में विवाह करने की मान्यता थी किन्तु आज मूल्य बदल गये हैं तथा अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन हो गया है आज लोग दूसरी जाति में विवाह करना प्रगति समझते हैं व गौरव अनुभव करते हैं। इस कारण वैवाहिक मान्यता ही बदल गई है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय विवाह - अन्तर्राष्ट्रीय विवाह प्रथा की शुरुआत युद्ध के दौरान से ही हुई थी जिसमें एक देश के सैनिक दूसरे देश की लड़कियों से विवाह किया करते थे तथा इन विवाहों के प्रति कोई बाधा नहीं हुआ करती थी।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि वे कौन सी परिस्थितियां या कारण हैं जो वैवाहिक समायोजन को बनाने या बिगाड़ने के लिये उत्तदायी हैं ? अध्ययन का लक्ष्य निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर खोजना भी है । क्या पति-पत्नी के काम धंधों में समानता या असमानता जो उनके समायोजन स्थापित करने में सहायक या बाधक हैं ? क्या शिक्षा का अंतर वैवाहिक समायोजन को प्रभावित करता है ? क्या आय का अंतर वैवाहिक समायोजन को प्रभावित करता है । क्या परिस्थितियों के जुड़े वे सभी तत्व जैसे काम के घंटे पति व घर गृहस्थी के दावे, परिवार के सदस्यों की संख्या पारिवारिक के सदस्यों की संख्या, हस्तक्षेप या सहयोग आदि भी वैवाहिक जीवन को प्रभावित करते हैं क्या पति-पत्नी के एक दूसरे के प्रति वे दृष्टिकोण हैं जो विवाहित जीवन को प्रभावित करते हैं क्या दोनों की पारस्परिक भूमिकाओं कर्तव्यों तथा दायित्वों के बारे में दोनों का वह समझौता जो उनके वैवाहिक संबंधों व जीवन को सुखमय व मधुर बनाता है आदि कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर पाना इस अध्ययन का उद्देश्य है ।

स्थूल रूप से दूसरी समस्या उन व्यक्तिनिष्ठ (Subjective) तथा वस्तुनिष्ठ (Objective) तत्वों की खोज है जो दम्पतियों के विवाहित एवं पारिवारिक जीवन से संबंध है यानि उन तत्वों के विश्लेषण की है जो विवाहितों के जीवन में मेल मिलाप रखने या मनोमालिन्य लाने का कारण बनते हैं ।

इस अध्ययन का लक्ष्य विवाहित दम्पतियों के नमूने (Sample) से यह ज्ञात करना है कि उनके विवाहित जीवन में समायोजन की वर्तमान स्थिति क्या है तथा विभिन्न वस्तुनिष्ठ तत्वों तथा वैवाहिक समायोजन की बीच संबंध कैसे है यह ज्ञात करना कि विभिन्न व्यक्तिनिष्ठ तत्वों—धारणाओं, अनुभवों, अपेक्षाओं, इच्छाओं आवश्यकताओं तथा संतुष्टि और वैवाहिक समायोजन के बीच संबंध कैसे है । व्यवहार की विभिन्न रीतियों, मेल मिलाप व अनूकूलन की तथा वैवाहिक समायोजन के बीच साहचर्य (Association) का पता उन तत्वों, परिस्थितियों तथा प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना जो वैवाहिक समायोजन या कुसमायोजन से संबंधित है । संक्षेप में, इस अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात करना है कि विवाहित दम्पतियों के (Adjustment) समायोजन एवं (Mal Adjustment) कुसमायोजन के लिये कौन से तत्व, परिस्थितियाँ, दशायें और प्रक्रियाएँ विद्यमान हैं ।

1.2 समस्या की व्याख्या, आवश्यकता एवं महत्व -

“शोध का कार्य ऐसे जहाज की तरह से जो किसी बंदरगाह से दूर गंतव्य तक जाने के लिये अपनी यात्रा आरंभ करता है । यदि प्रारंभ में ही गंतव्य दिशा का निर्धारण करने में साधारण सी भूल हो जाए तो उसके भटक जाने की पूरी संभावना होती है क्योंकि वह जहाज कितना भी अच्छा क्यों न हो तथा उसका कप्तान कितना ही अच्छा नाविक क्यों न हो ।”

मानव क्रिया के सभी क्षेत्रों में शोध का कार्य ज्ञान तथा बोध की निरंतर खोज हैं। शोधार्थी चाहे कितना भी योग्य क्यों न हो यदि आरंभ में ही शोध संबंधित विषय का चुनाव दोषपूर्ण हो जाता है तो शोधार्थी किसी भी तरह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता ।

समस्या चयन अनुसाधान का प्रथम सोपान है समस्या क्या है ? आवश्यकता की संतुष्टि के मार्ग में उपस्थित बाधा ही समस्या है । जैसे ही आवश्यकता की संतुष्टि के साधन उपलब्ध हो जाते हैं बाधा दूर हो जाती है और आवश्यकता की संतुष्टि के साथ समस्या का अंत हो जाता है यदि उपलब्ध साधन द्वारा आवश्यकता की संतुष्टि नहीं हो पाती तो समस्या उत्पन्न हो जाती है ।

वैज्ञानिक समस्या का चयन ही वैज्ञानिक अध्ययन की आधार शिला है परंतु यहां एक कठोर वास्तविकता यह भी है कि वैज्ञानिक समस्या के चयन के लिये वैज्ञानिक अध्ययन की भी नितांत आवश्यकता है । अतः वैज्ञानिक समस्या के चयन का प्रक्रम सामान्यतः धैर्य पूर्ण, कठिन तथा सापेक्षतः दीर्घकालीन होता है तथा एक समस्या के चयन के लिये जितना अधिक गहन अध्ययन किया जाता है व जितना अधिक बौद्धिक प्रयास किया जाता है उससे वैज्ञानिक अनुवेक्षण में उतनी ही अधिक सुविधा तथा सहायता मिलती है । इसी कारण प्रायः प्राचीन कथन सुप्रसिद्ध है कि "एक सुप्रस्तावित समस्या स्वयं अपना आधा समाधान होती है ।"

जे.सी. टाउनसेण्ड 1953 के शब्दों में - "समाधान के लिये प्रस्तावित प्रश्न ही समस्या है ।"

करलिंगर 1968 के अनुसार - "प्रश्न वाचक वाक्य अथवा कथन ही समस्या है । यह कथन दो या अधिक चरों में स्थित संबंधों को पूछता है ।"

मैक्गुइन के अनुसार 1969 — यदि एक प्रश्न उत्तर नहीं दिया जा सकता तब वह वास्तव में प्रश्न ही नहीं है ।

विज्ञान के केवल समाधान योग्य समस्याओं के ऊपर ही अन्वेषण किये जाते हैं । एक समाधान योग्य समस्या के स्वरूप के विषय में —

मैक्गुइन ने कहा है — “एक समाधान योग्य समस्या एक ऐसा प्रश्न होता है जिसका उत्तर एक व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के आधार पर दिया जा सकता है ।”

अतः इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि समस्या हमारे अपूर्ण ज्ञान उस तथ्य के संबंध में जिसकी व्याख्या संभव नहीं है यह वह समाधान योग्य प्रश्न है जो समाधान हेतु प्रस्तावित तथा दो चरों के संबंधों पर होता है ।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं । वर्तमान शिक्षा, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान के क्षेत्र में परिवर्तन आता जा रहा है । यद्यपि प्राचीन काल से चली आ रही परंपरागत सामाजिक संस्थाओं में बहुत धीमी गति से परिवर्तन हो रहे हैं परंतु फिर भी परिवर्तन — परिवर्तन ही है । उदाहरणतः विवाह संस्था में परिवर्तन तो बहुत धीमी गति से हुआ है तथापि विवाह संबंधी मान्यताओं में परिवर्तन तो हुआ है इन्हीं परिवर्तनों के चलते विवाहोपरान्त नवदम्पतियों के मध्य असमायोजन एक बहुत ही घनिष्ठ समस्या है । वैवाहिक असमायोजन के बीच परिवार टूटते बिखरते देखे जाते हैं । वैवाहिक जीवन में कितना समायोजन है तथा यदि समायोजन नहीं है तो इसके पीछे क्या कारण है इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिये इस अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई ।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने 300 नव दम्पतियों के वैवाहिक समायोजन का मापन व अध्ययन मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण से व ज्योतिषीय दृष्टिकोण से किया है । अर्थात् मनोवैज्ञानिक आधार पर यह देखने का प्रयास किया है कि दम्पतियों के मध्य वैवाहिक समायोजन कितना है । ठीक उसी प्रकार ज्योतिषीय दृष्टिकोण में कुण्डलियों के निरीक्षण के उपरांत यह देखने का प्रयास किया है कि इनके मध्य समायोजन कैसा है । दोनों ही आयामों पर समायोजन का स्तर कैसा है तथा साथ ही जो लोग ज्योतिष को स्वीकृति नहीं देते उनमें ज्योतिष के प्रति जिज्ञासा व अभिरुचि जागृत करने तथा यह विश्वास भी जागृत करना कि ग्रह नक्षत्र भी व्यक्ति के जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं तथा मनोविज्ञान विषयक गंभीरता को समझने तथा ज्योतिष विषयक जिज्ञासाओं का समाधान करने हेतु इस शोध विषय को लेने की आवश्यकता अनुभव की गई । विश्वास है कि यह कार्य न केवल परिवार एवं समाज के लिए अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

1.3 चर या परिवर्त्य

अनुसंधान प्रक्रम में परिकल्पना की रचना के बाद संबंधित घटना के कारणों के अनुभाविक अध्ययन की आवश्यकता होती है । तथा अनुसंधान को प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों को भी जानना वैज्ञानिक अध्ययन के लिए अत्यंत आवश्यक व महत्वपूर्ण होता है । सम्प्रत्यात्मक स्पष्टता तथा मात्रात्मक विशुद्धता के आधार पर वैज्ञानिक अनुसंधानों में ऐसे कारकों को ही चरों (variables) की संज्ञा दी जाती है ।

शाब्दिक रूप से (variables) का अर्थ होता है जो vary कर सके अथवा परिवर्तित हो सके ।

पोस्टमेन तथा ईगन (1966) के अनुसार "चर वह लक्षण या गुण है जिसके अनेक प्रकार के मूल्य होते हैं।"

ए.एल.एडवर्ड (1971) के अनुसार — "चर से हमारा अभिप्राय किसी भी चीज से है जिसका हम निरीक्षण कर सकते हैं और वह उस प्रकार की हो कि इसकी इकाई के निरीक्षण के विभिन्न वर्गों में कहीं भी वर्गीकृत किया जा सके ।"

एच. ई. गैरेट—(1967) — "चर वह लक्षण व गुण है जिसकी भाषा में परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन किसी भी माप या आयाम पर होता है।"

एम. आर डी अमेटो (1970) के अनुसार "चर किसी वस्तु घटना या प्राणी का मापन योग्य गुण या लक्षण है।"

मैथेसन एवं साथियों (1970) के अनुसार "एक चर एक वैज्ञानिक अध्ययन में एक ऐसी स्थिति होती है ,जिसमें मात्रात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन हो सकते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि चर से एक ऐसी स्थिति (Condition) अथवा गुण (Attribute) का बोध होता है जिसके स्वरूप में परिवर्तन किसी भी मात्रा या आयाम पर हो सकता है।

अनुसंधान में प्रयोग किये जाने वाले चरों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।



1. स्वतंत्र चर
2. परतंत्र चर
3. मध्यवर्ती चर

1. स्वतंत्र चर- जे. सी. टाउनसेण्ड (1953) के अनुसार — "स्वतंत्र चर वह कारक है जिसे प्रयोगकर्ता निरीक्षण की गई घटनाओं तथा तथ्यों के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए प्रहस्तन (घटाता बढ़ाता) करता है। "

ए. एल. एडवर्ड्स (1968) के अनुसार— "वह चर जिस पर अध्ययनकर्ता का नियंत्रण होता है स्वतंत्र चर कहलाता है।"

एम. आर. डी. अमेटो (1970) के अनुसार — "सामान्यतः चर वह कोई भी चर है जिसे प्रयोग कर्ता प्रत्यक्ष रूप से चयन द्वारा घटाता — बढ़ाता है वह यह इस उद्देश्य से करता कि व्यवहार संबंधी माप (आश्रित चर) पर इसके प्रभाव का अध्ययन कर सके।"

डी. के. कैण्डलैण्ड (1968) के अनुसार — "स्वतंत्र चर एक प्रयोग के वे कारक होते हैं जिन पर प्रयोगकर्ता का नियंत्रण रहता है तथा जिसमें वह जैसा चाहे परिवर्तन कर सकता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वतंत्र चर वह चर है जिस पर प्रयोगकर्ता का पूरा नियंत्रण होता है जिसमें प्रयोगकर्ता प्रत्यक्ष रूप से व चयन द्वारा परिवर्तन करता है । ताकि वह व्यवहार माप पर इसके प्रभाव का अध्ययन कर सके ।



2. परतंत्र चर - जे. सी. टाउनसेण्ड (1953) के अनुसार - "आश्रित चर वह चर है जो प्रयोग कर्ता द्वारा स्वतंत्र चर के प्रदर्शित करने पर प्रदर्शित होता है इसी प्रकार स्वतंत्र चर के हटाने पर अदृश्य हो जाता है तथा स्वतंत्र चर की मात्रा में परिवर्तन से परिवर्तित हो जाता है।"

3. मध्यवर्ती चर - इस प्रकार के चरों को अर्थ पूर्ण चर (Relevant Variables) भी कह सकते हैं। ये वे चर होते हैं जो स्वतंत्र और परतंत्र चर दोनों को प्रभावित करते हैं। इन चरों को जब तक नियंत्रित करके प्रयोग नहीं किया जायेगा तब तक प्रयोग से शुद्ध परिणाम प्राप्त करना असंभव है। इन चरों को बाह्य चर भी कहें हैं क्योंकि ये स्वतंत्र चर और परिपंत्र चर दोनों को ही प्रभावित करते हैं। प्रयोग में विघ्न डालने के कारण कभी कभी इनको विघ्नकारक चर भी कहा जाता है।

आश्रित चर का संबंध प्रायः व्यवहार परिवर्तन अथवा प्रयोज्य की अनुक्रिया से रहता है। अतः आश्रित चर को कभी-कभी व्यवहार चर और कभी - कभी अनुक्रिया चर भी कहा जाता है।

वैवाहिक समायोजन का अर्थ समझने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले समायोजन का अर्थ समझ लिया जाए। प्रायः जीवन के समस्त पहलुओं में समायोजन आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने के लिए भली भाँति समायोजन की क्षमता होनी चाहिए ऐसी परिस्थितियों से दूर रहने का प्रयास करना चाहिए जो कुसमायोजन को प्रोत्साहन देती हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि जीवन का प्रमुख अंग समायोजन ही है। यदि एक व्यक्ति जीवन में प्रत्येक परिस्थिति से समायोजन कर सकता है। तो वह समाज के एक सफल व्यक्ति के रूप में आ सकता है।

मनोविज्ञान में समायोजन विभिन्न रूप से परिभाषित किया गया है :-

“समायोजन को व्यक्ति के प्रयासों का परिणाम माना जाता है जो कि प्रतिबल कम करने तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है ।”

बोरिंग (1962) तथा उनके साथियों के अनुसार “ समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है ।”

गेट्स (1965) तथा उनके साथियों के अनुसार — “ समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है ।”

आइजनेक (1972) व उनके साथियों के अनुसार — “ यह वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ एवम दूसरी ओर वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में सामंजस्य प्राप्त होता है ।”

निष्कर्षतः समायोजन शब्द के दो अर्थ होते हैं, पहले अर्थ में तो यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हुए वातावरण से अपना अच्छा संबंध बनाता है। उसका यह प्रयास रहता है कि वह अपने व्यवहार से अपने वातावरण को बदले ।

दूसरे अर्थों में समायोजन एक दशा है। अर्थात् सामंजस्य की वह परिस्थिति है। जो कि व्यक्ति अपने लिए बनाता है जिसे हम सुसमायोजित कहते हैं और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कह सकते हैं कि वह व्यक्ति साधारण रूप से अधिक कुशल एवं प्रसन्न रहता है विशेषकर एक ऐसे पर्यावरण से जिसे हम सामान्य रूप से संतोष प्रद कहते हैं।

समायोजन मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है —

१. व्यक्ति की इच्छाओं विचारों प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि में समन्वय जितना ही अधिक होता है समायोजन उतना ही अच्छा होता है। यदि इनमें आवश्यकता से कम समन्वय है तो समायोजन दुर्बल होगा ।
२. व्यक्ति की इच्छाओं विचारों प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि की पूर्ति किस मात्रा और किस रूप में हुई है । इनकी पूर्ति जितनी ही अधिक होती है समायोजन उतना ही अधिक अच्छा होता है ।
३. व्यक्ति की इच्छाओं विचारों प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि समाजिक मूल्यों से कहाँ तक मेल खाते हैं । इनमें मेल जितना ही अधिक होगा व्यक्ति का समायोजन उतना ही अच्छा होगा ।

1.3.1 वैवाहिक समायोजन

वैवाहिक सामंजस्य का अर्थ व परिभाषा

वैवाहिक सामंजस्य की परिभाषा किसी भी समाज व काल में विवाह की प्रचलित धारणाओं तथा मापदण्डों पर निर्भर करती है। यद्यपि भारत में वैवाहिक सामंजस्य के संबंध में कोई विशिष्ट एवं सम्पूर्ण अध्ययन नहीं हुआ । साथ ही भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी इसकी कोई विशेष परिभाषा नहीं दी गई है । किंतु पाश्चात्य समाजशास्त्रियों द्वारा दी हुई कुछ परिभाषाएं अधोलिखित हैं ।



लैण्डिस (1946) के अनुसार — “ विवाह में समझौते की वह स्थिति जो वैवाहिक अनबन होने पर भी विभिन्न क्षेत्रों में लाई जा सके।” P- 666.

लॉके तथा विलियम्स (1958) के अनुसार — “विवाहित जीवन में कुछ ऐसी विशेषताओं का होना है जैसे परस्पर मतभेद से बचे रहने या उन्हें सुलझा लेने की प्रवृत्ति, दोनों में विवाह से तथा एक दूसरे के कामों तथा रुचियों में साझी दिलचस्पी तथा पति-पत्नी का एक दूसरे की वैवाहिक अपेक्षाओं की पूर्ति करना।”

समाजशास्त्रियों ने उन विशेषताओं को जानने का प्रयास किया है जो वैवाहिक सामंजस्य व वैवाहिक सुख में सहयोगी है उन्हें *टर्मन* सौभाग्यशाली स्थिति की संज्ञा देते हैं। अन्वेषक किसी एक विशेष पहलू की पुष्टि नहीं कर सके जिसके साथ वैवाहिक सुख का गहरा संबंध हो लेकिन इस संबंध में नई व्याख्या *लाके व विलियम्स (1958)* ने दी है ।

“वैवाहिक सामंजस्य पति पत्नी के बीच ऐसे यथार्थ की स्वीकृति है जिसमें परस्पर साहचर्य (Companionship) हो, मान्यताओं के बारे में सहमति हो परस्पर सौहार्द से घनिष्ठता हो समझौता हो, शुभकामनायें हों तथा कुछ अन्य पहलुओं पर भी समझौता हो” P- 562-569.

वैवाहिक सामंजस्य पर पारस्परिक एवं वैयक्तिक दोनों ही किस्म का प्रभाव पड़ता है इसके लिए पति-पत्नी दोनों को ही आपस में तथा परिवार के अन्य सदस्यों को सामूहिक रूप से व वैयक्तिक रूप से भी आपसी मेल मिलाप के संबंध स्थापित करना होता है ।

वैवाहिक संघर्ष से उत्पन्न तनाव के बारे में *रोजन क्विस्ट (1940)* लिखते हैं — “अधिकतर लोगों में प्रायः मतभेद खड़े होते हैं पर वे मतभेद स्थायी

३३३-१

३

३

३३३-३३३-१

३

नहीं रहते । किसी एक व्यक्ति का इनके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने का तरीका उसके व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्व पूर्ण अंग होता है और वह उसके व्यक्तिगत सामंजस्य का सूचक है । एक व्यक्ति जब अपनी बाधाओं को इन तरीकों से दूर करता है जो स्वयं उसके तथा उसके समाज के लिये मान्य व संतोषप्रद है तो हम कह सकते हैं कि वह व्यक्ति पूर्णतः समंजित है । दूसरी चरम अवस्था में जब वह स्वयं को और न अपने आप को पूर्ण संतोष दे पाता है तो उसका सामंजस्य अधूरा कहलायेगा । " P-418-19.

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैवाहिक संबंधों के परिवेश में पारस्परिक की यह स्थिति माना जाएगा जिसमें पति पत्नी आपसी मतभेद को सुलझाने की प्रवृत्ति रखते हों तथा कुल मिलाकर अपने विवाहित जीवन को सुखी बनाने व एक दूसरे से भी खुश व संतुष्ट रहने की भावना रखते हैं । वैवाहिक सामंजस्य में पति व पत्नी के सद्भावनापूर्ण पारस्परिक संबंधों पर बल दिया जाता है स्थूल रूप से " वैवाहिक सामंजस्य की यह परिभाषा दी जा सकती है कि यह वैवाहिक संबंधों की वह स्थिति है जिसमें पति पत्नी सुखी व संतुष्ट विवाहित जीवन की भावना रखते हैं । तथा दोनों ही परस्पर संतुष्ट भी हों ।

भारत में वैवाहिक समायोजन पर विस्तृत अध्ययन नहीं हुए हैं । यहाँ तक की अमेरिका में भी इस विषय पर किये गये समाज शास्त्रीय अध्ययनों की संख्या कम है । इस विषय पर शोध कार्य भी कम होने की बजह से भी आवश्यक व महत्वपूर्ण साहित्य तथा तथ्य उपलब्ध नहीं हो पाते ।

वैवाहिक सामंजस्य के क्षेत्र की संभाविता (Scope) तथा इसको प्रभावित करने वाले मुख्यचर (Variable) के बारे में पर्याप्त जानकारी की अनुपस्थिति में कुछ भी अनुमान लगाना मात्र निराशापूर्ण ही सिद्ध होगा ।



1.3.2 वैवाहिक समायोजन का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन -

वास्तव में वैवाहिक समायोजन जैसे अमूर्त गुण की व्याख्या करना दुरुह कार्य है। यद्यपि गुणात्मक व्याख्या तो किसी की भी की जा सकती है तथापि मूल्यांकन तथा विश्लेषण के लक्ष्य से इनके अनुमेय सूचकांक (Indexes) तैयार करना और भी कठिन है किसी भी मनोवैज्ञानिक पहलू मापन के लिए सांख्यिकीय सूचकांक के निर्माण के साथ मनोवैज्ञानिक परीक्षण का निर्माण भी आवश्यक है। इस संदर्भ में लाजारस (1961) ने कहा है—“ पर्याप्त सामंजस्य की व्यवहार्य कसौटियों के विकास के लिए कुछ निर्णयों की जरूरत होती है। ये निर्णय वैज्ञानिक रूप से तो अनुमानित नहीं होते किन्तु समुदाय विशेष के सदस्य होने के नाते हमारे विश्वासों पर अवश्य निर्भर होते हैं। ” p-10

यद्यपि सामंजस्य का मुख्य उद्देश्य तनाव को या मतभेद को घटाना है जिसे हम जरूरतों को घटानें या जरूरतों की संतुष्टी की संज्ञा भी दे सकते हैं अतः इसके प्रयोजन से ही कल्याण का भाव स्पष्ट होता है जो प्रसन्न करने की एक प्रवृत्ति है और अन्ततः इसका लक्ष्य प्रसन्नता एवं संतुष्टि को प्राप्त करना है और अन्ततः इसका लक्ष्य प्रसन्नता एवं संतुष्टि को प्राप्त करना है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की लक्ष्यपूर्ति के लिए वैवाहिक सामंजस्य को उन उपायों के रूप में अपनाना होगा जो अनुकूल एवं मधूर वैवाहिक सामंजस्य को उन उपायों के रूप में अपनाना होगा जो अनुकूल एवं मधूर वैवाहिक संबंध स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो और जिनसे चेतन तथा अनचेतन रूप से अंतिम ध्येय सुख एवं संतोष की प्राप्ति हो। कोई भी वस्तु जो हमें प्रसन्नता प्रदान करती है एक वर्ग से दूसरे वर्ग में भिन्न होती है यहां तक कि किसी एक वर्ग में भी एक से दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है।

इस प्रकार वैवाहिक सामंजस्य के मापन एवं मूल्यांकन के लिये यह धारणा निर्मित की गई कि वह अपने विवाह से प्रसन्न व संतुष्ट लोगों को इस योग्य समझा जाए कि वे अपने तनाव व आपसी मतभेद को दूर करने या कम

करने के क्रम में अपनी आंतरिक व बाह्य परिस्थितियों में सुधार ला सकते हैं। और इस प्रकार अपनी वैवाहिक पारस्परिक क्रियाओं में भी मेल मिलाप लाने के योग्य हो सकते हैं। यह धारणा पाश्चात्य समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिक द्वारा दाम्पत्य जीवन की प्रसन्नता एवं सफलता के संबंध में किये गये अध्ययनों पर आधारित थी।

हैमिल्टन (Hamiltion) (1929) ने एक हजार विवाहित महिलाओं के अपने एक अध्ययन में विवाह की सफलता या असफलता के निश्चय के लिये वैवाहिक संतुष्टि की कसौटी का प्रयोग किया और इसे नितांत सार्थक पाया।

चैसर (Chesser 1959) का इस विषय में मत है कि "कुछ भी हो, हम यह अनुभव करते हैं कि प्रसन्नता के संबंध में व्यक्ति निष्ठ भावना का अपना एक औचित्य होता है क्योंकि विवाह के बारे में ऐसी भावनाएं रखने वाले के लिए ये उतनी ही वास्तविक हैं जितने वास्तविक कि वस्तुनिष्ठ पहलू होंगे।" p-8

वैवाहिक सामंजस्य तथा सुखमापन के प्रयास में पाश्चात्य समाज शास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक उन पहलुओं को खोजते रहे जो टरमेन (1938) के शब्दों में यह स्पष्ट करते हैं कि "ये घनिष्ठमय मानवीय रिश्तों को मेल मिलाप के जीवन के अनुकूल बनाते हैं।" p-2.

यद्यपि यह एक अस्पष्ट व्यक्तिनिष्ठ स्थिति है जो मनोभावों के अनुसार बदलती रहती है। अतः वैवाहिक सामंजस्य का एक मात्र सूचक किसी भी तत्व को नहीं माना जा सकता क्योंकि किसी भी व्यक्ति विशेष के वैवाहिक सामंजस्य के मूल्यांकन के लिए हमारे पास पर्याप्त संकेत होना जरूरी हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन में हर मोहन सिंह द्वारा निर्मित वैवाहिक समायोजन परीक्षण का प्रयोग किया है।

1.3.3 वैवाहिक समायोजन का ज्योतिषीय मूल्यांकन -

अन्य शास्त्रों की तुलना में ज्योतिष शास्त्र के दृष्टिकोण में एक आधारभूत विशेषता यह है कि ज्योतिष समष्टि को अधिक महत्व न देकर व्यष्टि को अधिक महत्व देता है ये शास्त्र समस्त ब्रम्हांड, जगत या मानव समाज को ध्यान में न रखकर व्यक्ति पर ही अपनी दृष्टि केन्द्रित रखता है । दाम्पत्य सामंजस्य का विचार ज्योतिषीय आधार पर वर वधू की प्रकृति अभिरुचि एवं मनोवृत्ति के आधार पर जन्म कालिक ग्रहों और उनके प्रभावों के सापेक्ष किया जाता है ।

यह विचार की हिन्दू धर्म शास्त्र केवल रुढ़ीवादी प्रवृत्तियों और संकीर्ण धारणाओं के प्रश्रय देता है नितांत मिथ्या है । सुखी दाम्पत्य के जिन आधारभूत पक्षों में ज्योतिष शास्त्र में विचार किया जाता है वे निम्न लिखित प्रकार हैं ।

1. उत्तम स्वास्थ्य - लग्न एवं लग्नेश के आधार पर
2. समुचित शिक्षा- पंचम एवं पंचमेश, दशम् एवं दशमेश एवं बुद्धि के आधार पर इस परिप्रेक्ष्य में गुरु भी विचारणीय है ।
3. दीर्घायु- लग्नेश, अष्टमेश
4. उत्तम चरित्र - चतुर्थ , चतुर्थेश, सप्तम, सप्तमेश
5. अच्छा भाग्य - हिन्दू धर्म पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार करता है पूर्व जन्म के कृत किन्तु अभुक्त कर्मों के परिणाम स्वरूप ही जीव को पुनर्जन्म धारण करना पड़ता है । वर्तमान जन्म में व्यक्ति के किये गये कार्य स्वयं उसके लिए कितने लाभदायी होंगे इसका विचार ही भाग्य का विश्लेषण करता है ।
6. संतान - पंचम भाव पंचमेश एवं शुक्र

7. सन्यास — सन्यास और गृहस्थ दोनों परस्पर विरोधी वृत्तियां हैं ।
गृहस्थ में प्रवृत्ति का कारण अनुराग और सन्यास में वैराग्य है ।
सन्यास के लिए भोगों का त्याग अनिवार्य है और गृहस्थ के लिए
भोगोपभोग अनिवार्य है ।

ज्योतिष शास्त्र मूलतः इस आधार पर व्यक्ति की मनोवृत्तियों का इस
संदर्भ में विश्लेषण करता है कि व्यक्ति का आत्म केन्द्रण किसी रूप में उसे
अपने सामाजिक वातावरण से दूर होने की ओर प्रवृत्त तो नहीं करता । दम्पति
के लिए दो में से किसी एक का आत्म केन्द्रित व अंतर्मुखी होना कुण्ठा का
कारण बन सकता है ।

पुनश्च ज्योतिष विज्ञान होने के नाते व्यक्ति में दो प्रकार के गुण दोष
की अवधारणा देता है । एक प्रत्यक्ष दूसरे अनुमेय । प्रत्यक्ष का विचार विवेक
बुद्धि से संभव है किन्तु अनुमेय (अप्रत्यक्ष) गुण दोषों के विचार हेतु न तो
वैज्ञानिक और न मनोवैज्ञानिक पद्धतियां उपलब्ध हैं । इस बिन्दु का विचार
करने का प्रयास केवल ज्योतिष शास्त्र में किया गया है ।

वैवाहिक समायोजन को प्रभावित करने वाले तत्व -

1. पति — पत्नी की विवाह पूर्व की सुसंगत सामाजिक — सांस्कृतिक
पृष्ठभूमियां
2. पति — पत्नी के समान तथा अनुकूल व्यक्तित्व लक्षण
3. पति — पत्नी के बीच सद्भावना पूर्ण यौन — संबंध
4. अनुकूल विवाहोत्तर परिस्थितियां
5. पति — पत्नी की भूमिका तथा दर्जा — समूह के प्रति दोनों के अनुकूल
दृष्टिकोण
6. पत्नी के नौकरी — समूह के प्रति पति — पत्नी के अनुकूल दृष्टिकोण

...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...

7. पति — पत्नी का शैक्षिक स्तर और वैवाहिक सामंजस्य
8. पति — पत्नी का आय स्तर और वैवाहिक सामंजस्य
9. पति — पत्नी का व्यवसायिक दर्जा और वैवाहिक सामंजस्य
10. नौकरी की अवधि और वैवाहिक सामंजस्य
11. नौकरी का ढांचा और वैवाहिक सामंजस्य
12. विवाह की किस्म और वैवाहिक सामंजस्य
13. विवाह की अवधि और वैवाहिक सामंजस्य
14. परिवार की बनावट और वैवाहिक सामंजस्य
15. नौकरी की संतुष्टि और वैवाहिक सामंजस्य
16. पति — पत्नी के कर्तव्य और वैवाहिक सामंजस्य

मानवीय संबंध चाहे किसी भी प्रकार के क्यों न हों इनका समुचित व व्यापक अध्ययन उनके उसी वातावरण व व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवेश में किया जाना ही उचित होता है । क्योंकि व्यक्ति जिस वातावरण में रहता है अथवा जिस पर्यावरण का निर्वाह करता है या उसी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है विशेषकर वैवाहिक संबंधों में तो यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है । विवाह एक प्रत्यक्ष व जटिल घटना होने के साथ-साथ इसमें कुछ व्यक्ति निष्ठ वस्तुनिष्ठ व अन्तर्ग्रथित पहलू भी होते हैं जो विभिन्न तरीके से वैवाहिक जीवन को व एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । पति —पत्नी का आपसी संबंध सभी स्तरों (शारीरिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक)पर होता है इस संबंध का समझने के लिए सभी पहलुओं का अध्ययन करना अनिवार्य होता है । कोई भी अध्ययनकर्ता वैवाहिक सामंजस्य को तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि वह उसको सभी पहलुओं का ठीक से अध्ययन न कर ले तथा परिस्थितियों व घटनाओं को जो उनके वैवाहिक सामंजस्य में तनाव या अवरोध पैदा करती हैं या वे कौन सी परिस्थितियां हैं जो वैवाहिक सामंजस्य के बढ़ाने में प्रवृत्त हैं व सहायक हैं । विवाह में संघर्ष का उल्लेख करते हुए *बर्गलर (1949)* लिखते हैं कि "सभी सुखी परिवार एक दूसरे से मिलते जुलते हैं पर एक दुखी परिवार अपने

आप में अपने ही ढंग से दुखी होता है " इस संदर्भ में बर्गलर आगे लिखते हैं " निःसंदेह यह सत्य है फिर भी यह तथ्य है कि समस्त वैवाहिक दुख इन तीन वर्गों में से किसी एक या एक से अधिक रूप में आते हैं कथनीय और सामान्य।" p-3.

कपूर प्रमिला (1976) ने अपने अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले । इन्होंने कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक सामंजस्य के आधार पर इन महिलाओं को दो वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में वे महिलाएं सम्मिलित हैं जिनके जीवन में वैवाहिक सामंजस्य या कुसामंजस्य उनके नौकरी करने से पूर्व ही घटित हो चुका था। द्वितीय वर्ग में वे महिलाएं आती हैं जो अपने विवाहित जीवन में सुमंजस्य या कुसामंजस्य घटित होने से पूर्व ही नौकरी कर रही थी।

1. वे महिलाएं जो विवाह के पूर्व नौकरी करती थी लेकिन जिन्होंने तब तक नौकरी नहीं की जब तक कि उन्होंने अपने विवाहित जीवन में कुसामंजस्य का मुख्य कारण उनका नौकरी करना ही था।

2. वे महिलाएं जिनके मामलों में वैवाहिक कुसामंजस्य इस सीमा तक पहुँच गया था कि वे अब ये महसूस करने लगी थी कि वे अपने पतियों के साथ अब और अधिक नहीं रह सकती। साथ ही जिन्होंने नौकरी इस विचार से कर ली थी कि वे स्वतंत्र रूप से रहने योग्य हो सकें और बाद में उन्होंने अपने पतियों से संबंध विच्छेद कर लिया था उन्होंने पहले पति से संबंध तोड़ा और नौकरी करनी शुरू की इस उप समूह की महिलाओं को घर व बाहर दोनों ही भूमिकाओं का अनुभव नहीं सहना पड़ा क्योंकि इन्होंने उस समय नौकरी आरंभ की जब वे अपने पतियों को छोड़ चुकी थी । इस तरह इनके मामले में वैवाहिक सामंजस्य का कारण नौकरी न होकर अन्य पहलुओं का पारस्परिक प्रभाव था।

3. वे महिलाएँ जिनके विवाहित जीवन में कुसामंजस्य किसी न किसी कारण से नौकरी के पूर्व से ही विद्यमान था लेकिन नौकरी करने के बाद भी वे अपने पतियों के साथ ही रह रही थी फिर स्वाभावतः कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं उन्हें या तो पतियों से संबंध विच्छेद करना पड़ा या उनके साथ ही रहना पड़ा।

(अ) वे महिलाएँ जिनके मामले में वैवाहिक कुसामंजस्य उनके नौकरी करने के पूर्व ही आ चुका था जो फिर भी अपने पतियों के साथ रहती थीं लेकिन जिनकी नौकरी ने उनके वैवाहिक सामंजस्य में सुधार दिया और धीरे-धीरे जिन्होंने अपने विवाहित जीवन में मेल मिलाप और सामंजस्य का अनुभव किया।

(ब) वे महिलाएँ जिन्होंने विवाह से पूर्व चाहे नौकरी की हो या नही की हो लेकिन विवाह के पश्चात नौकरी नहीं की तथा अपने वैवाहिक संबंधों में कुसामंजस्य प्राप्त कर लेने के बाद भी जिन्होंने किसी न किसी कारण से नौकरी शुरू की। इस वर्ग की महिलाओं को भी अगले दो उपवर्गों में बांटा गया।

1. वे महिलाएँ, जो नौकरी करने से पूर्व ही अपने विवाहित जीवन में भली भाँति समंजित थीं और जिनके मामलों में नौकरी ने उनके विवाहित जीवन को सुखी एवं मधुर बनाया।
2. वे महिलाएँ जो नौकरी करने से पूर्व वैवाहिक रूप से सुसंगठित थी, लेकिन नौकरी कर लेने के उपरांत जिन्होंने अपने विवाहित जीवन में कुसामंजस्य का अनुभव किया।

द्वितीय वर्ग में वे महिलाएँ सम्मिलित थीं जो अपने विवाहित जीवन में सामंजस्य या कुसामंजस्य आने से पूर्व जो महिलाएँ नौकरी में थीं, चाहे वे

नौकरी अपने विवाह से पहले कर रही हों या विवाह के बाद करने लगी हों, तात्पर्य यह है कि ये महिलाएँ काम करने लगीं तो अपने विवाहित जीवन में न सुसमंजित हो पायी और न ही कुसमंजित ही हो पायी। इस वर्ग की महिलाओं को भी दो समूहों में बाँटा गया —

1. वे महिलाएँ जिन्होंने नौकरी करने से पूर्व अपने विवाहित जीवन में सुसमंजस्य या कुसमंजस्य नहीं अनुभव किया था। क्योंकि वे अपने विवाहित जीवन के आरंभ से ही नौकरी में लगी थी और बाद में उनका विवाहित जीवन भली भाँति सुसमंजित हो गया।
2. वे महिलाएँ जिन्होंने नौकरी करने से पूर्व ही अपने विवाहित जीवन का सुसमंजस्य अनुभव कर लिया था और बाद में जो अपने विवाहित जीवन में असमंजित थीं।

1.4 उद्देश्य -

1. वैवाहिक जीवन में समायोजन का ज्ञान प्राप्त करना ।
2. नवदम्पतियों के वैवाहिक जीवन का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन करना ।
3. नवदम्पति के वैवाहिक समायोजन का ज्योतिषीय मूल्यांकन करना ।
4. नवदम्पति (महिलों) के वैवाहिक जीवन से संबंधित मनोवृत्ति ज्ञात करना ।
5. नवदम्पति (पुरुषों) के वैवाहिक जीवन से संबंधित मनोवृत्ति ज्ञात करना ।

1.5 पूर्व संबंधित अनुसंधानात्मक साहित्य -

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पिछले 50 वर्षों में भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में जितने महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने में आये हैं उतने परिवर्तन इससे पूर्व कभी देखने में नहीं आए। इस परिवर्तन की प्रक्रिया का परिणाम ये है कि भारतीय नारी अपने परंपरागत परिवेश से बाहर निकलकर काम धन्धे व व्यवसाय के क्षेत्र में भी आगे आने लगीं हैं। भारत में समाज के मध्यम वर्गीय कामकाजी महिलाओं के इस नये उभरते हुए वर्ग के विकास में कई तत्वों और शक्तियों का योगदान रहा है। भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक स्वतंत्रता उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों का एक परिणाम होने के साथ-साथ एक साधन भी रही है। शिक्षित भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक स्वतंत्रता उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों का एक परिणाम होने के साथ-साथ एक साधन भी रही है। शिक्षित भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक स्थिति के बारे में *हाटे (Hate 1930 पृ. 162)* द्वारा किये गये शोध से यह ज्ञात हुआ कि उनकी आर्थिक अवस्था और वैयक्तिक सामाजिक दर्जे में गहरे और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। उनके निष्कर्ष ये बताते हैं कि जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति भारतीय नारी के बदले दृष्टिकोण ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके तौर तरीकों को भी प्रभावित किया है।

भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति के प्रति बदले इस रुख के बारे में बताते हुए *देसाई (1957)* लिखती है। " अब नारी को न तो मात्र बच्चा जनने की एक मशीन और न ही घर की एक दासी ही माना जाता है। उसने एक नया दर्जा, एक नई सामाजिक महत्ता प्राप्त कर ली है।" *P-253*.

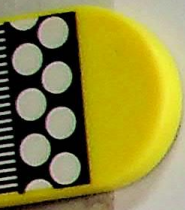
इसी संबंध में अधिकृत विद्वान *दुबे* का कथन है "समकालीन भारतीय समाज में नारी के स्थान और उसकी भूमिका के बारे में प्रचलित मान्यतायें धीरे-धीरे बदल रही हैं जिसके अब स्पष्ट संकेत मिलने लगे हैं। आधुनिक

शिक्षा प्राप्ति के बढ़ते सुअवसर, बढ़ती भौगोलिक तथा व्यवसायिक गतिशीलता तथा नये आर्थिक ढांचों का उदय ही इस प्रवृत्ति के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है ।" p- 202.

नये आर्थिक ढांचे का विकास दो चरणों में हुआ । पहले चरण में शिक्षित नारी को नौकरी और विवाह के बीच एक को चुनना पड़ा जिन्होंने ने नौकरी को चुना उनमें से अधिकांश को विवाह और पारिवारिक जीवन से वंचित रहना पड़ा दूसरे चरण में केवल नौकरी अथवा केवल विवाह के प्रश्न को छोड़ दिया गया और नौकरी एवं विवाह दोनों की मिली जुली भूमिकाएं निभाने का आम प्रचलन हुआ ।

हिन्दू फेमिली इन ट्रांजीशन की चर्चा करते हुए *कापडिया* लिखते हैं कि "परिवार को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं का नौकरी करना है जो शिक्षा द्वारा तथा आज के आर्थिक दबावों के कारण संभव हो सका । दूसरे विश्व युद्ध से पहले तक महिलाओं के लिए कोई भी वेतन वाली नौकरी करना अपमान जनक समझा जाता था । आज तो पुरानी पीढ़ी के लोग भी यह चाहते हैं कि शिक्षित बहुएं परिवार की आय बढ़ाने में सहायता दें ।" p- 99.

पाश्चात्य देशों में भी शिक्षित विवाहित महिलाओं का नौकरी करना कोई बहुत पुरानी बात नहीं है। गूडे (Goode 1965 पृ. 76) बताते हैं कि संभावतया इस शताब्दी के मोड़ पर गरीबी से विवश हो नौकरी करने वाली महिलाओं के सिवा अन्य कम ही ऐसी महिलाएँ थी जो काम धन्धा करती थीं मगर पहले से कहीं अधिक महिलायें काम करने लगी हैं। जिससे कि वे परिवार के रहन – सहन का स्तर ऊंचा कर सके अथवा इसलिये भी कि वे काम करने की इच्छा रखती हैं ।



...
...
... १०२ १ ...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

११-१) ...

...
...
...
...
...
...
...
...
...

कोलम्बिया विश्वविद्यालय में " नारी शक्ति " पर आयोजित एक सम्मेलन में " वर्क इन द लाइव्स ऑफ मैरिड वूमन "विषय पर बोलते हुए (Feldmen 1958 पृ. 94) ने कहा — "ये अपेक्षतया एक नवीन घटना का प्रतिनिधित्व करती है । मध्यम वर्ग की काम-काजी पत्नी अब एक सक्षम आर्थिक मनोवैज्ञानिक राजनैतिक और सामाजिक शक्ति है। उसकी नवीनता उसकी संख्या और परिवार व समाज पर जिसकी वह एक अंश है उसके गहरे मनोवैज्ञानिक सामाजिक आर्थिक प्रभाव अब निरीक्षण का तकाजा रखते हैं।"

कामकाजी महिलाओं के वैवाहिक सामंजस्य का अध्ययन

अमेरिका में विवाहित महिलाओं के नौकरी करने की समस्या ने समाजशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित किया है। (Nye & Hoffman) ने मिलकर विवाहित कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर किये गये अध्ययनों को "दि इम्प्लायड मदर इन अमेरिका (1963)" नामक पुस्तक के रूप में संकलित किया है। इन अध्ययनों में यह जानने के लिए कि माँ व पत्नी के नौकरी के होने से विवाहित और पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर क्या प्रभाव पड़ता है । कामकाजी और गैरकामकाजी महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अन्य कई अध्ययन भी किये हुए हैं जिनमें कामकाजी और गैरकामकाजी पत्नियों के वैवाहिक सामंजस्य की तुलना की गई है । इन अध्ययनों से अनेक परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों का परिचय मिलता है।

हैवमैन (Have man) और वेस्ट (West) 1952 ने पाया कि कामकाजी महिलाओं में गैर कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा तलाक की दर ऊंची है । एक अध्ययन में Nye ने पाया कि यदि माँ एक काम पर लगी है तो उस स्थिति में वैवाहिक सामंजस्य का लेखा जोखा अधिकतर पारस्परिक असंतोष और खिन्नता को ही प्रगट करता है।

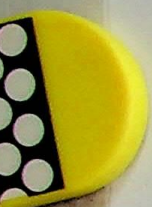
इसके विपरीत निम्नांकित निष्कर्ष सर्वथा भिन्न प्रवृत्ति के द्योतक हैं जब एक व्यक्ति आर्थिक रूप से पूर्णतया दूसरे पर निर्भर है और वह दूसरा व्यक्ति अपने और उसके तथा परिवार के जीवन का आर्थिक दायित्व अकेले वहन करने को बाध्य है।

पति पत्नी के आपसी संबंध पर पत्नी के नौकरी के प्रभाव के बारे में चर्चा करते हुए बोमैन (Bowman.1954) ने भी इसी बात का समर्थन दिया, यह कहा जाता है कि "(पत्नी के) नौकरी करने से पति पत्नी के आपसी संबंध और घनिष्ठ बनते हैं। इसके फलस्वरूप पुरुष और उसकी समस्याओं को स्त्री भली भांति समझ पाती है।" P-88

जैफकॉट (Japhcott) सीयर (Seear) और स्मिथ (Smith) (1962) ने यही मत प्रकट किये हैं " पति और पत्नी के बीच साझेदार घनिष्ठतर होती जाती है और कुछ लोगों का विश्वास है कि विवाहित नारी का काम काज होना अच्छे संबंध को बिगाड़ना तो दूर, अपितु उन्हें सुधारने में सहायक होता है "। P-171.

रौसी (1964) ने भी इसी मत की पुष्टि की है। वे लिखती हैं कि " मेरा यह विश्वास है कि पत्नी के पुनः अध्ययनरत होने और नौकरी पेशों में लगने से विवाहित जीवन को अधिक सुदृढ़ और सम्पन्न बनाया जा सकता है। "

लेकिन कुछ समस्याओं से ये भी पता चलता है कि कामकाजी और गैर कामकाजी पत्नियों के वैवाहिक सामंजस्य के बीच कोई अंतर नहीं है लॉके (Locke) और मैकप्रैंग (mackaprang) लिखते हैं कि " वे पत्नियाँ जो पूर्ण कालिक नौकरी करती हैं और वे जो अपना पूरा समय घर के कामों में लगाती हैं उनके वैवाहिक सामंजस्य के बीच कोई गहरा अंतर इस अध्ययन में नहीं पाया जाता। " P-536



...
...
...

...
...
...
... १११ ...

...
...
... १११ ...

...
...
...

...
...
...
... १११ ...

महर्षि विश्वामित्र

उपलब्ध शोध साहित्य में वैवाहिक संबंधों में सामंजस्य की समस्या के बारे में किया गया विश्लेषण केवल पाश्चात्य समाजों के विशेषतः अमेरिका के संबंध में उपलब्ध है । इन अध्ययनों में कामकाजी तथा गैरकामकाजी महिलाओं के वैवाहिक सामंजस्य के ढांचे की आपसी तुलना का प्रयास किया है । फिर भी प्रस्तुत अध्ययन में न केवल प्रत्येक वर्ग के नवदम्पतियों के वैवाहिक समाजयोन का अध्ययन न केवल मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया बल्कि वैवाहिक समाजयोन का अध्ययन ज्योतिषीय आधार पर किया गया ।

भारत में वैवाहिक सामंजस्य संबंधी अध्ययन कुल मिलाकर नाम मात्र को ही हुए हैं । यहाँ इन अध्ययनों के अभाव का एक सम्भाव्य कारण यह भी है कि इस देश में समाज शास्त्र के विषयों का अध्ययन अतिविलम्ब से प्रारंभ हुआ और वह पहले उन्हीं समस्याओं पर ज्यादा केन्द्रित रहा जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण जान पड़ी तथा जो देश की अधिकांश जनसंख्या से जुड़ी थी । वैवाहिक संबंधों के बारे में अध्ययन की कमी इस तथ्य से भी अच्छी तरह स्पष्ट हो सकती है कि भारतीय समाज का ढांचा परंपरागत और कतिपय सुव्यवस्थित सामाजिक आदर्शों पर आधारित था अतः यह समस्या न केवल पृष्ठभूमि में दबी रही । विवाहित जीवन में सामंजस्य की समस्या पहले शायद इसलिए भी दबी रही कि स्त्री और पुरुष सम्भवतः आपसी संघर्षों व मतभेदों का हल अपने विवाहित जीवन के परंपरागत ढांचे में ढूँढ निकालते ।

औद्योगीकरण, शहरीकरण और धर्म निरपेक्षता के कारण लोगों के दृष्टिकोण और मूल्यों में सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हुए हैं । शिक्षित महिलाओं के दृष्टिकोणों में विशेषकर विवाह के संबंध में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये । बम्बई के युनिवर्सिटी स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स एण्ड सोशियोलॉजी में सम्पन्न हुए चार अध्ययनों जिसमें से दो हाटे द्वारा (1930 व 1946) एक मर्चेंट (1930) तथा एक देसाई (1945) द्वारा किये गये हैं— से महिलाओं की स्थिति और उनके दृष्टिकोण में हाल में हुए परिवर्तन की इस प्रक्रिया की एक झलक

मिलती है । अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने यह पाया कि स्त्रियों के निजी दर्जे और उनकी आर्थिक स्थिति में गहरे और महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं । मर्चेन्ट ने यह पाया कि विवाह को एक निजी मामला मानने की धारणा बहुत जोर पकड़ रही है तथा इसके बारे में धार्मिक अवधारणा तेजी से बदल रही है ।

देसाई ने लिखा है— अधिकाधिक महिलाएं अब अपने आत्मसम्मान और व्यक्तित्व के विकास को जीवन का लक्ष्य मानने लगी हैं । आज हिन्दू समाज के दो आधार स्तंभ सांस्कारिक विवाह और संयुक्त परिवार अब शिथिल पड़ रहे हैं ।

हाटे ने जिन व्यक्तियों का अध्ययन किया है उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ पति पत्नी के स्वभाव और जीवन के समान उद्देश्यों में अनुरूपता को (Compatibility) को सुखी जीवन की कसौटी मानने का सुझाव दिया है । ऐसी कसौटियां सामने रखना भी महिलाओं के विवाह के बारे में बदलते बिचारों का एक संकेत है ।

पति पत्नी के पारस्परिक संबंधों तथा वैवाहिक जीवन से की जाने वाली अपेक्षाओं और मांगों के बारे में जो बिचार रखती हैं उनकी केस हिस्ट्रियों हिन्दुओं से पता चलता है । इनमें से बहुसंख्यक महिलाएं अपने पतियों से साझेदारी के संबंध चाहती हैं और विवाह द्वारा अपनी भावनात्मक, शारीरिक, सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की व्यक्तिगत संतुष्टि चाहती हैं । वे अपने दायित्वों से ज्यादा अपने विशेषाधिकारों पर जोर देती हैं । कपूर (1960) इससे स्पष्ट होता है कि विवाह एवं वैवाहिक संबंध के प्रति उनके दृष्टिकोण में निश्चित और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं ।



प्राचीन पाणिनीय

इस प्रकार आज पति - पत्नी दोनों ही एक दूसरे से व अपने दाम्पत्य जीवन से भी विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षा रखते हैं । विवाहित जीवन का सुखी होना या दुखी होना आज मुख्यतः पति -पत्नी के पारस्परिक संबंधों पर केन्द्रित है और अपनी भावनात्मक सुरक्षा के लिए दोनों ही परस्पर आश्रित रहने लगे हैं । ऐसी स्थिति शहरी शिक्षित एकल परिवारों में विशेष देखी गई है तथा शिक्षित कामकाजी पत्नियों दम्पतियों में तो और भी अधिक पायी गई है ।

आज जब विवाह से इतनी अधिक अपेक्षाएं व मांग की जाने लगी है तो इनकी पूर्ति में कमी होने से निराशा व कुण्ठा उत्पन्न होती है जो कि मतभेद व मनमुटाव का आधार भूत कारण बन सकती है और यह स्थिति वैवाहिक समायोजन की समस्या को जन्म दे सकती है ।

अमरीकी समाज के संक्रातिकाल में उपस्थित वैवाहिक समायोजन की बढ़ती हुई बाधाओं की व्याख्या करते हुए सैट (Sait) लिखते हैं -" आज के इस संक्राति युग की उलझने और तनाव आधुनिक जीवन की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियां तथा जटिलतायें और अंततः व्यक्तित्व और व्यक्तिगत मनोभावों और संवेदनाओं पर पड़ने वाले दबाव ये सब मिलकर वैवाहिक सांमंजस्य की समस्याओं को बढ़ावा देते हैं।" 1938, P- 582.

Ballard Reish, Deborah S. and Weigel Danial J. (1999) ने अपने अध्ययन "कम्युनिकेशन प्रोसेस इन मेरिटल कमिटमेण्ट एन इन्टीग्रेटिव एप्रोच" में इस बात का अध्ययन किया है कि परस्पर संवाद वैवाहिक संबंधों में समायोजन के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । इनका अध्ययन वैवाहिक संबंधों को बनाए रखने में संवाद की भूमिका के संबंध में है जिसमें इन्होंने कामकाजी दम्पतियों के वैवाहिक संबंधों के स्थायित्व के संबंध में अध्ययन किया है ।

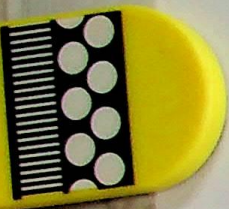


Turgeon, Lyse, Julien and Dion Eric (1998) ने अपने अध्ययन "टेम्पोरल लिन्केजेज बिटवीन वाइक्स परस्यूट एण्ड हसबैण्ड्स विड्रॉल ड्यूरिंग मैरिटल कान्फ्लिक्ट" में अपने अध्ययन के आधार पर विवाह पश्चात उत्पन्न होने वाले विवादों में दम्पतियों के परस्पर द्वन्द्व एवं संवाद के महत्व का निरीक्षण किया है। साथ ही विवाह के पश्चात पति एवं पत्नी के व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन सुखी एवं निराश दम्पतियों के व्यवहार की तुलना करते हुए किया है।

Sastry, Jaya (1999). (*Duke U, Dept of Sociology, Durham, NC*) ने अपने अध्ययन हाउस होल्ड स्ट्रक्चर, सेटिस्फेक्शन एण्ड डिस्टेस इन इंडिया एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स ए कम्पेरिटिव कल्चरल एक्जामिनेशन" में पारिवारिक संरचना के आधार पर दम्पतियों के बीच सन्तुष्टि एवं असन्तुष्टि का सर्वेक्षण किया है। इस सर्वेक्षण में उन्होंने भारतीय सन्दर्भों में 2500 न्यादर्श एवं 1839 अमेरिकी नागरिकों को न्यादर्श रूप में अपने अध्ययन में समिलित किया है। इसी अध्ययन में अभिभावकों एवं बच्चों के परस्पर संबंधों के आधार पर सन्तुष्टि के स्तर का अध्ययन किया ।

White, James M. (1999) ने अपने अध्ययन *Work Family Stage and Satisfaction With Work family Balance* में 2757 न्यादर्शों के आधार पर व्यवसाय परिवार एवं (कैरियर) भविष्य के संबंध में तीन परिकल्पनाओं की रचना की है। अध्ययन के आधार पर इन्होंने कार्य के घंटे एवं संतुष्टि के स्तर विषयक परिकल्पनाओं के आधार पर कनाडा के संदर्भ में अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है।

Huston, Ted L. May (2000). "दि सोशल इकोलॉजी ऑफ मैरिज एण्ड अदर इन्टीमेट यूनियन्स" में वैवाहिक एवं अन्य आत्मीय संबंधों के परस्पर संबंधित आँकड़े प्रस्तुत करते हुए वैवाहिक एवं सामाजिक संबंधों में समायोजन को संबंधों के विस्तृत परिदृश्य में समझाने का प्रयास किया है। इस अध्ययन में



पत्नियों एवं पतियों दोनों के व्यक्तिगत विश्लेषणों, दोनों के परस्पर संबंधों के विश्लेषण, को सामाजिक समष्टि के अंग के रूप में स्वीकृत करते हुए इनका विश्लेषण किया।

Bonds, Jennifer M. and Nicks, Sandra D. (1999) ने अपने अध्ययन "सैक्स बाई एज डिफरेंस इन कपल्स एप्लाइंग फॉर मैरिज" में दंपतियों के आयु के आधार पर संतुष्टि सीमा का एवं संबंधों के स्थायित्व का अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन मूलतः समाज शास्त्रीय अध्ययन है।

Davila, Joanne ; Karney Benjamin R. and Brabudbury, Thomas N. (1999) ने अपने अध्ययन "अटैचमेंट चेन्ज प्रोसेसेस इन दि अर्ली इयर्स आफ मैरिज" में चार प्रकार के प्रतिदर्शों के आधार पर लगाव में परिवर्तन का अध्ययन किया है। नव दंपति एवं प्रौढ़ दंपतियों के मध्य परस्पर लगाव एवं लगाव में परिवर्तन को रेखांकित किया है।

Schutz, Astrid (1999) ने अपने अध्ययन "सेल्फ सर्विंग बायसेज़ इन आटोबायोग्राफिकल एकाउन्ट्स ऑफ़ कान्फ्लिक्ट्स इन मैरिड कपल्स" में स्वाभाविक होने वाले व्यक्ति परक विवादों को एकत्रित करके उनका अध्ययन प्रस्तुत किया। इनके अध्ययन में यह बात सामने आती है पति एवं पत्नी दोनों ही अपने परस्पर व्यवहार को अपनी आवश्यकताओं एवं आहत भावनाओं के आधार पर सही ठहराने का प्रयास करते हैं तथा दूसरे के व्यवहार को कष्ट दायक तथा असहनीय सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यह अध्ययन मूलतः आत्म केंद्रित प्रकार के व्यक्तियों के दांपत्य संबंधों पर आधारित है।

Sokolski, Dawn M. and Hendrick, Susan S. (1999) ने अपने अध्ययन "फास्टेयरिंग मैरिटल सैटिस्फैक्शन" में वैवाहिक संतुष्टि पर व्यक्तिगत परस्पर तथा वातावरणीय तत्वों के प्रभावों को रेखांकित किया है तथा 160 विवाहित युगलों के अध्ययन के माध्यम से संबंधों के स्तर में विविधता को स्पष्ट किया।

Sussman , Linn M. and Alexander , Charlene M. (1999) नें अपने अध्ययन " हाउ रिलीजियोसिटी एण्ड एथैनिसिटी इफैक्ट मैरिटल सैटिस्फैक्शन फॉर ज्यूइस क्रिश्चियन कपल्स " में धार्मिकता, साँस्कृतिक एवं अन्य समूह आधारित गतिविधियों के आधार पर वैवाहिक संतुष्टि का अध्ययन किया है एवं यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि विभिन्न संतुष्टि का स्तर भिन्न भिन्न होते हुए समेकित रूप में दंपतियों के मध्य संतुष्टि के स्तर में विशेष अंतर प्राप्त नहीं होता है।

Weigel , Daniel J. and Ballard – Reisch, Deborah. (1999) नें अपने अध्ययन "यूजिंग पेयर्ड डाटा टू टेस्ट मॉडल्स आफ रिलेशनल मेन्टेनेन्स एण्ड मैरिटल क्वालिटी" में मात्र पत्नियों की संतुष्टि की सीमा के आधार पर युगल के संतुष्टि, परस्पर समर्पण तथा प्रेम का व्यवहार संबंधी अध्ययन करते हुए वैवाहिक संबंधों के गुणात्मकता का विश्लेषण किया है।

Aminabhav, Vijayalaxmi, A. and Kulkarni Vidya R. (2000) ने अपने अध्ययन " मैरिटल एडजस्ट्मेंट आफ वर्किंग वूमैन एण्ड हाउस वाइव्स में "23 से 55 वर्ष आयु सीमा की 50 कामकाजी महिलाओं एवं 50 गृहणियों के वैवाहिक समायोजन का अध्ययन किया है इनके अध्ययन में सी.जी. देशपाण्डे 1988 द्वारा निर्मित वैवाहिक समायोजन मापनी का प्रयोग करके यह निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। कि कामकाजी महिलाओं में वैवाहिक का स्तर घरेलू महिलाओं के वैवाहिक समायोजन के स्तर से अधिक होता है। और प्रोढ़ वर्ग की महिलाओं जो एकल परिवार से संबंधित का संबंधित हैं का समायोजन स्तर आयु वर्ग की महिलाओं तथा संयुक्त परिवार की महिलाओं की अपेक्षा अधिक होता है।

Hraba Joseph ; Lorenz, Fredrick O. and Pachacova, Zdenka, (2000) ने अपने अध्ययन फ़ैमिली स्ट्रेस ड्यूरिंग दि चेक ट्रांसफ़ारमेशन में आर्थिक दबाव के वैवाहिक संबंधों पर प्रभाव को स्पष्ट किया है। इन्होंने अपने



[The page contains extremely faint, illegible text, likely bleed-through from the reverse side. The text is arranged in several paragraphs across the page.]

अध्ययन में 740 (Czech) परिवारों को सम्मिलित किया है। तथा सामाजिक न्याय एवं आर्थिक समस्या एवं परिवार में प्रमुख स्थान की होड़ के प्रभाव को वैवाहिक संबंध की स्थिरता को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक माना है।

Buunk, Bram P. and Mutsares, Wim (1999) ने अपने अध्ययन दि नेचर आफ दि रिलेशनशिप बिटबीन रिमैरीड इन्डीविजुअल्स एण्ड फार्मर स्पाउसेज एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन मैरिटल सैटिस्फैक्शन में 290 पुनर्विवाहित युगलों के वैवाहिक संबंधों तथा उन पर पूर्व पति/पत्नी के प्रति मैत्री भाव घृणा अथवा निरंतर लगाव के प्रभाव का अध्ययन दिया है। तथा ये निष्कर्ष प्राप्त किए हैं कि विभिन्न मामलों में पुनर्विवाहित युगलों के बीच संतुष्टि के स्तर में अत्याधिक अंतर प्राप्त होता है।

Amato Paul R. and Rogers, Stacy J. (1999) ने अपने अध्ययन "डू एटीट्यूड्स टुवर्डस डाइवोर्स इफैक्ट मैरिटल क्वालिटी" में 1980-83 के मध्य 1291 तथा 1983 से 1988 के मध्य 1032 व्यक्तियों के वैवाहिक समायोजन में व्यक्तियों की व्यवहारिक परिवर्तनशीलता के प्रभाव तथा इस परिवर्तन के कारण होने वाले संतुष्टि के स्तर में परिवर्तन का विश्लेषण प्रस्तुत किया है तथा इस अध्ययन को परिकल्पनात्मक एवं राष्ट्रीय संदर्भों में टेलीफोन इंटरव्यू के माध्यम से सत्यापित किया है।

Davila, Joanne, Bradbury, Thomas N. and Fincham, Frank. (1998) ने अपने अध्ययन "नेगेटिव इफैक्टिविटी एज ए मिडियेटर आफ दि एसोसिएशन बिटवीन एडल्ट अटैचमेंट एण्ड मैरिटल सैटिस्फैक्शन" में प्रौढ़ दम्पतियों के मध्य परस्पर लगाव तथा वैवाहिक सन्तुष्टि का परिकल्पनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

McCarthy, Barry W. (1998) ने अपने अध्ययन "सैक्स इन दि फर्स्ट टू इयर्स ऑफ मैरिज" में विवाह के प्रारंभिक एक या दो वर्षों में यौन संबंधों की

विशिष्ट भूमिका का अध्ययन किया है, तथा वैवाहिक समायोजन में यौन संबंधी द्वंद यथा विवाहेत्तर संबंध, यौन असंतुष्टि तथा संतानोत्पत्ति के प्रभाव को रेखांकित किया है। इसके अतिरिक्त पति व पत्नि दोनों के यौन पद्धति में अंतर के प्रभाव का भी विश्लेषण किया है।

Wilkie, Jane Riblett ; Ferree, Myra Marx and Red Cliff, Katheyn Strother (1998) ने अपने अध्ययन " जैण्डर एण्ड फेयरनेस : मैरिटल सैटिस्फैक्शन इन टू अर्नर् ए कपल्स " में 382 कामकाजी युगलों के मध्य कार्य विभाजन के आधार पर परस्पर संबंधों का विश्लेषण किया है तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किये हैं कि स्वावलंबी युगलों में लिंग भेद के स्थान पर कार्य का स्तर तथा कार्य विभाजन अधिक प्रभावी होता है।

Glenn , Norval D. (1998) ने अपने अध्ययन " दि कोर्स ऑफ मैरिटल सक्सैस एण्ड फेलियर इन फाइव अमेरिकन टैन इयर मैरिज कोहोरोट्स " में दस वर्षों से वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे युगलों का अध्ययन किया तथा अंतर्वर्गीय निरीक्षणों के आधार पर विभिन्न बिंदुओं यथा रोजगार, स्वावलंबन आदि के वैवाहिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक 50 वर्षों में एक समान होते हैं।

Ruvolo, Ann P. (1998) ने अपने अध्ययन " मैरिटल वैल बीइंग एण्ड जनरल हैपीनेस आफ न्यूली वैड कपल्स रिलेशनशिप अक्रास टाइम " में विवाह पश्चात के प्रारंभिक दो वर्षों में लिये गये इंटरव्यू के द्वारा यह विश्लेषण करने का प्रयास किया है कि विवाह के प्रारंभिक वर्षों में महिलाओं का संतुष्टि स्तर अपेक्षाकृत अधिक तथा बाद के वर्षों में महिलाओं का संतुष्टि स्तर अपेक्षाकृत अधिक तथा बाद के वर्षों में क्रमशः कम होता जाता है जबकि पुरुषों के मामले में ऐसा नहीं होता।

...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

Schumm, Walter R. , Webb , Farrell J. and Bollman , Stephen R. (1998) नें अपने अध्ययन " जैण्डर एण्ड मैरिटल सैटिस्फैक्शन : डाटा फ्राम दि नेशनल सर्वे ऑफ फैमिलीज़ एण्ड हाउस होल्ड्स " में अपने अध्ययन मे यह बताया है कि युगलों के मध्य असंतुष्टि के मामले में स्त्रियाँ प्रायः कम असंतुष्ट पायी गयीं। यह अध्ययन अपने समस्त पूर्ववर्ती अध्ययनों के विपरीत निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

Gottman , John Mordechai , and Levenson, Robert Wayne. (1999) नें अपने अध्ययन " हाउ स्टेबल इज मैरिटल इन्टरैक्शन ओवर टाइम " में विवाह के प्रारंभिक 4 वर्षों में वैवाहिक संतुष्टि का मापन किया तथा स्त्रियों को अपेक्षाकृत अधिक स्थिर पाया, फिर चाहे प्रभाव सकारात्मक हो या नकारात्मक।

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किये गये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव जीवन के तीन पक्ष होते हैं :- ज्ञान को एकत्र करना , एक दूसरे तक पहुंचाना और ज्ञान में वृद्धि करना । यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो कि वास्तविकता के समीप आने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है । किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है । यदि हम संबंधित साहित्य के संक्षेपण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो शोध कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना रहती है। अथवा वह पुनरावृत्त भी हो सकता है । वस्तु तथा संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरी की तरह होगा । इसके बिना सही दिशा में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है। जब तक कि उसे ज्ञात न हो कि इस क्षेत्र में कितना कार्य संपन्न हुआ है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं ।

प्रत्येक अनुसंधान कर्ता के लिये यह अत्यंत आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किये गये शोध कार्यों के अध्ययन द्वारा अपनी समस्या से संबंधित

साहित्य की सूचनाओं से भली भाँति अवगत हो। इस प्रकार पूर्व अनुसंधानों का अध्ययन समस्या को साधन प्रदान करता है।

शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिये समानता प्राप्त करता है। शोध कर्ता पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ निर्मित करता है एवं पूर्व अनुसंधानों का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण कर एक दिशा का संकेत देता है।

डॉ. कपूर प्रमिला 1976 (भारत में विवाह एवं कामकाजी महिलायें) ने अपने अध्ययन में पाया की वे महिलाये जो विवाह पूर्व नौकरी कर रहीं थी विवाह पश्चात् मुख्यतः आर्थिक आवश्यकता वश नौकरी जारी रखी और इस तरह अपने विवाहिक जीवन के आरंभ से ही नौकरी में रहीं और अपने वैवाहिक जीवन में नितंत सुसमंजित पाई गई और अपनी दोहरी भूमिका (घर तथा नौकरी की) निभाने में सफल रही ।

कपूर प्रमिला (1976) ने वैवाहिक समायोजन के अध्ययन में यह पाया कि कुसमंजित काममाजी पत्नियां अपने पति की आय में वृद्धि करना चाहती थी इसलिये विरोध के बावजूद भी इन्होंने नौकरी करना जारी रखा ।

कपूर प्रमिला (1976) अध्ययन में यह पाया की पति पत्नी के पारिवारिक पृष्ठ भूमि अलग-अलग होने से उनके समाजीकरण एवं संस्कृतिकरण में भी अंतर था जिसने की पति पत्नी के भिन्न व बेमेल व्यक्तित्व के ढाचे को जन्म दिया और अन्य तत्वों की अपेक्षा उनके जीवन के ढाचे का यह सांस्कृतिक, वैयक्तिक अंतर ही था जिससे दोनों के बीच मतभेद व तनाव उत्पन्न हुये । इससे उनमें वैवाहिक सामंजस्य नहीं आ सका और उनका विवाहित जीवन पूर्णतः असफल हो गया ।

पूर्व संबंधित अनुसंधानात्मक साहित्य -

(ज्योतिषीय अध्ययनों के संबंध में)

मनोविज्ञान विषयान्तरगत वैवाहिक समायोजन के क्षेत्र में अनुसंधानात्मक परिप्रेक्ष्य में बहुत ही कम अध्ययन होने के कारण केवल किंचित मात्र ही साहित्य उपलब्ध है। किन्तु वर्तमान युग में विवाह संस्था व विवाह के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आने के कारण इस विषय पर विशेष ध्यान आकर्षित किया जा रहा है।

इस विषय में ज्योतिष के क्षेत्र में हालांकि कई अध्ययन हुए हैं व पर्याप्त साहित्य भी उपलब्ध है। वर्तमान युग चूंकि विज्ञान का युग है अतः ज्योतिष को भी विज्ञान के रूप में स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया गतिशील है। अतः जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिये अब ज्योतिष की भी महती भूमिका से भी इंकार नहीं किया जा सकता। वर्तमान में विवाह के प्रति बदलते दृष्टिकोण के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही निष्कर्ष दृष्टिगोचर हो रहे हैं जिनके कुछ मनोवैज्ञानिक अनुसंधानात्मक अध्ययन व ज्योतिष निष्कर्ष अग्र वर्णित हैं।

प्राचीन भारतीय ज्योतिष ग्रंथों में वैवाहिक समायोजन का भिन्न विषय के रूप में अध्ययन नहीं किया गया है। परंपरा के अनुसार ज्योतिष सहायता विवाह पूर्व ही ली जाती है ताकि पहले से ही यह ज्ञात किया जा सके कि दम्पति के बीच में संबंध मधुर होंगे कि नहीं। विवाह के पश्चात इस सामाजिक संबंध को पारंपरिक एवं धार्मिक महत्व देते हुए पालन करना आवश्यक माना गया है। अतएव वैवाहिक समायोजन जैसे विषय पर दम्पतियों के जीवन के आधार पर विशिष्ट अध्ययन प्राप्त नहीं होता। आधुनिक संदर्भ में इन प्राचीन ग्रंथों में बताया गया है कि सुखी दाम्पत्य जीवन या दुखी दाम्पत्य जीवन के बारे में किन ग्रह योगों के माध्यम से जाना जा सकता है। तथा यह भी जाना जा सकता है कि परस्पर समायोजन की कितनी संभावनाएं हैं।

आधुनिक काल में कुछ ज्योतिषियों ने इस संबंध में सीमित अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। ये अध्ययन प्राचीन परंपरागत एवं शास्त्रीय सन्दर्भों का संकलन प्रतीत होते हैं। नवीन विचारधाराओं एवं दृष्टिकोण ने इस अध्ययन को समीचीन बनाने का प्रयास अवश्य किया है तथापि भारतीय परंपरावादि समाज के अंग और प्रतिनिधि होने के नाते ज्योतिर्विदों ने प्रायः वर्तमान सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों एवं वैश्विक संबंधों को नजरअंदाज ही किया है। वैवाहिक समायोजन से संबंधित आधुनिक एवं प्राचीन ज्योतिष साहित्य को निम्न लिखित अनुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है :-

- 1 — रघुनंदन प्रसाद शर्मा गौड़ — दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष
- 2 — रघुनंदन प्रसाद शर्मा गौड़ — स्त्री जातक
- 3— बी. वी. रमन :- विभिन्न ग्रंथों एवं शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित जन्म पत्रिकाओं के अध्ययन

बी. वी. रमन एवं इनके अध्ययन संस्थान ने ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिक प्रकाश डालने का प्रयास किया। इनके द्वारा क्षेत्र एवं विषय के आधार पर अध्ययनों को वर्गीकृत नहीं किया गया किन्तु विभिन्न पहलुओं को छूते हुए आधुनिक वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक धारणाओं को आधार बनाते हुये कुछ श्रेष्ठतम निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये।

ज्योतिष मार्तण्ड भोजराज द्विवेदी, दैवज्ञ (शिरोमणी — पत्रिका अज्ञात दर्शन) श्री द्विवेदी संस्कृत एवं प्राच्य विद्याओं के स्थापित विद्यवानों में से एक माने जाते हैं। इनके जोदपुर स्थित श्री विद्या अनुसंधन केन्द्र में वेद, ज्योतिष एवं तंत्र की प्राचीन पद्धतियों का विश्लेषण एवं अध्ययन किया जाता है। संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका के माध्यम से डॉ. द्विवेदी के प्रकाशित शोध पत्रों में उन्होंने समकालीन भारतीय समाज की समस्याओं को सांस्कृतिक परंपराओं के परिदृश्य में मनोवैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषित किया है।

1952

1

श्री द्विवेदी के वैवाहिक संबंधों के बारे में विभिन्न ग्रन्थ यथा ज्योतिष और विवाह योग, ज्योतिष और दाम्पत्य आदि विभिन्न ग्रन्थ एवं दाम्पत्य जीवन से संबंधित ज्योतिष योगों पर विभिन्न संगोष्ठियों में पठित एवं प्रकाशित शोध पत्रों में दाम्पत्य एवं उसकी समस्याओं का सुन्दर विवेचन किया गया है ।

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली का संबंध मंत्र एवं तंत्र विधाओं से विशेष रूप से जाना जाता है किन्तु इन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को ज्योतिष में मिश्रित करते हुए एक नवीन पद्धति विकसित की है ।

डॉ. श्रीमाली न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी एक चर्चित एवं लोकप्रिय व्यक्तित्व रहें हैं। इनके संज्ञान में आने वाले विभिन्न मामलों के आधार पर इन्होंने नये ज्योतिष नियमों को विकसित करने का प्रयास किया है ।

डॉ. उमेश पुरी ज्ञानेश्वर एवं भारतीय ज्योतिष अनुसंधन केन्द्र मेरठ (जिसके श्री ज्ञानेश्वर निर्देश है) में आधुनिक ज्योतिष के संबंध में विभिन्न अध्ययन किये गये हैं । श्री ज्ञानेश्वर के द्वारा लिखित नक्षत्र विज्ञान गोचर ज्योतिष तथा ज्योतिषीय समस्याओं और समाधानों पर लिखी गई विभिन्न पुस्तकों में शोध परख जानकारी प्राप्त होती है ।

डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी कृत दाम्पत्य सुख (ज्योतिष के झरोखे से) एक विशिष्ट शोध परक ग्रंथ है उक्त ग्रंथ में दाम्पत्य जीवन पर मंगल के प्रभाव को विशेष महत्व दिया गया है। ज्योतिष में मंगल को रक्त का कारक माना जाता है । यह पृथ्वी तत्व ग्रह है । तात्पर्य यह कि सूर्य से विपरीत दिशा में यह पृथ्वी का निकटतम ग्रह है यदि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो मंगल ग्रह से आने वाले विकिरण पृथ्वी को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं अतएव स्वभाविक है कि मनुष्यों पर इसका प्रभाव अधिक ही होगा । इसे क्रूर ग्रह की संज्ञा दी गई है । संभव है कि ऐसा इसलिये किया गया है क्योंकि यह

उत्तेजना प्रदान करने वाला ग्रह है । सात्म्य रूप में यह जीवनीय प्रबलता प्रदान करने वाला ग्रह है वैवाहिक समायोजन में यौन संतुष्टि का विशिष्ट स्थान है जो कि जीवनीय शक्ति एवं उत्तेजना पर ही निर्भर करता है अतः मंगल को निश्चित ही विशिष्ट स्थान प्राप्त हो चाहिये । डॉ. चतुर्वेदी का ग्रंथ तत्संबंधी शोध परक ग्रंथ है ।

वाराणसी प्राचीन काल से ही प्राच्य विद्याओं के अध्ययन का केन्द्र रहा है । वाराणसी विश्वविद्यालय के डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र ने ज्योतिष की समस्याओं पर विशिष्ट शोध कार्य किया है । इनके ग्रंथ— "ज्योतिष—उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर" में दाम्पत्य समायोजन संबंधी तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । डॉ. मिश्र ने भी शास्त्रीय सिद्धांतों को स्व अनुभव के आधार पर आधुनिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया अतः कतिपय स्थानों पर इनके विश्लेषण विवादास्पद भी हो गये ।

ज्योतिष संबंधी शोध परक कार्यों में डॉ. कृष्ण श्रीमाली अग्रणी नाम है चूंकि विवाह एक ऐसी संस्था है जो भारतीय संदर्भ में स्थायी एवं अत्याज्य है । अतः पारंपरिक ज्योतिष में वैवाहिक समायोजन का विवेचन प्रस्तुत शोध के अनुरूप कठिनता से ही प्राप्त होता है । डॉ. राधकृष्ण के द्वारा किये गये कार्या भी इस अध्ययन में चयनित रूप से किये गये हैं ।

डॉ. महेन्द्र नाथ केदार एवं इनके भारतीय प्राच्य एवं इनके भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान दिल्ली में भी विवाह समय वैवाहिक समायोजन दाम्पत्य सुख इत्यादि विषयों से संबंधित ज्योतिष अध्ययन किये जा रहे हैं । दिल्ली के ही डॉ. राजेन्द्र धमीजा (संपादक सौभाग्य दीप पत्रिका) के द्वारा भी उक्त विषयों में पर्याप्त शोध परक सामग्री प्रस्तुत की जा रही है ।



अध्याय - 2

विधि विज्ञान

2.1 परिकल्पना

2.2 न्यादर्श

2.3 उपकरण

2.3.1 मनोवैज्ञानिक उपकरण (वैवाहिक समायोजन परीक्षण)

2.3.2 ज्योतिषीय उपकरण (विभिन्न जन्म पत्रिकाएं)

विधि विज्ञान

2.1 परिकल्पना -

अनुसंधान के प्रक्रम में समस्या के कथन के तुरंत पश्चात् एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है । परिकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन प्रायः संभव नहीं है । एक अच्छे अनुसंधान में उपकल्पना का निर्माण एक केन्द्रीय पथ है । इसका कारण यह है कि समस्या का स्वरूप अधिकतर अत्यधिक विषम, विस्तृत तथा विसरित (Diffused) रहता है । ऐसी स्थिति में उसके व्यापक क्षेत्र में घटाना तथा न्यून (Narrow down) करना अत्यंत आवश्यक होता है जिससे अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट, सूक्ष्म तथा गहन हो सके । यदि परिकल्पना द्वारा ऐसा नहीं किया जाता तब अनुसंधानकर्ता संबंधित समस्या के अध्ययन के लिए इधर-उधर भटकता रहता है । क्योंकि परिकल्पना के अभाव में समस्या से संबंधित आवश्यक तथ्यों अथवा चरों का उसे स्पष्ट तथा विशिष्ट ज्ञान नहीं होता । इस कारण अनुसंधान में परिकल्पना की रचना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है । ऐसा करने से अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आँकड़ों के संकलन में ठीक दिशा (Direction) मिलती है तथा उपयुक्त वैध व शुद्ध निष्कर्षों के अनुमान में सुविधा तथा सरलता रहती है ।

परिकल्पना, उपकल्पना अथवा पूर्व कल्पना का तात्पर्य उन पूर्वानुमानों से है जो कि साधारणतः प्रचलित मान्यताओं पर आधारित होती है यह एक ऐसा पूर्व विचार है जो कि समस्या के संबंध में बना लिया जाता है इसके द्वारा कार्य करने में सहायता मिलती है । परिकल्पना केवल उपकल्पना ही नहीं वरन् यह मनन, चिंतन, तर्क एवं अनुभव पर आधारित होती है ।

अच्छे अनुसंधान में उपकल्पना का निर्माण एक केन्द्रीय पक्ष है ।

कोई भी वैज्ञानिक अध्ययन समस्या से प्रारंभ होता है और समस्या भी ऐसी जो हल हो सके । ऐसी समस्या का संभावित उत्तर एक कथन के रूप में दिया जाता है । यह कथन ऐसा होना चाहिये कि जिसकी परीक्षा की जा सके अर्थात् इसके संबंध में यह निश्चित करना संभव हो सके कि वह कथन सत्य है अथवा असत्य । ऐसे कथन को उपकल्पना कहते हैं । अतः एक उपकल्पना परीक्षा योग्य कथन है जो किसी समस्या का हल हो सकता है ।

यदि उपयुक्त प्रयोग के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि संबंधित उपकल्पना सत्य है, जब हम कह सकते हैं कि वह उपकल्पना उस समस्या को हल करती है, जिसके संबंध में उसका निर्माण किया गया था । यदि उपकल्पना असत्य सिद्ध होती है तो हम कहते हैं कि वह समस्या का हल नहीं करती है । इसे स्पष्ट करने के लिए हम उदाहरणस्वरूप, एक समस्या लें, शतरंज का अच्छा खिलाड़ी कौन हो सकता ? तो कदाचित् हमारी उपकल्पना होगी कि शतरंज का अच्छा खिलाड़ी वह हो सकता जिसकी बुद्धि लब्धि (I.Q.) अधिक हो तथा जिसमें एकाग्रता की अधिक क्षमता हो। पर्याप्त प्रदत्तों का एकत्रीकरण तथा उनकी व्याख्या, उपकल्पना का स्थायित्व कर सकते हैं । ऐसी अवस्था में हम कह सकते हैं कि हमने समस्या का हल खोज लिया है, क्योंकि हम प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं । लेकिन समस्या का हल पूर्ण नहीं है क्योंकि अनेक अन्य ऐसे घटक हैं जो एक व्यक्ति को शतरंज का अच्छा खिलाड़ी बनने में योगदान देते हैं । अतः हमें और प्रयोग करने होंगे तथा एक विस्तृत उपकल्पना का निर्माण करना होगा ।

दूसरी अवस्था यह हो सकती है कि हमारी उपकल्पना सिद्ध न हो । ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट है कि हमारी समस्या का समाधान नहीं हुआ है । और हम सूचना प्राप्त करने में असफल रहे हैं ।

शोध की प्रक्रिया का द्वितीय सोपान परिकल्पनाओं का प्रतिपादन करता है। परिकल्पना शोध समस्या का संभावित समाधान होती है यह शोध प्रक्रिया के नियोजन के लिए दिशा तथा आधार प्रदान करता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्रियों ने परिकल्पना की परिभाषा विभिन्न प्रकार से ही है।

जे. सी. टाउनसेण्ड (1953) के अनुसार— “उपकल्पना किसी समस्या का प्रस्तावित उत्तर है।”

गुडे तथा हॉट (1952) के अनुसार — उपकल्पना वह कथन है कि जो बताता है कि हम क्या देखना चाहते हैं । उपकल्पना आगे की ओर देखती है । यह एक तर्कपूर्ण वाक्य है जिससे वैधता की परीक्षा की जा सकती है । यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी ।”

करलिंगर (1968) के अनुसार — “उपकल्पना दो या अधिक चरों के संबंधों का अनुमान संबंधी कथन है।”

मैकगुइन (1969) के अनुसार — “परिकल्पना दो या अधिक चरों के कार्यक्रम संबंधों का कथन है , इस कथन की जाँच की जा सकती है ।”

वेब्सटर डिक्शनरी के अनुसार — “एक प्रस्ताव, अवस्था, या सिद्धान्त जिसकी कल्पना कदाचित बिना विश्वास के की गई है, जिससे कि उसके तार्किक परिणामों को जाना जा सकें, और इस प्रकार ज्ञात अथवा ज्ञातव्य तथ्यों से संबंध स्थापित किया जा सके, उपकल्पना कहलाता है ।”

वान डैलन के अनुसार - “उपकल्पना एक शक्तिशाली आकाशदीप के समान है जो अनुसंधानकर्ता का मार्ग प्रकट करती हैं ।”

...
...
...
...

...
...

...
...
...
...

...
...

...
...

...
...
...
...

...
...

एडवर्डस - ने भी परिकल्पना की ठीक ऐसी ही थोड़ी और अधिक विस्तृत परिभाषा दी है । **एडवर्डस** के अनुसार, परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के सम्भाव्य सम्बन्ध के विषय में कथन होता है, यह एक प्रश्न का ऐसा प्रयोग सम्बन्धी उत्तर होता है, कि जिससे चरों के सम्बन्ध का पता लगता है ।

ब्राउन तथा घिशैली - ने परिकल्पना की एक विस्तृत परिभाषा इस प्रकार दी है: परिकल्पना तथ्यात्मक तथा संप्रत्यात्मक तत्वों तथा उनके सम्बन्धों के विषय में एक ऐसा प्रस्ताव होता है कि जिसका उद्देश्य ज्ञात तथ्यों तथा अनुभवों से परे के ज्ञान तथा जानकारी में वृद्धि करना होता है ।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि परिकल्पना दो या अधिक चरों के अनुमान पर आधारित तर्क पूर्ण, कार्यक्रम , प्रस्तावित और परीक्षण योग्य कथन है जो यह बताता है कि हम क्या देखना चाहते हैं जांच के बाद यह कथन सही भी हो सकता है और गलत भी। समस्या के पश्चात् उपकल्पना निर्धारित करनी चाहिए । उपकल्पना प्रयोगों या अध्ययन को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है । उपकल्पना और समस्या में प्रत्यक्ष संबंध है । उपकल्पना वैज्ञानिक अध्ययन में उसी प्रकार सहायक है जैसे अंधेरे में जा रहे व्यक्ति के लिए प्रकाश आवश्यक है । जिस प्रकाश की अनुपस्थिति में व्यक्ति रास्ता भूल सकता है उसी प्रकार उपकल्पना की व्यक्ति अध्ययन से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में रास्ता भूल सकता है। अतः कहा जा सकता है कि उपकल्पना वैज्ञानिक अध्ययन के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है ।

परिकल्पना कथन के प्रकार

1. **सार्वभौमिक उपकल्पना** - इस प्रकार की वे उपकल्पनाएं हैं जिनमें अध्ययन किया जाने वाला सम्बन्ध सभी चरों में रहता है । यह सम्बन्ध सभी समय और स्थानों पर रहता है । इस प्रकार की उपकल्पना का उदाहरण है

— यदि चूहों को बाँए मुड़ने पर पुरस्कृत किया जाता है तो वे टी-भूलभूलैया में भी बाँए मुड़ेंगे ।

2. **अस्तित्वात्मक उपकल्पना** - इस प्रकार की उपकल्पना वह है जिसमें जिस सम्बन्ध का उपकल्पना में कथन है, वह कथन कम से कम एक केस में सही रहता है । इस प्रकार की उपकल्पना का उदाहरण है — यदि कम से कम एक चूहा है और यदि उसे बाँए मुड़ने पर पुरस्कृत किया जाता है तो वह टी मेज में बाँई ओर मुड़ेगा । मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों में पहली उपकल्पना की अपेक्षा दूसरी उपकल्पना अधिक उपयोगी है ।

कथन (Statments) के स्वरूप के आधार पर उपकल्पनाओं को मुख्यतः तीन भागों में बाँट सकते हैं ।

1. **सकारात्मक** — इसमें परिकल्पना कथन सकारात्मक रूप में होता है — उदाहरणार्थ अभ्यास से सीखने में उन्नति होती है ।
2. **नकारात्मक** — इसमें परिकल्पना कथन नकारात्मक रूप में होता है ।
उदा.:- लड़के लड़कियों की अपेक्षा बुद्धिमान नहीं होते ।
3. **शून्य** — इस प्रकार की परिकल्पना की यह धारणा होती है कि स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण दो या दो से अधिक समूहों में कोई वास्तविक अंतर नहीं आता है वह तब तक संदेह से परे सिद्ध नहीं किया जाता सार्थक नहीं माना जा सकता । लड़के तथा लड़कियों की बुद्धि लब्धि में अंतर नहीं होता ।

परिकल्पना के कार्य

वैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक उत्तम परिकल्पना की रचना अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवश्यक होती है । इसका कारण यह है कि वैज्ञानिक अध्ययन में परिकल्पना की रचना का विशेष महत्व होता है, व परिकल्पना से अध्ययन कार्य को विभिन्न प्रकार की सुविधायें मिलती है ।

1. **मार्ग दर्शन** — परिकल्पना द्वारा अनुसंधान का मार्गदर्शन होता है । अनुसंधान की क्रियाओं की निश्चय उपकल्पना द्वारा ही होता है ।
2. **प्रमुख तथ्यों का चुनाव** — परिकल्पना द्वारा समस्या के सीमित हो जाने के कारण महत्वपूर्ण तथ्यों का चयन सरलता से हो सकता है किसी भी प्रत्यय से संबंधित अनेक परिवर्ती हो सकते हैं उपकल्पना द्वारा ही यह निश्चय हो जाता है कि अनुसंधानकर्ता को केवल परिवर्ती विशेष का ही अध्ययन करना है ।
3. **क्षेत्र का निर्धारण** — परिकल्पना द्वारा समस्या संकुचित हो जाती है तथा अध्ययन क्षेत्र निश्चित हो जाता है ।
4. **पुनरावृत्ति संभव होना** — परिकल्पना द्वारा ही किसी अध्ययन की पुनरावृत्ति अन्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा संभव होगी । वह अध्ययन के निष्कर्षों का निरीक्षण कर सकते हैं ।
5. **निष्कर्ष निकालने में सहायक** — परिकल्पना द्वारा ही सही निष्कर्षों पर पहुंचने में सहायता मिलती है । अनुसंधानकर्ता परिकल्पना द्वारा ही वांछित उद्देश्य को प्राप्त करता है ।

6. **एक व्याख्या के रूप में** - अज्ञात कारकों तथा चरों के सम्बन्ध में परिकल्पना एक व्याख्या प्रस्तुत करती है । एक समस्या के सम्बन्ध में जब तक परिकल्पना की रचना नहीं होती, तब तक समस्या के विभिन्न अंगों के सम्बन्धों का स्वरूप ठीक से ज्ञात नहीं होने पाता । अतः परिकल्पना की रचना इस अन्तराल तथा अभाव की पूर्ति करती है ।
7. **अनुसन्धान का प्रेरक** - अनुसन्धान कार्य में जब तक परिकल्पना की रचना नहीं होती, एक प्रकार की शिथिलता बनी रहती है, परन्तु जैसे ही एक उपयुक्त परिकल्पना की रचना पूर्ण हो जाती है, उससे अनुसन्धान कार्य को एक प्रकार का उद्दीपक प्राप्त होता है । ऐसे ही नवीन परिकल्पनायें नवीन अनुसन्धानों की प्रेरण-शक्तियां होती हैं ।
8. **पद्धति विकास में सहायक** - कभी-कभी परिकल्पना का स्वरूप ऐसा होता है कि उसके अध्ययन के लिए एक नवीन प्रकार की अध्ययन-पद्धति विकसित करने की आवश्यकता पड़ जाती है, अतः एक परिकल्पना का स्वरूप कभी-कभी एक नवीन अध्ययन पद्धति के विकास में सहायक रहता है ।
9. **प्रायोगिक प्रविधियों के मूल्यांकन की कसौटी के रूप में** - एक नवीन परि-कल्पना कभी-कभी परम्परागत प्रायोगिक प्रविधियों का भी मूल्यांकन करने में सहायक होती है । मान लिया हमारे अनुसन्धान का उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं के कारणों का पता लगाना है, व सड़क दुर्घटना के सम्बन्ध में एक परिकल्पना यह यही है कि सड़क दुर्घटनाओं का कारण दृष्टि सम्बन्धी ज्ञान इन्द्रिय की दुर्बलता होती है । तब यहां सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिये झाड़वरो की दृष्टि की तीक्ष्णता की जांच करना आवश्यक होता है । अब यदि इस सम्बन्ध में यह परिकल्पना प्रस्तुत की जाती है कि सड़क-दुर्घटना का कारण रात में सामने से आने वाली गाड़ियों के प्रकाश

के ड्राइवर की आंखों का अधिक चकाचौंध होना होता है, तब इस परिकल्पना की जांच के लिए ऐसी प्रायोगिक प्रविधि तथा उपकरण को विकसित करना पड़ेगा जिससे कि ड्राइवरों को प्रकाश के कारण चकाचौंध की मात्रा का मूल्यांकन किया जा सके । अतः नवीन परिकल्पनायें कभी-कभी नवीन प्रायोगिक प्रविधियों व यन्त्रों के विकास में सहायक होती हैं ।

10. **एक संगठनात्मक शक्ति के रूप में** - एक परिकल्पना एक घटना से सम्बन्धित अलग-अलग तथ्यों को एक सूत्र में संगठित करती है । अलग-अलग अनुसन्धानकर्ताओं के द्वारा एक घटना के सम्बन्ध में अलग-अलग तथ्य ज्ञात किये जाते हैं । नवीन परिकल्पनाओं की रचना से इस प्रकार के असंगठित ज्ञान को एक संगठित रूप दिया है और इससे सिद्धान्त की रचना में सहायता मिलती है ।

11. **तर्क-संगत आंकड़ों के संकलन में सहायता**- परिकल्पना केवल अध्ययन के क्षेत्र को ही सीमित नहीं करती है, बल्कि उससे सम्बन्धित तर्क-संगत आंकड़ों के संकलन में सहायता पहुंचाती है, तथा उन्हें दिशा प्रदान करती है ।

12. **चरों में विशिष्ट सम्बन्धों की जानकारी** - परिकल्पना की रचना से न केवल एक घटना से सम्बन्धित विशिष्ट चरों का पता लगता है, बल्कि उनके अध्ययन में उनके विशिष्ट साहचर्यात्मक सम्बन्ध का पता लगता है ।

13. **सिद्धान्त की रचना में सहायता** - जब किसी एक घटना से सम्बन्धित विभिन्न परिकल्पनाओं के आधार पर विभिन्न तथ्यों की प्रमाणित जानकारी उपलब्ध होती है, तब इन तथ्यों को एक संगठित रूप में परिवर्तित करने पर सिद्धान्त रचना में सहायता मिलती है ।

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...

परिकल्पनायें

1. नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
2. नवदम्पतियों के मध्य वैवाहिक समायोजन में ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
3. नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
4. हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
5. हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
6. मुस्लिम नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
7. मुस्लिम नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
8. सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

संस्कृत-
भाषा-
शिक्षण-
संस्थान-
द्वारा-
प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-संस्थान-द्वारा-प्रकाशित-

9. सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समयोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
10. ईसाई नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समयोजन के ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
11. ईसाई नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समयोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
12. जैन नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समयोजन के ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।
13. जैन नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समयोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

2.2 न्यादर्श

शोध समस्या का चयन कर लेने के पश्चात समस्या से संबंधित परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है जिसकी पुष्टि के लिए सामग्री एकत्रित करनी पड़ती है। अनुसंधान कार्य में ये सामग्रियां या तथ्य उसकी आधारशिला होती है । सामग्री एकत्रित करने के पूर्व यह भलीभांति विचार करना आवश्यक है कि अध्ययन में इकाइयां क्या और कितनी होंगी । इसके आधार पर संगठन या निर्देश या विधि का चुनाव किया जाता है ।

अनुसन्धान सम्बन्धी आंकड़ों के एकत्रीकरण के उपर्युक्त दो स्त्रोतों से सम्बन्धित दो पद्धतियां हैं — संगणना पद्धति, प्रतिचयन विधि । संगणना पद्धति में सम्पूर्ण जनसंख्या की समस्या इकाइयों का अध्ययन किया जाता है तथा

प्रतिचयन पद्धति में प्रतिदर्श को समष्टि का प्रतिनिधि मानकर प्रतिदर्श की सभी इकाइयों का अध्ययन किया जाता है । प्रतिदर्श समष्टि का ही एक भाग है जो समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है ।

प्रतिदर्श का अर्थ - प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिलम्ब रहता है ।

पी. वी. यंग के शब्दों में - " एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु चित्र (Miniature Picture) होता है ।

यदि समष्टि का स्वरूप सजातीय (Homogeneous) रहता है तब प्रतिदर्श के चयन में विशेष कठिनाई नहीं होती , परन्तु जब समष्टि का स्वरूप विषम जातीय रहता है तब प्रतिदर्श की इकाइयों के चयन के लिए प्रतिचयन (Sampling) प्रक्रिया का उपयोग करना होता है ।

गुडे तथा हॉट (1960) के अनुसार - " एक न्यादर्श बड़े समूह का छोटा प्रतिनिधि है । "

कॉब्सटन तथा काउडेन के अनुसार - " एक बड़े समग्र में से प्रतिदर्श लेकर उसका अध्ययन किया जा सकता है तथा वह प्रतिदर्श समग्र का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है तो हम सही निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं । "

इंगलिश और इंगलिश (1958) के अनुसार - प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधी होता है इसलिए प्रतिदर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिये वैध होता है ।

डैमिंग (1950) के अनुसार — प्रतिचयन सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का केवल एक अंश मात्र ही नहीं है, बल्कि यह वह विज्ञान या कला है जिसकी सहायता से उपयोग में लाये जाने वाले आंकड़ों की विश्वसनीयता को प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के द्वारा नियन्त्रण में रखा जा सकता है तथा उसका मापन भी किया जा सकता है ।

बोगार्डस (1954) के अनुसार — पूर्ण निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है ।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर प्रतिदर्श को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समूह का एक छोटे आकार का प्रतिनिधि ही प्रतिदर्श है जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए विश्वसनीय और वैध निष्कर्ष निकाले जाते हैं । साथ ही उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर ही प्रतिचयन की परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि प्रतिचयन प्रतिदर्शन चुनने की विधि है जिसमें पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव किया जाता है ।

प्रतिचयन के आधार पर प्रतिदर्श की इकाइयों का चुनाव किया जाता है । प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि प्रतिदर्श उस समष्टि का प्रतिनिधित्व करे जिससे प्रतिदर्श चुना गया है । चुने गये प्रतिदर्श में जब तक यह विशेषता नहीं होगी तब तक प्रतिदर्श के अध्ययन से प्राप्त परिणाम वैध और विश्वसनीय नहीं होंगे । जिस प्रकार से एक पानी की बाल्टी से यदि एक गिलास पानी निकाला जाए तो गिलास के पानी में वही विशेषताएं होंगी जो बाल्टी के पानी में है अतः गिलास का पानी बाल्टी के पानी का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है । अतिरिक्त प्रतिदर्श चुनते समय इस विशेषता को ध्यान में रखना आवश्यक है । इसके अतिरिक्त प्रतिदर्श चुनते

समय यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि चयनकर्ता के पक्षपात आदि का प्रभाव न पड़े । अध्ययनकर्ता के लिए यह भी आवश्यक है कि प्रतिचयन करने से पूर्व वह सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रकृति का अध्ययन कर ले । प्रतिचयनकरने से पहले प्रतिदर्श के आकार को निश्चित कर लेते हैं ।

प्रतिचयन के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार कर लेते हैं -

1. कम खर्च से अधिक से अधिक संरचना प्राप्त करना ।
2. कम समय में अध्ययन में पूर्ण कर लेना ।
3. संगणना विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्षों की जांच करना ।
4. परिशुद्ध और यथार्थ परिमाण प्राप्त करना ।
5. प्रतिचयन प्रसरण कम करना ।

अच्छे प्रतिचयन की विशेषताएं -

प्रतिचयन करते समय चयनकर्ता को यह चाहिए कि अध्ययन के लिए वह जो प्रतिदर्श चुने उसमें अच्छे प्रतिदर्श की अधिक-से-अधिक विशेषताएं हों । एक अच्छे प्रतिदर्श की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं -

1. **प्रतिनिध्यात्मक स्वरूप** - एक अच्छे प्रतिदर्श की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि प्रतिदर्श जिस जनसंख्या से चुना गया हो वह उस जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता हुआ होना चाहिए । दूसरे शब्दों में, चुने हुए प्रतिदर्श में वही विशेषताएं होनी चाहिए जो सम्पूर्ण जनसंख्या में विशेषताएं हैं ।
2. **उचित संख्या में अध्ययन इकाइयां** - एक अच्छे प्रतिदर्श में अध्ययन इकाइयों की संख्या कम-से-कम इतनी होनी चाहिए कि अध्ययन

इकाइयों के अध्ययन से सम्पूर्ण जनसंख्या से सम्बन्धित सभी सूचना प्राप्त हो जाए । अध्ययन इकाइयों की संख्या इतनी अधिक भी न हो कि अध्ययन समय और धन अधिक खर्च हो ।

3. विश्वसनीयता का उच्च स्तर - प्रतिदर्श इतना विश्वसनीय होना चाहिए कि प्रतिदर्श के अध्ययन से वही परिणाम प्राप्त हों जो सम्पूर्ण जनसंख्या के अध्ययन से प्राप्त परिणाम यदि विश्वसनीय है तो प्रतिदर्श को विश्वसनीय माना जा सकता है ।
4. इकाइयों के चुने जाने की बराबर सम्भावना - सम्पूर्ण जनसंख्या के प्रतिचयन करते समय इस बात की पूरी-पूरी सम्भावना होनी चाहिए कि सम्पूर्ण जनसंख्या से प्रत्येक इकाई के चुने जाने की सम्भावना बराबर है । जब इस आधार पर प्रतिदर्श चुना जाता है तब प्रतिदर्श में वहीं विशेषताएं रहती हैं जो सम्पूर्ण जनसंख्या में होती हैं ।
5. प्रतिचयन अभिनति रहित होना चाहिए - एक अच्छे प्रतिदर्श की यह भी एक प्रमुख विशेषता है कि अध्ययन इकाइयों का चयन पर अध्ययनकर्त्ता के पक्षपातों का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए । जब अध्ययन इकाइयों का चयन पक्षपात से प्रभावित होता है तब प्रतिचयन त्रुटिपूर्ण हो जाता है और प्रतिदर्श के अध्ययन से शुद्ध परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं ।
6. अध्ययन इकाइयों का अनुपात - सम्पूर्ण जनसंख्या में जिस प्रकार की सजातीय या विषम जातीयता है ठीक उसी प्रकार की सजातीयता या विषम जातीयता प्रतिदर्श में पाई जानी चाहिए । सम्पूर्ण जनसंख्या में सेक्स या आयु आदि का जो अनुपात है वही अनुपात प्रतिदर्श की इकाइयों में होना चाहिए ।

प्रतिचयन से लाभ -

1. **समय की बचत** - प्रतिदर्श पद्धति द्वारा अध्ययन करते समय चूंकि सम्पूर्ण जनसंख्या से केवल कुछ ही अध्ययन इकाइयां लेकर अध्ययन किया जा सकता है, अतः समय की बचत होती है ।
2. **धन की बचत** - जब सम्पूर्ण जनसंख्या के स्थान पर केवल कुछ ही इकाइयों का अध्ययन किया जाता है तब निश्चित रूप से आंकड़ों के संग्रह और कम इकाइयों के अध्ययन में धन की बचत होती है ।
3. **व्यापक अध्ययन** - प्रतिदर्श में सम्पूर्ण जनसंख्या की अपेक्षा इकाइयों की संख्या काफी कम होती है, अतः इनके व्यापक अध्ययन की सुविधा रहती है ।
4. **परिणामों की शुद्धता** - जब प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है अर्थात् उसमें वहीं विशेषताएं और गुण होते हैं जो सम्पूर्ण जनसंख्या में होते हैं तब प्रतिदर्श के अध्ययन से वहीं परिणाम प्राप्त होते हैं, जो सम्पूर्ण जनसंख्या के अध्ययन से प्राप्त होते हैं अर्थात् शुद्ध परिणाम प्राप्त होते हैं ।
5. **अध्ययन की सुविधा** - संगणना विधि की अपेक्षा प्रतिदर्श पद्धति में इकाइयों की संख्या कम होने से प्रशासकीय सुविधा रहती है । कम अध्ययन इकाइयों से परीक्षण आदि करवाना अपेक्षाकृत सरल होता है ।

6. **संगणना विधि की कठिनाइयों से छुटकारा -** प्रतिदर्श पद्धति द्वारा अध्ययन करते समय उन सब कठिनायों का सामना अध्ययनकर्ता को नहीं करना पड़ता है जिनका समाधान संगणना पद्धति में करना पड़ता है ।
7. **प्रयोगात्मक अध्ययन के लिए उपयुक्त -** प्रयोगात्मक अध्ययन बहुधा छोटे समूह पर ही किया जाते हैं तथा एक प्रयोग में अनेक प्रायोगिक दशाओं के लिए अनेक समूहों की आवश्यकता होती है । यह समूह अध्ययनकर्ता अपनी इच्छा से न चुनकर प्रयोग योजना के अनुसार प्रतिचयन द्वारा चुनता है ।
8. **विश्वसनीयता और बोधगम्यता -** प्रतिदर्शन पद्धति द्वारा प्राप्त परिणाम पूर्ण रूप से विश्वसनीय होते हैं । यह उतने ही विश्वसनीय होते हैं जितने कि संगणना पद्धति द्वारा प्राप्त परिणाम विश्वसनीय होते हैं । परिणाम बोधगम्य भी होते हैं । प्रतिदर्श पद्धति में अध्ययन-इकाइयों की संख्या और आंकड़ों की संख्या कम होने से उनका स्वरूप सरल और बोधगम्य होता है । प्रतिदर्श पद्धति के परिणामों की विश्वसनीयता की व्याख्या प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के आधार पर की जाती है ।
9. **शुद्धता विवेचना और प्रस्तुतीकरण की सुविधा -** प्रतिदर्श पद्धति के आधार पर जब किसी समस्या का अध्ययन किया जाता है तब निश्चित रूप से प्राप्त आंकड़ों और परिणामों को सरल ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है, आंकड़ों की शुद्ध विवेचना के लिए प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त को आधार माना जाता है । प्रसम्भाव्यता के आधार पर ज्ञात हो जाता है कि प्रतिदर्श द्वारा प्राप्त अध्ययनों में कितनी शुद्धता है ।

... ७ ...

... ८ ...

... ९ ...

... १० ...

न्यादर्श (प्रतिचयन) की तीन प्रमुख विधियां -

1. **प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन** - प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन में इकाईयों का चयन संयोगिक आधार पर किया जाता है । जिसके अंतर्गत समष्टि के प्रत्येक इकाई के चयन की समान सम्भाव्यता रहती है । इसकी तीन विधियां हैं लॉटरी विधि, ड्रम चक्र विधि, टिपिट की संयोगिता संख्याएं ।

2. **अर्द्ध सम्भाव्यता प्रतिचयन** - अर्द्ध सम्भाव्यता प्रतिचयन में प्रायः केवल प्रथम इकाई का चयन संयोग पर आधारित होता है । शेष इकाईयों का चयन फिर क्रमानुसार प्रतिचयन, स्तरानुसार प्रतिचयन, पुंजानुसार प्रतिचयन आदि के माध्यम से होता है ।

3. **अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन** - जब इकाईयों के चयन का आधार संयोग न रह कर सुविधा, अवसर, निर्णय आदि रहता है तो तब ऐसे प्रतिचयन को अप्रसम्भाव्यता चयन कहते हैं । अप्रसम्भाव्यता प्रतिचयन की अनेक विधियां हैं, खंड प्रतिचयन, उद्देश्यानुसार प्रतिचयन, विशेषज्ञानुसार प्रतिचयन आदि ।

प्रस्तुत शोध में समंको को एकत्रित करने के लिए न्यादर्श विधि को ही चुना गया है जो कि न केवल समय, धन और शक्ति की बचत की दृष्टि से वरन् अध्ययन को गहन बनाने निष्कर्षों की परिशुद्धता एवं प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से भी उपयुक्त हो ।

प्रस्तुत शोध कार्य में समंको को एकत्रित करने के लिए ~~नवदम्पतियों~~ के विभिन्न क्षेत्रों के नवदम्पतियों में से 300 स्त्रियों एवं पुरुषों अर्थात् 150 नवदम्पतियों को चुना गया । दम्पतियों से आशय उन युगलों से लिया गया जिनके विवाह को करीब सात वर्ष या उससे अधिक हुए हो । यह प्रयास किया

गया कि न्यादर्श प्रतिचयन में विभिन्न आयु वर्ग के दम्पति आ सकें। इनके अंतर्गत ये विभिन्न संस्कृतियों या धर्मों यथा हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन आदि सभी के दम्पतियों को सम्मिलित किया गया।

चयन प्रक्रिया में यह भी ध्यान रखा गया कि सभी आयु वर्गों अर्थात् उच्च, मध्य एवं लघु आयु वर्ग के प्रतिनिधि दम्पतियों का समावेश हो सके। न्यादर्श चयन में यह भी प्रयास किया गया कि पूर्णतः नगरीय अभिजात्य मानसिकता वाले दम्पति एवं ग्राम्य मानसिकता वाले अथवा ग्राम्य परिवेश में रहने वाले दम्पति सभी के प्रतिनिधि सम्मिलित किये जायें। प्रतिनिधि दम्पतियों का चयन यादृच्छिक (Random) चयन के आधार पर किया।

न्यादर्श तालिका

क्रमांक	नवदम्पति	हिन्दू	मुस्लिम	सिक्ख	ईसाई	जैन	योग
1.	30	30	30	30	30	30	150
2.	30	30	30	30	30	30	150
	योग						300

मनोवैज्ञानिक न्यादर्शों के संकलन हेतु श्री हरमोहन सिंह द्वारा निर्मित वैवाहिक समायोजन अनुसूचि का प्रयोग किया गया इस सूचि के द्वारा पति एवं पत्नी को अलग-अलग 10 प्रश्नों की प्रश्नावली दी गई एवं प्रत्येक प्रश्न के लिए इस प्रकार कुल 150 दम्पतियों को परीक्षण कर परिणामों का विश्लेषण किया गया।

पुनः पति एवं पत्नी दोनों के अलग-अलग प्राप्तांकों के आधार पर उनका वर्गीकरण अध्ययन किया गया। दोनों के समेकित प्राप्तांकों को औसत मान ज्ञात कर पुनः उनका वर्गीकरण किया गया।

ज्योतिषीय न्यादर्शों हेतु पति-पत्नी दोनों के ज्ञात जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान के आधार पर शास्त्रीय ज्योतिष में प्रचलित जन्म पत्रिका बनाई गई । पुनः ज्योतिष के फलित ग्रंथों में वर्णित एवं ज्योतिष में सर्वमान्य रूप से स्वीकार योगों के आधार पर 10 बिंदु मापनी का निर्माण किया । पुनः व्यक्तिगत प्राप्तांक एवं समेकित प्राप्तांको के आधार पर न्यादर्शों को वर्गीकृत किया गया ।

2.3 उपकरण

अनुसंधान समस्या से संबंधित परिकल्पना की रचना के पश्चात उसके परीक्षण के पश्चात उसके परीक्षण के लिए आवश्यक तथा तर्क संगत उपकरणों की आवश्यकता होती है । व्यवहार परक विज्ञानों में विशेषतः समाज शास्त्र तथा शिक्षा शास्त्र के क्षेत्रों में एक समस्या के अध्ययन व उपकरणों का स्वरूप दो प्रकार का होता है ।

1. प्राथमिक उपकरण 2. गौण उपकरण

1. **प्राथमिक उपकरण** - इस प्रकार का उपकरण स्वयं अनुसंधान कर्ता द्वारा अपने अध्ययन से संबंधित परिकल्पना के परीक्षण के लिए उपयोग किया जाता है इसलिए इस प्रकार का उपकरण अनुसंधान में मुख्य माना जाता है ।

2. **गौण उपकरण** - प्राथमिक उपकरण की सहायता के लिए जिन उपकरणों का उपयोग किया जाता है उन्हें गौण उपकरण कहते हैं ।

अनुसंधान कार्य में विश्वसनीय प्रदत्तों के संग्रह हेतु वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है । बहुत सी मनोवैज्ञानिक एवं अमनोवैज्ञानिक व प्रविधियों का विकास प्रदत्त संग्रह करने हेतु किया गया है । शैक्षिक अनुसंधानों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों में मनोवैज्ञानिक परीक्षण का विशेष स्थान है । मनोवैज्ञानिक परीक्षण वे उपकरण हैं जिनकी रचना एक दिये गए न्यादर्श के मानवीय व्यवहारों एवं आंतरिक गुणों का अध्ययन करने हेतु की गई है । इनके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व के कुछ मनोवैज्ञानिक पक्षों का वस्तुनिष्ठ विवरण प्राप्त होता है । जिसके आधार पर उसका गुणात्मक विश्लेषण किया जा सकता है ।

एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा (जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है) व्यवस्थित विधि द्वारा सूचनायें प्राप्त होती हैं यह एक विश्वसनीय मापन उपकरण है ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण वे उपकरण हैं जिनकी रचना एक दिये गए न्यादर्श के मानवीय व्यवहारों एवं आंतरिक गुणों का अध्ययन करने हेतु की गई है । इनके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व के कुछ मनोवैज्ञानिक पक्षों का विवरण प्राप्त होता है जिसके आधार पर उसका गुणात्मक विश्लेषण प्राप्त किया जा सकता है ।


एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण (जिसके लिए उसका निर्माण किया गया) व्यवस्थित विधि द्वारा सूचनायें प्राप्त होती हैं यह एक विश्वसनी मापन उपकरण है ।

2.3.1 मनोवैज्ञानिक उपकरण (वैवाहिक समायोजन परीक्षण) -

मनोवैज्ञानिक परीक्षण हेतु डॉ. हर मोहन सिंह 4. (मनोवैज्ञान विभाग आर. बी. एस. कॉलेज आगरा) द्वारा निर्मित वैवाहिक समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया है इस मापनी में प्रपत्र A पति के लिए एवं प्रपत्र B पत्नी के लिये

...

1



10

दिये गये प्रत्येक प्रपत्र में दम्पतियों के वैवाहिक जीवन से संबंधित 10 प्रश्न हैं जिनके लिए +10 से -10 तक अंक प्रदान किये गये दम्पतियों से व्यक्तिगत स्तर पर इन प्रश्नों का उत्तर अपनी सम्पूर्ण जानकारी एवं ईमानदारी पूर्वक देने के लिए कहा गया प्रत्येक को इस बात के लिए आश्वस्त किया गया कि उनके द्वारा किये गये उत्तरों का प्रयोग केवल शोध कार्य के लिए दिया जाएगा एवं उनके द्वारा दी गई जानकारी किसी भी रूप में अन्यत्र कहीं भी प्रकट नहीं की जावेगी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप के लिए अंकों में विभाजित किया गया है अर्थात् +10 अंक श्रेष्ठतम +1 अंक में कम अच्छा के लिए है प्रत्येक व्यक्ति ने प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों को स्वयं समझकर उत्तर दिये हैं। किन्तु प्रश्न के किसी शब्द के शाब्दिक अर्थ में शंका का निवारण शोध कर्ता द्वारा किया गया।

विश्वसनीयता- परीक्षण की विश्वसनीयता का निर्धारण स्पियरमैन ब्राउन प्रोफेसी फार्मूला के आधार पर किया गया है तथा परीक्षण की विश्वसनीयता की गणना दो महीने के अंतराल से की गयी जिसकी विश्वसनीयता .94 ज्ञात की गयी।

वैधता - परीक्षण की वैधता निम्न लिखित पद्धति के अंतर्गत स्वीकृत है।

1- अनुसूची में प्रतिदर्शों को इस प्रकार चयनित किया गया है कि उनका वितरण उच्च एवं निम्न प्राप्तियों के बीच 25 से अधिक न हो।

2- प्राप्त निष्कर्षों को व्यक्तिगत चर्चा के माध्यम से परीक्षण किया गया।

3- इस परीक्षण की वैधता हरमोहन सिंह वैवाहिक समायोजन अनुसूची के अंतर्गत माध्य के बीच अंतर मानक त्रुटि आदि के आधार पर जाँची गयी।

100



मानक - व्यक्तिगत प्राप्तांको के विवेचन को अधिक सार्थक बनाने के लिये इनकी व्याख्या विभिन्न पदों के अंतर्गत की गयी है। तथापि अंकों के बीच के अंतर को अत्यधिक महत्व प्रदान नहीं किया गया है।

2.3.2 ज्योतिषीय उपकरण (विभिन्न जन्म पत्रिकाएं) - ज्योतिषीय

परीक्षण हेतु भारतीय ज्योतिष पद्धति के अंतर्गत व्यक्ति के जन्म तिथि, जन्म समय, एवं जन्म स्थान के आधार पर जन्म पत्रिका का निर्माण किया गया। ज्योतिष के विद्वान सम्मत एवं प्रचलित ग्रंथों एवं सिद्धान्त को आधार मानकर पति एवं पत्नि के व्यक्तिगत तथा वरवधू मेलापक विधि के अनुसार अंक वितरित किये गये। ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुसार जन्म पत्रिका में व्यक्तिगत रूप से लग्न - लग्नेश, चतुर्थ - चतुर्थेश, पंचम - पंचमेश, सप्तम - सप्तमेश, नवम - नवमेश, दशम - दशमेश को विशेष महत्व पूर्ण माना जाता है। वैवाहिक समायोजन के संबंध में स्त्री के लिये सप्तम कारक गुरु एवं पुरुष के लिये सप्तम कारक शुक्र का भी विशेष महत्व है। प्राच्य ज्योतिष पद्धति में भी विवाह और वैवाहिक सुख का आकलन मंगल के आधार पर भी किया जाता है अतः मंगलीक दोष को भी गणना में विशेष स्थान दिया गया है। परस्पर संबंधों के विचार हेतु राशि भकूट एवं जन्म नक्षत्र के आधार पर गुण मैत्री का भी विशेष महत्व है। किन्तु ये दोनों ही सापेक्ष हैं अतः व्यक्तिगत अंकन में इन्हें स्थान नहीं दिया गया है, किन्तु समेकित गणना में इन्हें सम्मिलित किया गया है। भावों और ग्रहों की शुभ, सम, और अशुभ स्थिति के अनुसार शुभ स्थिति के लिये 10 अंक, सम के लिये 5 अंक, एवं अशुभ के लिये 0 अंक प्रदान किये गये हैं। स्त्री एवं पुरुष दोनों की जन्म पत्रिका में मंगलीक दोष होने अथवा दोनों ही पत्रिकाओं में मंगलीक दोष न होने की स्थिति में पूर्ण 10 (दस) अंक प्रदान किये गये। किन्तु दो में से एक में मंगलीक दोष होने पर एवं अन्य में न होने पर 0 (शून्य) अंक प्रदान किया गया है। गुण मैत्री हेतु 18 से कम गुण मिलान हेतु शून्य अंक, 18 से 22 गुण मिलान हेतु, 2.5 अंक, 23 से 26 हेतु 5 अंक एवं 26 अंक से अधिक हेतु 10 अंक प्रदान किये गये।

विश्वसनीयता - उक्त अनुसूची में मात्र उन्हीं ज्योतिषीय योगों को स्वीकृत दिया गया है जो विभिन्न पद्धतियों में एक समान रूप से मान्य है । एवं उन योगों को सम्मिलित नहीं किया गया है जिनके विषय में मानों शंका है अथवा प्रमाण उपलब्ध नहीं है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण या परिमापन आज विज्ञान का आधार बना है । ब्रम्हाण्ड में स्थित ग्रह, नक्षत्र, तारागण, पृथ्वी का व्यास, आयाम, ग्रहों का स्वरूप, आकर्षण-विकर्षण एवं सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र, बुधादि ग्रहों का उदयास्त निरूपण अक्षरशः वैज्ञानिक सीमांकन में ही शतप्रतिशत खरा उतरा है । ग्रहण, धूमकेतु का उदयास्त सर्वविदित है व्यक्ति का जीवन, व्यक्तित्व आकार-प्रकार, संतान बंधु-बाधव, शिक्षा, व्यवसाय, रोग आदि शतप्रतिशत पूर्णतः प्रमाणित है ।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणंते कार्याऽकार्यं व्यवस्थितौ ।

अर्थात् शास्त्र ही प्रमाण होते हैं उचित अनुचित का बोध कराने में शास्त्रों की परिगणना में षड्शास्त्र (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष) प्रामाणिक हैं अतः ज्योतिष शास्त्र पूर्णतः प्रामाणिक शास्त्र हैं

वैधता - ज्योतिषीय परीक्षण में प्राप्त निष्कर्षों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण से प्राप्त निष्कर्षों से तुलनात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण दिया गया तथा शांत एवं व्यवहारिक रूप में प्राप्त जानकारीयों के आधार पर ज्योतिषीय निष्कर्षों की वैधता लगभग समान प्राप्त हुई ।



...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

...

...
...
...

...
...
...
...

अध्याय - 3

प्रदत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

- 3.1 सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण एवं केन्द्रीय वितरण
- 3.2 सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण एवं केन्द्रीय वितरण
- 3.3 विभिन्न चरों के मध्य सह संबंधात्मक विवरण
- 3.4 परिकल्पनाओं का सत्यापन



१ - पञ्चम
विष्णु नमः
विष्णु नमः विष्णु नमः

विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः (विष्णु नमः) विष्णु नमः
विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः

विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः (विष्णु नमः) विष्णु नमः
विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः

विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः

विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः विष्णु नमः

प्रदत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

“वर्गीकृत एवं क्रमबद्ध आंकड़े स्वयं बोलते हैं
अव्यवस्थित रूप से ये मांस के समान मृत होते हैं ।”

हिम्स जे. आर.

“आंकड़े वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार स्तंभ हैं। आंकड़ों या समंकों के बिना विज्ञान के किसी भी क्षेत्र का कार्य अधूरा एवं अपंग ही रहेगा । जिस प्रकार मकान पत्थरों से बनता है उसी प्रकार विज्ञान का निर्माण तथ्यों से होता है । पर केवल तथ्यों का संकलन विज्ञान नहीं है जैसा कि पत्थरों का ढेर मकान नहीं है । अतः यह आवश्यक है कि तथ्यों अथवा समंकों का वर्गीकरण व व्यवस्थीकरण करके उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की जाए जिससे वह उपयोगी हो सके ।

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़े चयनित न्यादर्श से प्राप्त हुए हैं जो निम्नांकित से संबंधित होंगे ।

3.1 वैवाहिक समायोजन का ज्योतिषीय अध्ययन

3.2 वैवाहिक समायोजन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

3.1 नव-दम्पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

सर्वप्रथम प्रश्नावली में दिये गये निर्देशानुसार वैवाहिक समायोजन परीक्षण का प्रशासन 300 नवदम्पतियों अर्थात् 150 पतियों व 150 पत्नियों पर किया गया । परीक्षण प्रशासन के पश्चात् मूल्यांकन किया तत्पश्चात् इन्हीं दम्पतियों का ज्योतिषीय गणना के आधार पर समायोजन का मापन किया ।



समस्त नवम्पत्तियों का वैवाहिक समायोजन परीक्षण द्वारा प्राप्त प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण एवं केन्द्रीय वितरण अग्रलिखित तालिका तथा आरेख द्वारा दर्शाया गया है ।

सर्वप्रथम वैवाहिक समायोजन ज्ञात करने के लिये 300 नवदम्पतियों 150 पतियों व 150 पत्नियों के जन्म पत्रिका के आधार पर ज्योतिष शास्त्रीय पद्धति से आंकड़े एकत्रित किये व उनका ज्योतिषीय गणना के आधार पर फलांकन किया । तत्पश्चात् वैवाहिक अनुसूची का प्रशासन उन्हीं नवदम्पतियों पर किया । परीक्षण प्रशासन के पश्चात् फलांकन किया ।

तालिका - 3.01
संपूर्ण न्यादर्श (नव-दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय
प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

N=300

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	0	0	-	-	1.66	0.55
81-90	5	1.66	300	100	11.33	3.77
71-80	29	9.66	295	98.33	34	11.33
61-70	68	22.66	266	88.66	57.33	19.11
51-60	75	25	198	66	66.66	22.22
41-50	57	19	123	41	59	19.66
31-40	45	15	66	22	40.33	13.44
21-30	19	6.33	21	7	22	7.33
11-20	2	0.66	2	0.66	7	2.33
1-10	0	0	0	0	0.66	0.22

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण न्यादर्श के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों की सबसे अधिक आवृत्ति 75 है, जिसका प्रतिशत 25. है जो कि 51-60 वर्गान्तर के मध्य आता है, जो उच्च वर्गान्तर के मध्य में स्थित है निम्न वर्गान्तर 11-20 है जिसकी आवृत्ति 2 है, आवृत्ति प्रतिशत 0.66 है जो सबसे नीचे वर्गान्तर के मध्य स्थित है अर्थात् इस वर्गान्तर के मध्य में आवृत्ति अधिक पाई गई एवं दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई । इससे ज्ञात होता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

आरेख 1 में ज्योतिष के प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत वक्र में दर्शाये गये हैं एवं आरेख 2 में ज्योतिष के प्राप्तांक मौलिक व सरलीकृत प्रतिशत में दर्शाए गये हैं । सरलीकृत आवृत्ति वितरण अधिकांशतः सामान्य संभावना वक्र की ओर प्रदर्शित करती है ।

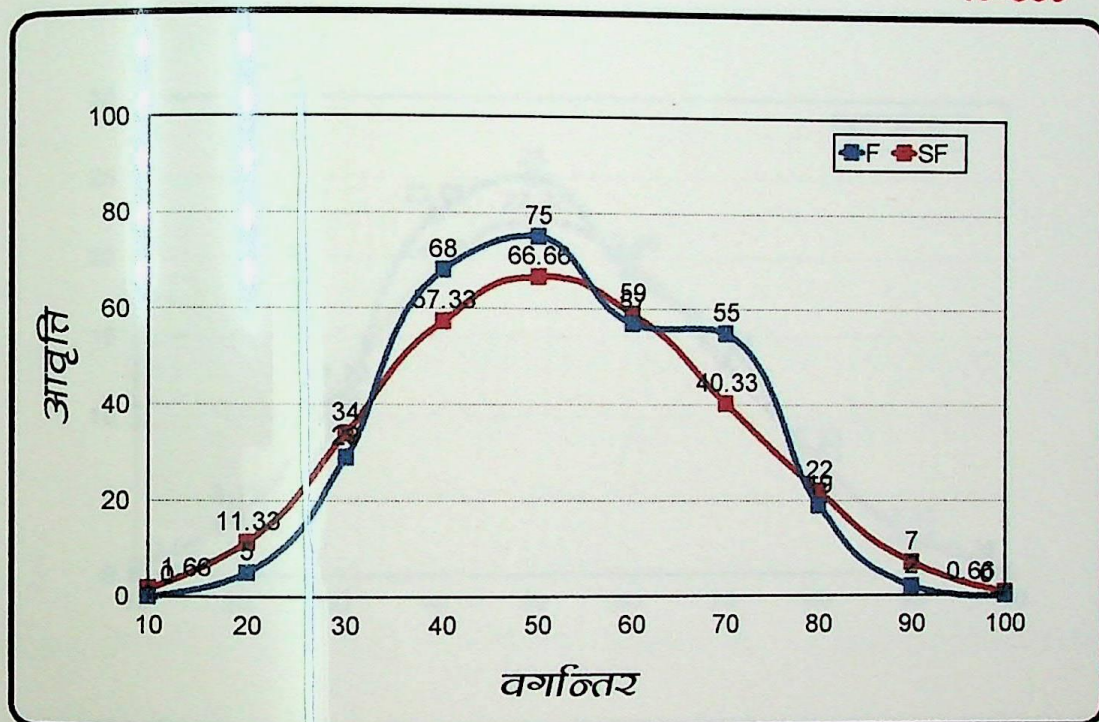
101 भाग
सूक्त सूची (अनुक्रम) के अनुसार सूचीबद्ध
सूक्तों की संख्या

सूक्त संख्या	सूक्त नाम	सूक्त संख्या	सूक्त नाम	सूक्त संख्या	सूक्त नाम	सूक्त संख्या
1-10	1	11-20	2	21-30	3	31-40
41-50	4	51-60	5	61-70	6	71-80
81-90	7	91-100	8	101-110	9	111-120
121-130	10	131-140	11	141-150	12	151-160
161-170	13	171-180	14	181-190	15	191-200
201-210	16	211-220	17	221-230	18	231-240
241-250	19	251-260	20	261-270	21	271-280
281-290	22	291-300	23	301-310	24	311-320
321-330	25	331-340	26	341-350	27	351-360
361-370	28	371-380	29	381-390	30	391-400
401-410	31	411-420	32	421-430	33	431-440
441-450	34	451-460	35	461-470	36	471-480
481-490	37	491-500	38	501-510	39	511-520
521-530	40	531-540	41	541-550	42	551-560
561-570	43	571-580	44	581-590	45	591-600
601-610	46	611-620	47	621-630	48	631-640
641-650	49	651-660	50	661-670	51	671-680
681-690	52	691-700	53	701-710	54	711-720
721-730	55	731-740	56	741-750	57	751-760
761-770	58	771-780	59	781-790	60	791-800
801-810	59	811-820	60	821-830	61	831-840
841-850	62	851-860	63	861-870	64	871-880
881-890	63	891-900	64	901-910	65	911-920
921-930	64	931-940	65	941-950	66	951-960
961-970	65	971-980	66	981-990	67	991-1000
1001-1010	66	1011-1020	67	1021-1030	68	1031-1040
1041-1050	67	1051-1060	68	1061-1070	69	1071-1080
1081-1090	68	1091-1100	69	1101-1110	70	1111-1120
1121-1130	69	1131-1140	70	1141-1150	71	1151-1160
1161-1170	70	1171-1180	71	1181-1190	72	1191-1200
1201-1210	71	1211-1220	72	1221-1230	73	1231-1240
1241-1250	72	1251-1260	73	1261-1270	74	1271-1280
1281-1290	73	1291-1300	74	1301-1310	75	1311-1320
1321-1330	74	1331-1340	75	1341-1350	76	1351-1360
1361-1370	75	1371-1380	76	1381-1390	77	1391-1400
1401-1410	76	1411-1420	77	1421-1430	78	1431-1440
1441-1450	77	1451-1460	78	1461-1470	79	1471-1480
1481-1490	78	1491-1500	79	1501-1510	80	1511-1520
1521-1530	79	1531-1540	80	1541-1550	81	1551-1560
1561-1570	80	1571-1580	81	1581-1590	82	1591-1600
1601-1610	81	1611-1620	82	1621-1630	83	1631-1640
1641-1650	82	1651-1660	83	1661-1670	84	1671-1680
1681-1690	83	1691-1700	84	1701-1710	85	1711-1720
1721-1730	84	1731-1740	85	1741-1750	86	1751-1760
1761-1770	85	1771-1780	86	1781-1790	87	1791-1800
1801-1810	86	1811-1820	87	1821-1830	88	1831-1840
1841-1850	87	1851-1860	88	1861-1870	89	1871-1880
1881-1890	88	1891-1900	89	1901-1910	90	1911-1920
1921-1930	89	1931-1940	90	1941-1950	91	1951-1960
1961-1970	90	1971-1980	91	1981-1990	92	1991-2000
2001-2010	91	2011-2020	92	2021-2030	93	2031-2040
2041-2050	92	2051-2060	93	2061-2070	94	2071-2080
2081-2090	93	2091-2100	94	2101-2110	95	2111-2120
2121-2130	94	2131-2140	95	2141-2150	96	2151-2160
2161-2170	95	2171-2180	96	2181-2190	97	2191-2200
2201-2210	96	2211-2220	97	2221-2230	98	2231-2240
2241-2250	97	2251-2260	98	2261-2270	99	2271-2280
2281-2290	98	2291-2300	99	2301-2310	100	2311-2320
2321-2330	99	2331-2340	100	2341-2350	101	2351-2360
2361-2370	100	2371-2380	101	2381-2390	102	2391-2400
2401-2410	101	2411-2420	102	2421-2430	103	2431-2440
2441-2450	102	2451-2460	103	2461-2470	104	2471-2480
2481-2490	103	2491-2500	104	2501-2510	105	2511-2520
2521-2530	104	2531-2540	105	2541-2550	106	2551-2560
2561-2570	105	2571-2580	106	2581-2590	107	2591-2600
2601-2610	106	2611-2620	107	2621-2630	108	2631-2640
2641-2650	107	2651-2660	108	2661-2670	109	2671-2680
2681-2690	108	2691-2700	109	2701-2710	110	2711-2720
2721-2730	109	2731-2740	110	2741-2750	111	2751-2760
2761-2770	110	2771-2780	111	2781-2790	112	2791-2800
2801-2810	111	2811-2820	112	2821-2830	113	2831-2840
2841-2850	112	2851-2860	113	2861-2870	114	2871-2880
2881-2890	113	2891-2900	114	2901-2910	115	2911-2920
2921-2930	114	2931-2940	115	2941-2950	116	2951-2960
2961-2970	115	2971-2980	116	2981-2990	117	2991-3000
3001-3010	116	3011-3020	117	3021-3030	118	3031-3040
3041-3050	117	3051-3060	118	3061-3070	119	3071-3080
3081-3090	118	3091-3100	119	3101-3110	120	3111-3120
3121-3130	119	3131-3140	120	3141-3150	121	3151-3160
3161-3170	120	3171-3180	121	3181-3190	122	3191-3200
3201-3210	121	3211-3220	122	3221-3230	123	3231-3240
3241-3250	122	3251-3260	123	3261-3270	124	3271-3280
3281-3290	123	3291-3300	124	3301-3310	125	3311-3320
3321-3330	124	3331-3340	125	3341-3350	126	3351-3360
3361-3370	125	3371-3380	126	3381-3390	127	3391-3400
3401-3410	126	3411-3420	127	3421-3430	128	3431-3440
3441-3450	127	3451-3460	128	3461-3470	129	3471-3480
3481-3490	128	3491-3500	129	3501-3510	130	3511-3520
3521-3530	129	3531-3540	130	3541-3550	131	3551-3560
3561-3570	130	3571-3580	131	3581-3590	132	3591-3600
3601-3610	131	3611-3620	132	3621-3630	133	3631-3640
3641-3650	132	3651-3660	133	3661-3670	134	3671-3680
3681-3690	133	3691-3700	134	3701-3710	135	3711-3720
3721-3730	134	3731-3740	135	3741-3750	136	3751-3760
3761-3770	135	3771-3780	136	3781-3790	137	3791-3800
3801-3810	136	3811-3820	137	3821-3830	138	3831-3840
3841-3850	137	3851-3860	138	3861-3870	139	3871-3880
3881-3890	138	3891-3900	139	3901-3910	140	3911-3920
3921-3930	139	3931-3940	140	3941-3950	141	3951-3960
3961-3970	140	3971-3980	141	3981-3990	142	3991-4000
4001-4010	141	4011-4020	142	4021-4030	143	4031-4040
4041-4050	142	4051-4060	143	4061-4070	144	4071-4080
4081-4090	143	4091-4100	144	4101-4110	145	4111-4120
4121-4130	144	4131-4140	145	4141-4150	146	4151-4160
4161-4170	145	4171-4180	146	4181-4190	147	4191-4200
4201-4210	146	4211-4220	147	4221-4230	148	4231-4240
4241-4250	147	4251-4260	148	4261-4270	149	4271-4280
4281-4290	148	4291-4300	149	4301-4310	150	4311-4320
4321-4330	149	4331-4340	150	4341-4350	151	4351-4360
4361-4370	150	4371-4380	151	4381-4390	152	4391-4400
4401-4410	151	4411-4420	152	4421-4430	153	4431-4440
4441-4450	152	4451-4460	153	4461-4470	154	4471-4480
4481-4490	153	4491-4500	154	4501-4510	155	4511-4520
4521-4530	154	4531-4540	155	4541-4550	156	4551-4560
4561-4570	155	4571-4580	156	4581-4590	157	4591-4600
4601-4610	156	4611-4620	157	4621-4630	158	4631-4640
4641-4650	157	4651-4660	158	4661-4670	159	4671-4680
4681-4690	158	4691-4700	159	4701-4710	160	4711-4720
4721-4730	159	4731-4740	160	4741-4750	161	4751-4760
4761-4770	160	4771-4780	161	4781-4790	162	4791-4800
4801-4810	161	4811-4820	162	4821-4830	163	4831-4840
4841-4850	162	4851-4860	163	4861-4870	164	4871-4880
4881-4890	163	4891-4900	164	4901-4910	165	4911-4920
4921-4930	164	4931-4940	165	4941-4950	166	4951-4960
4961-4970	165	4971-4980	166	4981-4990	167	4991-5000
5001-5010	166	5011-5020	167	5021-5030	168	5031-5040
5041-5050	167	5051-5060	168	5061-5070	169	5071-5080
5081-5090	168	5091-5100	169	5101-5110	170	5111-5120
5121-5130	169	5131-5140	170	5141-5150	171	5151-5160
5161-5170	170	5171-5180	171	5181-5190	172	5191-5200
5201-5210	171	5211-5220	172	5221-5230	173	5231-5240
5241-5250	172	5251-5260	173	5261-5270	174	5271-5280
5281-5290	173	5291-5300	174	5301-5310	175	5311-5320
5321-5330	174	5331-5340	175	5341-5350	176	5351-5360
5361-5370	175	5371-5380	176	5381-5390	177	5391-5400
5401-5410	176	5411-5420	177	5421-5430	178	5431-5440
5441-5450	177	5451-5460	178	5461-5470	179	5471-5480
5481-5490	178	5491-5500	179	5501-5510	180	5511-5520
5521-5530	179	5531-5540	180	5541-5550	181	5551-5560
5561-5570	180	5571-5580	181	5581-5590	182	5591-5600
5601-5610	181	5611-5620	182	5621-5630	183	5631-5640
5641-5650	182	5651-5660	183	5661-5670	184	5671-5680
5681-5690	183	5691-5700	184	5701-5710	185	5711-5720
5721-5730	184	5731-5740	185	5741-5750	186	5751-5760
5761-5770	185	5771-5780	186	5781-5790	187	5791-5800
5801-5810	186	5811-5820	187	5821-5830	188	5831-5840
5841-5850	187	5851-5860	188	5861-5870	189	5871-5880
5881-5890	188	5891-5900	189	5901-5910	190	5911-5920
5921-5930	189	5931-5940	190	5941-5950	191	5951-5960
5961-5970	190					

आरेख - 1

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=300

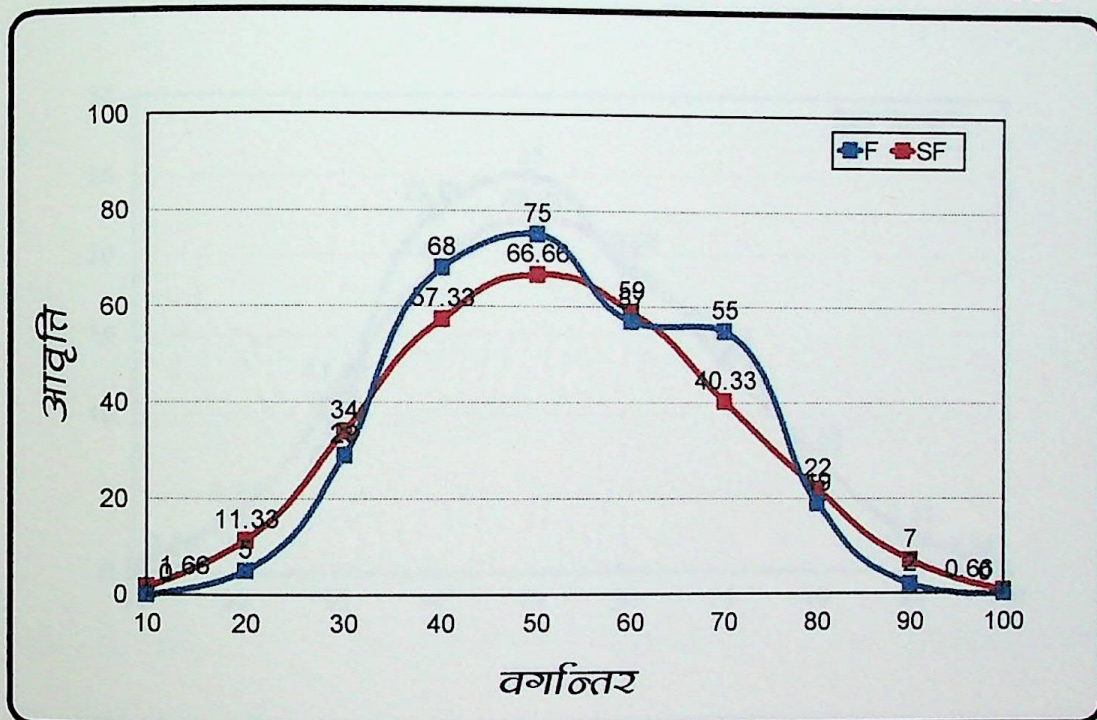


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.01 से संबंधित आवृत्ति वितरण

आरेख - 1

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=300

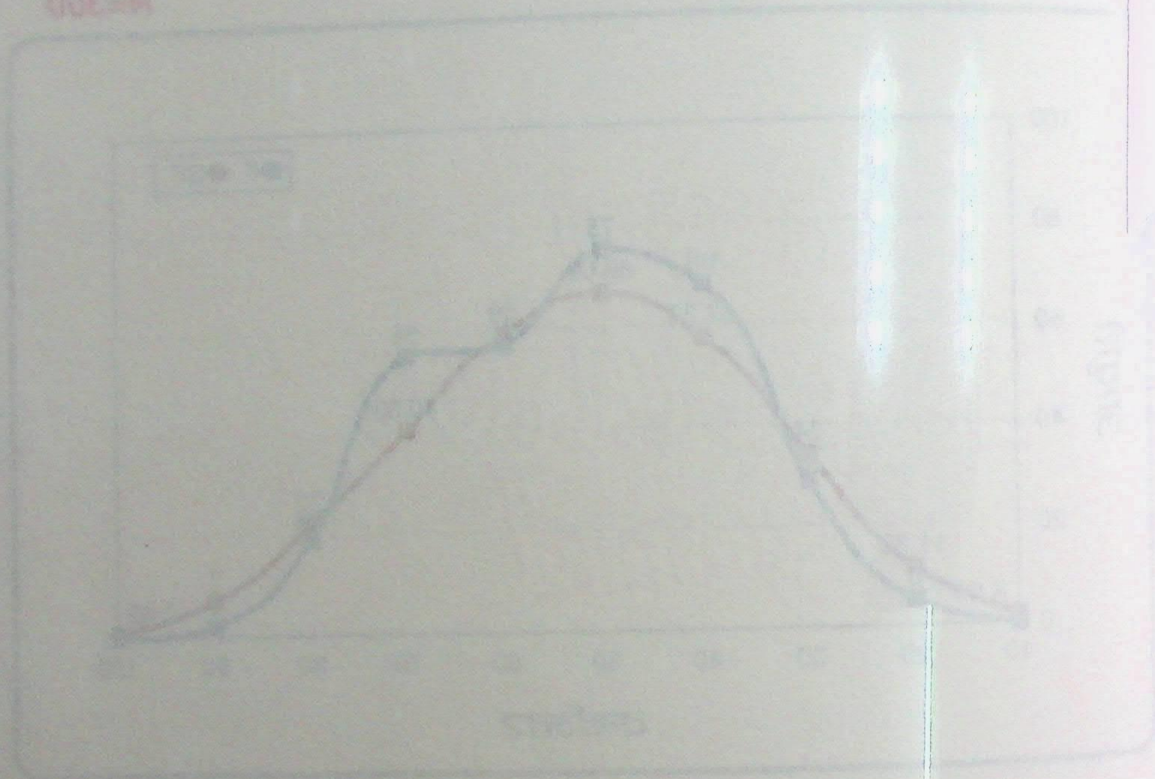


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.01 से संबंधित आवृत्ति वितरण

I - छद्म

यदि एक निम्नलिखित चरित्रों में से (निम्नलिखित) में से एक को चुनें, तो वह निम्नलिखित चरित्रों में से एक है।

QOE-14

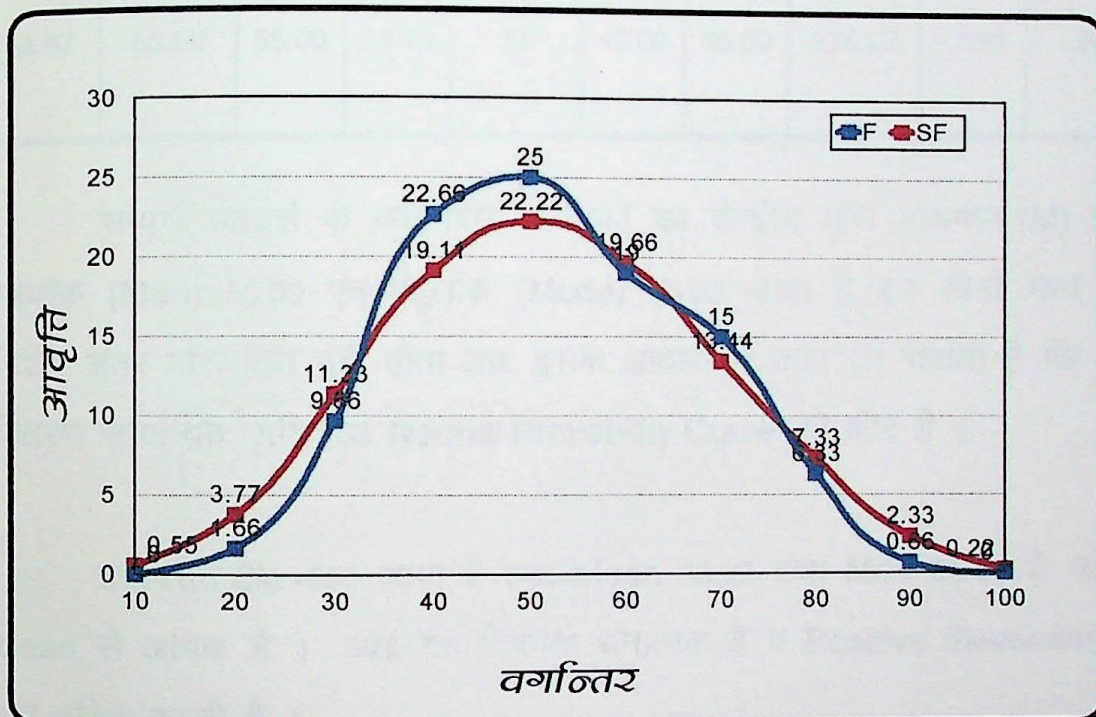


यदि एक निम्नलिखित चरित्रों में से (निम्नलिखित) में से एक को चुनें, तो वह निम्नलिखित चरित्रों में से एक है।

आरेख - 2

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=300

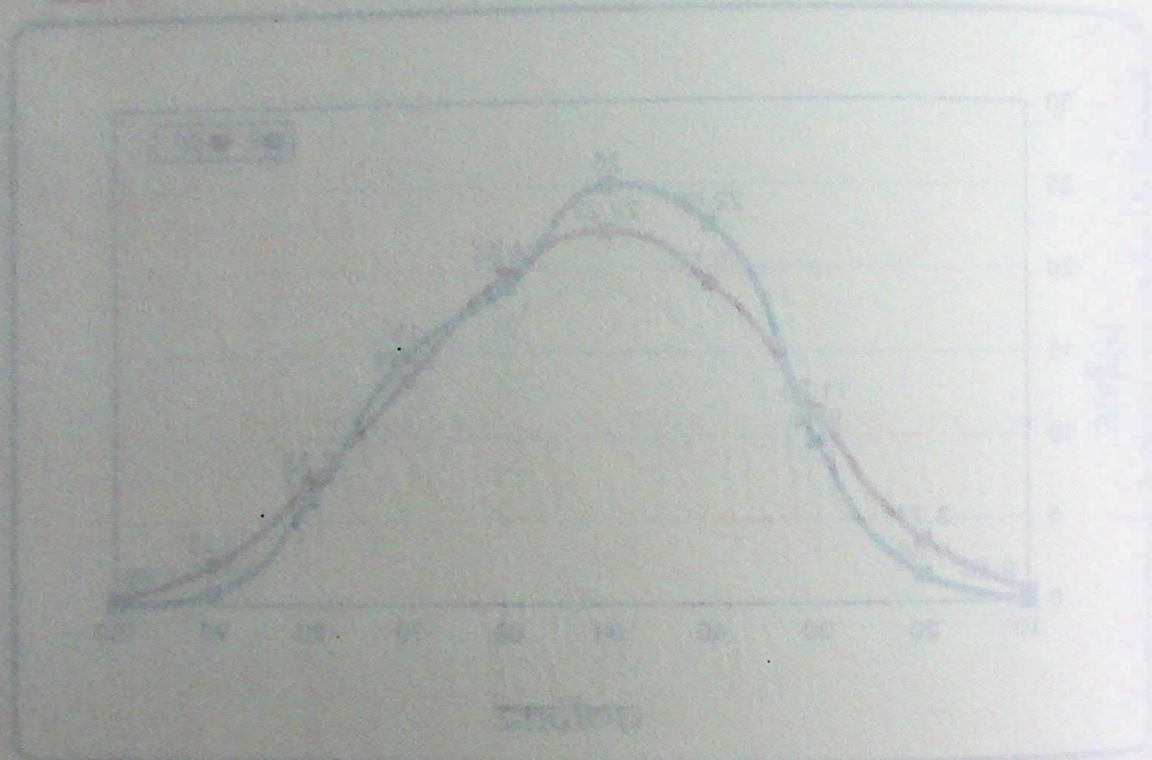


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.01 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

१ - लक्ष्य

कई लक्ष्यमय कर्मों के (विशेषकर) प्रमाणित रूप
के लिए विचार करने के लिए प्रमाणित रूप

१००-११



कई लक्ष्यमय कर्मों के (विशेषकर) प्रमाणित रूप
के लिए विचार करने के लिए प्रमाणित रूप

3.1.1 संपूर्ण न्यादर्श (नव-दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषी प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.02

संपूर्ण न्यादर्श (नव-दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=300

मध्यमान Mean	मध्ययांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	मा. त्रुटि SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ चतु. Q 3	प्रसरण variance	विषमता S k.	कुकुदता Ku.
53.87	55.00	55.00	14.98	.86	42.00	65.00	224.27	-.085	-.666

सम्पूर्ण न्यादर्श के ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति मध्यमान (M) 53.87 मध्यांक (Mdn) 55.00 एवं बहुलांक (Mode) 55.00 आया है इन तीनों मध्य कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता अतः इसके आधार पर कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः अधिकांश Normal Probability Curve की ओर है ।

तदोपरांत $Sk = -.085$ आया है तथा Mean 53.87 तथा Mdn 55.00 है जो कि Mean से अधिक है । अतः यह विषमता धनात्मक है व Positive Skweness की ओर इंगित करती है ।

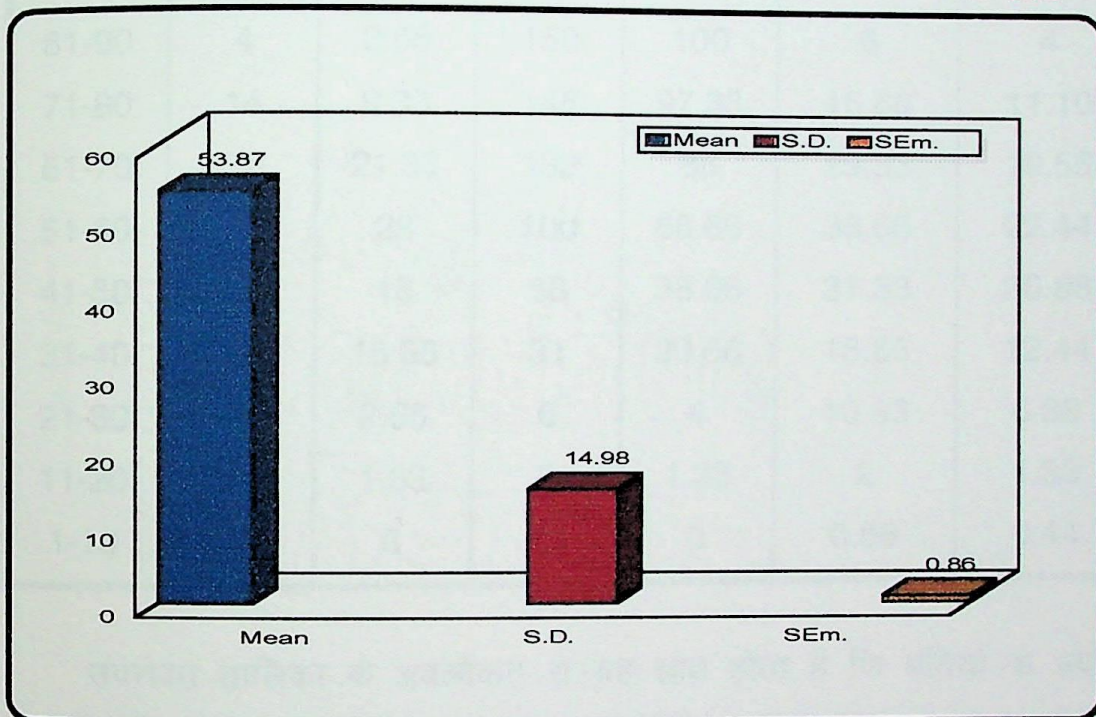
इसके उपरांत $SEm = .86$ आया जो 1.96 से कम है अतः यह भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है । एवं $Ku = -.66$ आया है जो कि Ku के मान .263 से कम है अतः यह वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है ।

आरेख 13 में ज्योतिष प्राप्ताकों संबंधी केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दण्डाकृति में दर्शाया गया है ।

आरेख - 13

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=300

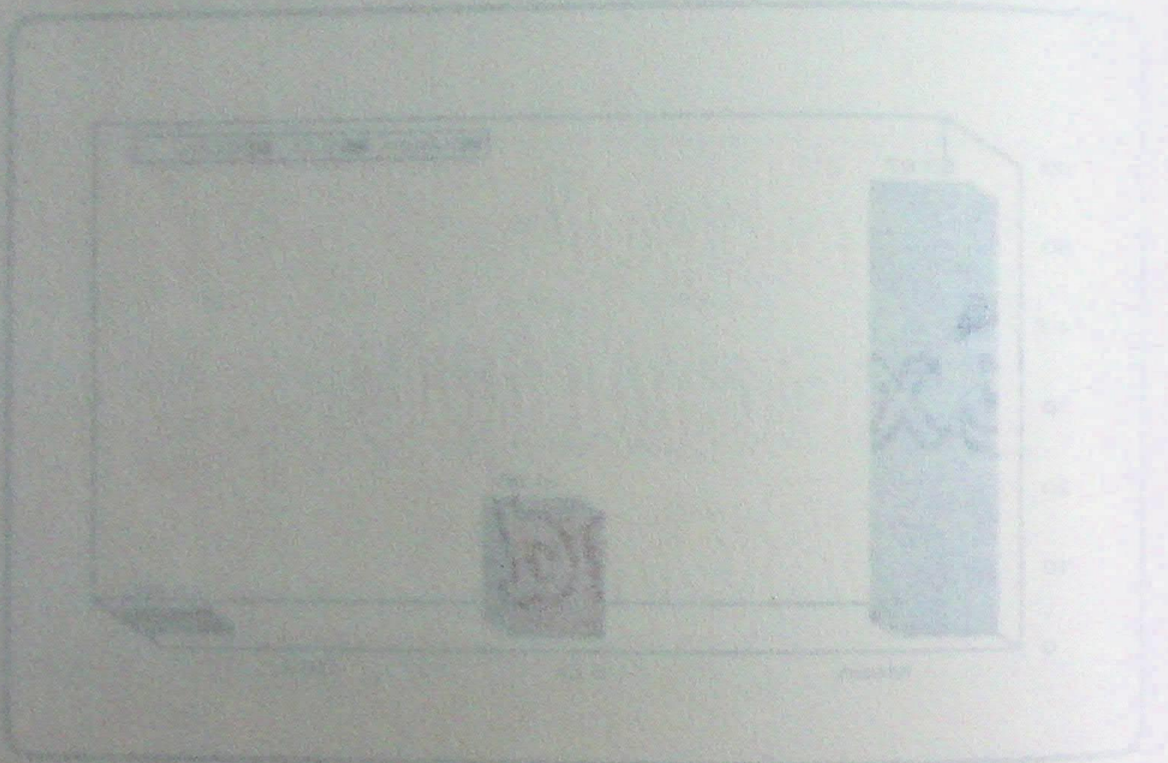


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.02 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

६१ - छट्वाँ

अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।
अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।
अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।

००२=४१



अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।
अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।
अथ छट्वाँ अक्षरः कश्चित् (विशिष्टः) इत्युक्तं।

3.1.2

पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

तालिका - 3.03

पतियों का वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण
N=150

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	0	0	-	-	1.33	0.88
81-90	4	2.66	150	100	6	4
71-80	14	9.33	146	97.33	16.66	11.10
61-70	32	21.33	132	88	29.33	19.55
51-60	42	28	100	66.66	33.66	22.44
41-50	27	18	58	38.66	31.33	20.88
31-40	25	16.66	31	20.66	18.66	12.44
21-30	4	2.66	6	4	10.33	6.88
11-20	2	1.33	2	1.33	2	1.33
1-10	0	0	0	0	0.66	0.44

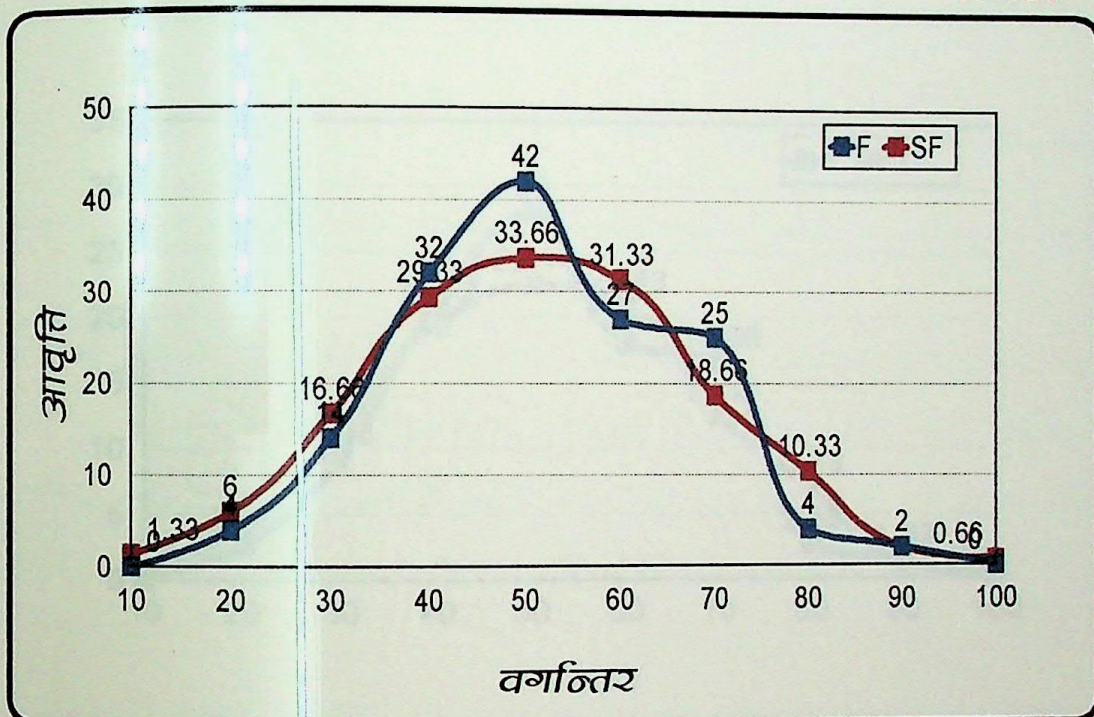
उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि पतियों के ज्योतिष प्राप्ताकों में सबसे अधिक आवृत्ति 42 है, जिसका 51-60 वर्गान्तर के मध्य स्थित है एवं निम्न आवृत्ति 2 है जो कि निम्न वर्गान्तर 11-20 के मध्य स्थित है । उच्च वर्गान्तर है 81-90 है जिसकी आवृत्ति 4 है जो उच्च वर्गान्तर के मध्य स्थित है अर्थात् इस वर्गान्तर के मध्य में आवृत्ति अधिक पायी गई एवं दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई ।

इससे ज्ञात होता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । आरेख 3 में ज्योतिषीय प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत वक्र में दर्शाये गये हैं एवं आरेख 4 में ज्योतिषीय प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत प्रतिशत में दर्शाये गये हैं । सरलीकृत आवृत्ति वितरण अधिकांशतः सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

आरेख - 3

पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय
प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=150

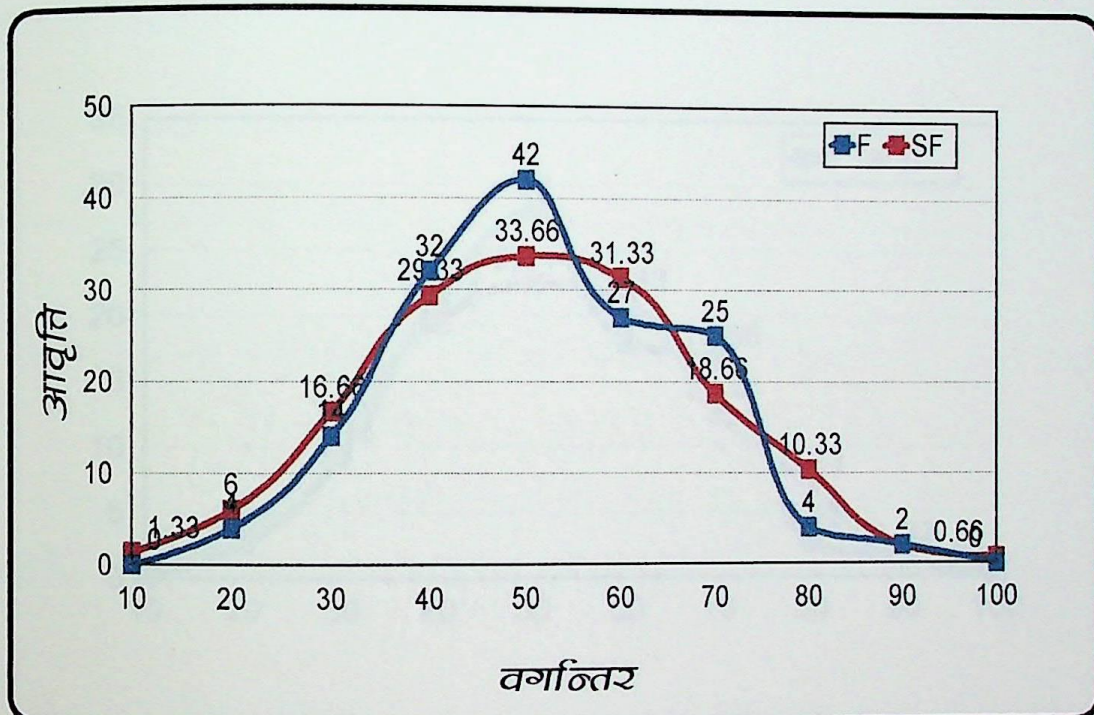


पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका
3.03 से संबंधित आवृत्ति वितरण

आरेख - 3

पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=150

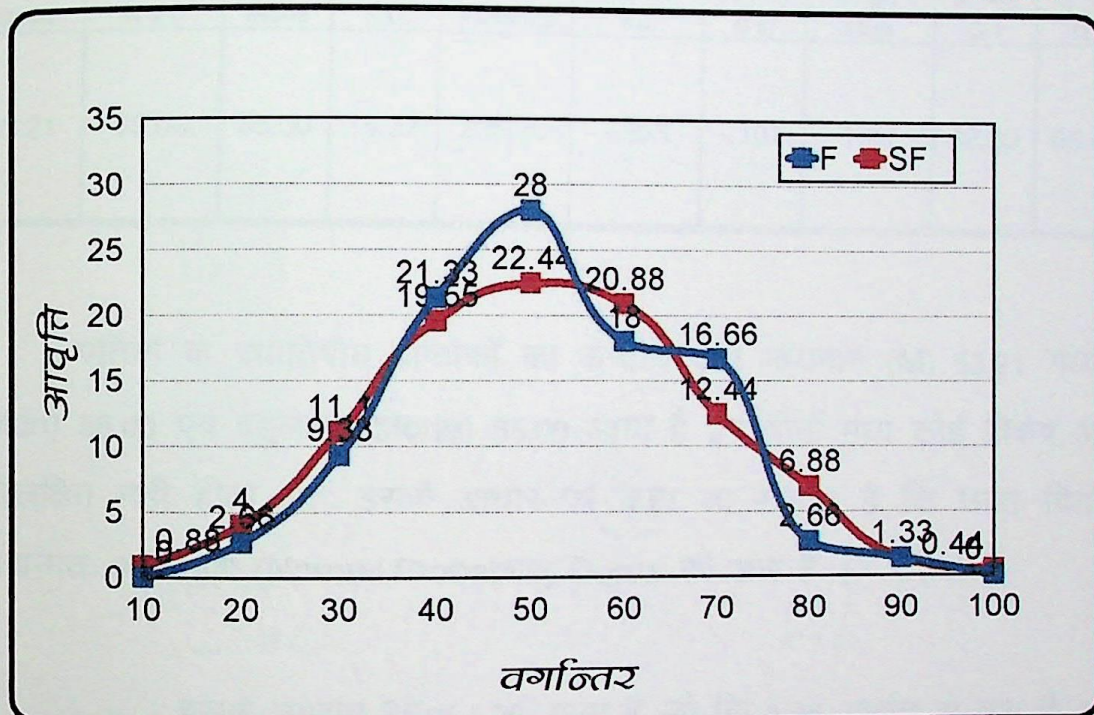


पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका
3.03 से संबंधित आवृत्ति वितरण

आरेख - 4

पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

$N=150$



पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका
3.03 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

3.1.3 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.04

पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=150

मध्यमान Mean	मध्ययांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	प्रसरण variance	कुकुदता Ku.	विषमता S k.	मा. त्रुटि SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ. चतु. Q 3
53.21	55.00	55.00	15.37	236.28	-.953	-.107	1.26	42.00	65.00

पतियों के ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति मध्यमान (M) 53.21 मध्यांक (Mdn) 55.00 एवं बहुलांक (Mode) 55.00 आया है इन तीनों मध्य कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता अतः इसके आधार पर कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः अधिकांश (Normal Probability Curve की ओर है ।

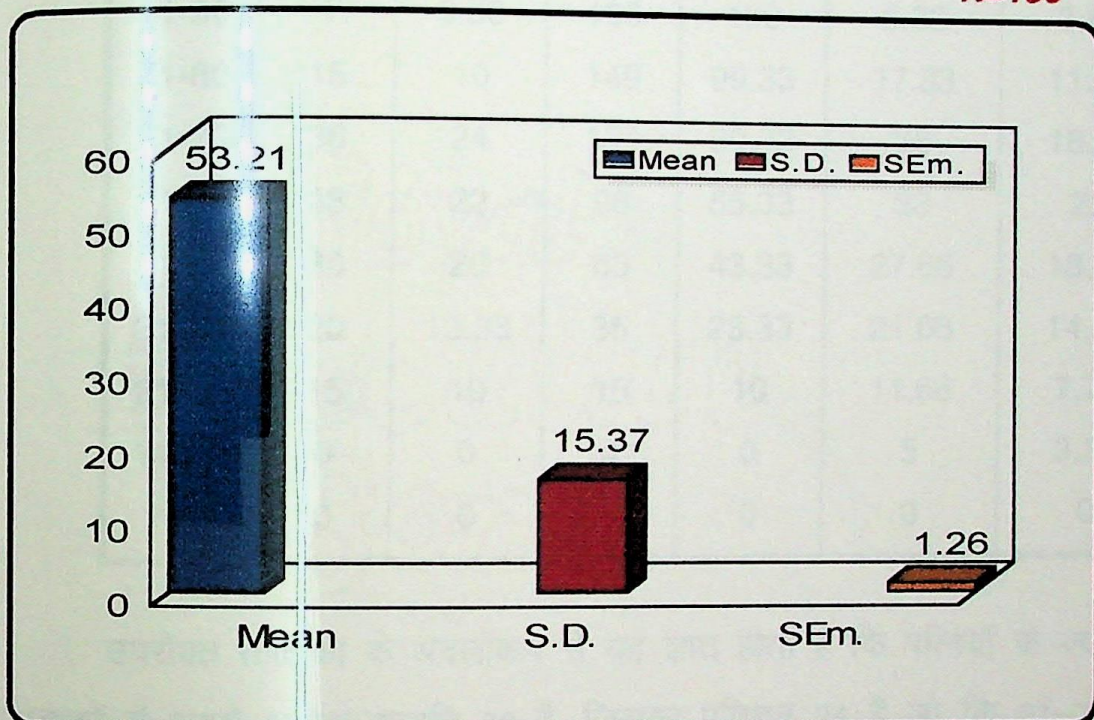
इसके उपरांत SEm 1.26 आया है जो कि 1.96 अर्थात् से कम है अतः यह भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है तथा Ku $-.953$ आया है जो कि Ku. के मान $.263$ से कम है अतः ये वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है तथा Sk. $-.107$ आया है तथा Mean 53.21 व Mdn 55.00 है जो Mean से अधिक है अतः यह विषमता धनात्मक हो कर Positive Skweness की ओर इंगित करती हैं ।

आरेख में 14 ज्योतिष प्राप्ताकों संबंधी केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दंडाकृति में दर्शाया गया है ।

आरेख - 14

पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150

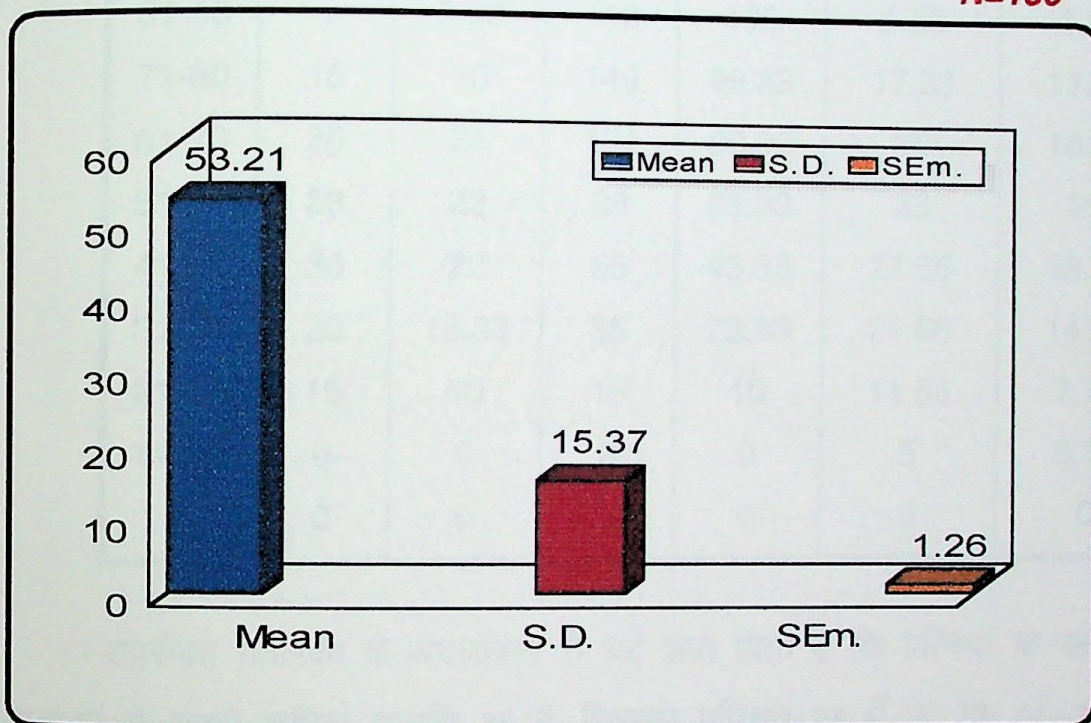


पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.04 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

आरेख - 14

पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150



पतियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.04 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

3.1.4 पत्नियों का वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

तालिका - 3.05

पत्नियों का वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण
N=150

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	0	0	-	-	0.33	0.22
81-90	1	0.66	150	100	5.33	3.55
71-80	15	10	149	99.33	17.33	11.55
61-70	36	24	134	89.33	28	18.66
51-60	33	22	98	65.33	33	22
41-50	30	20	65	43.33	27.66	18.44
31-40	20	13.33	35	23.33	21.66	14.44
21-30	15	10	15	10	11.66	7.77
11-20	0	0	0	0	5	3.33
1-10	0	0	0	0	0	0

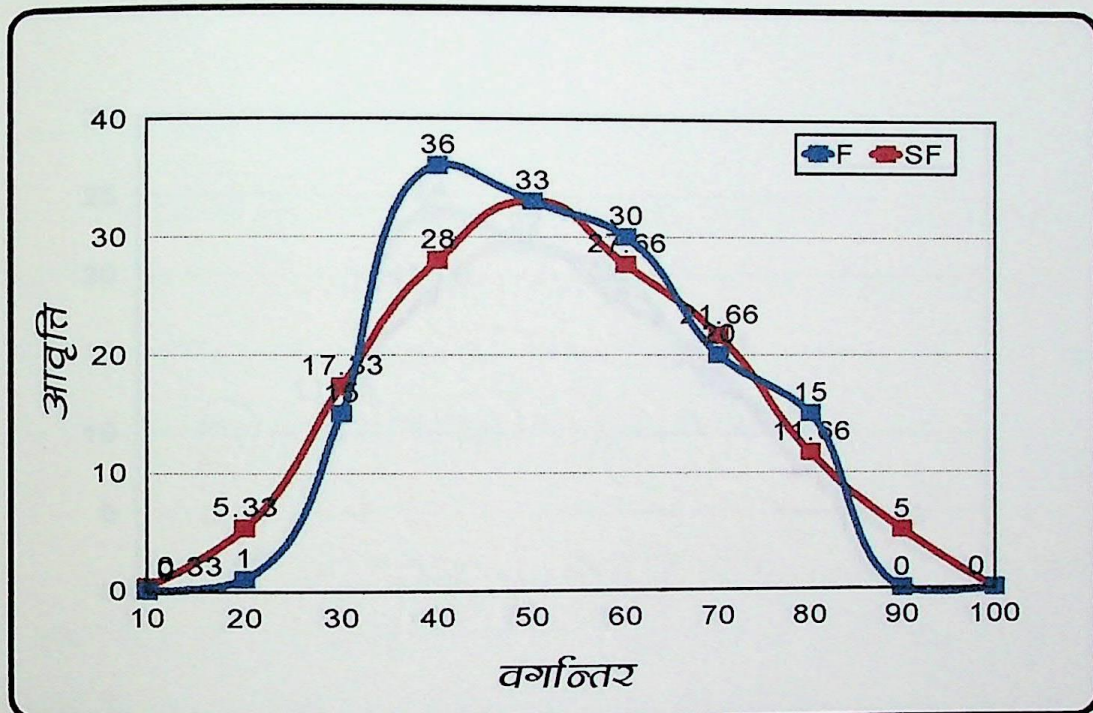
उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि पत्नियों के ज्योतिष प्राप्ताकों में सबसे अधिक आवृत्ति 36 है, जिसका प्रतिशत 24 है जो कि 61-70 के वर्गान्तर के मध्य स्थित है एवं निम्न आवृत्ति 15 है जो कि निम्न वर्गान्तर के मध्य स्थित है उच्च वर्गान्तर 71-80 है जिसकी आवृत्ति 15 है जो कि उच्च वर्गान्तर के मध्य स्थित है अर्थात् इस वर्गान्तर के मध्य आवृत्ति अधिक पायी गई एवं दोनों छोरों (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई ।

इससे ज्ञात होता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । आरेख 5 में ज्योतिषीय प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत वक्र में दर्शाये गये हैं एवं आरेख 6 में ज्योतिषीय प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत प्रतिशत में दर्शाये गये हैं । सरलीकृत आवृत्ति वितरण अधिकांशतः सामान्य संभावना वक्र की ओर है ।

आरेख - 5

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=150

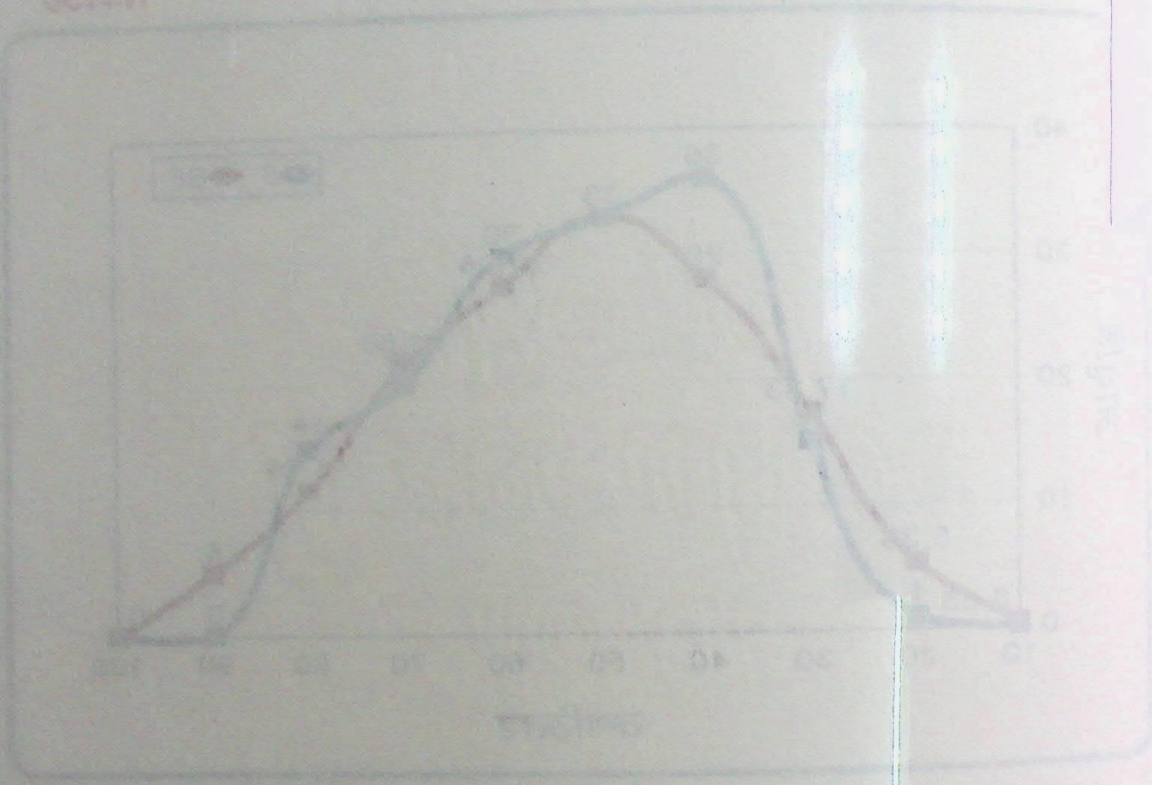


पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.05 से संबंधित आवृत्ति वितरण

२ - छट्टा

सिद्धांत के अनुसार कृष्ण के रंग का निर्माण
क्या है कि वह किस प्रकार का है

०६५-४

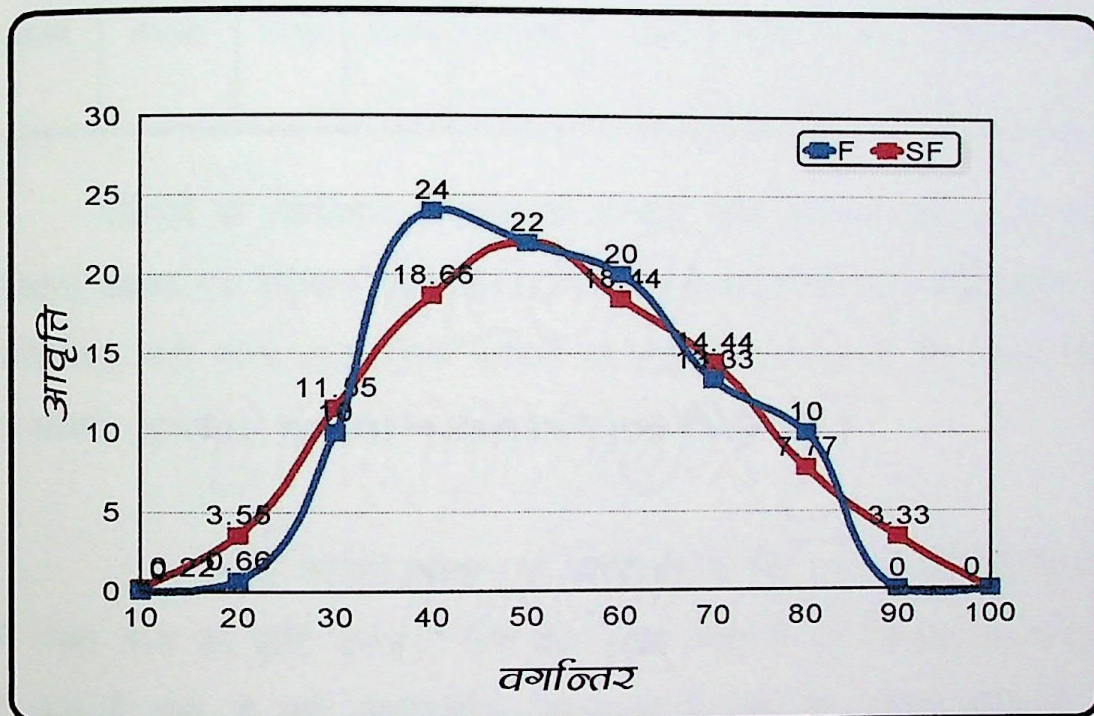


सिद्धांत के अनुसार कृष्ण के रंग का निर्माण
क्या है कि वह किस प्रकार का है

आरेख - 6

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय
प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=150

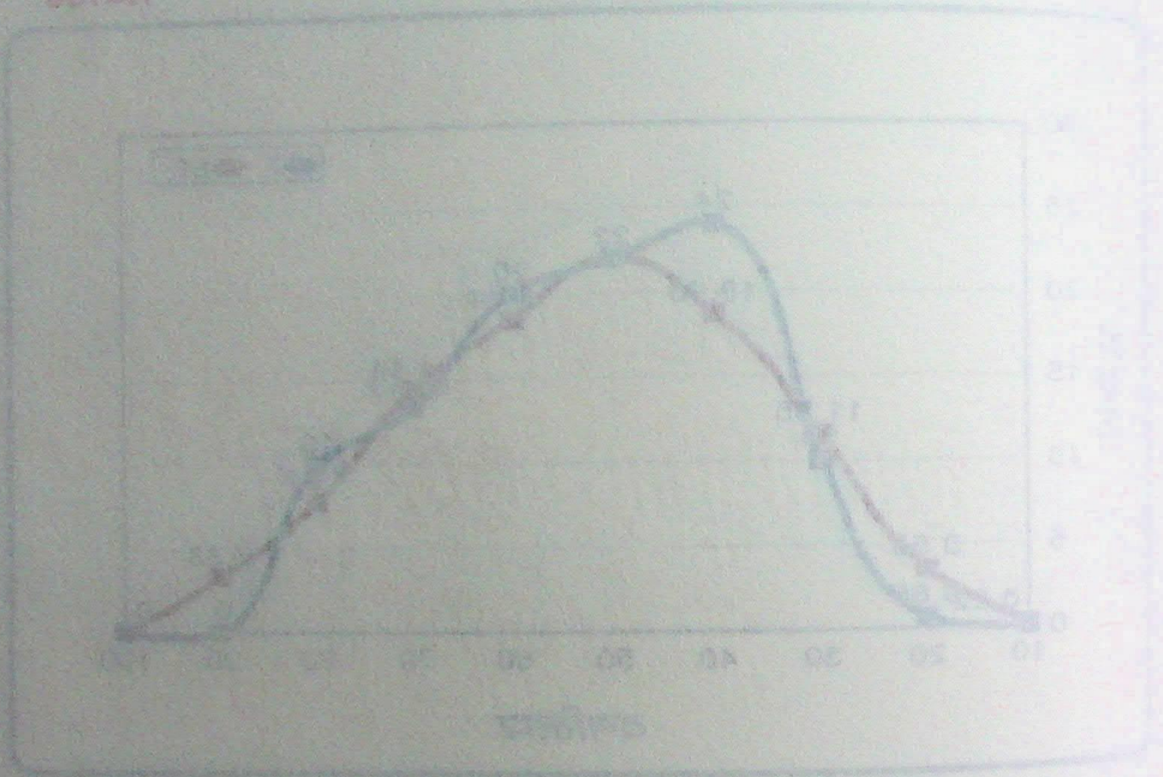


पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की
तालिका 3.05 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

७ - छडीए

अभिहित के अन्तर्गत कठिनाई के निरूपण
अन्तर्गत विभिन्न मापदण्डों के अनुसार

0.01=1



अभिहित के अन्तर्गत कठिनाई के निरूपण
अन्तर्गत विभिन्न मापदण्डों के अनुसार

3.1.5

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.06

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय प्राप्ताकों केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=150

मध्यमान Mean	मध्यांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	प्रसरण variance	कुकुदता Ku.	विषमता S k.	मा. त्रुटि SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ. चतु. Q 3
54.54	55.00	55.00	14.59	212.86	-.326	-.045	1.19	45.00	65.00

पत्नियों के ज्योतिषीय प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति मध्यमान (M) 54.54 मध्यांक (Mdn) 55.00 एवं बहुलांक (Mode) 55.00 आया है इन तीनों मध्य कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता अतः इसके आधार पर कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः अधिकांश Normal Probability Curve की ओर है ।

इसके उपरांत SEm 1.19 आया है जो कि 1.96 से कम है अतः यह भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है तथा Ku $-.326$ आया है जो कि Ku. के मान $.263$ से कम है अतः ये वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है तथा Sk. $-.045$ आया है तथा Mean 54.54 व Mdn 55.00 है जो Mean से अधिक है अतः यह विषमता धनात्मक हो कर Positive Skweness की ओर इंगित करती हैं ।

आरेख में 15 ज्योतिषीय प्राप्ताकों संबंधी केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दंडाकृति में दर्शाया गया है ।

संख्या के तहत प्रस्तुत है। इसमें प्रत्येक संख्या के लिए एक स्तंभ है।

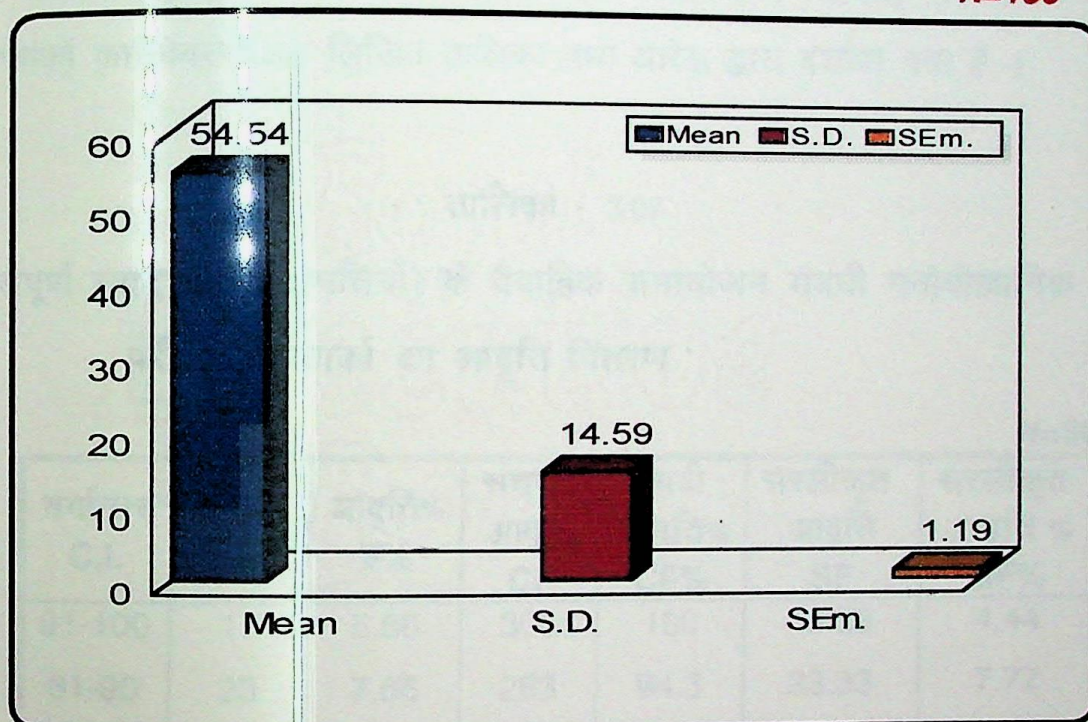
प्रत्येक संख्या के लिए एक स्तंभ है। इसमें प्रत्येक संख्या के लिए एक स्तंभ है।

संख्या	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ	स्तंभ
1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45
46	47	48	49	50	51	52	53	54
55	56	57	58	59	60	61	62	63
64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81
82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99
100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117
118	119	120	121	122	123	124	125	126
127	128	129	130	131	132	133	134	135
136	137	138	139	140	141	142	143	144
145	146	147	148	149	150	151	152	153
154	155	156	157	158	159	160	161	162
163	164	165	166	167	168	169	170	171
172	173	174	175	176	177	178	179	180
181	182	183	184	185	186	187	188	189
190	191	192	193	194	195	196	197	198
199	200	201	202	203	204	205	206	207
208	209	210	211	212	213	214	215	216
217	218	219	220	221	222	223	224	225
226	227	228	229	230	231	232	233	234
235	236	237	238	239	240	241	242	243
244	245	246	247	248	249	250	251	252
253	254	255	256	257	258	259	260	261
262	263	264	265	266	267	268	269	270
271	272	273	274	275	276	277	278	279
280	281	282	283	284	285	286	287	288
289	290	291	292	293	294	295	296	297
298	299	300	301	302	303	304	305	306
307	308	309	310	311	312	313	314	315
316	317	318	319	320	321	322	323	324
325	326	327	328	329	330	331	332	333
334	335	336	337	338	339	340	341	342
343	344	345	346	347	348	349	350	351
352	353	354	355	356	357	358	359	360
361	362	363	364	365	366	367	368	369
370	371	372	373	374	375	376	377	378
379	380	381	382	383	384	385	386	387
388	389	390	391	392	393	394	395	396
397	398	399	400	401	402	403	404	405
406	407	408	409	410	411	412	413	414
415	416	417	418	419	420	421	422	423
424	425	426	427	428	429	430	431	432
433	434	435	436	437	438	439	440	441
442	443	444	445	446	447	448	449	450
451	452	453	454	455	456	457	458	459
460	461	462	463	464	465	466	467	468
469	470	471	472	473	474	475	476	477
478	479	480	481	482	483	484	485	486
487	488	489	490	491	492	493	494	495
496	497	498	499	500	501	502	503	504
505	506	507	508	509	510	511	512	513
514	515	516	517	518	519	520	521	522
523	524	525	526	527	528	529	530	531
532	533	534	535	536	537	538	539	540
541	542	543	544	545	546	547	548	549
550	551	552	553	554	555	556	557	558
559	560	561	562	563	564	565	566	567
568	569	570	571	572	573	574	575	576
577	578	579	580	581	582	583	584	585
586	587	588	589	590	591	592	593	594
595	596	597	598	599	600	601	602	603
604	605	606	607	608	609	610	611	612
613	614	615	616	617	618	619	620	621
622	623	624	625	626	627	628	629	630
631	632	633	634	635	636	637	638	639
640	641	642	643	644	645	646	647	648
649	650	651	652	653	654	655	656	657
658	659	660	661	662	663	664	665	666
667	668	669	670	671	672	673	674	675
676	677	678	679	680	681	682	683	684
685	686	687	688	689	690	691	692	693
694	695	696	697	698	699	700	701	702
703	704	705	706	707	708	709	710	711
712	713	714	715	716	717	718	719	720
721	722	723	724	725	726	727	728	729
730	731	732	733	734	735	736	737	738
739	740	741	742	743	744	745	746	747
748	749	750	751	752	753	754	755	756
757	758	759	760	761	762	763	764	765
766	767	768	769	770	771	772	773	774
775	776	777	778	779	780	781	782	783
784	785	786	787	788	789	790	791	792
793	794	795	796	797	798	799	800	801
802	803	804	805	806	807	808	809	810
811	812	813	814	815	816	817	818	819
820	821	822	823	824	825	826	827	828
829	830	831	832	833	834	835	836	837
838	839	840	841	842	843	844	845	846
847	848	849	850	851	852	853	854	855
856	857	858	859	860	861	862	863	864
865	866	867	868	869	870	871	872	873
874	875	876	877	878	879	880	881	882
883	884	885	886	887	888	889	890	891
892	893	894	895	896	897	898	899	900
901	902	903	904	905	906	907	908	909
910	911	912	913	914	915	916	917	918
919	920	921	922	923	924	925	926	927
928	929	930	931	932	933	934	935	936
937	938	939	940	941	942	943	944	945
946	947	948	949	950	951	952	953	954
955	956	957	958	959	960	961	962	963
964	965	966	967	968	969	970	971	972
973	974	975	976	977	978	979	980	981
982	983	984	985	986	987	988	989	990
991	992	993	994	995	996	997	998	999
1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008
1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017
1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026
1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035
1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044
1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053
1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062
1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071
1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080
1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089
1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098
1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107
1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116
1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125
1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134
1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143
1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152
1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161
1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170
1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179
1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188
1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197
1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206
1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215
1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224
1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233
1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242
1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251
1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260
1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269
1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278
1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287
1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296
1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305
1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314
1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323
1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332
1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341
1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350
1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359
1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368
1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377
1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386
1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395
1396	1397	1398	1399					

आरेख - 15

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150



पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की तालिका 3.06 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

प्रयोग ३ - सामान्य वक्र (Normal Curve) का अध्ययन

उद्देश्य - सामान्य वक्र के गुणों का अध्ययन करना

सामान्य वक्र एक ऐसा वक्र है जिसका समीकरण $y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$ होता है।

प्रयोग ३

क्रम	समय (से.)	वक्र का समीकरण	वक्र का चित्र
१	०	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
२	१	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
३	२	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
४	३	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
५	४	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
६	५	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
७	६	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
८	७	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
९	८	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	
१०	९	$y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$	

सामान्य वक्र का समीकरण $y = \frac{1}{\sigma\sqrt{2\pi}} e^{-\frac{x^2}{2\sigma^2}}$ है। इस वक्र का चित्र निम्न प्रकार है।

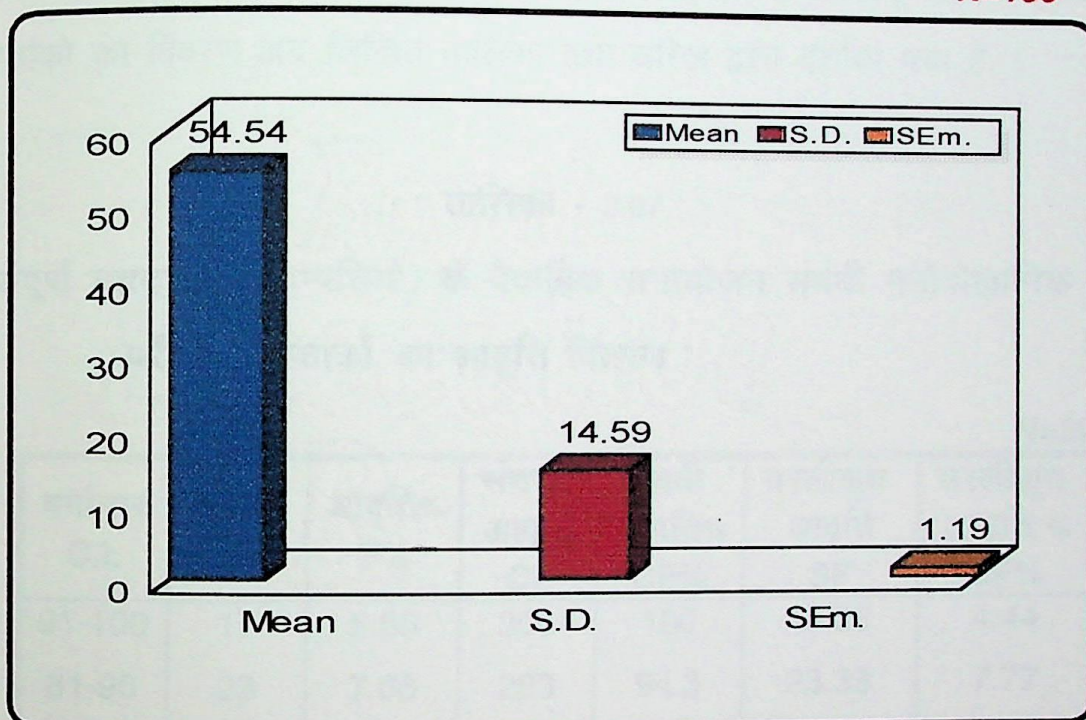
सामान्य वक्र का चित्र निम्न प्रकार है।

सामान्य वक्र का चित्र निम्न प्रकार है।

आरेख - 15

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों का केन्द्रीय
वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150



पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिषीय प्राप्तांकों की
तालिका 3.06 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

3.2 संपूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

सर्वप्रथम प्रश्नावली में दिये गये निर्देशानुसार वैवाहिक समायोजन परीक्षण उन्हीं 300 नव दम्पतियों अर्थात् 150 पतियों व 150 पत्नियों पर प्रशासित किया जिन पर ज्योतिषीय अध्ययन किया था । परीक्षण प्रशासन के पश्चात् फलांकन किया प्राप्ताकों का विवरण अग्र लिखित तालिका तथा आरेख द्वारा दर्शाया गया है ।

तालिका - 3.07

संपूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

N=300

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	17	5.66	300	100	13.33	4.44
81-90	23	7.66	283	94.3	23.33	7.77
71-80	30	10	260	86.6	44.33	14.77
61-70	80	26.66	230	76.6	56.66	37.77
51-60	60	20	150	50	63.33	21.11
41-50	50	16.66	90	30	44.33	14.77
31-40	23	7.66	40	13.33	27.66	9.22
21-30	10	3.33	15	5	12.66	4.11
11-20	5	1.66	5	1.6	5	1.66
1-10	0	0	0	0	1.66	0.55

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि संपूर्ण न्यादर्श में वैवाहिक समायोजन प्राप्तांकों की सबसे अधिक आवृत्ति 80 है जिसका प्रतिशत 26.66 है यह 61-70 वर्गान्तर के मध्य स्थित है एवं निम्नतम आवृत्ति 5 है जिसका प्रतिशत 1.66 है जो निम्न वर्गान्तर 11-20 के मध्य स्थित है एवं उच्च वर्गान्तर की आवृत्ति 17 है जिसका प्रतिशत 5.66 है जो वर्गान्तर 91-100 के मध्य स्थित है अर्थात् इस वर्गान्तर के मध्य आवृत्ति अधिक पाई एवं दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई ।

इससे ये ज्ञात होता है कि यह वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है । आरेख 7 में वैवाहिक समायोजन परीक्षण प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत वक्र प्रतिशत में दर्शाये गये हैं । आरेख 8 में वैवाहिक समायोजन परीक्षण प्राप्तांक मौलिक और सरली कृत प्रतिशत में दर्शाये गये हैं । सरलीकृत आवृत्ति अधिकांशतः सामान्य संभावना वक्र की ओर प्रदर्शित करता है ।



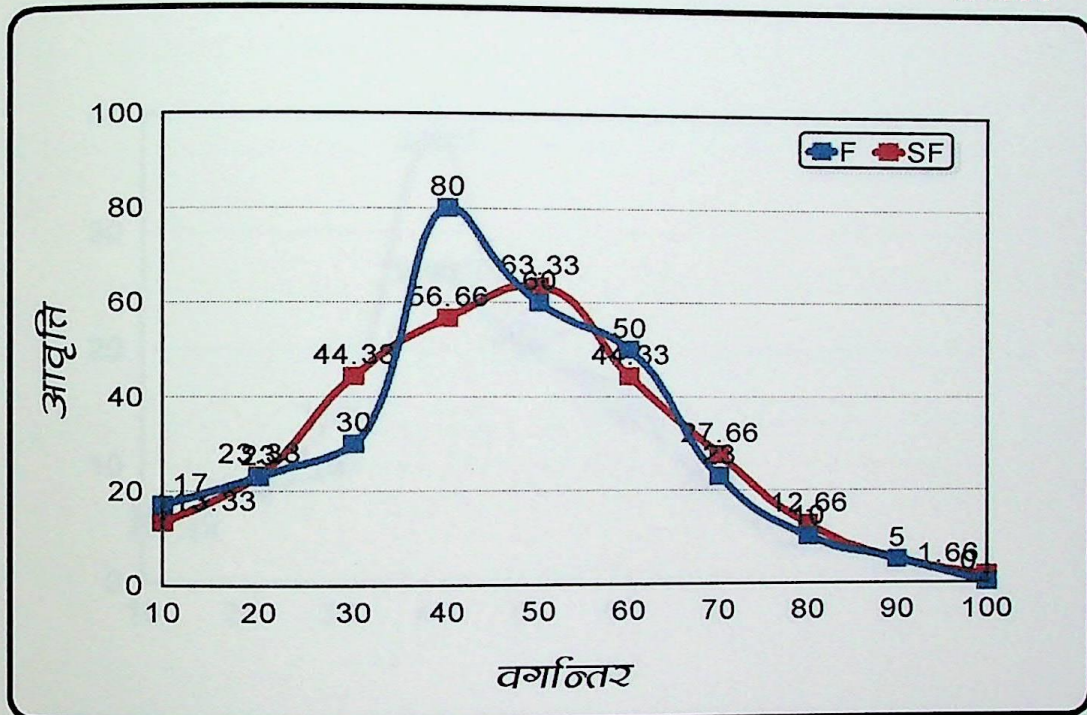
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...

आरेख - 7

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

$N=300$

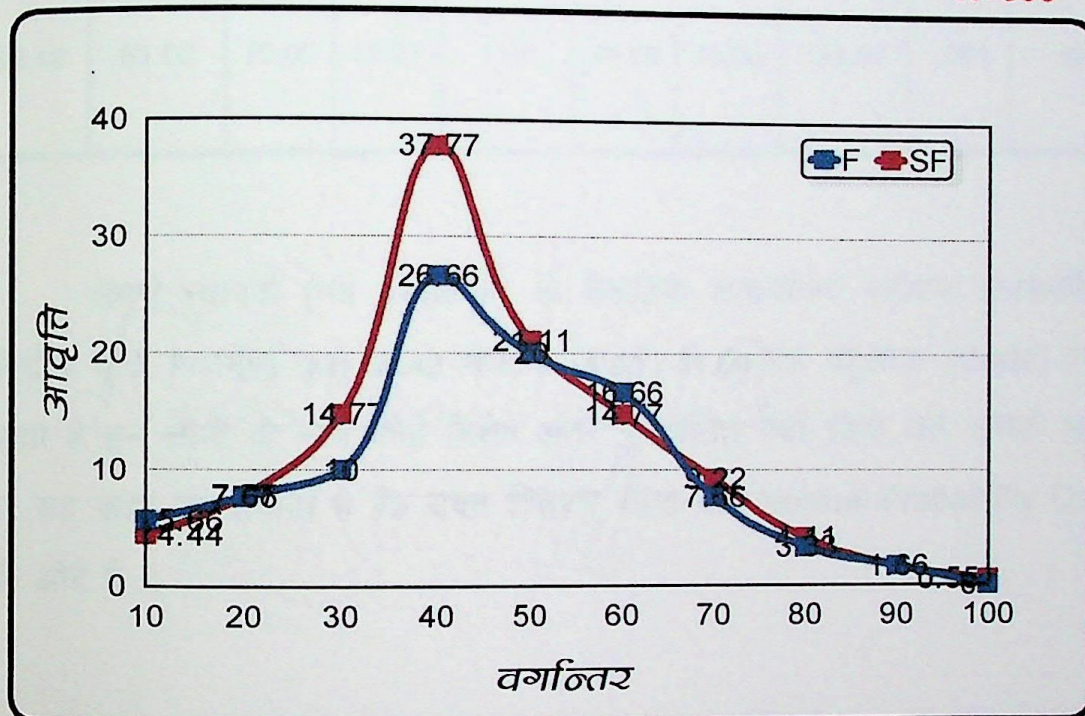


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की तालिका 3.07 से संबंधित आवृत्ति वितरण

आरेख - 8

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=300

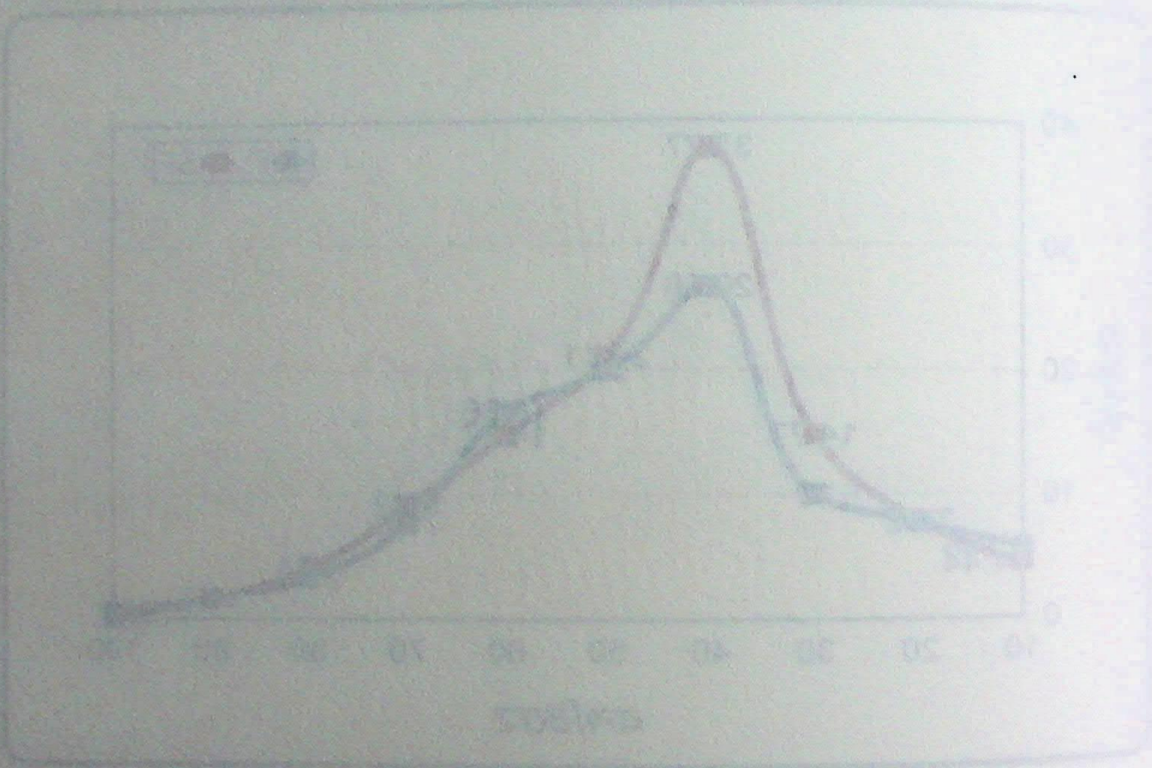


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की तालिका 3.07 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

8 - छद्म

संस्कृतभाषायां शब्दार्थस्य (विशेषणार्थ) विवरणं प्रस्तुतं
यत्किञ्च, तद्विषये प्रमाणं दत्तं तत् किञ्चन प्रमाणं तद्विषये

000-01



संस्कृतभाषायां शब्दार्थस्य (विशेषणार्थ) विवरणं प्रस्तुतं
यत्किञ्च, तद्विषये प्रमाणं दत्तं तत् किञ्चन प्रमाणं तद्विषये

3.2.1 संपूर्ण न्यादर्श (नव-दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.08

संपूर्ण न्यादर्श (नव-दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=300

मध्यमान Mean	मध्यांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	मा. वृत्ति SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ चतु. Q 3	प्रसरण variance	विषमता S k.	कुकुदता Ku.
59.42	61.00	70.00	18.27	1.05	46.00	70.00	333.67	-.061	-.621

संपूर्ण न्यादर्श (नव दम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन परीक्षण प्राप्ताकों को केन्द्रीय वृत्ति मध्यमान (M) 59.42 मध्यांक (Mdn) 61.00 एवं बहुलांक (Mode) 70.00 आया है इन तीनों के मध्य कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता अतः इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः Normal Probability Curve की ओर है ।

इसके उपरांत SEm 1.05 आया है जो 1.96 से कम है अतः ये भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है एवं ज्ञान $-.621$ आया है जो कि $.263$ से कम है अतः ये वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है ।

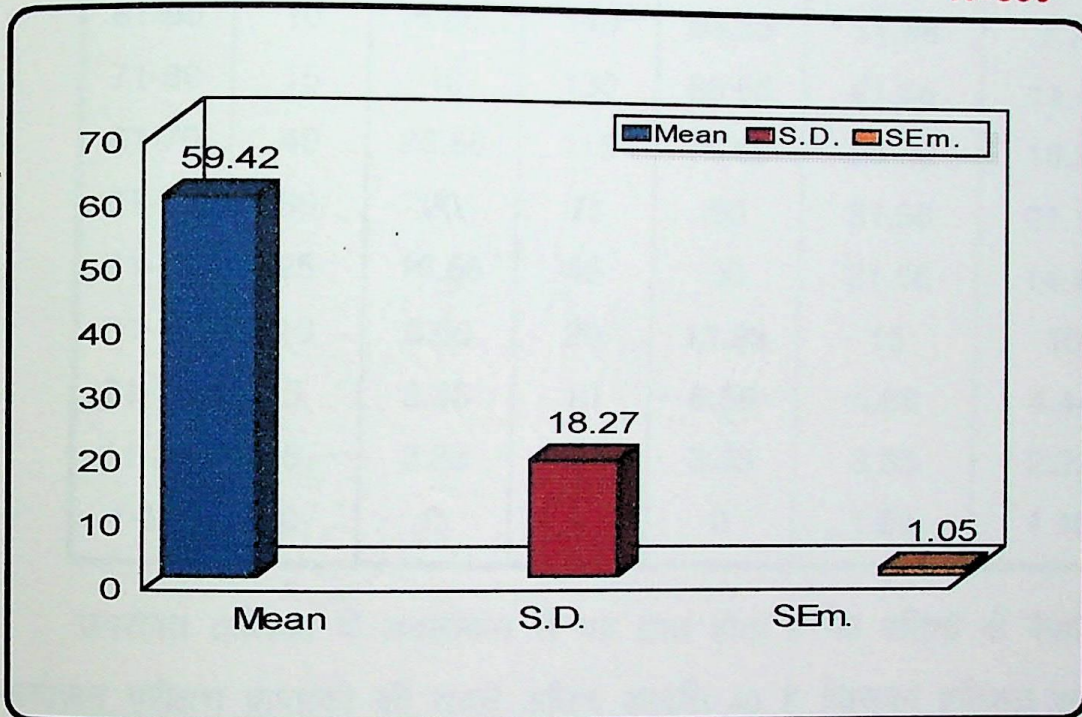
तदोपरांत Sk $-.061$ प्राप्त हुआ है तथा Mean 59.42 व Mdn 61.00 जो कि Mean के मान से अधिक है अतः यह विषमता धनात्मक है व Positive Skweness की ओर इंगित करती है ।

आरेख - 16 में संपूर्ण न्यायादर्श के वैवाहिक समायोजन प्राप्ताकों के केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दण्डाकृति में दर्शाया गया है ।

आरेख - 16

सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन
के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण
शीलता संबंधी आरेख

N=300

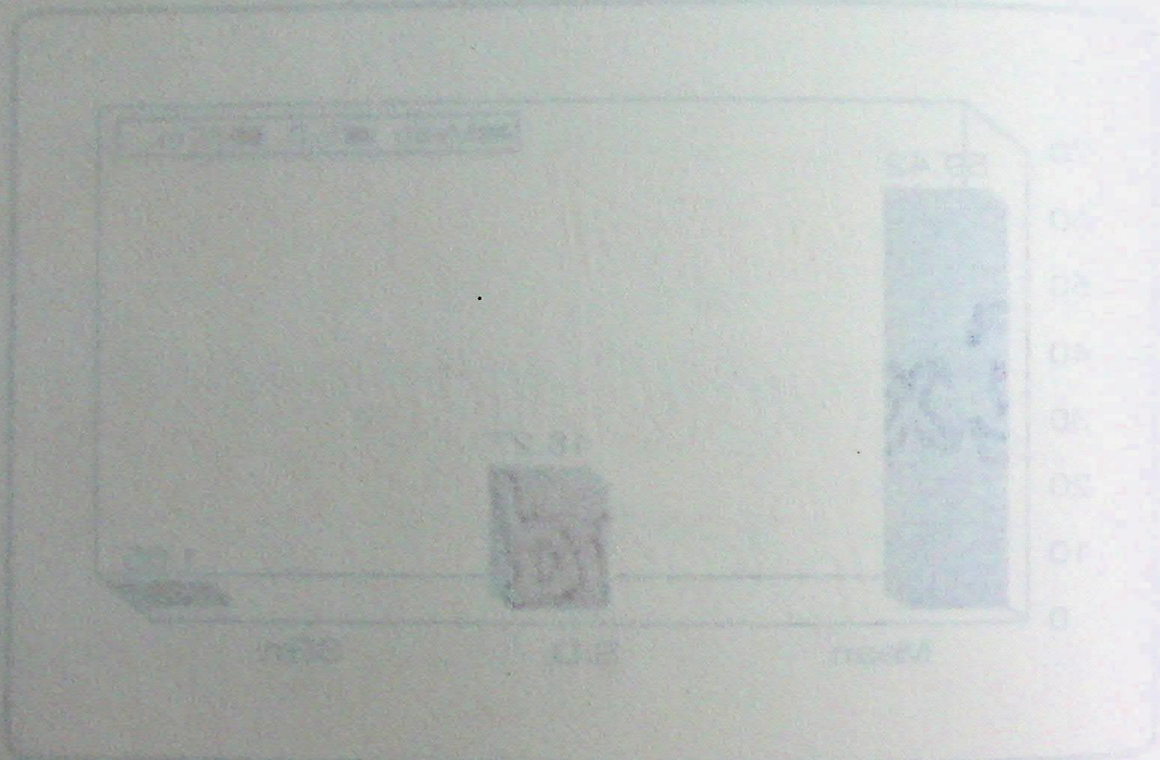


सम्पूर्ण न्यादर्श (नवदम्पतियों) के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक
परीक्षण प्राप्तांकों की तालिका 3.08 से संबंधित
केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

३१ - छन्दः

आचार्य-संस्कृत-विद्यापीठ (संस्कृत-विद्यापीठ) के अन्तर्गत
संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत
संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत

०००-११



आचार्य-संस्कृत-विद्यापीठ (संस्कृत-विद्यापीठ) के अन्तर्गत
संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत
संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत संस्कृत-विद्यापीठ के अन्तर्गत

3.2.2 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

तालिका - 3.09
पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	10	6.66	150	100	6.66	4.44
81-90	10	6.66	140	93.33	11.66	7.77
71-80	15	10	130	86.66	21.66	14.40
61-70	40	26.66	115	76.66	28.33	18.86
51-60	30	20	75	50	31.66	21.10
41-50	25	16.66	45	30	21.66	14.40
31-40	10	6.66	20	13.33	15	10
21-30	5	3.33	10	6.66	6.66	4.44
11-20	5	3.33	5	3.33	3.33	2.22
1-10	0	0	0	0	1.66	1.10

N=150

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि पतियों के वैवाहिक समायोजन परीक्षण प्राप्ताकों की सबसे अधिक आवृत्ति 40 है जिसका प्रतिशत 26.66 है जो कि 61-70 वर्गान्तर के मध्य स्थित है एवं निम्नतम आवृत्ति 5 है जिसका प्रतिशत 3.33 है जो निम्न वर्गान्तर 11-20 के मध्य स्थिति है । उच्चतम वर्गान्तर 91-100 के मध्य आवृत्ति 10 है जिसका प्रतिशत 6.66 है अर्थात् उच्च वर्गान्तर के मध्य आवृत्ति अधिक पाई गयी एवं दोनों छोर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई ।

इससे ज्ञात होता है कि उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है आरेख 9 में वैवाहिक समायोजन प्राप्तांक मौलिक एवं सरली कृत वक्र में दर्शाये गये हैं एवं आरेख 10 में वैवाहिक समायोजन प्राप्तांक मौलिक एवं सरली कृत प्रतिशत में दर्शाये गये हैं सरली कृत आवृत्ति सामान्य संभावना वक्र की ओर प्रदर्शित करती है ।

संस्कृत कालिकापुराण विंशति स्कंधात्मक कथिताई के विंशति अध्यायों की सूची

अध्याय - कथिताई

1. विंशति स्कंधात्मक कथिताई के विंशति अध्यायों की सूची

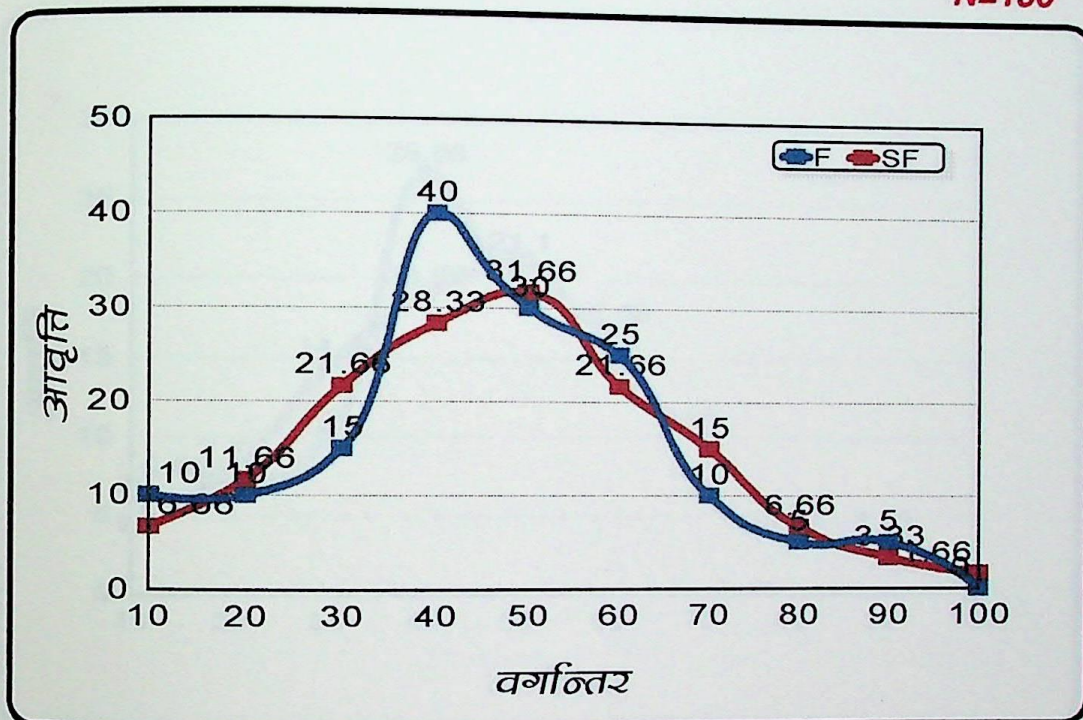
अध्याय	पंक्तियाँ	श्लोक	अध्याय	पंक्तियाँ	श्लोक	अध्याय
1	1-10	1-10	11	11-20	11-20	21
2	21-30	21-30	12	31-40	31-40	22
3	41-50	41-50	13	51-60	51-60	23
4	61-70	61-70	14	71-80	71-80	24
5	81-90	81-90	15	91-100	91-100	25
6	101-110	101-110	16	111-120	111-120	26
7	121-130	121-130	17	131-140	131-140	27
8	141-150	141-150	18	151-160	151-160	28
9	161-170	161-170	19	171-180	171-180	29
10	181-190	181-190	20	191-200	191-200	30

कथिताई के विंशति अध्यायों की सूची इस प्रकार है कि प्रत्येक अध्याय के श्लोकों की संख्या 10 है।
 1. अध्याय 1: 1-10 श्लोक
 2. अध्याय 2: 21-30 श्लोक
 3. अध्याय 3: 41-50 श्लोक
 4. अध्याय 4: 61-70 श्लोक
 5. अध्याय 5: 81-90 श्लोक
 6. अध्याय 6: 101-110 श्लोक
 7. अध्याय 7: 121-130 श्लोक
 8. अध्याय 8: 141-150 श्लोक
 9. अध्याय 9: 161-170 श्लोक
 10. अध्याय 10: 181-190 श्लोक
 11. अध्याय 11: 11-20 श्लोक
 12. अध्याय 12: 31-40 श्लोक
 13. अध्याय 13: 51-60 श्लोक
 14. अध्याय 14: 71-80 श्लोक
 15. अध्याय 15: 91-100 श्लोक
 16. अध्याय 16: 111-120 श्लोक
 17. अध्याय 17: 131-140 श्लोक
 18. अध्याय 18: 151-160 श्लोक
 19. अध्याय 19: 171-180 श्लोक
 20. अध्याय 20: 191-200 श्लोक
 21. अध्याय 21: 1-10 श्लोक
 22. अध्याय 22: 21-30 श्लोक
 23. अध्याय 23: 41-50 श्लोक
 24. अध्याय 24: 61-70 श्लोक
 25. अध्याय 25: 81-90 श्लोक
 26. अध्याय 26: 101-110 श्लोक
 27. अध्याय 27: 121-130 श्लोक
 28. अध्याय 28: 141-150 श्लोक
 29. अध्याय 29: 161-170 श्लोक
 30. अध्याय 30: 181-190 श्लोक

आरेख - 9

पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=150

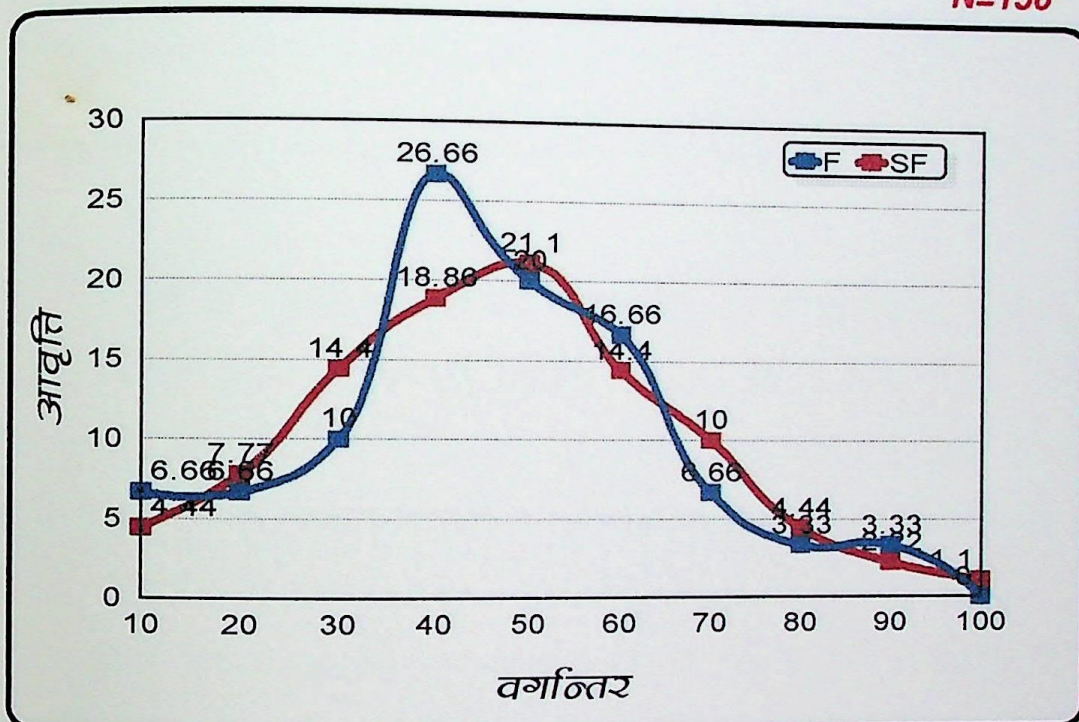


पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की
तालिका 3.09 से संबंधित आवृत्ति वितरण

आरेख - 10

पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=150

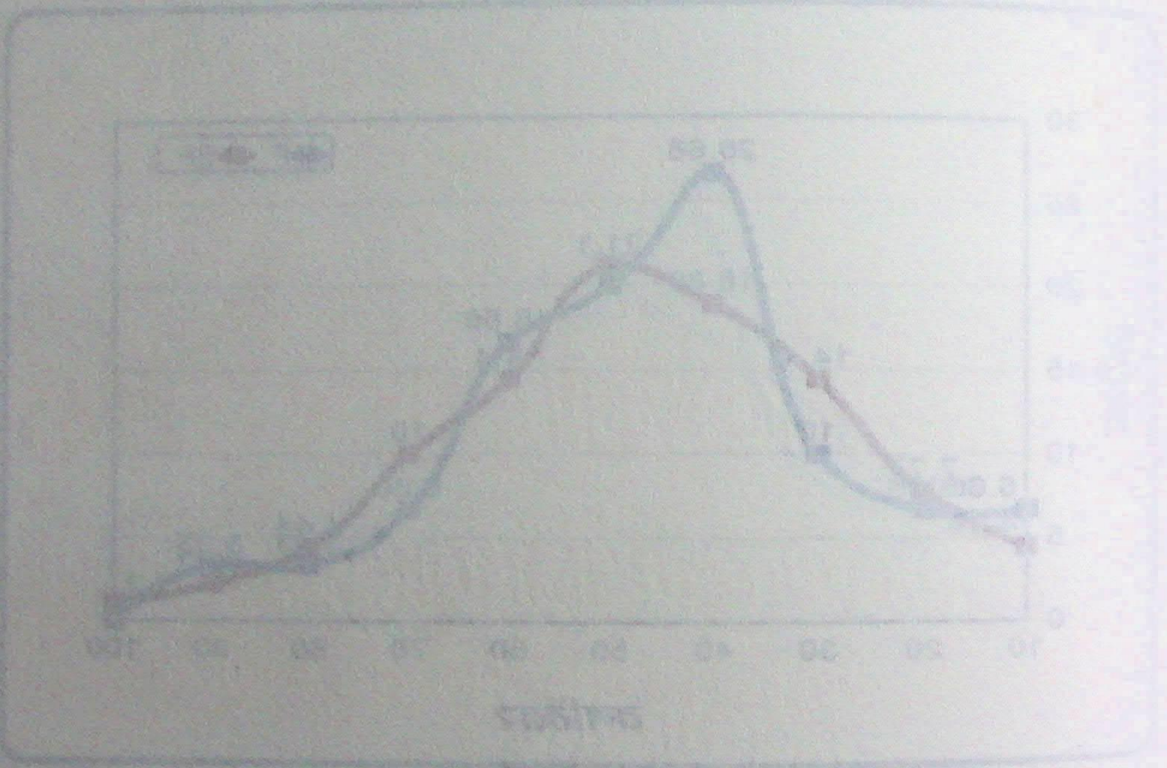


पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की
तालिका 3.09 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

01 - छद्म

प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार
प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार

001eM

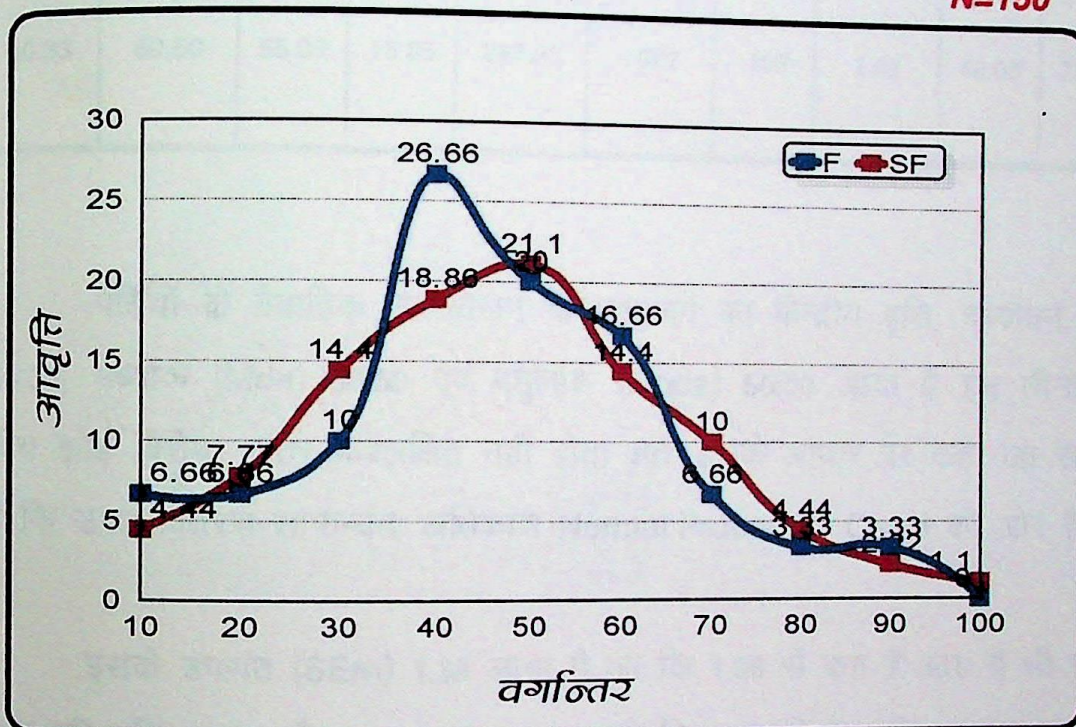


प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार
प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार प्रमाणित कर्मोपदेशिका के अनुसार

आरेख - 10

पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=150

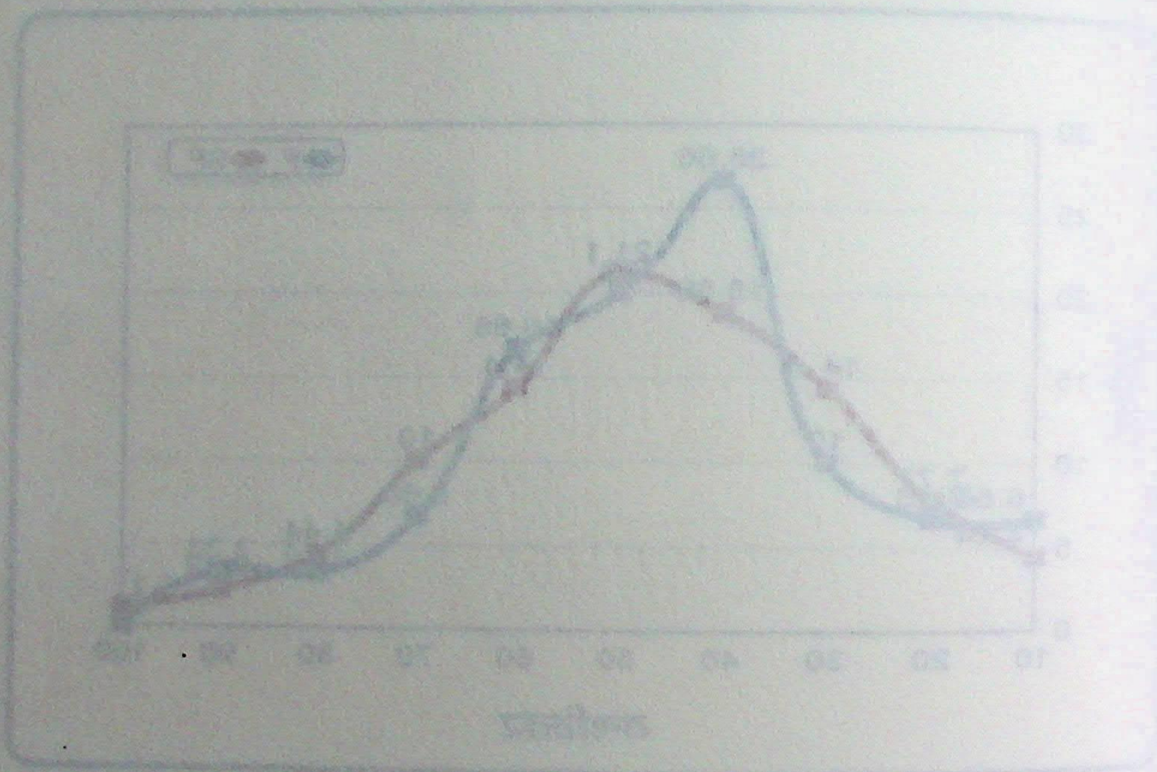


पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की
तालिका 3.09 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

01 - ऋतु

भारतीय कृषिशास्त्र के अनुसार ऋतुओं की विभिन्न
विशेषताओं का वर्णन निम्नलिखित तालिका में किया गया है

001-4



इस प्रकार, भारतीय कृषिशास्त्र के अनुसार ऋतुओं की विभिन्न
विशेषताओं का वर्णन निम्नलिखित तालिका में किया गया है

3.2.3 पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.10

पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=150

मध्यमान Mean	मध्यांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	प्रसरण variance	कुकुदता Ku.	विषमता S k.	मा. त्रुटि SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ. चतु. Q 3
60.33	60.50	55.00	15.95	287.33	-.572	.109	1.38	48.00	70.00

पतियों के वैवाहिक समायोजन के प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति, मध्यमान, (M) 60.33, मध्यांक (Mdn) 60.50 एवं बहुलांक (Mode) 55.00 आया है इन तीनों की बीच कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता अतः इसके आधार पर कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः अधिकांश Normal Probability Curve की ओर है ।

इसके उपरांत (SEm) 1.38 आया है जो कि 1.96 से कम है अतः ये भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है । एवं Ku -.572 जो कि .263 से कम है । अतः ये वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है ।

तदोपरांत Sk 1.38 आया है तथा Mean 60.33 व Mdn 60.50 जो कि लगभग बराबर है । यह विषमता धनात्मकता की ओर है जो कि Positive Skweness की ओर इंगित करती है ।

आरेख - 17 में पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों के केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दण्डाकृति में दर्शाया गया है ।

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

क्र.सं.	नाम	पता	विवरण	मार्ग	मार्ग	मार्ग	मार्ग	मार्ग
1

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

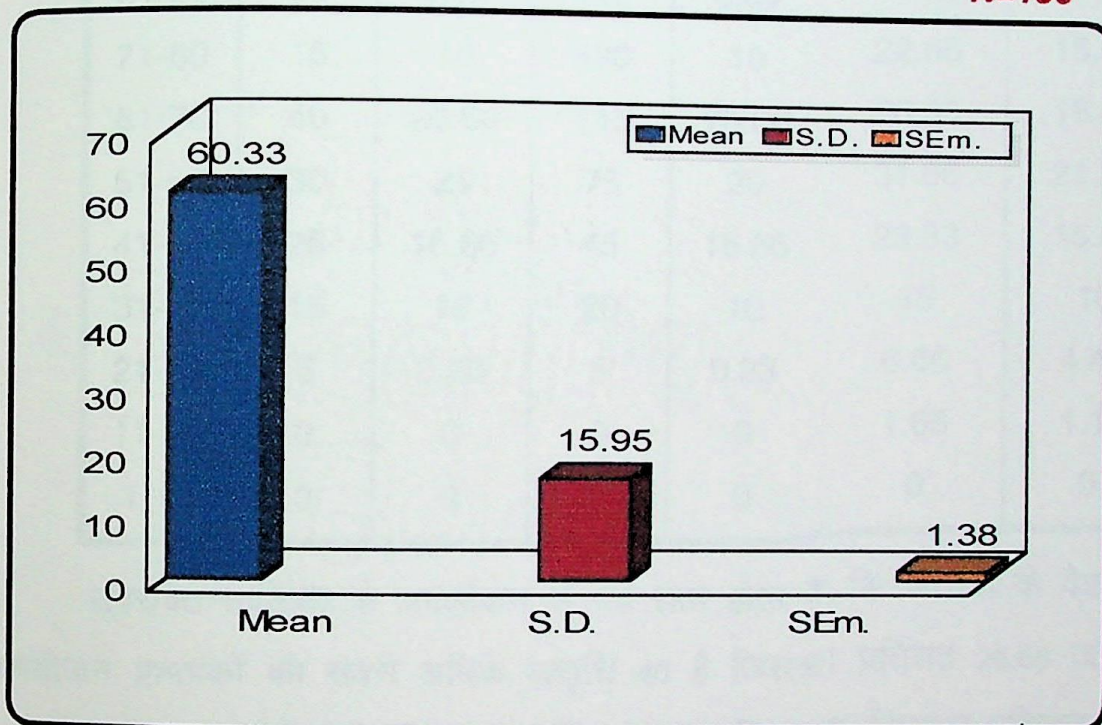
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए
विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए

आरेख - 17

पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150



पतियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की तालिका 3.10 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

3.2.4 पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

तालिका - 3.11
पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों का आवृत्ति वितरण

N=150

वर्गान्तर C.I.	आवृत्ति F	आवृत्ति% F%	संचयी आवृत्ति CF	संचयी आवृत्ति% CF%	सरलीकृत आवृत्ति SF	सरलीकृत आवृत्ति % SF%
91-100	7	4.66	150	4.66	6.66	4.44
81-90	13	8.66	145	8.66	11.66	7.77
71-80	15	10	130	10	22.66	15.10
61-70	40	26.66	115	26.66	28.33	18.86
51-60	30	20	75	20	31.66	21.10
41-50	25	16.66	45	16.66	23.33	15.55
31-40	15	10	20	10	15	10
21-30	5	0.33	5	0.33	6.66	4.44
11-20	0	0	0	0	1.66	1.10
1-10	0	0	0	0	0	0

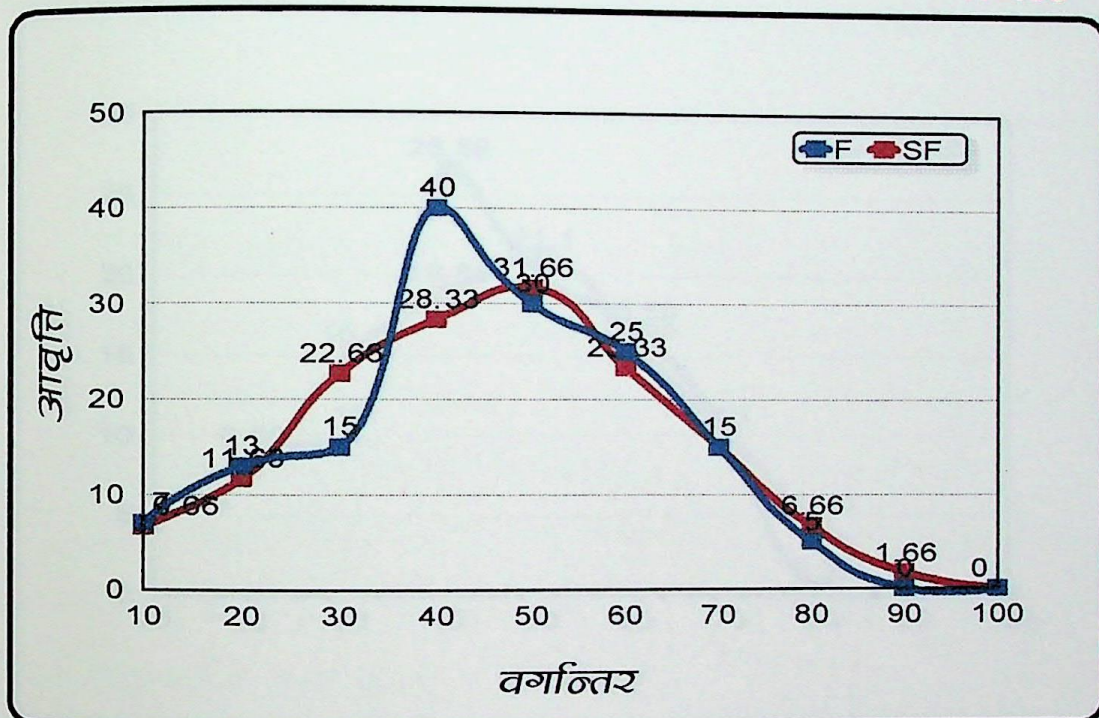
उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि पत्नियों के वैवाहिक समायोजन प्राप्ताकों की सबसे अधिक आवृत्ति 40 है जिसका प्रतिशत 26.66 जो कि 61-70 वर्गान्तर के मध्य स्थिति है एवं निम्नतम आवृत्ति 5 है जिसका प्रतिशत 0.33 जो 21-30 वर्गान्तर के मध्य आता है जो निम्न वर्गान्तर में स्थित है। उच्च वर्गान्तर 91-100 है जिसकी आवृत्ति 7 है एवं आवृत्ति प्रतिशत 4.66 है अर्थात् इस वर्गान्तर के मध्य में आवृत्ति अधिक पाई गई एवं दोनों ओर (उच्च एवं निम्न) में आवृत्ति कम होती गई।

इससे ज्ञात होता है उक्त वितरण सामान्य संभावना वक्र की ओर है आरेख - 11 में वैवाहिक समायोजन प्राप्तांक मौलिक और सरलीकृत वक्र में दर्शाये गये हैं तथा आरेख 12 में वैवाहिक समायोजन प्राप्तांक मौलिक व सरलीकृत प्रतिशत में दर्शाये गये हैं। सरलीकृत आवृत्ति वितरण अधिकांशतः सामान्य संभावना वक्र की ओर प्रदर्शित करता है।

आरेख - 11

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण संबंधी आरेख

N=150

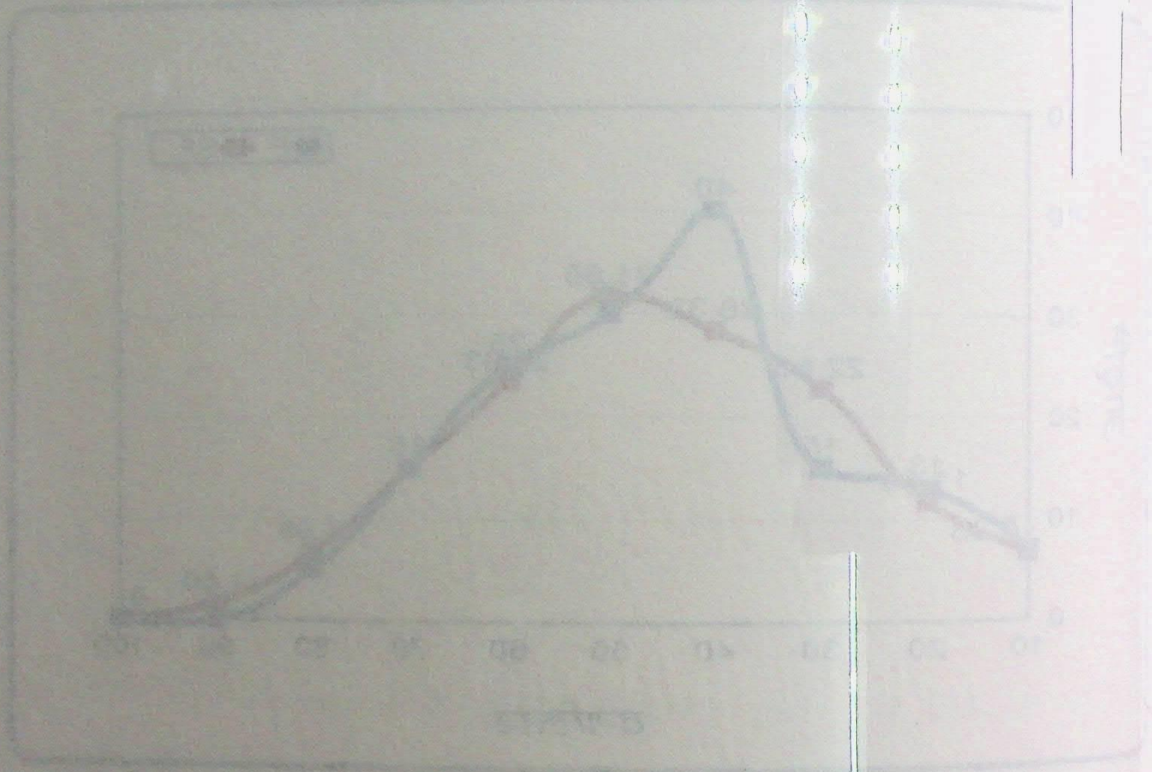


पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की
तालिका 3.11 से संबंधित आवृत्ति वितरण

II - उत्तर

उत्तराखण्ड राज्य के जलवायु के विशेषताओं की तुलना में
उत्तराखण्ड राज्य के जलवायु के विशेषताओं की तुलना में

उत्तराखण्ड

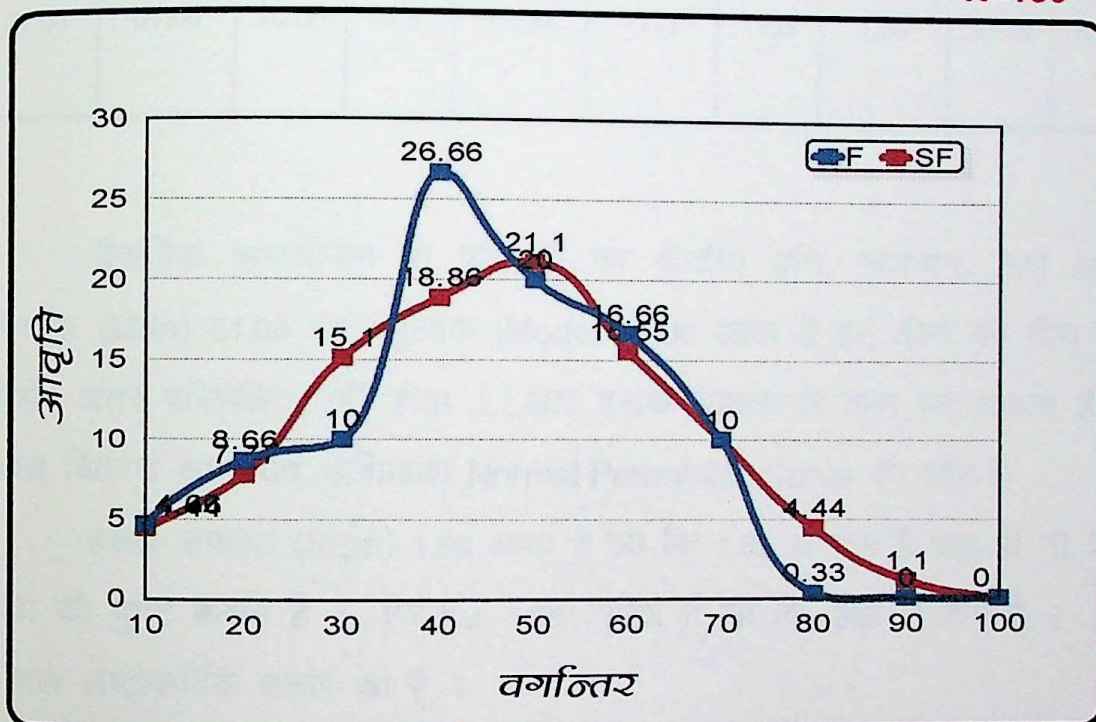


उत्तराखण्ड राज्य के जलवायु के विशेषताओं की तुलना में
उत्तराखण्ड राज्य के जलवायु के विशेषताओं की तुलना में

आरेख - 12

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का आवृत्ति प्रतिशत संबंधी आरेख

N=150



पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों की
तालिका 3.11 से संबंधित आवृत्ति प्रतिशत

3.2.5 पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

तालिका - 3.12
पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

N=150

मध्यमान Mean	मध्यांक M d n	बहुलांक Mode	मा. वि. S.D.	प्रसरण variance	कुकुदता Ku.	विषमता S k.	मा. त्रुटि SEm.	प्र. चतु. Q 1	तृ. चतु. Q 3
58.51	61.00	70.00	19.51	380.58	-.751	-.138	1.59	39.75	70.00

वैवाहिक समायोजन के प्राप्ताकों का केन्द्रीय वृत्ति, मध्यमान, (M) 58.51, मध्यांक (Mdn) 61.00 एवं बहुलांक (Mode) 70.00 आया है इन तीनों की बीच कोई विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता । अतः इसके आधार पर कहा जा सकता है कि उक्त वितरण सामान्यतः अधिकांश Normal Probability Curve की ओर है

इसके उपरांत (SEm) 1.59 आया है जो कि 1.96 से कम है अतः ये भी उक्त तथ्य की पुष्टि करता है । एवं Ku -0.751 आया है जो कि 0.263 से कम है । अतः ये वक्र लेप्टोकर्टिक प्रकार का है ।

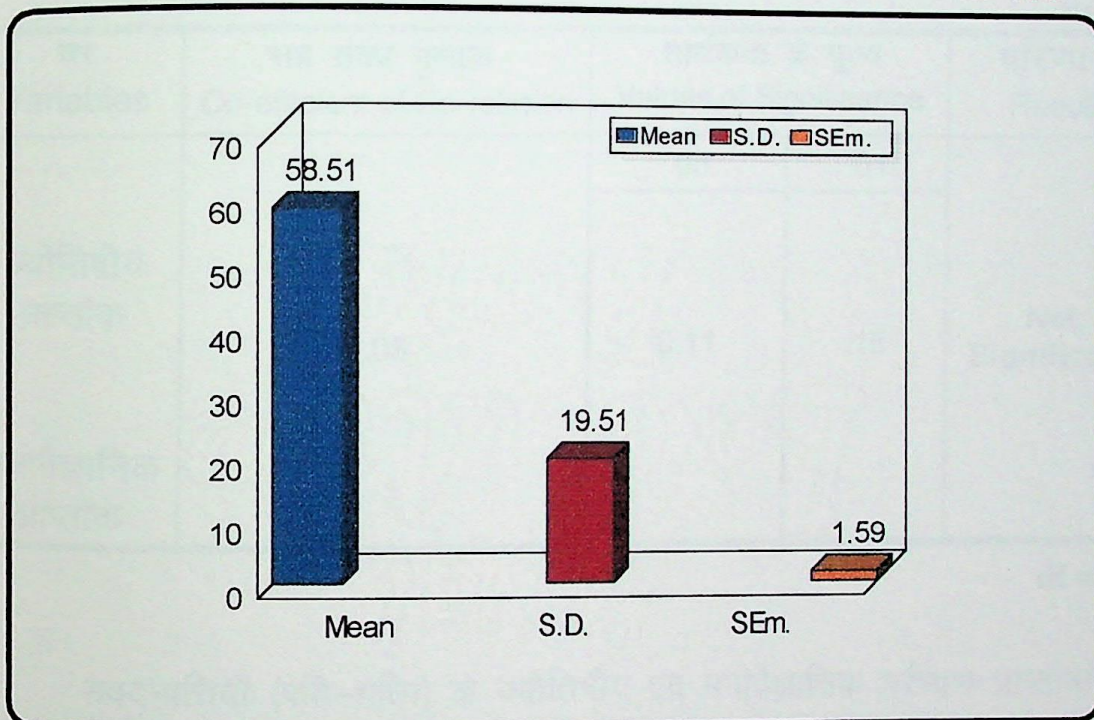
तदोपरांत Sk -0.138 आया है तथा Mean 58.51 व Mdn 61.00 जो कि Mean से अधिक है तथा यह विषमता धनात्मकता की ओर है जो कि Positive Skweness को प्रदर्शित करती है ।

आरेख - 18 में पत्नियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों के केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता को दण्डाकृति में दर्शाया गया है ।

आरेख - 18

पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण
प्राप्तांकों का केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता संबंधी आरेख

N=150



पत्नियों के वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों
की तालिका 3.12 से संबंधित केन्द्रीय वृत्ति एवं प्रसरण शीलता

3.3 विभिन्न चरों के सह संबंधात्मक विवरण

3.3.1 नवदम्पतियों (पति-पत्नि के) वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों के मध्य सह संबंध विवरण

तालिका - 3.13

नवदम्पतियों (पति-पत्नि के) वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों के मध्य सह संबंध विवरण तालिका

N=300

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
ज्योतिषीय प्राप्तांक	.06	0.11	.15	Not Significant
मनोवैज्ञानिक प्राप्तांक				

df =298

नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों के मध्य सहसंबंध गुणांक .06 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के स्तर 0.5 में .11 और .01 में .15 के मान से कम है निष्कर्षतः ये कहा जा सकता है कि इन दोनों चरों का सह संबंध सार्थक नहीं है । यद्यपि इन दोनों का सह संबंध .06 है किन्तु संबंध होते हुये भी सार्थक नहीं है । इससे ज्ञात होता है कि ज्योतिष और मनोवैज्ञानिक प्राप्ताकों के मूल्यांकन में कुछ त्रुटियों की संभावना की जा सकती है । इस न्यादर्श के अंतर्गत पति पत्नि (नवदम्पतियों) की संख्या 300 है यदि यह संख्या और भी बढ़ जाती है तो उक्त दोनों चरों के संबंध में सार्थकता की संभावना अधिक बढ़ जावेगी ।

3.3.2 पति पत्नी के ज्योतिष प्राप्तांको के मध्य सह संबंध

तालिका - 3.14

पति पत्नी के ज्योतिष प्राप्तांको के मध्य सह संबंध तालिका

N=150

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	0.57	0.16	0.21	Significant
पत्नि				

df =148

ज्योतिष के क्षेत्र में पति व पत्नि के प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.57 है । जो सार्थकता स्तर .05 में 0.16 से अधिक है अतः इन दोनों का संबंध सार्थक है कहने का तात्पर्य 100 Cases (पति-पत्नी) में से 95 पति-पत्नियों के संबंध में सह संबंध दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है किन्तु 5 Cases (पति-पत्नी) के संबंध में निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता । इसी प्रकार .01 में 0.21 से भी अधिक है अतः इस स्तर पर भी सार्थकता है कहने का तात्पर्य यह कि 100 में से 99 के प्रति यह सार्थकता प्रमाणित होती है किन्तु 1 के प्रति कुछ नहीं कहा जा सकता ।

3.3.3 पति पत्नी के मनोवैज्ञानिक प्राप्तांको के मध्य सह संबंध

तालिका - 3.15

पति पत्नी के मनोवैज्ञानिक प्राप्तांको के मध्य सह संबंध तालिका

N=150

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	-0.07	.05	.01	Not Significant
		0.16	0.21	

df =148

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्ताकों क्षेत्र में नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के मध्य 150 नव दम्पतियों के प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध गुणांक -0.07 प्राप्त हुआ है । जो निषेधात्मक है तथा सार्थकता स्तर .05 में 0.16 से कम है इसी प्रकार .01 में 0.21 से भी कम प्राप्त हुआ है कहने का तात्पर्य इस क्षेत्र में पति-पत्नी में वैवाहिक समायोजन धनात्मक रूप से नहीं पाया जाता बल्कि निषेधात्मक है निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के मध्य वैवाहिक समायोजन धनात्मक न होकर निषेधात्मक है जो Marital Maladjustment (वैवाहिक कुसमायोजन) की ओर इंगित करता है ।

3.3.4 हिन्दू पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.16

हिन्दू पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम तालिका

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	.58	.05	.01	Significant
		0.361	0.463	

df =28

ज्योतिष के क्षेत्र में नवदम्पति (पति-पत्नि) के मध्य 30 दम्पतियों के प्राप्तांकों के आधार पर सहसंबंध गुणांक 0.58 प्राप्त हुआ है । जो सार्थकता स्तर .05 में 0.361 से अधिक है और .01 में 0.463 के मान से भी अधिक है । कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दू पति पत्नी का ज्योतिष के क्षेत्र में सह संबंध दृढ़ता पूर्वक कहा जाता सकता है ।

3.3.5 हिन्दू पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.17
हिन्दू पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	-0.58	0.361	0.463	not Significant
पत्नि				

df =28

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के क्षेत्र में 30 हिन्दू नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध गुणांक -0.58 प्राप्त हुआ है । जो कि निषेधात्मक है तथा सार्थकता स्तर .05 में 0.361 के मान से कम है इसी प्रकार .01 में 0.463 के मान से भी कम प्राप्त हुआ है । जो कि निषेधात्मक है । कहने का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में पति पत्नी में वैवाहिक समायोजन धनात्मक रूप से नहीं पाया जाता बल्कि निषेधात्मक है । निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के मध्य वैवाहिक समायोजन धनात्मक न होकर निषेधात्मक है जो कि वैवाहिक कुसमायोजन (Marital Mal Adjustment) की ओर इंगित करता है ।

3.3.6

मुस्लिम पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.18

मुस्लिम पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	0.72	.05	.01	Significant
		0.361	0.463	

df =28

ज्योतिष के क्षेत्र में मुस्लिम नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के प्राप्तांक के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.72 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 से अधिक है अतः इन दोनों का संबंध सार्थक है कहने का तात्पर्य यह कि पति पत्नि में सह संबंध दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि यह सार्थक है इसी प्रकार .01 में 0.463 से अधिक है अतः इस स्तर पर भी सार्थकता है । कहने का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में सार्थकता प्रमाणित होती है ।



Table with 4 columns and 2 rows of data.

प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण	प्रमाण
1	2	3	4

Text block containing several lines of handwritten or printed text in Devanagari script.

3.3.7 मुस्लिम पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.19
मुस्लिम पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	.22	0.361	0.463	not Significant
पत्नि				

df =28

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के क्षेत्र में मुस्लिम नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के मध्य 30 मुस्लिम युगल के प्राप्तांक के आधार पर सहसंबंध गुणांक .22 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 से कम है इसी प्रकार सार्थकता के स्तर .01 में 0.463 के मान से भी कम है कहने का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में पति-पत्नि के वैवाहिक समायोजन में संबंध होते हुए भी सार्थक सहसंबंध नहीं है ।

3.3.8 सिक्ख पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.20

सिक्ख पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	0.72	0.361	0.463	Significant
पत्नि				

df =28

उक्त तालिका में ज्योतिष के क्षेत्र में 30 सिक्ख युगल (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन प्राप्तांकों के मध्य सह सहसंबंध गुणांक 0.72 प्राप्त हुआ है, जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 से अधिक है इसी प्रकार .01 में 0.463 से भी अधिक है अतः इन दोनों ही स्तरों पर सार्थकता है । कहने का तात्पर्य यह इनके मध्य सहसंबंध निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है ।

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में
सामान्य ज्ञान

अध्याय - १

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

Table with 4 columns and 2 rows. The columns are labeled in Hindi and English. The first row contains the headers, and the second row contains numerical data.

विज्ञान की प्रगति	विज्ञान के उपयोग	विज्ञान के विकास	विज्ञान के भविष्य
1. विज्ञान की प्रगति	2. विज्ञान के उपयोग	3. विज्ञान के विकास	4. विज्ञान के भविष्य

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

विज्ञान की प्रगति और उसके उपयोग के विषय में सामान्य ज्ञान

3.3.9 सिक्ख पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.21
सिक्ख पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30				
चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	- .69	.05	.01	not Significant
		0.361	0.463	

df = 28

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के क्षेत्र में सिक्ख नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के मध्य 30 सिक्ख (पति-पत्नि) के प्राप्तांक के आधार पर सहसंबंध गुणांक $-.69$ प्राप्त हुआ है जो कि निषेधात्मक है तथा सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 के मान से कम है । इसी प्रकार $.01$ में 0.463 के मान से भी कम है जो कि निषेधात्मक है कहने का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में पति पत्नि में वैवाहिक समायोजन संबंध धनात्मक रूप से नहीं पाया जाता है बल्कि निषेधात्मक है । निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के मध्य वैवाहिक समायोजन धनात्मक न होकर निषेधात्मक है जो कि वैवाहिक कुसमायोजन (Marital Mal adjustment) की ओर इंगित करता है ।

3.3.10 ईसाई पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.22

ईसाई पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	.39	0.361	0.463	Significant
पत्नि				

df = 28

उक्त तालिका में ज्योतिष के क्षेत्र में ईसाई नवदम्पति (पति-पत्नि) के मध्य सह संबंध गुणांक 0.39 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 से अधिक है अतः इन दोनों के मध्य सार्थक संबंध है । कहने का तात्पर्य यह 100 cases (पति-पत्नि) में से 95 पति-पत्नि के संबंध में सहसंबंध दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि यह संबंध सार्थक है, किन्तु 5 Cases के संबंध में निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता । इसी प्रकार .01 में 0.463 से कम है अतः इस स्तर पर सार्थकता नहीं है । कहने का तात्पर्य यह कि 100 में से 99 के प्रति सार्थकता प्रमाणित होती है किन्तु 1 के प्रति कुछ नहीं कहा जा सकता ।

अंततः ये कहा जा सकता है ज्योतिष के अनुसार इनका दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा ।

Table with 4 columns and 4 rows. The text is extremely faint and mostly illegible. The header row appears to contain the following text (from left to right):

...
...
...
...

3.3.1 1 ईसाई पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.23
ईसाई पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
		.05	.01	
पति	-.58	0.361	0.463	not Significant
पत्नि				

N=30

df =28

उक्त तालिका में मनोविज्ञान के अंतर्गत वैवाहिक समायोजन परीक्षण प्राप्तांकों के क्षेत्र में ईसाई नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के मध्य 30 युगल (पति-पत्नि) ईसाई के प्राप्तकांक के मध्य सहसंबंध गुणांक $-.58$ प्राप्त हुआ है जो कि निषेधात्मक है तथा सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 के मान से कम है । इसी प्रकार $.01$ में 0.463 के मान से भी कम है जो कि निषेधात्मक है कहना का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में पति पत्नि में वैवाहिक समायोजन धनात्मक रूप से नहीं पाया जाता बल्कि निषेधात्मक है । निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के मध्य वैवाहिक समायोजन धनात्मक न होकर निषेधात्मक है जो कि वैवाहिक कुसमायोजन (Marital Mal adjustment) की ओर इंगित करता है ।

अतः इनका दाम्पत्य जीवन सुखद न होकर सामान्य कहा जा सकता है ।

3.3.12 जैन पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.24

जैन पति पत्नी के मध्य ज्योतिषीय प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30				
चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	.54	.05	.01	Significant
		0.361	0.463	

df =28

ज्योतिष के क्षेत्र में 30 जैन युगल (पति-पत्नि) के वैवाहिक प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध गुणांक .54 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के दोनों स्तर .05 में 0.361 से व .01 में 0.463 से भी अधिक है अतः दोनों ही स्तरों पर संबंध है सार्थकता स्पष्ट ज्ञात होती है । निष्कर्षतः ज्योतिष के क्षेत्र में पति-पत्नि में सहसंबंध परिलक्षित होता है ।



Table with 4 columns and 3 rows. The text is faint and appears to be a ledger or account book. The columns are labeled in Hindi/English. The rows contain numerical data.

क्र.सं.	विवरण	पैसे	पैसे
1
2

...

...

...

...

...

3.3.13 जैन पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

तालिका - 3.25
जैन पति पत्नी के मध्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांको संबंधी सह संबंधात्मक परिणाम

N=30				
चर Variables	सह संबंध गुणांक Co-efficient of Co-relation	सार्थकता के मूल्य Values of Significance		परिणाम Result
पति पत्नि	- .42	.05	.01	not Significant
		0.361	0.463	

df =28

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांकों के क्षेत्र में जैन नवदम्पति (पति-पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के मध्य 30 जैन नवदम्पति (पति-पत्नि) के प्राप्तांक के मध्य सहसंबंध गुणांक $-.42$ प्राप्त हुआ है जो कि निषेधात्मक है तथा सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 के मान से कम है । इसी प्रकार .01 में 0.463 के मान से भी कम है जो कि निषेधात्मक है कहने का तात्पर्य यह कि इस क्षेत्र में पति पत्नि में वैवाहिक समायोजन धनात्मक रूप से नहीं पाया जाता बल्कि निषेधात्मक है । निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के मध्य वैवाहिक समायोजन धनात्मक न होकर निषेधात्मक है जो कि वैवाहिक कुसमायोजन (Marital Mal adjustment) की ओर इंगित करता है ।

अतः वैवाहिक समायोजन सामान्य कहा जा सकता है ।

वैवाहिक समायोजन परीक्षण का मानकीकरण (Standerdization) आगरा के आसपास के क्षेत्र में हुआ है संभवतः जबलपुर के आसपास के क्षेत्रों में प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में भिन्नता है अतः यह प्रतीत होता है कि सह संबंध की न्यूनता इसके कारण से भी हो सकती है ।

Table with 4 columns and 2 rows. The text is extremely faint and illegible.

3.4 परिकल्पनाओं का सत्यापन

1. नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.13)

इस शोध कार्य में यह पाया गया कि नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन संबंध ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक प्राप्तांको के मध्य सह संबंध .06 पाया गया जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.11 और .01 में .15 के मान से भी कम है । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि नवदम्पतियों के ज्योतिषीय एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः यहां पर यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

2. नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता है ।

(तालिका क्रमांक 3.14)

पति पत्नि के मध्य वैवाहिक समायोजन में ज्योतिषीय मूल्यांकन के क्षेत्र में सह संबंध 0.57 पाया गया अर्थात् इनके मध्य सह संबंध में सार्थकता पाई गई ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

संस्कृत-संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

१. अथ संज्ञा-संग्रहः

२. अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

अथ संज्ञा-संग्रहः

3. नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.15)

इस शोध कार्य में यह पाया गया कि पति पत्नि के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों के मध्य सह संबंध -0.07 पाया गया जो कि सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.16 और $.01$ में 0.21 के मान से भी कम हैं । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि पति पत्नि के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः यहां उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

4. हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.16)

हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सह संबंध $.58$ पाया अर्थात् इनके मध्य सह संबंध में सार्थकता पाई गई ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

॥ अथ ब्रह्मसूत्रम् ॥
॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥

5. हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.17)

हिन्दू नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के क्षेत्र में सह संबंध -0.58 पाया गया जो कि निषेधात्मक होने के साथ सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 एवं 0.1 में 0.463 के मान भी कम है । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि इनके मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

6. मुस्लिम नवदम्पतियों (पति पत्नि) के ज्योतिष मूल्यांकन के आधार पर पति पत्नि के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.18)

ज्योतिष क्षेत्र में पति पत्नि के मध्य वैवाहिक समायोजन में सह संबंध $.72$ पाया गया जो सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 से व $.01$ में 0.463 के मान से भी अधिक है अर्थात् इनके मध्य सह संबंध सार्थक पाया गया ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

7. मुस्लिम नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर पति पत्नि के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.19)

मुस्लिम नवदम्पतियों (पति पत्नि) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्तांको में मध्य सहसंबंध .22 पाया गया जो सार्थकता के स्तर .05 में 0.361 से व .01 में 0.463 के मान से भी कम है । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि नवदम्पतियों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

8. सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के वैवाहिक समायोजन के ज्योतिष मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.20)

सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के वैवाहिक समायोजन में ज्योतिष मूल्यांकन के आधार पर सह संबंध 0.72 पाया गया अर्थात् इनके मध्य सह संबंध में सार्थकता पाई गई ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

9. सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.21)

सिक्ख नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के क्षेत्र में सह संबंध सह संबंध -0.69 पाया गया जो कि निषेधात्मक होने के साथ साथ सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 एवं $.01$ में 0.463 के मान से भी कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि इनके मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

10. ईसाई नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के ज्योतिष मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.22)

ज्योतिष के क्षेत्र में ईसाई (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में सह संबंध $.39$ पाया गया । अर्थात् इनके मध्य सह संबंध सार्थकता पायी गई ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

- 11 ईसाई नवदम्पतियों (पति-पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.23)

ईसाई नवदम्पतियों (पति पत्नि) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सह संबंध -0.58 पाया गया जो सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 से व $.01$ में 0.463 के मान से भी कम है अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि नवदम्पतियों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

- 12 जैन नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन में ज्योतिषीय मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.24)

नवदम्पतियों पति-पत्नि के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिष प्राप्तांकों के मध्य सह संबंध $.54$ पाया गया जो सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 व $.01$ में 0.043 के मान से भी अधिक है । अतः इनके मध्य सह संबंध में सार्थकता पाई गयी ।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
अथ श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥
अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अर्जुन उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

13. जैन नवदम्पतियों (पति पत्नि) के मध्य वैवाहिक समायोजन के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर सार्थक सह संबंध नहीं पाया जाता ।

(तालिका क्रमांक 3.25)

जैन नवदम्पतियों (पति पत्नि) के वैवाहिक समायोजन संबंधी मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों के मध्य सह संबंध -0.42 पाया गया जो सार्थकता के स्तर $.05$ में 0.361 से व $.01$ में 0.463 के मान से भी कम है अतः निष्कर्षतः पति पत्नि के मध्य मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया ।

अतः यहां उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

अध्याय - 4

नव दम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या

(ज्योतिष एवं मनोविज्ञान के आधार पर)

- 4.1 हिन्दू नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या
- 4.2 मुस्लिम नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या
- 4.3 सिक्ख नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या
- 4.4 ईसाई नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या
- 4.5 जैन नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या

१. भाष्य कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार कि विनिर्माण (कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार)

कृष्णार्क के विनिर्माण कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार
कृष्णार्क के विनिर्माण कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार
कृष्णार्क के विनिर्माण कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार
कृष्णार्क के विनिर्माण कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार
कृष्णार्क के विनिर्माण कृष्णार्क के विनिर्माण पर विचार

नव दम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या

(ज्योतिष एवं मनोविज्ञान के आधार पर)

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्र मुच्यते ।
शिक्षाघ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्म लोके महीयते ॥

जिस प्रकार छंद के पैर है कल्प हाथ ज्योतिष नेत्र निरुक्त को कान की संज्ञा दी जाती है तथा शिक्षा नासिका व व्याकरण को मुख कहा जाता है षड्शास्त्रों में जिस तरह ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा गया है जिस तरह बिना नेत्र के व्यक्ति कुछ भी करने में अक्षम रहता है उसी प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्योतिष की अनिवार्यता से इनकार नहीं किया जा सकता । इसी दृष्टि से कुछ कुंडलियों की व्याख्या ज्योतिषीय दृष्टिकोण से की है ।

दाम्पत्य मेलापक मुख्यतः नक्षत्र, राशि को आधार मानकर —
वर्णों वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्
गण मैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिका ।

मुहूर्त चिन्तामणि श्लोक -21

अर्थात् अष्टमेलापक का यह स्वरूप होता है इन्हीं आधारों को मानकर गुणों की संख्या का निरूपण किया गया है तथापि कुंडली के ग्रह महत्वपूर्ण होते हैं जैसे मंगल, राहु, शनि, इनकी संज्ञा क्रूर ग्रह होती हैं । यदि एक कुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम व द्वादश भाव में क्रूर ग्रह हैं किन्तु द्वितीय कुंडली में उस प्रकार के क्रूर ग्रह नहीं हैं तो दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है साथ ही मेलापक के समय गुण मिलान के साथ ही उक्त (क्रूर एवं सौम्य) ग्रहों का परस्पर परिहार नितांत आवश्यक होता है ।

सप्तमेश, लग्नेश, सुखेश, पंचमंश, विशेष रूप से दाम्पत्य भाव को प्रभावित करते हैं । सौम्य ग्रहों की दृष्टि-स्थिति दाम्पत्य सुख की वृद्धि कारक होती है किन्तु क्रूर ग्रहों की दृष्टि-स्थिति दाम्पत्य सुख में बाधक होती है अतः विज्ञ-दैवज्ञ को उक्त रीति से विवाह मेलापक के समय विचार करना नितांत आवश्यक होता है ।

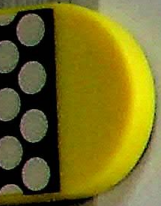
(मेलापक सारणी परिशिष्ट में देखें ।)

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।

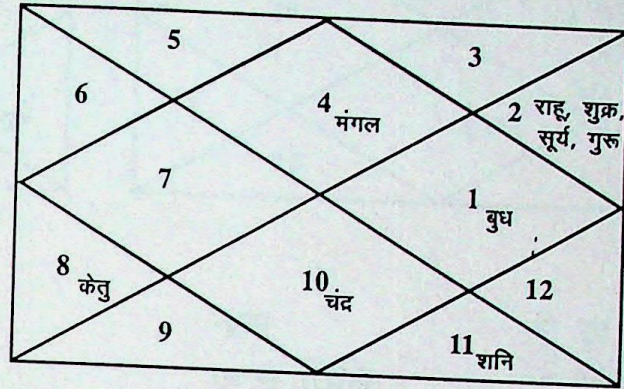
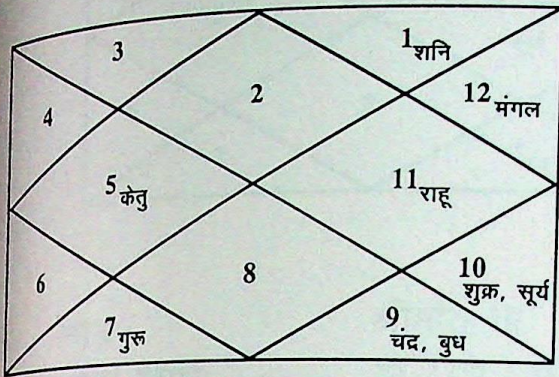
तद्वद्वैदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनिस्थिति ॥

यद्यपि कोई एक ग्रह दाम्पत्य जीवन का निर्धारण नहीं कर सकता और ना ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण कर सकता है । तथापि सभी गृहों की दृष्टि-स्थिति आदि के द्वारा एक निष्कर्ष तो पहुंचा ही जा सकता है संभवतः ज्योतिष के अध्ययेताओं के द्वारा त्रुटि हो सकती हैं किन्तु शास्त्र की वैज्ञानिकता से इन्कार नहीं किया जा सकता । अतः इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए वृहत पाराशर होरा शास्त्रम् की ज्योतिष शास्त्रीय पद्धति के अनुसार— किसी भाव का स्वामी यदि स्वराशिस्थ हो, केन्द्र या त्रिकोण में साथ उच्च का होकर बैठा हो या मूल त्रिकोणस्थ हो तो, मित्रराशिस्थ हो, उस भाव से संबंधित फल उत्तम होता है । इसके विपरीत यदि किसी भाव का स्वामी षष्ठम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तथा साथ ही नीच का या शत्रु राशि में स्थित हो तो उस भाव से संबंधित फल को खराब कर देता है या न्यून कर देता है । इसी ज्योतिष शास्त्रीय को आधार मानकर अग्रलिखित कुंडलियों की व्याख्या का प्रयास किया गया है ।

ठीक उसी प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से वैवाहिक समायोजन ज्ञात करने के लिये साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया । उन्होंने व्यक्तिगत रूप से और एक साथ (समग्र रूप से) जैसा उचित समझा प्रत्युत्तर दिया तथा उसी रूप में उनके प्रत्युत्तरों की व्याख्या का प्रयास किया गया साथ ही इन्हें परीक्षण प्राप्तांकों के आधार पर भी विविध श्रेणियों में रखा गया ।



4.1 हिन्दू-नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या



नाम - श्रीमति क.
जन्म तिथि - 03/02/1970
जन्म समय - दोप. 1:45
जन्म स्थान - इंदौर
गुण - 21/36

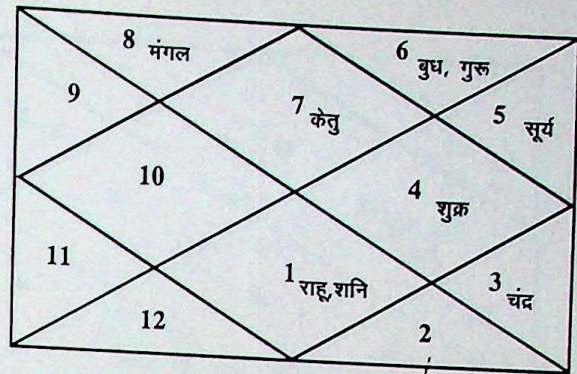
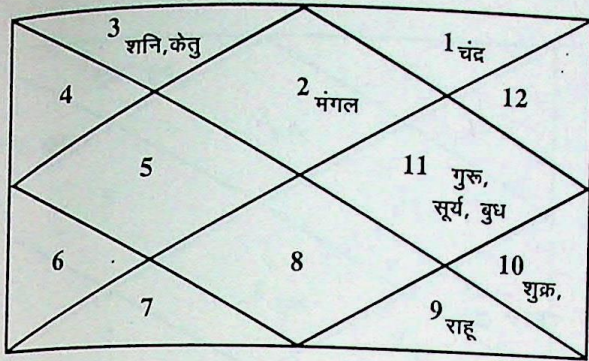
नाम - श्री क.
जन्म तिथि - 22/05/1965
जन्म समय - प्रातः 10:30
जन्म स्थान - जबलपुर

उपरोक्त कुंडली में लग्नेश शुक्र, सूर्य युत नवमस्थ व सप्तमेश मंगल एकादशस्थ हैं। जो कि शुभ है किन्तु लग्न व सप्तम भाव किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न होने से भी दाम्पत्य सुख प्रभावित होता है।

श्री क की कुंडली के अनुसार लग्नेश चन्द्र सप्तमस्थ हैं जो कि शुभ है किन्तु सप्तमेश शनि अष्टमस्थ हैं, लग्न स्थित नीचंगत मंगल दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करता है व दाम्पत्य सुख को न्यून करता है। साथ ही गुण मिलान भी उत्तम नहीं है जो कि दाम्पत्य जीवन को विशेष प्रभावित करता है।

इसके साथ पति पत्नि दोनों का साक्षात्कार लेने पर उन्होंने बताया कि हमारे बीच उत्तम वैचारिक सामंजस्य है। किंचित मतभेदों को छोड़ कर शेष सामान्य समायोजन है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर पत्नि का प्राप्तांक 88 Exellent व पति का प्राप्तांक 66 है जो कि वैवाहिक समायोजन की श्रेणी Good की ओर इंगित करता है अतः ज्योतिष और मनोविज्ञान दोनों ही के आधार पर सामान्य समायोजन परिलक्षित होता है।



नाम - श्रीमति ख.
 जन्म तिथि - 27/02/1974
 जन्म समय - दोप. 11:50
 जन्म स्थान - पाटन
 गुण - 17.5/36

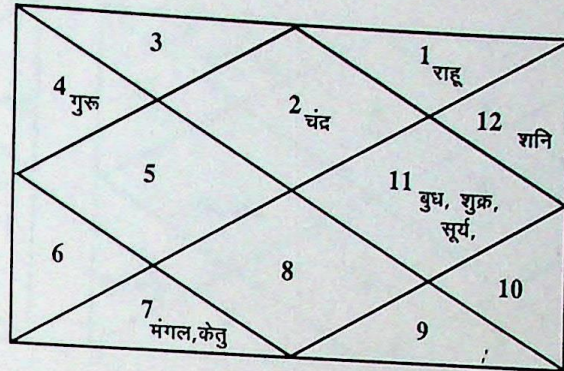
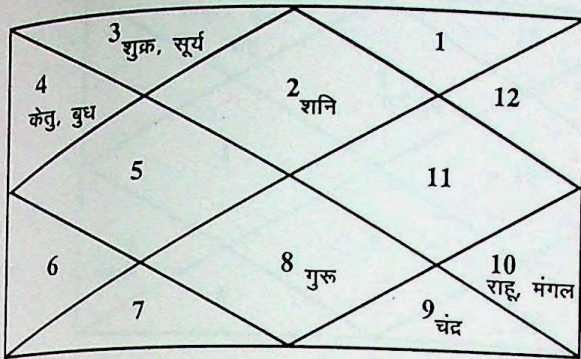
नाम - श्री ख.
 जन्म तिथि - 05/09/1969
 जन्म समय - प्रातः 11:00
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ख की कुंडली में लग्नेश शुक्र भाग्यस्थ है व सप्तमेश मंगल लग्नस्थ है साथ ही मंगल की सप्तम दृष्टि स्व राशि पर पड़ रही है । व लग्नेश शुक्र भाग्यस्थ है जो कि उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है ।

श्री ख कुंडली के अनुसार लग्नेश शुक्र की केन्द्र स्थित व सप्तमेश मंगल की स्वराशि स्थिति दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है । किन्तु लग्नस्थ केतु व सप्तमस्थ शनि जो कि क्रूर ग्रह है अतः इनकी स्थिति व दृष्टि दोनों ही दाम्पत्य सुख बाधक हैं । गुण मिलान भी न्यून होने से दाम्पत्य सुख प्रभावित होता है ।

श्रीमति ख व श्री ख ने साक्षात्कार के दौरान यह बताया कि हमारे बीच सामंजस्य तो सामान्य है किन्तु वैचारिक मतभेदों की अधिकता बनी रहती है । श्रीमति ख ने बताया कि पति के क्रोधी स्वाभाव की वजह से समायोजन में बाधा आती है ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर पत्नि का प्राप्तांक 55 व पति का प्राप्तांक भी 55 है जो कि सामायोजन की Average श्रेणी को दर्शाता है अतः दाम्पत्य सुख भी औसत कहा जा सकता है ।



नाम - श्रीमति ग.
जन्म तिथि - 07/07/1971
जन्म समय - प्रातः 4:28
जन्म स्थान - रायपुर
गुण - 14.5/36

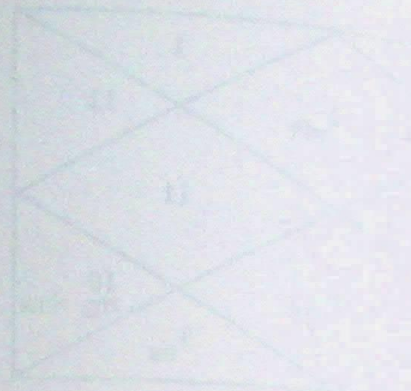
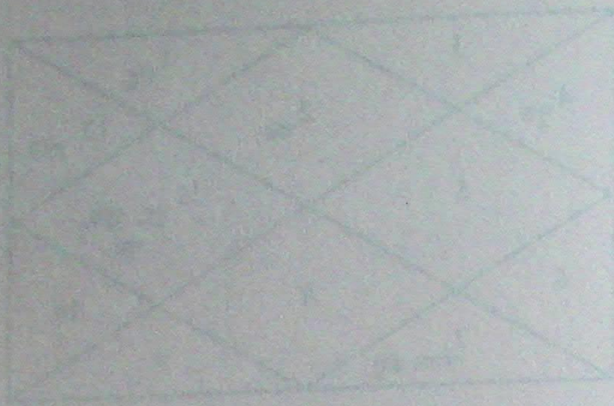
नाम - श्री ग.
जन्म तिथि - 18/02/1967
जन्म समय - दोप. 1:30
जन्म स्थान - जबलपुर

लग्नस्थ शनि व लग्नेश शुक्र की द्वितीय स्थिति तथा सप्तमस्थ गुरु व सप्तमेश मंगल उच्च हो कर, भाग्य स्थानस्थ हैं । साथ ही सप्तमकारक गुरु सप्तमस्थ हैं । जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारी है ।

लग्नस्थ उच्च चंद्र की सप्तम भाव पर दृष्टि शुभफल कारी है । सप्तमेश मंगल षष्ठस्थ हैं । जो कि दाम्पत्य सुख को अल्प करता है । सप्तम कारक शुक्र की केन्द्र स्थिति दाम्पत्य सुख में सहयोगी है । तथापि न्यून गुण मिलान दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करता ही है ।

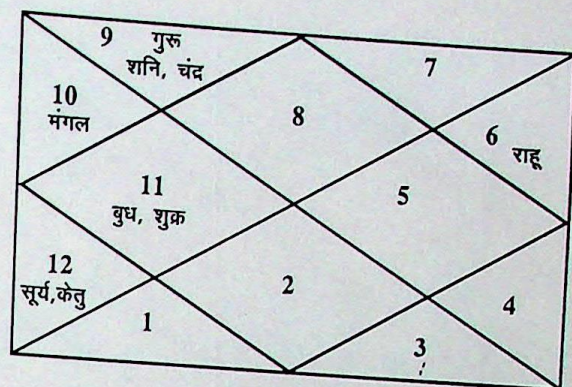
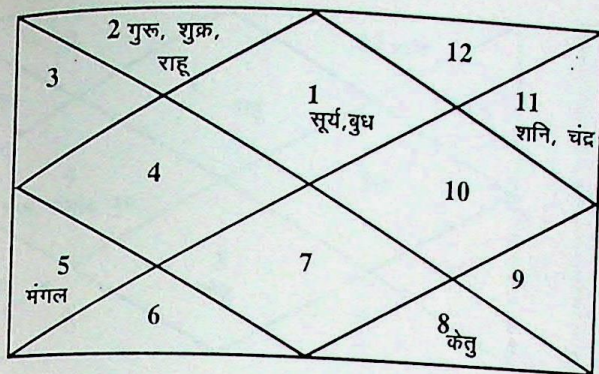
श्रीमति ग व श्री ग ने साक्षात्कार में बताया कि हमारे बीच अच्छा समायोजन है । पारस्परिक वैचारिक समझौते साथ ही सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने की स्थिति में हैं । इन्होंने बताया कि वैचारिक सामंजस्य (Mutual Understanding) वैवाहिक समायोजन का एक आवश्यक पहलू है ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर पत्नि का प्राप्तांक 69 Good व पति का प्राप्तांक 60 Average प्राप्त हुआ । यद्यपि ज्योतिष और मनोविज्ञान दोनों के परिणामों में अंतर है तथापि सामान्य की श्रेणी की ओर इंगित करता है ।



1. 1 2 3
2. 4 5 6
3. 7 8 9

1. 1 2 3
2. 4 5 6
3. 7 8 9



नाम - श्रीमति घ.
 जन्म तिथि - 14/05/1965
 जन्म समय - प्रातः 6:00
 जन्म स्थान - जबलपुर
 गुण - 19/36

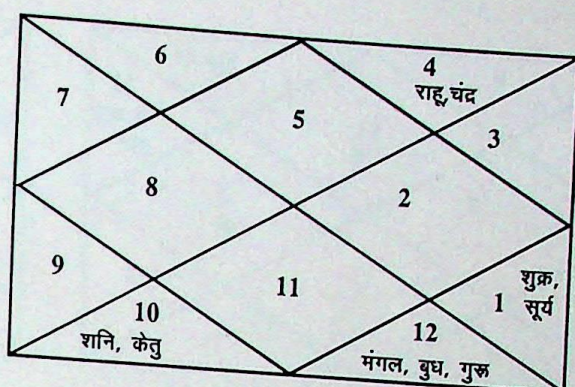
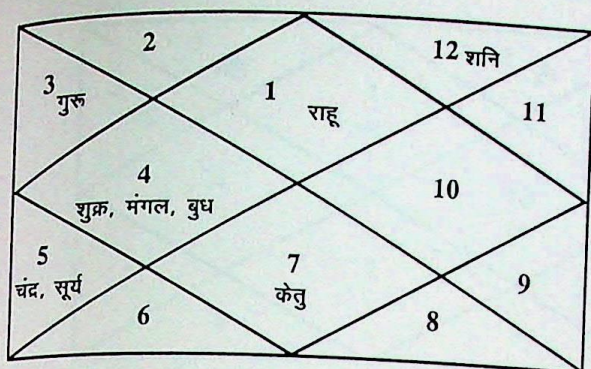
नाम - श्री घ.
 जन्म तिथि - 21/03/1960
 जन्म समय - रात्रि 11:35
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति घ की कुंडली में लग्नेश मंगल त्रिकोणस्थ व लग्नगत उच्च के सूर्य की स्थिति साथ ही सप्तमेश शुक्र की स्वराशि स्थिति उत्तम दाम्पत्य सुखकारी है एवं लग्नेश व पंचमेश का राशि परिवर्तन भी दाम्पत्य सुख में सहायक हैं ।

श्री घ की कुंडली के अनुसार लग्नेश मंगल उच्च हो कर तृतीयस्थ है व सप्तमेश साथ ही सप्तम कारक शुक्र की केन्द्र स्थिति उत्तम दाम्पत्य सुखकारी इस दृष्टि से हैं कि वह स्वयं सप्तमेश भी है । किन्तु न्यूनतम गुण मिलान इसमें अल्पता लाता है ।

श्रीमति घ और श्री घ ने साक्षात्कार में बताया कि हम दोनों ही सर्विस में हैं साथ ही एक दूसरे की मदद करने की भावना है व एक दूसरे की सर्विस की महत्ता को समझते हैं तो वैचारिक मतभेद का प्रश्न ही नहीं उठता । निष्कर्षतः हमारे बीच अच्छा समायोजन है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 60 Average व पति का 70 Good की श्रेणी के अंतर्गत है । अतः दोनों की दृष्टिकोण से समायोजन सामान्य परिलक्षित होता है ।



नाम - श्रीमति च.
जन्म तिथि - 17/08/1966
जन्म समय - रात्रि 10:10
जन्म स्थान - जबलपुर
गुण - 16.5/36

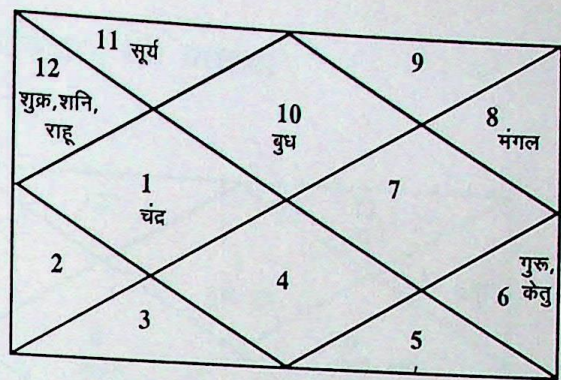
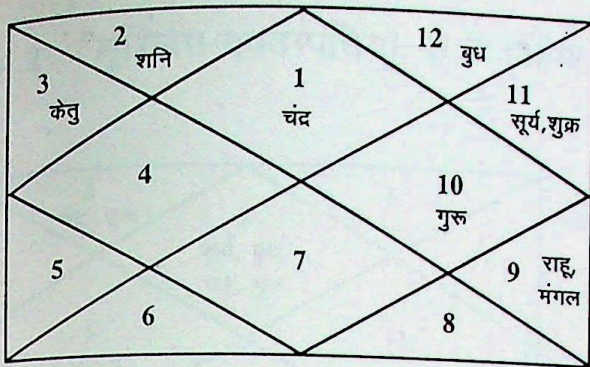
नाम - श्री च.
जन्म तिथि - 13/04/1962
जन्म समय - दोप. 2:00
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति च की कुंडली में लग्नगस्थ राहु व सप्तमस्थ केतु की दृष्टि स्थिति दाम्पत्य सुख में बाधक हैं । सप्तममेश शुक्र केन्द्र स्थिति व गुरु की पंचम दृष्टि होने से कुछ सामान्यता आती है तथापि दाम्पत्य सुख बाधक हैं ।

श्री कुंडली में लग्नेश सूर्य उच्चंगत भाग्य स्थानस्थ हैं व सप्तमेश शनि षष्ठस्थ केतु युत हैं सप्तमभाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी नहीं है जो कि दाम्पत्य सुख में बाधक है साथ ही गुण मिलान भी उचित नहीं है तथा सप्तम कारक शुक्र की नवम् स्थिति दाम्पत्य सुख को मध्यम बनाये रखती है ।

श्रीमति च ने अपने साक्षात्कार में बताया कि पति का क्रोधी स्वाभाव होने के कारण वे सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश ही नहीं करते । ठीक वैसे ही श्री च ने बताया कि हमारे बीच विशेष सामंजस्य तो नहीं है तथापि पत्नि के प्रयासों से सामंजस्य का स्तर मध्यम है ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक पत्नि का 70 तो कि Good पति का 50 Average श्रेणी की ओर इंगित करता है निष्कर्षतः मध्यम स्तर का समायोजन कहा जा सकता है ।



नाम - श्रीमति छ.
जन्म तिथि - 08 / 03 / 1973
जन्म समय - प्रातः 10:00
जन्म स्थान - इंदौर
गुण - 33 / 36

नाम - श्री छ.
जन्म तिथि - 22 / 02 / 1969
जन्म समय - रात्रि 04:30
जन्म स्थान - जबलपुर

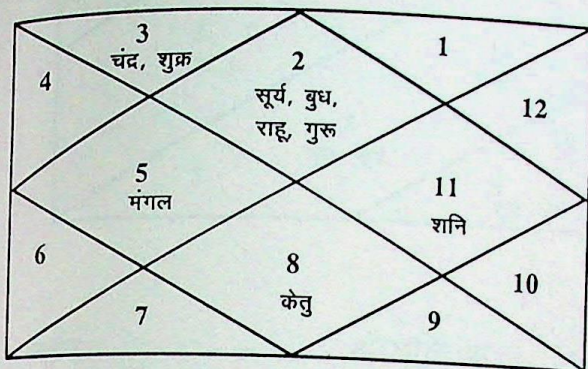
श्रीमति छ की कुंडली में लग्नेश मंगल की नवम् स्थिति व सप्तमेश शुक्र एकादश स्थिति उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है । किन्तु सप्तमकारक गुरु नीच का होने के साथ केन्द्र स्थित है जो सामान्य दाम्पत्य सुख प्रदान करता है ।

श्री छ की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि तृतीयस्थ व सप्तमेश चंद्र चतुर्थस्थ है व सप्तमकारक शुक्र की उच्च स्थिति उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है साथ उत्तम गुण मिलान भी उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है ।

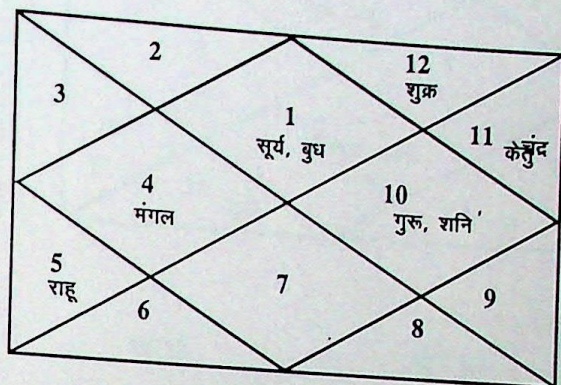
श्रीमति छ व श्री छ ने बताया कि हमारे बीच उत्तम सामंजस्य है दोनों ही नौकरी पर होने पर बावजूद एक दूसरे का अच्छा खयाल रख पाते हैं । साथ ही वैचारिक सामंजस्य है व परस्पर सम्मान की भावना होने से उत्तम समायोजन है ।

पति का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 80 व पत्नि का 75 दोनों ही Excellent की श्रेणी में है अतः समायोजन भी दोनों की दृष्टिकोण से उत्तम कहा जा सकता है ।

4.2 मुस्लिम-नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या



नाम - श्रीमति ज.
 जन्म तिथि - 01/06/1965
 जन्म समय - प्रातः 05:57
 जन्म स्थान - जगदलपुर
 गुण - 23/36



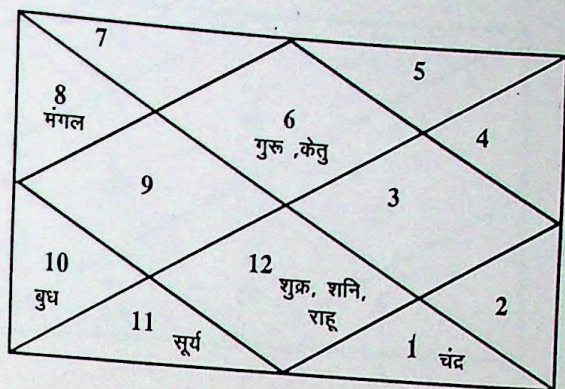
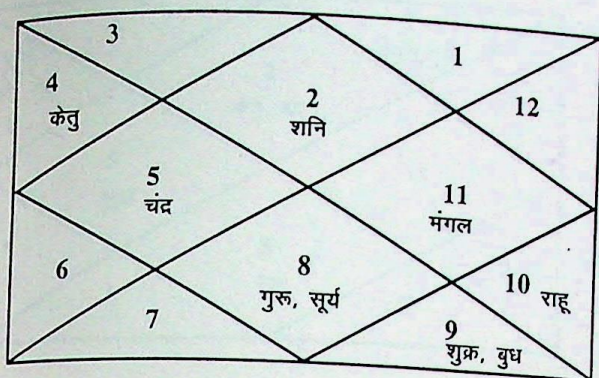
नाम - श्री ज.
 जन्म तिथि - 04/05/1961
 जन्म समय - प्रातः 06:03
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ज की कुंडली में लग्नेश शुक्र की द्वितीय स्थिति व लग्नस्थ सूर्य, गुरु, राहु की युति तथा सप्तमेश मंगल की चतुर्थ स्थिति दाम्पत्य सुख कारी है । साथ ही सप्तम कारक गुरु की केन्द्र स्थिति है भी दाम्पत्य सुख में सहायक है ।

श्री ज की कुंडली के अनुसार लग्नेश मंगल की चतुर्थ स्थिति व लग्नस्थ उच्चंगत सूर्य तथा सप्तमेश शुक्र जो की सप्तम कारक भी है की उच्च स्थिति भी उत्तम दाम्पत्य सुख दाम्पत्य सुख प्रदान करती है । साथ ही गुण मिलान भी सामान्य है जो कि मध्यम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है ।

श्रीमति ज व श्री ज ने अपने साक्षात्कार ने स्पष्ट किया कि हम दोनों कही सर्विस में है व एक दूसरे की आवश्यकताओं और भावनाओं का पूरा पूरा खयाल रखने का प्रयास करते हैं इस तरह से समायोजन बना रहता है ।

पति का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 75 व पत्नि का 80 है दोनों ही Excellent श्रेणी के अंतर्गत आते हैं किन्तु दोनों दृष्टिकोणों में अंतर सामान्य समायोजन की ओर इंगित करता है ।



नाम - श्रीमति झ.
 जन्म तिथि - 18/12/1971
 जन्म समय - सायं 06:10
 जन्म स्थान - नागपुर
 गुण - 23.5/36

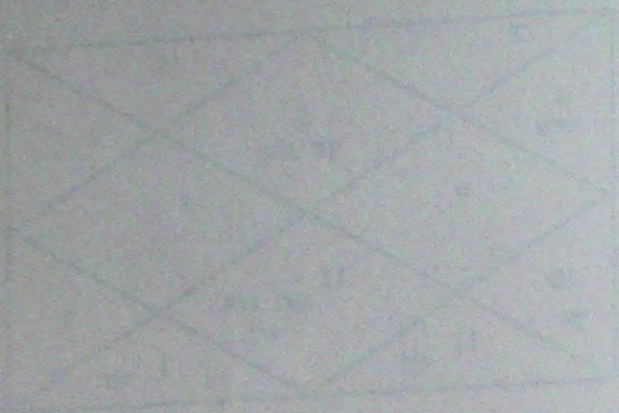
नाम - श्री झ.
 जन्म तिथि - 22/02/1969
 जन्म समय - रात्रि 07:45
 जन्म स्थान - नागपुर

श्रीमति झ की कुंडली में लग्नेश शुक अष्टमस्थ है जो कि अशुभ है व सप्तमेश मंगल की केन्द्र स्थिति दाम्पत्य सुख के लिये उचित है । सप्तम कारक गुरु की सप्तम स्थिति भी दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है । किन्तु सप्तमसूर्य दाम्पत्य सुख में कमी करता है तथापि दाम्पत्य सुख मध्यम रहेगा ।

श्री झ की कुंडली के अनुसार लग्नेश बुध त्रिकोणस्थ है । व सप्तमेश गुरु लग्नस्थ है तथा सप्तमकारक उच्चस्थ व सप्तमस्थ ही है जो कि उत्तम दाम्पतरु सुखकारी है गुण मिलान सामान्य होने पर भी दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा ।

श्रीमति झ व श्री झ ने स्पष्ट किया कि हमारे बीच किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं होता । किंचित मामलों को छोड़ कर कोई तनाव जन्य विषय नहीं रहता । वैचारिक ऐक्य हमारे समायोजन का करण है ।

पति का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 81 व पत्नि का 83 है जो कि Exellent की श्रेणी में आता है । ज्योतिष व मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टिकोणों से वैवाहिक समायोजन सामान्य परिलक्षित होता है ।



1 2 3 4
5 6 7 8
9 10 11 12
13 14 15 16

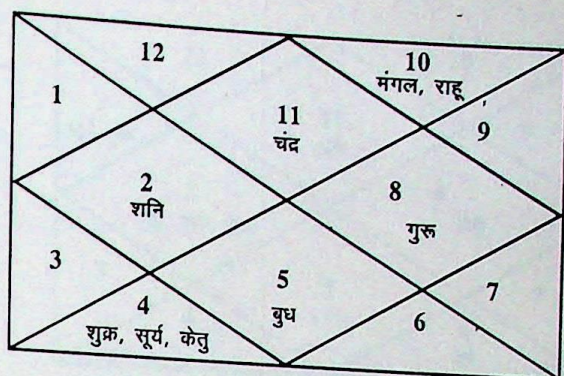
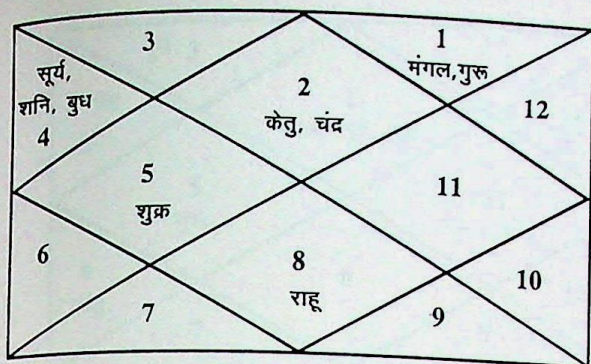
17 18 19 20
21 22 23 24
25 26 27 28
29 30 31 32

यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।

यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।

यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।

यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।
यह एक 4x4 मैजिक स्क्वियर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, स्तंभ और विकर्ण का योग 34 होता है।



नाम - श्रीमति ट.
जन्म तिथि - 01/08/1975
जन्म समय - रात्रि 02:50
जन्म स्थान - नागपुर
गुण - 11/36

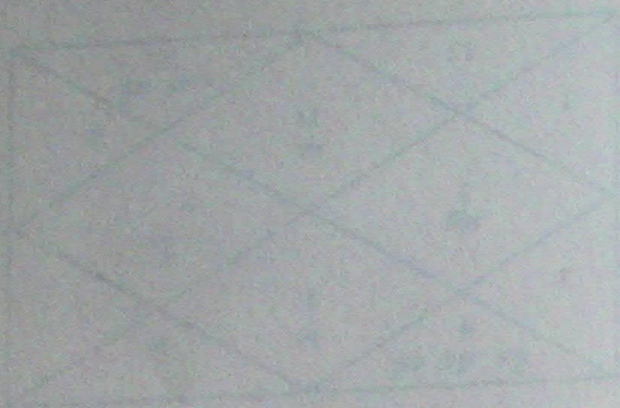
नाम - श्री ट.
जन्म तिथि - 07/08/1971
जन्म समय - सायं 07:20
जन्म स्थान - नागपुर

श्रीमति ट की कुंडली में लग्नस्थ उच्च चंद्र व सप्तमेश स्वग्रही मंगल की द्वादश स्थिति दाम्पत्य सुख में सहायक ही किन्तु लग्नस्थ चंद्र केतु की युति व सप्तमस्थ राहु दाम्पत्य सुख में अल्पता लाता है ।

श्री ट की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि केन्द्रस्थ है किन्तु सप्तमेश सूर्य षष्ठस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख बाधक है साथ ही गुण मिलान न्यून है । अतः दाम्पत्य सुख अल्प ही रहेगा ।

श्रीमति ट ने अपने व्यक्तिगत साक्षात्कार में बताया कि पारिवारिक जनों का हस्तक्षेप और साथ ही पति की मुझसे सहयोग हीनता हमारे बीच हमारे बीच तनाव कारण बनती है । श्री ट ने बताया कि वे अपने पत्नी के स्वभाव से असंतुष्ट है इस कारण वैवाहिक समायोजन बाधित है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण 53 जो Unsatisfactory व पति का 33 है जो Very Unsatisfactory है जो Marital Mal Adjustment की ओर इंगित करता है । उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों में समानता है ।



४ ९ २
३ ५ ७
८ १ ६

४ ९ २
३ ५ ७
८ १ ६

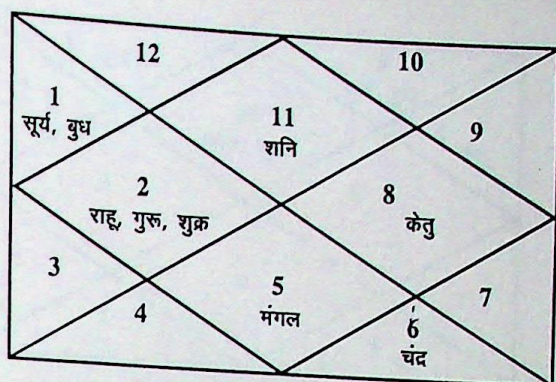
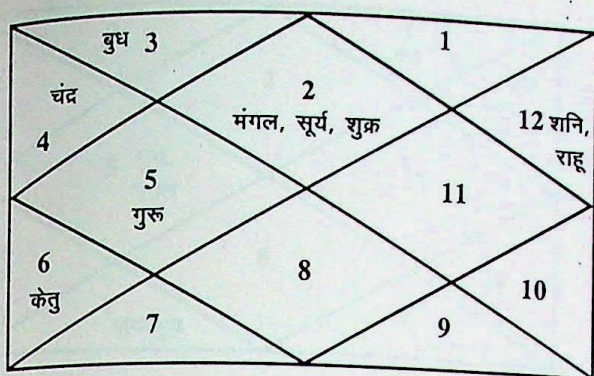
४ ९ २
३ ५ ७
८ १ ६

यह एक ३x३ मैजिक स्क्वायर है जिसमें प्रत्येक पंक्ति, प्रत्येक स्तंभ और दोनों विकर्णों का योग १५ होता है।
यह स्क्वायर १ से ९ तक के अंकों का उपयोग करता है।
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:

यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:

यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:

यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:
यह स्क्वायर निम्नलिखित प्रकार का है:



नाम - श्रीमति ठ.
 जन्म तिथि - 01/06/1968
 जन्म समय - प्रातः 05:50
 जन्म स्थान - सिहोरा
 गुण - 25.5 / 36

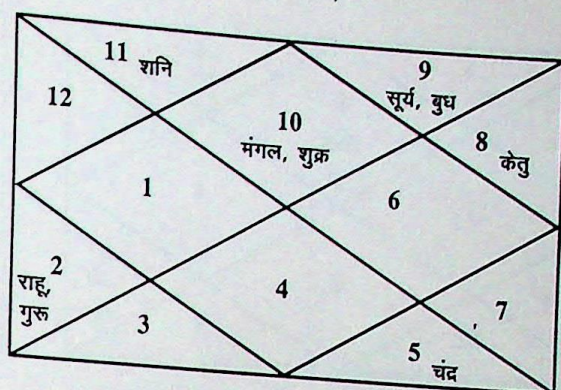
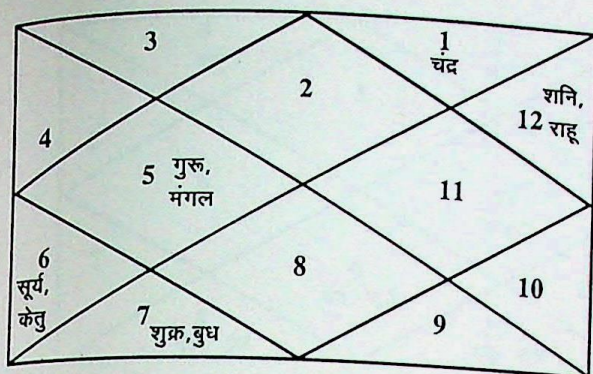
नाम - श्री ठ.
 जन्म तिथि - 11/05/1965
 जन्म समय - रात्रि 02:10
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ठ की कुंडली में लग्नेश शुक्र लगनस्थ है व सप्तमेश शुक्रभी केन्द्रस्थ व लग्नस्थ है साथ ही सप्तमकारक गुरु भी केन्द्र में स्थित होकर उत्तम दाम्पत्य सुख कारक बनता है ।

श्री ठ की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि लग्नस्थ व सप्तमेश सूर्य उच्चस्थ है साथ ही सप्तमेश तृतीयेश का राशि परिवर्तन भी उत्तम योग कारक है व सप्तम कारक शुक्र की केन्द्र स्थिति भी उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है । साथ ही मध्यम गुण भी उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है ।

श्रीमति ठ ने बताया कि एक दूसरे की भावनाओं और आवश्यकताओं का सम्मान करने व आपसी सहयोग तथा सामंजस्य के कारण हमें अपने दाम्पत्य जीवन से कोई शिकायत नहीं है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 65 Average व पति का 73 जो Good की श्रेणी की ओर है । दोनों ही दृष्टिकोणों से वैवाहिक समायोजन सामान्य कहा जा सकता है ।



नाम - श्रीमति ड.
जन्म तिथि - 03/11/1968
जन्म समय - रात्रि 11:30
जन्म स्थान - अंबिकापुर
गुण - 27/36

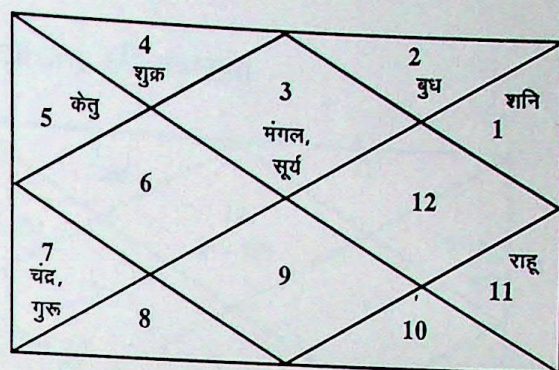
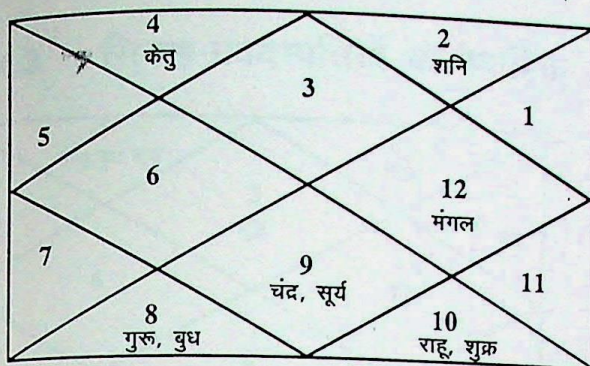
नाम - श्री ड.
जन्म तिथि - 11/01/1966
जन्म समय - प्रातः 08:00
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ड की कुंडली में लग्नेश शुक्र षष्ठस्थ है जो कि शुभ नहीं है व सप्तमेश मंगल चतुर्थस्थ केन्द्र में है जो कि उचित है । सप्तम कारक गुरु भी केन्द्रस्थ है अतः उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है ।

श्री ड की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि द्वितीयस्थ व लग्नस्थ उच्चंगत मंगल भी दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है । सप्तमेश चंद्र अष्टमस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख को बाधित करता है किन्तु सप्तम कारक शुक्र केन्द्रस्थ होकर उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है । साथ उत्तम गुण मिलान के कारण भी दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है ।

श्रीमति ड श्री ड ने बताया कि दाम्पत्य सुख के दोनों में किसी एक का शान्त स्वभाव का होना जरूरी है यदि दोनों ही एक से क्रोधी हो व विचार से मेल न खाते हों तो दाम्पत्य अवश्य ही प्रभावित होता है अतः वैचारिक ऐक्य को इन्होंने वैवाहिक समायोजन का कारण बताया है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक प्राप्तांक 60 Average व पति का 70 Good की ओर इंगित है अतः उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों में समानता है । उत्तम वैवाहिक समायोजन की ओर परिलक्षित होती है ।



नाम - श्रीमति ढ.
 जन्म तिथि - 14/01/1972
 जन्म समय - सायं 06:05
 जन्म स्थान - उज्जैन
 गुण - 27/36

नाम - श्री ढ.
 जन्म तिथि - 15/06/1970
 जन्म समय - प्रातः 06:10
 जन्म स्थान - जबलपुर

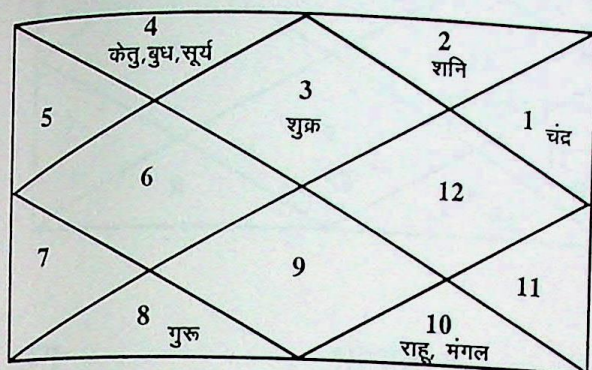
श्रीमति ढ की कुंडली में लग्नेश बुध व सप्तमेश गुरु की षष्ठ स्थिति दाम्पत्य सुख बाधक हैं । सप्तम कारक गुरु की भी षष्ठ स्थिति भी अल्प दाम्पत्य सुखकारी है ।

श्री ढ की कुंडली के अनुसार लग्नेश बुध द्वादशस्थ है जो कि उत्तम नहीं है किन्तु सप्तमेश गुरु त्रिकोणस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख में उचित है सप्तमकारक शुक्र द्वितीयस्थ है जो उत्तम है साथ ही गुण मिलान भी उत्तम है अतः यह दाम्पत्य सुख कारक है ।

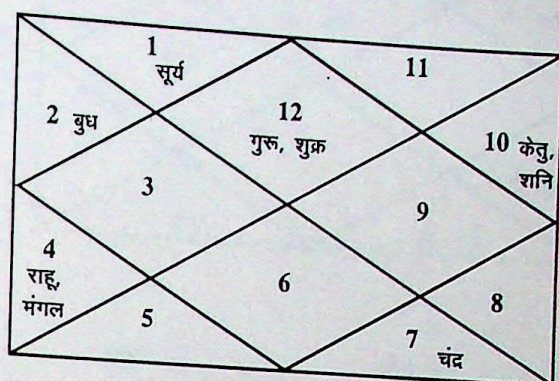
श्रीमति ढ ने बताया कि पति स्वयं समायोजन करने को तैयार नहीं होते स्वयं को श्रेष्ठ समझने का भाव मुझे कमजोर दिखाने की चेष्टा उनसे समायोजन में बाधक है । श्री ढ ने कोई स्पष्टीकरण देने से इन्कार कर दिया अतः दोनों में कुछ ही समायोजन है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक प्राप्तांक 60 Average व पति का 53 जो कि Unsatisfactory है यद्यपि उक्त दोनों दृष्टिकोणों में भिन्ना है तथापि सामान्य वैवाहिक समायोजन कहा जा सकता है ।

4.3 सिक्ख-नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या



नाम - श्रीमति ण.
 जन्म तिथि - 16/07/1971
 जन्म समय - प्रातः 04:32
 जन्म स्थान - भोपाल
 गुण - 8.5/36



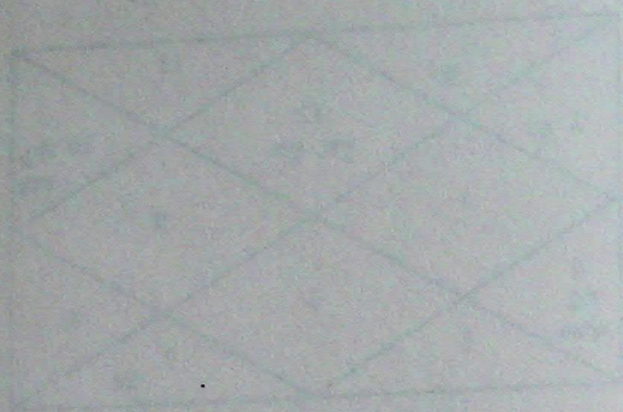
नाम - श्री ण.
 जन्म तिथि - 06/05/1963
 जन्म समय - रात्रि 3:30
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ण की कुंडली में लग्नेश बुध केतु सूर्य के साथ द्वितीयस्थ है सप्तमेश गुरु षष्ठस्थ है साथ ही किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न होने से भी दाम्पत्य सुख अल्प रहता है । तथापि लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि स्तम्भभाव पर होने से सामान्य दाम्पत्य सुख रहता है ।

श्री ण की कुंडली के अनुसार लग्नेश गुरु स्वराशिस्थ है व सप्तमेश बुध तृतीयस्थ है साथ ही सप्तमकारक शुक्र उच्चस्थ व लग्नगत है जो कि उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है किन्तु गुण मिलान अत्यंत न्यून है जो कि दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम नहीं है ।

श्रीमति ण श्री ण ने बताया कि हमारे बीच कोई विशेष तनाव जन्य स्थिति नहीं है तथापि वैचारिक सामंजस्य आवश्यक हैं श्री ण ने बताया कि पारिवारिक हस्तक्षेप दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करता है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 61 Average व पति का 73 Good श्रेणी में है उक्त दोनों दृष्टिकोणों में भिन्नता मध्यम समायोजन का दर्शाती है ।



अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं

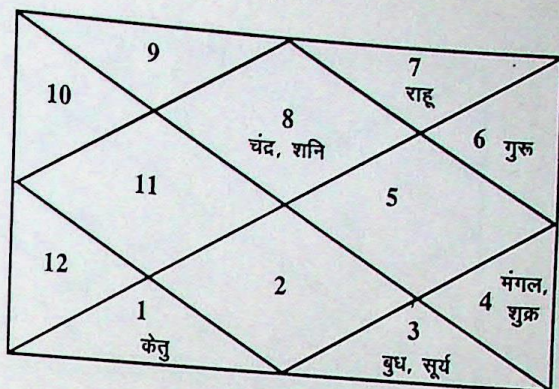
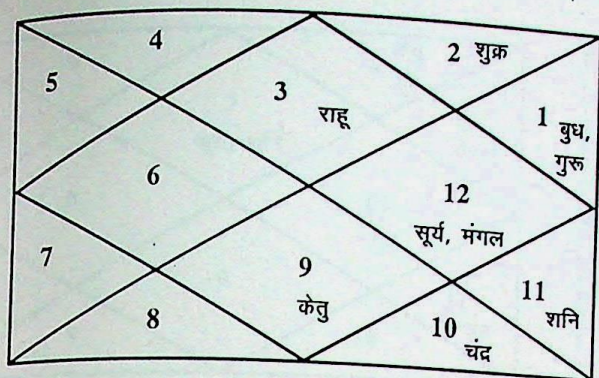
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं

अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं

अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं

अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं

अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं
अथ चतुर्धा विभक्तं



नाम - श्रीमति त.
जन्म तिथि - 05/04/1964
जन्म समय - दोप. 12:10
जन्म स्थान - केरल
गुण - 15.5/36

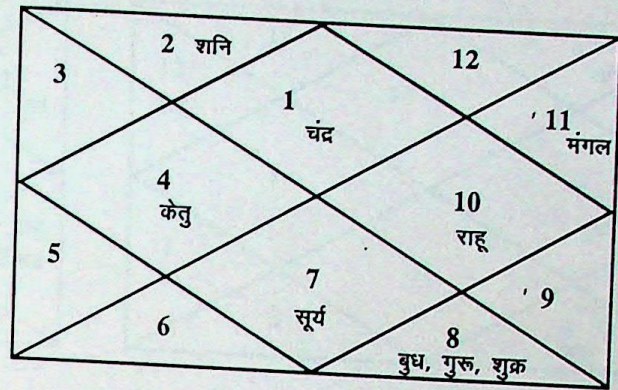
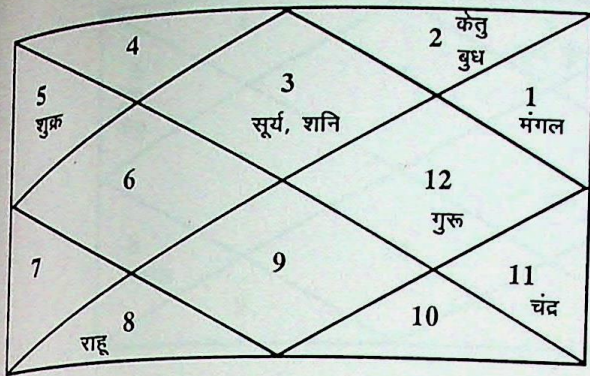
नाम - श्री त.
जन्म तिथि - 08/07/1957
जन्म समय - सायं 04:00
जन्म स्थान - केरल

श्रीमति त की कुंडली में लग्नेश उच्चंगत राहु व सप्तमेश गुरु एकादशस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख में योग कारक हैं । साथ ही सप्तमकारक गुरु भी शुभ युत है । किन्तु सप्तमभाव पर क्रूर ग्रह राहु की दृष्टि दाम्पत्य सुख को कम करती है ।

लग्नेश मंगल भागस्थ किन्तु नीचंगत है जो उत्तम नहीं है साथ ही सप्तमेश नवम स्थिति दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है किन्तु न्यूनतम गूण मिलान दाम्पत्य सुख में कमी लाता है ।

श्री त ने बताया कि हम दोनों ही सर्विस पर हैं कभी उत्तरदायित्व को लेकर वैचारिक तनाव उत्पन्न होता है । यदि दोनों को ही उत्तरदायित्व का समान ज्ञान हो तो समायोजन संभव है । तथापि हमारे बीच सामान्य समोयाजन है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 65 व पति का 63 Average श्रेणी के अंतर्गत है तथापि उक्त दोनों दृष्टिकोणों में अंतर सामान्य वैवाहिक समायोजन को दर्शाता है ।



नाम - श्रीमति थ.
 जन्म तिथि - 29 / 07 / 1975
 जन्म समय - प्रातः 06:32
 जन्म स्थान - रीवा
 गुण - 27 / 36

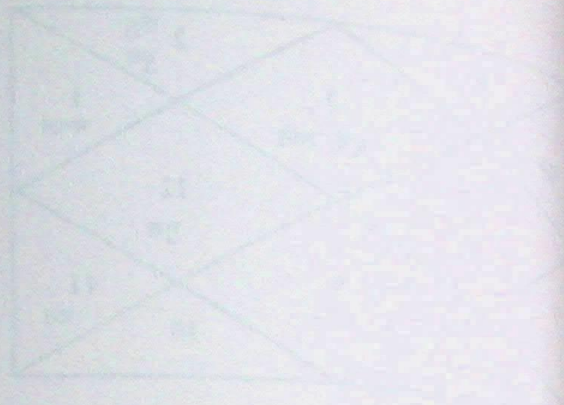
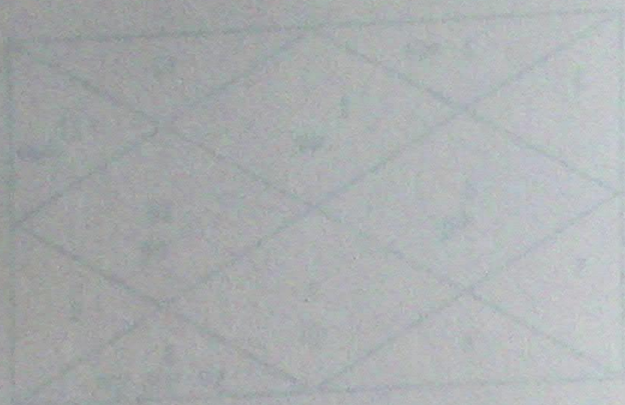
नाम - श्री थ.
 जन्म तिथि - 01 / 11 / 1971
 जन्म समय - सायं 06:30
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति थ की कुंडली में लग्नेश बुध द्वादशस्थ व लग्नस्थ सूर्य शनि की स्थिति व सप्तम दृष्टि भी दाम्पत्य सुख में बाधक है । किन्तु सप्तमेश गुरु की केन्द्र स्थिति उत्तम है साथ ही यह सप्तम कारक भी है अतः उत्तम दाम्पत्य सुख है ।

श्री थ की कुंडली के अनुसार लग्नेश मंगल एकादशस्थ है सप्तमस्त सूर्य दाम्पत्य सुख बाधक हैं साथ ही सप्तमेश शुक्र अष्टमस्थ है जो दाम्पत्य सुख में कमी करता है किन्तु गुण मिलान उत्तम कोटि का होने से दाम्पत्य सुख मध्यम रहेगा ।

श्रीमति थ ने बताया कि दोनों का एक दूसरे के प्रति समर्पण भाव वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक है किन्तु पति ने इस भाव का कुछ अभाव है तथापि सामान्य स्थिति है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 70 व पति का 72 Good श्रेणी में है साथ ही उक्त दोनों दृष्टिकोणों में भिन्नता भी नहीं है अतः उत्तम समायोजन कहा जा सकता है ।



अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए

अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए

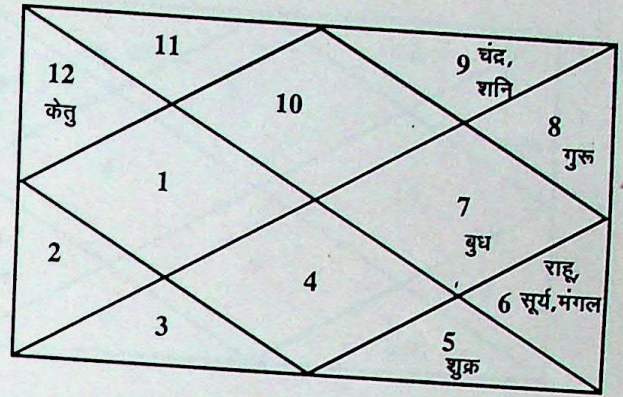
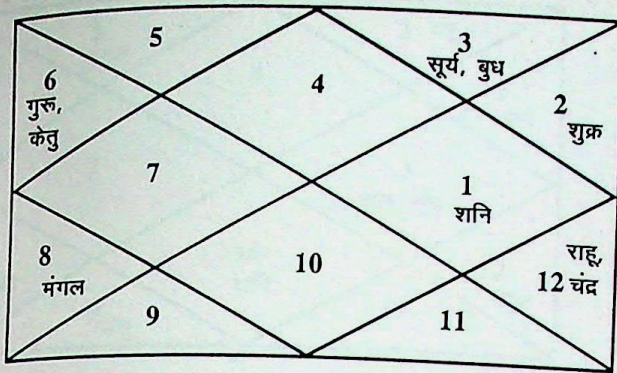
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए



नाम - श्रीमति द.
जन्म तिथि - 05/07/1969
जन्म समय - प्रातः 07:15
जन्म स्थान - जबलपुर
गुण - 30.5/36

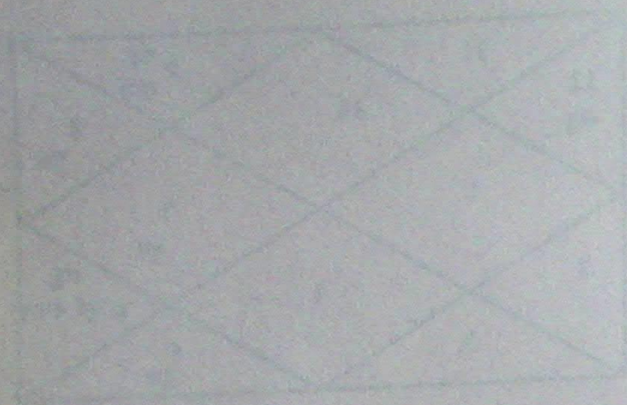
नाम - श्री द.
जन्म तिथि - 09/10/1959
जन्म समय - सायं 03:30
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति द की कुंडली में लग्नेश चंद्र नवमस्थ है सप्तमेश शनि की केन्द्र स्थिति भी दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है । सप्तम कारक गुरु तृतीयस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है ।

श्री द की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि द्वादशस्थ है व सप्तमेश चंद्र की भी लग्नेश के साथ युति है अतः दाम्पत्य सुख बाधित है । तथा सप्तम कारक शुक्र भी अष्टमस्थ है किन्तु श्रेष्ठ गुण मिलान दाम्पत्य सुख को बनाये रखता है ।

श्रीमति द ने बताया अच्छे आर्थिक स्तर को वैवाहिक जीवन में सामंजस्य का आधार बताया उन्होंने बताया कि हम दोनों ही आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर है साथ ही अपने अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह समझकर कार्य करते हैं इसलिये हमारे वैवाहिक जीवन में तनाव का कोई स्थान है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 83 व पति का 85 दोनों ही Excellent में है साथ ही ज्योतिषीय दृष्टिकोण से उत्तम समायोजन है । निष्कर्षतः समायोजन उत्तम कहा जा सकता है ।



अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

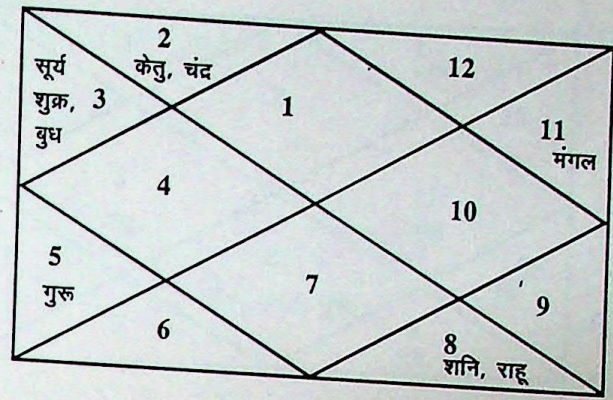
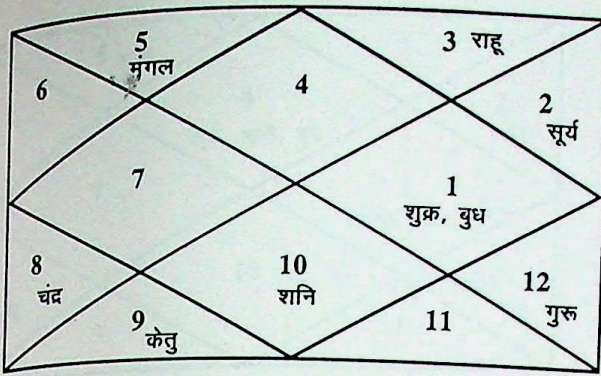
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः

अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः
अथ चतुर्भुजः



नाम - श्रीमति ज्ञ.
जन्म तिथि - 25 / 05 / 1963
जन्म समय - प्रातः 11:00
जन्म स्थान - कोलकाता
गुण - 26 / 36

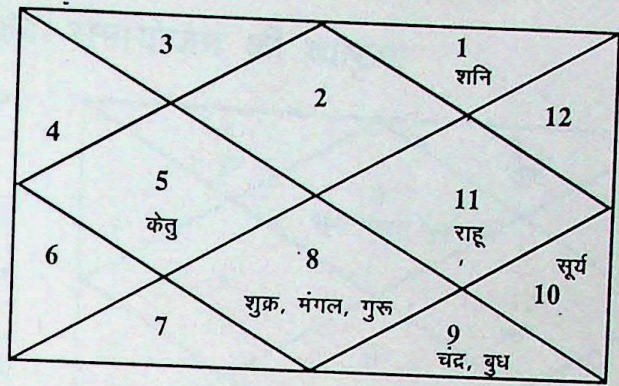
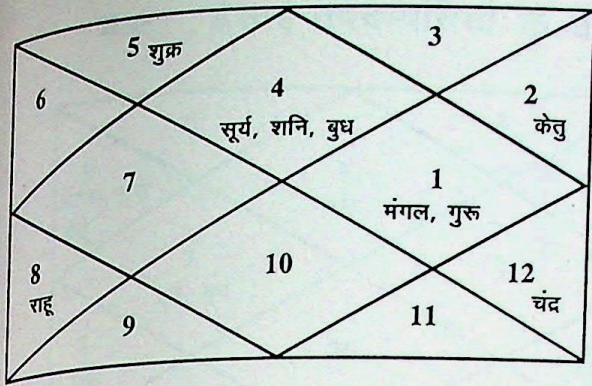
नाम - श्री ज्ञ.
जन्म तिथि - 04 / 07 / 1956
जन्म समय - रात्रि 01:00
जन्म स्थान - कोलकाता

श्रीमति ज्ञ की कुंडली में लग्नेश चंद्र त्रिकोणस्थ किन्तु नीचंगत हैं सप्तमेश शनि सप्तमस्थ हैं अतः दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है साथ ही सप्तम कारक गुरु भाग्य स्थानस्थ है जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है ।

श्री ज्ञ की कुंडली के अनुसार लग्नेश एकादशस्थ है सप्तमेश शुक्र तृतीयस्थ है जो सप्तम कारक भी है इस दृष्टि से दाम्पत्य सुख उत्तम है । किन्तु मध्यम गुण मिलान दाम्पत्य को मध्यम बनाता है ।

श्रीमति ज्ञ श्री ज्ञ ने बताया कि आपसी प्रेम और एक दूसरे पर विश्वास को सुखी वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक बताया ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 55 व पति का 60 दोनों ही Average की श्रेणी के अंतर्गत है उक्त दोनों दृष्टिकोण मध्यम वैवाहिक समायोजन की ओर इंगित करते हैं ।



नाम - श्रीमति ध.
 जन्म तिथि - 30/07/1975
 जन्म समय - प्रातः 06:45
 जन्म स्थान - सतना
 गुण - 27/36

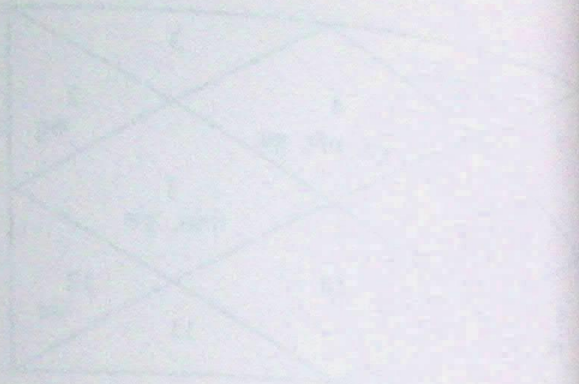
नाम - श्री ध.
 जन्म तिथि - 24/01/1971
 जन्म समय - दोप. 02:35
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ध की कुंडली में लग्नेश चंद्र भागस्थ है सप्तमेश शनि लगनस्थ है सूर्य बुध की युति के साथ जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है साथ ही सप्तम कारक गुरु भी केन्द्रस्थ है अतः उत्तम दाम्पत्य सुख रहता है ।

श्री ध की कुंडली के अनुसार लग्नेश शुक्र सप्तमस्थ व सप्तमेश मंगल गुरु शुक्र के साथ सप्तमस्थ है जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है । सप्तम कारक शुक्र भी सप्तमस्थ ही है साथ ही गुण मिलान भी उत्तम है जो कि उत्तम दाम्पत्य का परिचय देता है ।

श्रीमति ध श्री ध ने बताया कि उत्तम वैवाहिक जीवन के लिये आर्थिक स्थिति का सुदृढ़ होना भी आवश्यक है हम दोनों सर्विस में होकर गृहस्थी को अच्छे चलाने में सक्षम है अतः आर्थिक आधार सुदृढ़ होना अच्छे वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 72 व पति का 63 Good श्रेणी के अंतर्गत है उक्त दोनों दृष्टिकोणों में भिन्नता न होना भी अच्छे वैवाहिक समायोजन की ओर इंगित करता है ।



अथ
तथा
एव
च

अथ
तथा
एव
च

अथ
तथा
एव
च

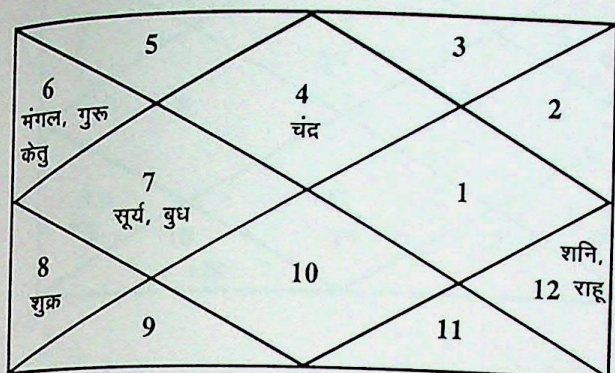
अथ
तथा
एव
च

अथ
तथा
एव
च

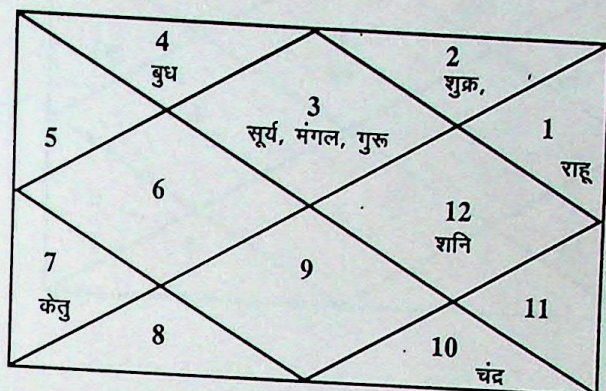
अथ
तथा
एव
च

अथ
तथा
एव
च

4.4 ईसाई-नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या



नाम - श्रीमति न.
जन्म तिथि - 11/11/1968
जन्म समय - रात्रि 12:00
जन्म स्थान - रीवा
गुण - 21/36



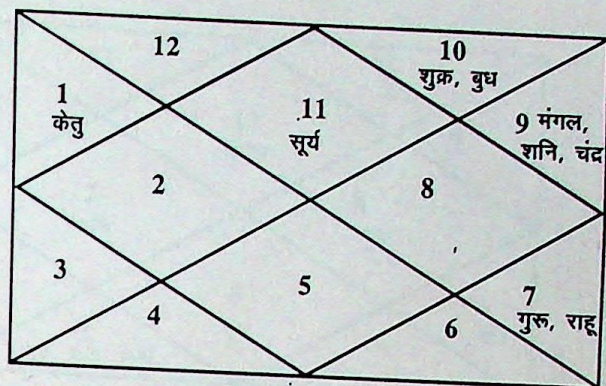
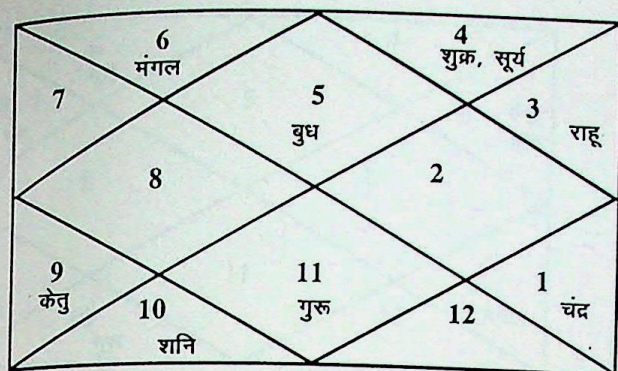
नाम - श्री न.
जन्म तिथि - 26/07/1966
जन्म समय - प्रातः 04:00
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति न की कुंडली में लग्नेश चंद्र लगनस्थ है, सप्तमेश शनि भाग्यस्थ हैं, जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है, साथ ही सप्तम कारक गुरु तृतीयस्थ है, जो दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है ।

श्री न की कुंडली के अनुसार लग्नेश बुध द्वितीयस्थ है, लग्नस्थ मंगल सूर्य गुरु की युति के साथ है व सप्तम भाव पर दृष्टि भी है, जो दाम्पत्य जीवन के लिये उत्तम योग कारक है, साथ ही सप्तम कारक शुक्र स्वग्रही द्वादशस्थ है व मध्यम गुण मिलान भी दाम्पत्य सुख के लिये उत्तम है ।

श्रीमति न श्री न बताते हैं कि वैचारिक एक्य सामंजस्य के लिये आवश्यक है, वैचारिक भिन्नता दाम्पत्य जीवन में तनाव पैदा करती है । हमारे बीच विचारों का तालमेल अच्छा है इसलिये समायोजन अच्छा बना हुआ ।

पति का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 80 Excellent व पति का प्राप्तांक 73 जो कि Good श्रेणी में है उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों की भिन्नता सामान्य समायोजन की ओर इंगित करती है ।



नाम - श्रीमति प.
 जन्म तिथि - 10 / 08 / 1963
 जन्म समय - प्रातः 08:03
 जन्म स्थान - पिंजौर
 गुण - 29.5 / 36

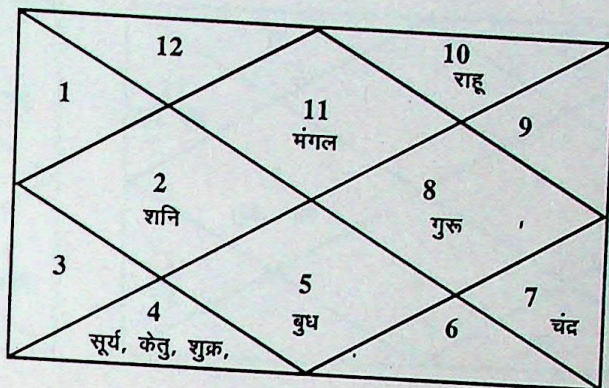
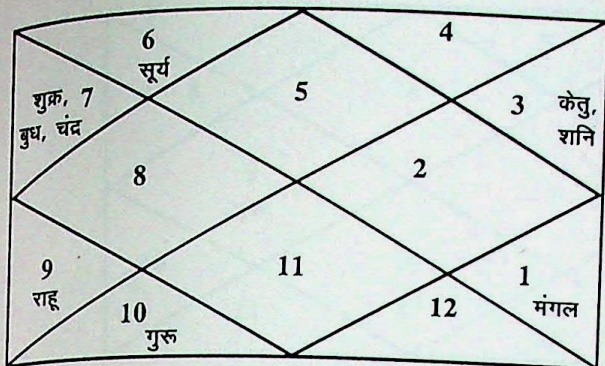
नाम - श्री प.
 जन्म तिथि - 15 / 02 / 1958
 जन्म समय - प्रातः 07:30
 जन्म स्थान - पिंजौर

श्रीमति प की कुंडली में लग्नेश सूर्य द्वादशस्थ है, लग्नस्थ बुध पर सप्तम गुरु पर लग्नस्थ बुध की दृष्टि होने से दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है । सप्तम कारक गुरु सप्तमस्थ होने से उत्तम योग कारक है ।

श्री प की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि एकादशस्थ व सप्तमेश सूर्य लग्नस्थ व सप्तमकारक शुक्रकी द्वादस्थ स्थिति भी दाम्पत्य सुख कारक है । साथ ही उत्तम गुण मिलान भी उत्तम दाम्पत्य जीवन प्रदान करता है ।

श्रीमति प ने बताया कि सुखी वैवाहिक जीवन के लिये व अच्छे समायोजन के लिये सामान मानसिक स्तर (Equal Mental Level) का होना आवश्यक है । हमारे बीच बौद्धिक समानता है अतः उत्तम समायोजन भी है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 65 Good श्रेणी व पति का प्राप्तांक 60 Everage की श्रेणी में आता है उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों में भिन्नता न होना उत्तम वैवाहिक समायोजन की ओर इंगित करता है ।



नाम - श्रीमति फ.
जन्म तिथि - 29/09/1973
जन्म समय - प्रातः 04:00
जन्म स्थान - जबलपुर
गुण - 28/36

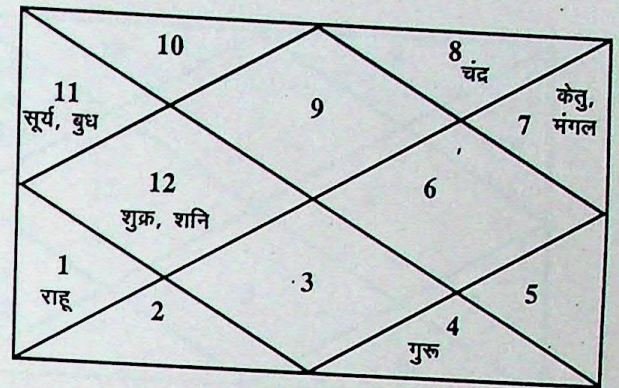
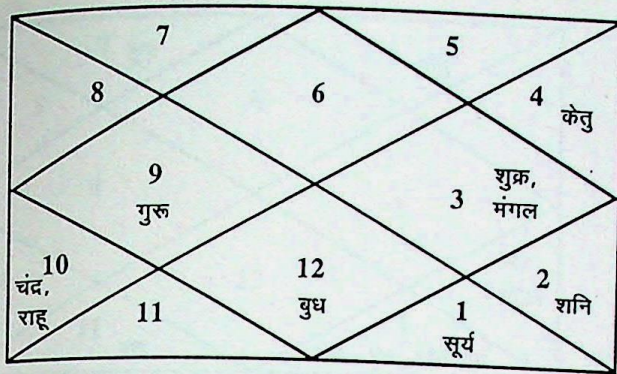
नाम - श्री फ.
जन्म तिथि - 29/07/1971
जन्म समय - सायं: 08:00
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति फ की कुंडली में लग्नेश सूर्य द्वितीयस्थ है, सप्तमेश शनि एकादशस्थ है, लग्न पर तो गुरु की दृष्टि है, किन्तु सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न होने से दाम्पत्य सुख अल्प रहता है ।

श्री फ की कुंडली के अनुसार लग्नेश शनि चतुर्थस्थ है व सप्तमेश सूर्य षष्ठस्थ है । साथ ही सप्तमस्थ बुध है किन्तु सप्तम भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है अतः दाम्पत्य सुख अल्प ही रहता है । सप्तम कारक की भी षष्ठ स्थिति दाम्पत्य सुख में कमी करती है किन्तु उत्तम कोटि का गुण मिलान दाम्पत्य जीवन में संतुलन बनाये रखता है ।

श्रीमति फ ने बताया कि पारिवारिक जनों का हस्तक्षेप हमारे पारिवारिक जीवन को प्रभावित करता है । दोनों पक्षों की आपसी समझ वैवाहिक जीवन को अच्छी तरह चलाने के लिये आवश्यक है सामान्यतः समायोजन सामान्य ही है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 50 Unsetisfactroy श्रेणी के अंतर्गत व पति का प्राप्तांक 61 Average श्रेणी में है उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों में भिन्नता सामान्य वैवाहिक समायोजन को दर्शाती है ।



नाम - श्रीमति ब.
जन्म तिथि - 05/05/1972
जन्म समय - शाम 04:35
जन्म स्थान - जबलपुर
गुण - 5.5/36

नाम - श्री ब.
जन्म तिथि - 03/09/1967
जन्म समय - रात्रि 1.32
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ब की कुंडली में लग्नेश बुध सप्तमस्थ है व सप्तमेश गुरु चतुर्थस्थ है साथ ही सप्तकारक गुरु भी केन्द्रस्थ है इस दृष्टि से दाम्पत्य सुख उत्तम है ।

श्री ब की कुंडली के अनुसार लग्नेश गुरु उच्चंगत किन्तु अष्टमस्थ है जो कि दाम्पत्य सुख बाधक है । सप्तमेश सूर्य युत तृतीयस्थ व सप्तम कारक शुक्र उच्चंगत चतुर्थस्थ है, जो कि उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करता है । किन्तु गुण मिलान न्यूनतम होने के कारण दाम्पत्य सुख मध्यम ही रहता है ।

श्रीमति ब व श्री ब ने बताया कि आर्थिक स्थिति का अच्छा होना सुखी वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक है । आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता वैवाहिक समायोजन के लिये आवश्यक समझते हैं किन्तु पारिवारिक हस्तक्षेप बाधक बनता है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 60 व पति का 55 दोनों ही Average है । उक्त दृष्टिकोण लगभग समकक्ष हैं, जो मध्यम वैवाहिक समायोजन को प्रदर्शित करते हैं ।



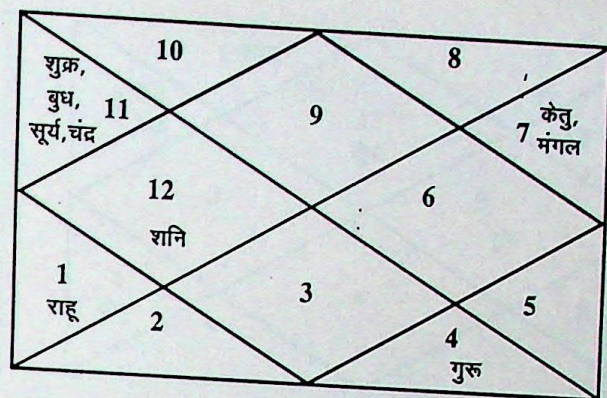
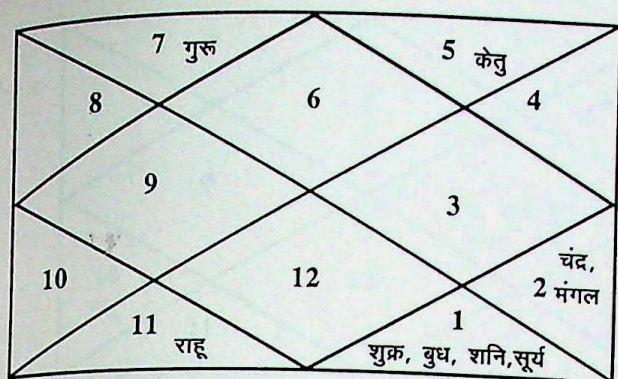
1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16

1. The first diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape. The second diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape, similar to the first one but with different internal markings.

2. The third diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape. The fourth diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape, similar to the third one but with different internal markings.

3. The fifth diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape. The sixth diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape, similar to the fifth one but with different internal markings.

4. The seventh diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape. The eighth diagram is a 4x4 grid with internal lines forming a diamond shape, similar to the seventh one but with different internal markings.



नाम - श्रीमति भ.
 जन्म तिथि - 09/03/1970
 जन्म समय - शाम 04:32
 जन्म स्थान - सिवनी
 गुण - 20.5/36

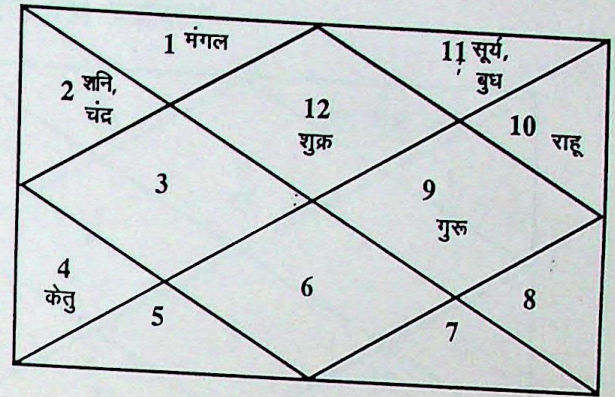
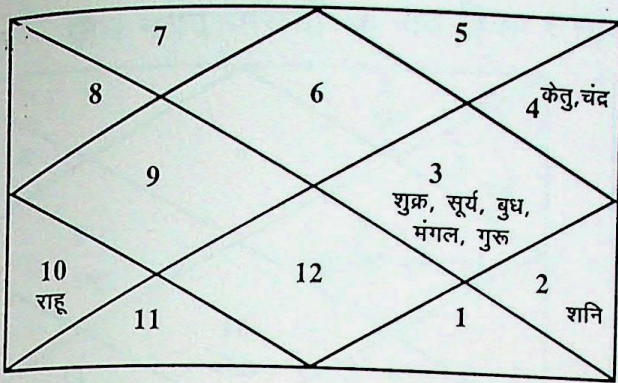
नाम - श्री भ.
 जन्म तिथि - 09/02/1967
 जन्म समय - प्रातः 03:40
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति भ की कुंडली में लग्नेश बुध अष्टमस्थ है जो कि अशुभ है सप्तमेश गुरु जो कि चतुर्थेश भी है, द्वितीयस्थ है, साथ ही सप्तम कारक भी होकर द्वितीयस्थ है, इस दृष्टि से दाम्पत्य सुख मध्यम ही कहा जा सकता है ।

श्री भ की कुंडली के अनुसार लग्नेश गुरु अष्टमस्थ किन्तु उच्चंगत है जो सामान्य शुभ है । साथ ही सप्तमेश बुध सप्तम कारक शुक्र के साथ तृतीयस्थ है, इस दृष्टि से भी दाम्पत्य सुख सामान्य से कम है, साथ ही गुण मिलान भी सामान्य से कम है जो कि दाम्पत्य सुख में बाधक हो कर दाम्पत्य सुख को सामान्य से कम करता है ।

श्रीमति भ व ने बताया कि पति का जिद्दी स्वभाव व क्रोधी होने से वैवाहिक जीवन प्रभावित है क्योंकि अपने ही विचारों को प्राथमिकता देना और मेरे विचारों को अहमियत न देने से असंतुष्ट हूं । श्री भ ने कहा कि सामान्य तनाव को छोड़ कर शेष समायोजन है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 50 जो Unsatisfactory व पति का 55 Average है । साक्षात्कार व प्राप्तांक में भिन्नता नहीं है साथ ही ज्योतिषीय दृष्टिकोण भी इसी ओर इंगित करता है ।



नाम - श्रीमति म.
 जन्म तिथि - 15/06/1972
 जन्म समय - दोपहर 01:20
 जन्म स्थान - जबलपुर
 गुण - 18.5/36

नाम - श्री म.
 जन्म तिथि - 23/02/1970
 जन्म समय - प्रातः 08:00
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति म की कुंडली में लग्नेश बुध सूर्य मंगल गुरु शुक के साथ केन्द्रस्थ है, साथ ही सप्तमेश लग्न होकर केन्द्रस्थ है, अतः उत्तम कोटि का दाम्पत्य जीवन का कहा जा सकता है सप्तम कारक गुरु भी केन्द्रस्थ होकर उत्तम योग कारक हैं ।

श्री म की कुंडली के अनुसार लग्नेश गुरु केन्द्रस्थ जो अत्यंत शुभ है, साथ ही सप्तमेश बुध सूर्य युत द्वादशस्थ है, किन्तु सप्तम कारक शुक उच्च का होकर लग्नगत है जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक है । यद्यपि न्यून गुण मिलान है तथापि उत्तम दाम्पत्य जीवन कहा जा सकता है ।

श्रीमति म व श्री म ने उत्तम आर्थिक स्थिति को सुखी वैवाहिक जीवन का आधार बताया है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 70 Good श्रेणी व पति का प्राप्तांक 60 Average श्रेणी में है उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों में लगभग समानता है जो मध्यम वैवाहिक समायोजन को प्रदर्शित करती है ।



अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए

अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए
अ इ उ ए

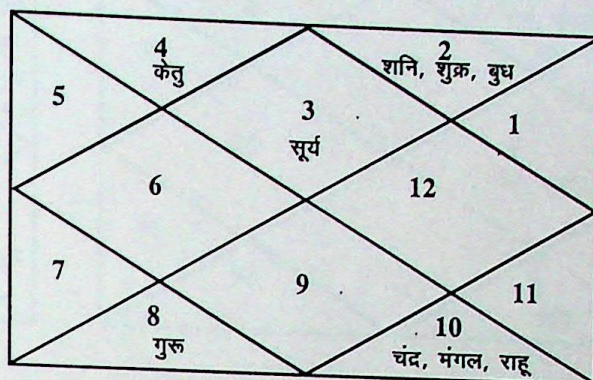
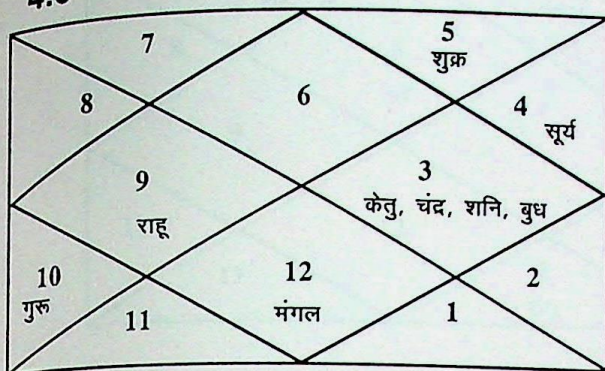
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए
अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए अ इ उ ए

4.5 जैन-नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन की व्याख्या



नाम - श्रीमति य.
जन्म तिथि - 28/07/1973
जन्म समय - प्रातः 9:30
जन्म स्थान - सागर
गुण - 23.5/36

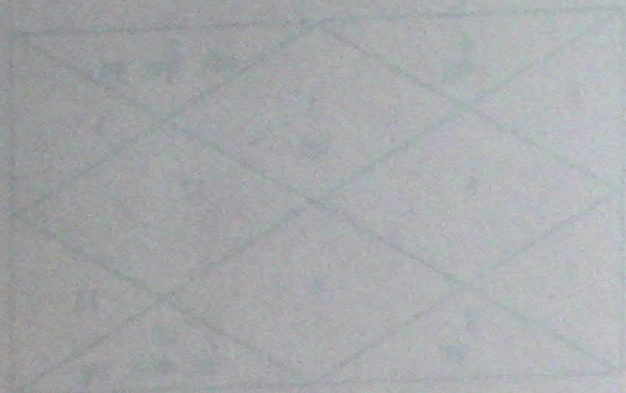
नाम - श्री य.
जन्म तिथि - 11/09/1971
जन्म समय - प्रातः 07:00
जन्म स्थान - सागर

श्रीमति य. की कुंडली में लग्नेश बुध केन्द्रस्थ है किन्तु केतु शनि चंद्र की युति के साथ जो कि सामान्य शुभ ही है । सप्तमेश गुरु नीचंगत किन्तु त्रिकोणस्थ है जो कि अल्प दाम्पत्य सुख कारक है । सप्तमस्थ मंगल भी दाम्पत्य सुख में कमी करता है ।

श्री य. की कुंडली के अनुसार लग्नेश बुध द्वादशस्थ है । लग्नगत सूर्य सप्तमस्थ गुरु भी षष्ठस्थ है, साथ ही सप्तम भाव पर किसी सौम्य ग्रह की दृष्टि भी न होने से दाम्पत्य सुख अल्प ही रहता है । किन्तु गुण मिलान सामान्य है तथापि उत्तम दाम्पत्य सुख नहीं कहा जा सकता ।

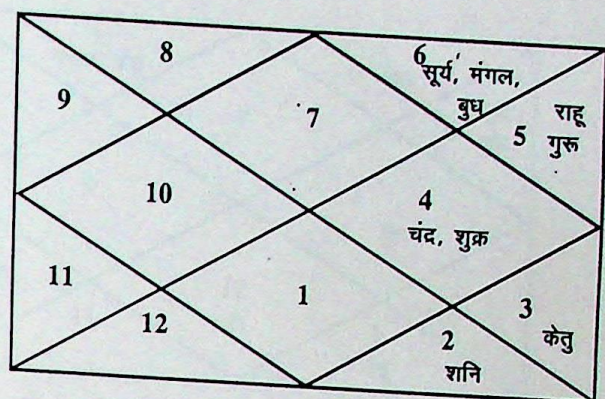
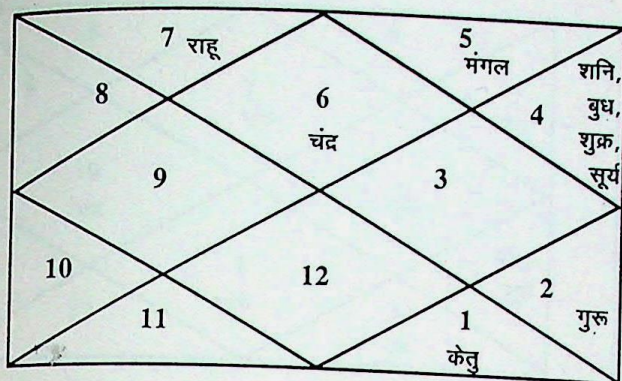
श्रीमति य ने बताया कि चारित्रिक निर्मलता सुखी वैवाहिक जीवन का आधार है किन्तु पति के चरित्र पर संदेह है, साथ ही वे मुझे अहमियत भी नहीं देते । तभी विवाद उत्पन्न होता है, किन्तु श्री य ने इस संबंध में किसी प्रकार की कोई टीका टिप्पणी करने से इनकार कर दिया ।

पत्नि का प्राप्तांक 45 जो Unsatisfactory व पति का प्राप्तांक 33 जो कि Very Unsatisfactory के अंतर्गत है । साक्षात्कार व प्राप्तांकों में समानता है ज्योतिषीय दृष्टिकोण से भी कुछ समानता वैवाहिक कुसमायोजन की ओर इंगित करती है ।



1 2 3 4
5 6 7 8
9 10 11 12
13 14 15 16

1 2 3 4
5 6 7 8
9 10 11 12
13 14 15 16



नाम - श्रीमति र.
 जन्म तिथि - 31/08/1976
 जन्म समय - प्रातः 10:30
 जन्म स्थान - इलाहाबाद
 गुण - 14.5/36

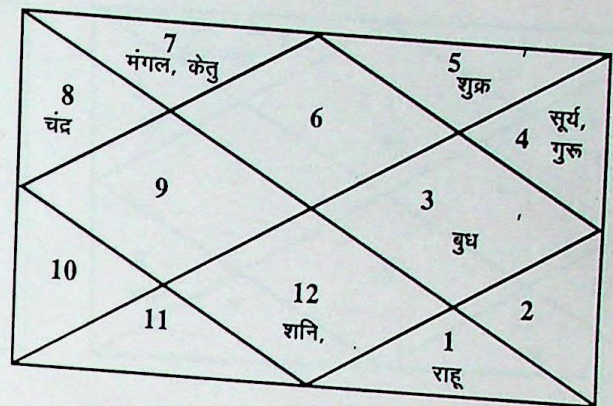
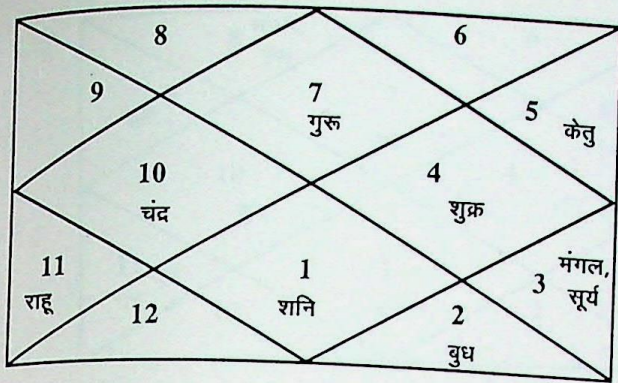
नाम - श्री र.
 जन्म तिथि - 01/10/1969
 जन्म समय - प्रातः 08:50
 जन्म स्थान - बनारस

श्रीमति र. की कुंडली में लग्नेश बुध, सूर्य, शनि, शुक्र के साथ एकादशस्थ है, जो कि सामान्य शुभ है, किन्तु सप्तमेश सप्तम कारक गुरु भाग्य स्थानस्थ होने से दाम्पत्य सुख सामान्य बनाता है ।

श्री र. की कुंडली के अनुसार लग्नेश शुक्र केन्द्रस्थ है जो कि शुभ है, किन्तु सप्तमेश मंगल द्वादश स्थित है, सूर्य, बुध की युति के साथ ही किसी शुभ ग्रह की दृष्टि का अभाव है, जो दाम्पत्य सुख में कमी करता है साथ गुण मिलान भी न्यून होने से अल्पतम दाम्पत्य सुख कहा जा सकता है । किन्तु सप्तम कारक शुक्र की केन्द्र स्थिति कुछ सामान्यता लाती है ।

श्रीमति र. ने बताया पति का व्यसनीय होना दाम्पत्य सुख को प्रभावित करता है । यदि आदतों पर नियंत्रण रखा जाये तो समायोजन में कहीं कोई दिक्कत न हो । जबकि श्री ने आर्थिक सुख को महत्ता दी ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 70 Good व पति का प्राप्तांक 55 Average की श्रेणी में है । उक्त दोनों दृष्टिकोणों से सामान्य समायोजन कहा जा सकता है ।



नाम - श्रीमति ल.
जन्म तिथि - 21/06/1970
जन्म समय - दोपहर 02:40
जन्म स्थान - केरल
गुण - 27/36

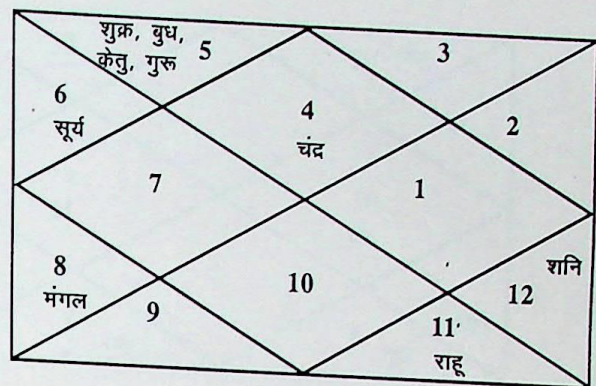
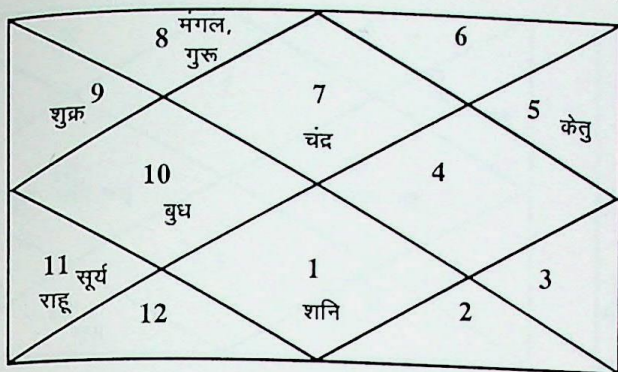
नाम - श्री ल.
जन्म तिथि - 17/07/1967
जन्म समय - प्रातः 11:20
जन्म स्थान - केरल

श्रीमति ल. की कुंडली में लग्नेश शुक्र केन्द्रस्थ है जो शुभ है, सप्तमस्थ शनि नीचंगत है जो कि दाम्पत्य सुख की दृष्टि से शुभ नहीं है, किन्तु सप्तमेश की नवम स्थिति दाम्पत्य सुख कारक हैं सप्तम कारक गुरु की केन्द्र स्थिति भी दाम्पत्य सुख को उत्तम बनाती है ।

श्री ल. की कुंडली के अनुसार लग्नेश बुध स्वगृही केन्द्रस्थ है जो कि शुभ है सप्तमेश गुरु एकादशस्थ है । जो उत्तम दाम्पत्य सुख कारक हैं किन्तु शनि कुछ व्यवधान उत्पन्न करता है तथापि सप्तम कारक शुक्र की द्वादस्थ स्थिति उत्तम दाम्पत्य सुख प्रदान करती है । उत्तम गुण मिलान भी दाम्पत्य सुख में सहभागी है ।

श्रीमति ल. श्री ल. ने आयु का अधिक न होना दाम्पत्य सुख के लिये जरूरी बताया है यदि आयु में अधिक अंतर होगा तो एक दूसरे की भावनाओं को समझने में असुविधा होती है । भावनात्मक होना सुखी वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक होता है ।

पति-पत्नि दोनों के मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 70 है जो Good श्रेणी के अंतर्गत है उक्त दोनों दृष्टिकोणों से सामान्य वैवाहिक समायोजन परिलक्षित होता है ।



नाम - श्रीमति व.
 जन्म तिथि - 15/02/1971
 जन्म समय - रात्रि 10:00
 जन्म स्थान - जबलपुर
 गुण - 19.5/36

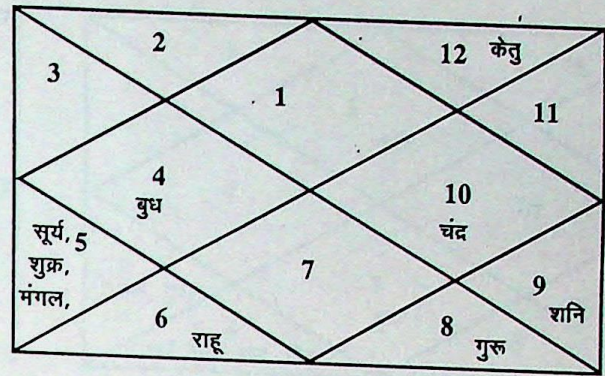
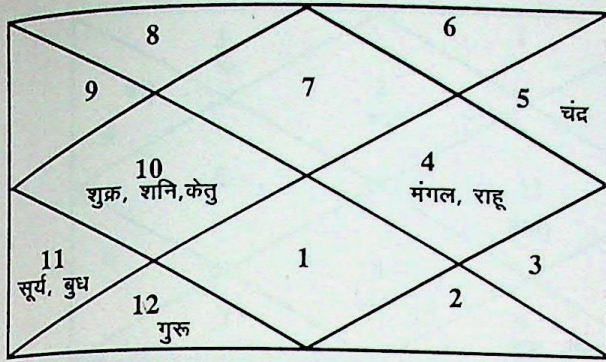
नाम - श्री व.
 जन्म तिथि - 28/09/1967
 जन्म समय - रात्रि 03:30
 जन्म स्थान - इंदौर

श्रीमति व. की कुंडली में लग्नेश शुक्र की तृतीय स्थिति सामान्य दाम्पत्य सुख कारक है, किन्तु सप्तमस्थ सुख शनि नीचंगत होकर दाम्पत्य सुख बाधक है, किन्तु सप्तमेश मंगल स्वग्रही गुरु युत द्वितीयस्थ जो कि दाम्पत्य सुख में सहायक है। साथ ही सप्तम कारक गुरु भी द्वितीयस्थ होकर उत्तम दाम्पत्य सुख कारक बनता है।

श्री व. की कुंडली के अनुसार लग्नेश चंद्र लग्नस्थ है, जो उत्तम है। सप्तमेश शनि भाग्यस्थानस्थ है, जो उत्तम योग कारक है। सप्तम कारक शुक्र द्वितीयस्थ, जो कि उत्तम है यद्यपि गुण मिलान सामान्य से कम है तथापि उत्तम दाम्पत्य सुख कहा जा सकता है।

श्रीमति व. श्री व. समान बौद्धिक स्तर को व सामान भावनात्मक समर्पण को वैवाहिक समायोजन के लिये आवश्यक बताया अतः इनके मध्य अच्छा समायोजन है।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 72 व पति का 75 दोनों ही Good श्रेणी के अंतर्गत हैं। उक्त दोनों ही दृष्टिकोणों से भी समायोजन उत्तम होने से वैवाहिक समायोजन भी उत्तम कहा जा सकता है।



नाम - श्रीमति ह.
 जन्म तिथि - 08/03/1973
 जन्म समय - रात्रि 10:00
 जन्म स्थान - जबलपुर
 गुण - 27/36

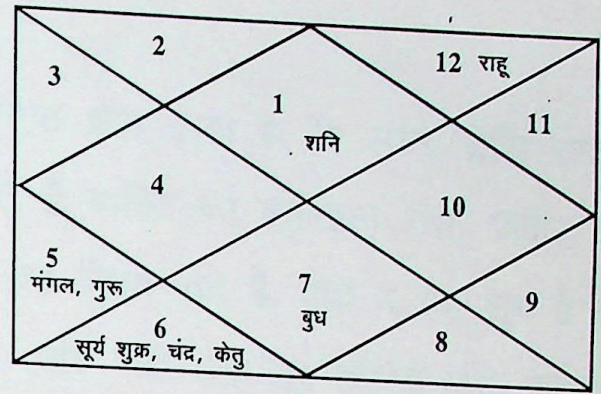
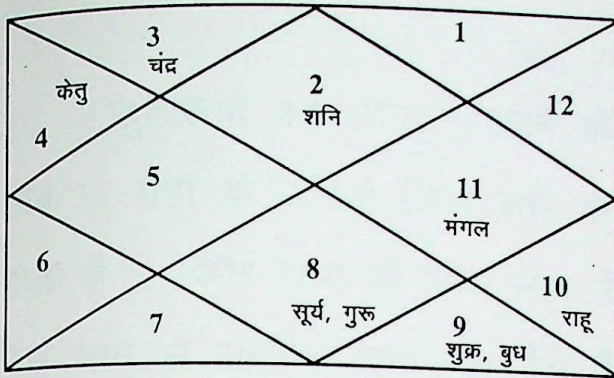
नाम - श्री ह.
 जन्म तिथि - 17/08/1959
 जन्म समय - रात्रि 12:30
 जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति ह. की कुंडली में लग्नेश शुक्र की केन्द्र स्थिति उत्तम योग कारक है । सप्तमेश मंगल केन्द्र स्थिति होकर उत्तम योग कारक बनता है किन्तु सप्तम कारक गुरु स्वग्रही षष्ठस्थ है जो इसमें कमी लाता है ।

श्री ह. की कुंडली के अनुसार लग्नेश मंगल त्रिकोणगत पंचमस्थ है सप्तमेश व सप्तम कारक शुक्र की लग्नेश के साथ त्रिकोण स्थिति उत्तम योग कारक है, साथ उत्तम कोटि का गुण मिलान होने से दाम्पत्य जीवन उत्तम कहा जा सकता है ।

श्रीमति ह. ने बताया कि मैं और मेरे पति एक दूसरे की रुचियों का खयाल रखते हैं जो कि वैवाहिक समायोजन का मूल आधार है । श्री ह. ने बताया कि यद्यपि आयु का अधिक अंतर है तथापि पत्नि का बुद्धिमान होना वैवाहिक समायोजन के लिये बहुत आवश्यक है ।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 60 Average व पति का 70 Good श्रेणी में है उक्त दोनों दृष्टिकोण उत्तम वैवाहिक समायोजन की ओर इंगित करते हैं ।



नाम - श्रीमति श.
जन्म तिथि - 03/12/1971
जन्म समय - सायं 06:48
जन्म स्थान - जबलपुर
गुण - 31.5/36

नाम - श्री श.
जन्म तिथि - 22/09/1968
जन्म समय - रात्रि 07:30
जन्म स्थान - जबलपुर

श्रीमति श. की कुंडली में लग्नेश शुक्र अष्टमस्थ है, बुध की युति है जो कि शुभ नहीं है, किन्तु सप्तमेश मंगल केन्द्रस्थ है और सप्तमस्त सूर्य गुरु दाम्पत्य जीवन को प्रभावित तो करते हैं, किन्तु गुरु ही सप्तम कारक होने के साथ केन्द्र स्थिति भी है। जो कि दाम्पत्य सुख कारक बनता है।

श्री श. की कुंडली के अनुसार लग्नेश मंगल त्रिकोणस्थ है गुरु की युति के साथ जो कि अत्यंत शुभ है, किन्तु नीचस्थ शनि लग्नगत होकर स्वभावं को क्रोधी बनाता है, सप्तमेश शुक्र षष्ठस्थ है सूर्य चंद्र केतु के साथ किन्तु सप्तमस्थ, बुध उत्तम दाम्पत्य सुख कारी है। उत्तम गुण मिलान दाम्पत्य जीवन में सहयोगी है।

श्री श. ने बताया कि सामान भावनात्मक स्तर व एक दूसरे की आवश्यकताओं को समझना तथा रुचियों का खयाल रखना हमारे सुखी वैवाहिक जीवन का आधार है। इस विषय में श्रीमति श. ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया।

पत्नि का मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्राप्तांक 60 Average 45 Unsatisfactory की श्रेणी में है अतः साक्षात्कार व प्राप्तांकों में भिन्नता है साथ ही ज्योतिषीय दृष्टिकोण व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में भी भिन्नता है तथापि ज्योतिषीय दृष्टिकोण से समायोजन उत्तम है।

कुंडलियों का अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात होता है कि लग्न, राशि सप्तम भाव के ग्रहों के स्वरूप जिस स्तर के होते हैं व्यक्ति का व्यक्तित्व उसी प्रकार का होता है । और साथ ही जिस भाव में ये ग्रह स्थित होते हैं, यदि ये ग्रह शुभ हैं तो उस भाव से संबंधित शुभ फल देते हैं । यदि यही ग्रह क्रूर हों तो उस भाव से संबंधित फल में कमी कर देते हैं । यदि इन ग्रहों में पति पत्नि के ग्रह परस्पर मैत्री न रखते हुए शत्रुता कारक रहते हैं और दाम्पत्य जीवन में या सामान्य जीवन में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न करते हैं तो उनकी शान्ति तीन प्रकार से की जा सकती है —

1. **जप** - अर्थात् संबंधित ग्रह का निर्धारित संख्यानुसार जप कर उसकी क्रूरता को सौम्य बनाया जा सकता है ।
2. **दान** - संबंधित ग्रहों की दान वस्तुएं शास्त्रों में विविध प्रकार से निरूपित हैं उन ग्रहों की शान्ति के निमित्त निर्धारित वस्तुओं का दान विशेष सहायक होता है ।
3. **रत्न धारण** - पीड़ा दायक या वैमनस्य कारक क्रूर ग्रहों के नियंत्रण में रत्न विशेष प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं । ग्रहों के पृथक-पृथक रत्न मात्रानुसार निर्धारित हैं अतः रत्न धारण कर भी ग्रहों की क्रूरता को सौम्य बनाया जा सकता है । एक अन्य प्रकार औषधि उपचार भी है । ग्रहों की चिकित्सा के निमित्त औषधियों का निर्धारण भी किया गया है । औषधियों का मूल्य शाखा पत्तियां भी विविध प्रकार से प्रयोग में लाकर दाम्पत्य जीवन को और जीवन से संबंधित समस्याओं में भी प्रयोग में लाकर जीवन को सुखद बनाया जा सकता है ।

निष्कर्षतः दाम्पत्य जीवन विपरीत होने पर भी उक्त रीति से ग्रहों संबंधी उपचार कर अनुकूलता लायी जा सकती है । ठीक वैसे ही वैवाहिक समायोजन एक व्यक्तिगत विषय है इस विषय में जो यथोचित जानकारी हो सकती थी वह तो उक्त दम्पतियों ने प्रदान की तथापि जिन पहलूओं और तथ्यों को दृष्टिगत रखा वे थे भावनात्मक समर्पण, सुदृढ आर्थिक स्थिति, समान मानसिक स्तर, शिक्षा, पारस्परिक वैचारिक सामंजस्य, आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भरता व उत्तरदायित्व का ज्ञान होना व सुखी वैवाहिक जीवन तथा वैवाहिक समायोजन के लिये आवश्यक है साथ ही पति या पत्नि में से किसी एक का भी व्यसनी होना या चारित्रिक रूप से कमजोर होना दाम्पत्य जीवन के लिये बिल्कुल उचित नहीं है । अतः उक्त सभी तत्वों का समावेश एक सुखी व समायोजित वैवाहिक जीवन के लिये आवश्यक है । अतः एकदूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए चलना इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

अध्याय - 5 निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष एवं सुझाव

5.2 सुझाव

(I) मार्ग दर्शन हेतु

(II) अनुसंधान हेतु

१ - आर्या आर्यु चरु चिकित्सा

आर्यु चरु चिकित्सा १३

आर्यु १३

१३ चरु चिकित्सा (१)

१३ चरु चिकित्सा (२)

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष -

यह शोध का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है । निष्कर्ष देते समय उसके आधार तथा तर्क एवं प्रमाण साथ-साथ देना होता है । एक शोधार्थी को यह स्पष्टतः बताना होता है कि प्रस्तुत अनुसंधान में निष्कर्षों की अनुप्रयुक्ति की क्या-क्या परिसीमाएं हैं । इसका उद्देश्य यहां यह संकेत देता है कि प्रस्तुत अनुसंधान के निष्कर्ष कहां तक वैध हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन का ज्ञान मनोवैज्ञानिक एवं फलित ज्योतिष के आधार पर करने के उद्देश्य से किया गया है । यह जानने का प्रयास किया गया कि यदि मनोवैज्ञानिक आधार पर समायोजन का स्तर अच्छा है तो क्या ज्योतिषीय आधार पर समायोजन का स्तर अच्छा है तथा एक युगल (पति-पत्नि) का मनोवैज्ञानिक एवं ज्योतिष दोनों स्तरों पर समायोजन में कितना सह संबंध है तथा उन तथ्यों या पहलुओं का पता लगाना जो वैवाहिक समायोजन व कुसमायोजन के लिए उत्तरदायी हैं ।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर संबंधित परिकल्पना की पुष्टि हुई है कि नहीं, यह शोधार्थी को निष्कर्ष में परिशुद्ध व यथार्थ रूप से बताना होता है ।

वैवाहिक सामंजस्य में यद्यपि मनोविज्ञान से असम्बद्ध भी अनेक पहलू सम्मिलित हैं, किन्तु अपने सही अर्थों में यह एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है । निःसंदेह कुछ व्यक्तियों के वैवाहिक संबंध अनुकूल बाह्य परिस्थितियों व दशाओं से भी प्रभावित होते हैं । तो भी इस तरह बाह्य परिस्थितियों से सामंजस्य रखना अपने आप में एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । यद्यपि यह न्याय संगत नहीं है कि किसी गुणात्मक मान

(Value) का परिमाण स्थिर किया जाए परन्तु वर्तमान अध्ययन के लिये यही एक साध्य विधि (Workable Method) प्रतीत होती है ।

वर्तमान अनुसंधान के निष्कर्ष -

1. नवदम्पतियों के ज्योतिष और मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया, यद्यपि इन दोनों चरों के मध्य सह-संबंध है । यदि न्यादर्श की संख्या और अधिक बढ़ा दी जाए तो हो सकता है कि यह सह संबंध सार्थक पाया जाए ।
2. नवदम्पतियों का ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।
3. नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।
4. हिन्दू नवदम्पतियों का ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।
5. हिन्दू नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।
6. मुस्लिम नवदम्पतियों का ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।



7. मुस्लिम नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।
8. सिख नवदम्पतियों को ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।
9. सिख नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।
10. ईसाई नवदम्पतियों को ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।
11. ईसाई नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।
12. जैन नवदम्पतियों को ज्योतिष के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से पाया गया ।
13. जैन नवदम्पतियों का मनोविज्ञान के आधार पर वैवाहिक समायोजन सार्थक रूप से नहीं पाया गया ।

अंततः ये कहा जाता है कि ज्योतिष के क्षेत्र में नवदम्पति (पति-पत्नि) में वैवाहिक समायोजन में संबंध पाया गया जो विभिन्न स्तरों में सार्थकता की ओर भी इंगित करता है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि ज्योतिषीय मूल्यांकन बहुत अंशों में सत्य प्रमाणित होता है क्योंकि साक्षात्कार विधि से भी इनकी पुष्टि होती है । अतः ये मानना पड़ेगा कि इसके मूल्यांकन में भी कुछ cases में संबंध होते हुए भी कुसमायोजन की ओर भी आंकड़े परिलक्षित करते हैं ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण में नवदम्पतियों के वैवाहिक समायोजन के संबंध में जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं वे सभी दोनों के मध्य वैवाहिक संबंध में संबंध द्योतक है किन्तु कुछ को छोड़कर अधिक cases में सार्थकता नहीं पाई गई । ये हो सकता है कि उपरोक्त परीक्षण का मानकीकरण यहां के नवदम्पतियों के लिये उपयुक्त न हो ।

5.2 सुझाव -

कभी कभी निष्कर्ष के आधार पर सुझाव भी मांगे जाते हैं । यदि अनुसंधान पूर्णतः वैज्ञानिक उद्देश्य के लिये न हो तो सुझाव अवश्य दिया जाना चाहिए । कभी-कभी अनुसंधान सामाजिक व्याधियों से संबंधित होता है, तो भी सुझाव देना आवश्यक रहता है । इन सुझावों को हमेशा निष्कर्ष के अंत में दिया जाता है । सुझाव हमेशा तर्क पर आधारित एवं व्यवहारिक होता है एवं अनेकों सुझाव कार्य रूप में परिणित करने में पड़ने वाली संभावित कठिनाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है ।

आगामी अनुसंधान हेतु सुझाव

I मार्गदर्शन हेतु

5.2.1 पति के लिये - पतियों को चाहिए कि वे अपने दाम्पत्य जीवन में समायोजन व मधुरता लाने के लिये अपनी पत्नी से पूर्व वैचारिक तालमेल स्थापित करें व जैसा व्यवहार इन्हें स्वयं के लिये उचित न लगता हो व पसंद न हो उस तरह का व्यवहार अपनी पत्नी के साथ न करें ; व अपनी पत्नी व उनकी योग्यता तथा कुशलता पर पूर्ण विश्वास रखें ; तथा अपनी पत्नी का सदैव सम्मान करें । व उनकी आवश्यकताओं व अपेक्षाओं की उपेक्षा करें ।

- 5.2.2 **पत्नियों के लिये** - पत्नियों को चाहिए कि वे भी अपनी योग्यता कौशल व अपने मधुर व्यवहार से अपने वैवाहिक जीवन को मधुर व समायोजित बनाने का सदैव प्रयास करें व अपने पति के साथ-साथ परिवार के सभी सदस्यों का सम्मान करें अपने पति के विचारों व भावनाओं का सम्मान करते हुए अपने विचारों के पति के विचारों के साथ जोड़े ताकि वैचारिक मतभेद न पैदा हो अपने पति पर पूर्ण विश्वास रखें ताकि दाम्पत्य जीवन में कभी कटुता पैदा न हो पाए क्योंकि एक सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार विश्वास ही होता है ।
- 5.2.3 **नव दम्पतियों के लिये** - पति पत्नी को व्यक्तिगत सुझाव के बाद भी आवश्यक है कि दोनों को एक साथ सुझाव भी दिये जाएं । अतः नव दम्पतियों को चाहिए कि वे अपने वैवाहिक जीवन को सुमधुर व पूर्ण समंजित बनाने के लिये एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास रखें व एक दूसरे की भावनाओं व विचारों का सम्मान करें कभी अपनी व्यक्तिगत योग्यता के वशीभूत होकर एक दूसरे जो नीचा दिखाने का प्रयास न करें । एक दूसरे की रुचियों में पूर्ण रुचि दिखाएं आर्थिक परेशानी आने पर हमेशा एक दूसरे का सहयोग करें ।
- 5.2.4 **अभिभावकों के लिये** - पति के माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी बहू के साथ पुत्री तुल्य व्यवहार करें : व उसकी भावनाओं व विचारों का सम्मान करें तथा बेटे व बहू के व्यक्तिगत तथा दाम्पत्य जीवन में अनपेक्षित हस्तक्षेप न करें । पत्नी के माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी पुत्री के वैवाहिक जीवन में अनपेक्षित हस्तक्षेप न करें व अपनी पुत्री को सदैव समग्र रूप से समायोजन करने की शिक्षा दें ।
- 5.2.5 **समाज शस्त्रियों के लिए** - समाज शास्त्र के क्षेत्र में विवाह व वैवाहिक संबंधों तथा वैवाहिक समायोजन विषय पर किंचित मात्र ही अध्ययन हुए है या इस

क्षेत्र में अध्ययनों का पूर्णतः अभाव है अतः समाजशास्त्रियों को चाहिए कि वे इस विषय पर अध्ययन के लिए प्रेरित हों ताकि वैवाहिक जीवन से संबंधित सामाजिक बुराईयां व अनैतिकताओं को रोका जा सके ।

5.2.6 **मनोवैज्ञानिकों के लिए -** मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी पिछले कई वर्षों से वैवाहिक समायोजन के क्षेत्र में कोई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का अभाव रहा है इस विषय पर वर्तमान में बहुत अधिक अध्ययन की आवश्यकता है ताकि वैवाहिक समायोजन में आने वाली बाधाओं और परेशानियों को ज्ञात कर उन्हें मनोवैज्ञानिक ढंग से दूर करने का प्रयास किया जा सके ।

5.2.7 **ज्योतिष अध्येताओं के लिए -** ज्योतिष शास्त्र में वैवाहिक सुख व दाम्पत्य जीवन के लिये कारक ग्रह व ग्रहयोग इत्यादि तो उपलब्ध है किन्तु उत्तम दाम्पत्य जीवन के लिये कुण्डली मिलाने के साथ-साथ व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं को सर्वथा उपेक्षा की गई है अतः ज्योतिष अध्येताओं को चाहिए कि वे प्रथम तो इस विषय को वैज्ञानिक ढंग से जन सामान्य तक पहुंचाएं व इसकी उपादेयता व महत्व को जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर ज्योतिष ज्ञान के लाभ से सभी को अवगत कराएं ताकि ज्योतिष जिज्ञासा के साथ एक रुचिकर विषय बनकर सामने आए ।

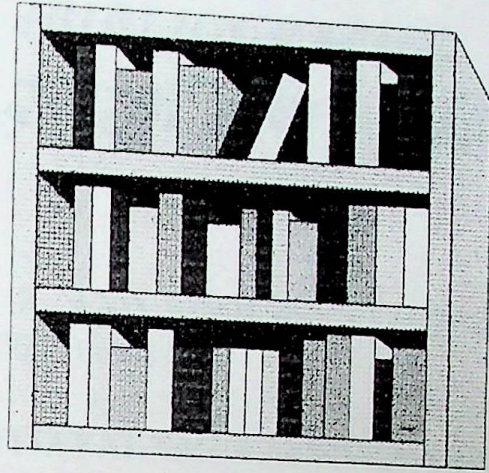
5.2.8 **समाज सेवी संस्थाओं व कानून के लिये -** वैवाहिक समायोजन या विवाह से संबंधित उत्पन्न समस्याओं को दूर करने के लिये समाज सेवी संस्थानों का उत्तम योगदान हो सकता है कि वे दोनों पक्षों को समझाकर उन्हें एक साथ रहने की सलाह दें तथा कानून में भी तलाक या विच्छेद की बजाए सुझाव व समझौते को विशेष स्थान मिलना चाहिए ताकि इस तरह की सामाजिक बुराईयों से छुटकारा मिल सके ।

II अनुसंधान हेतु

- 5.2.9 न्यादर्श के आकार में वृद्धि अथवा बड़े न्यादर्श का चयन किया जाना चाहिये ।
- 5.2.10 अन्य प्रकार के चरों का समावेश यथा—व्यक्तित्व, सामाजिक—आर्थिक स्तर, शिक्षा आदि का समावेश किया जाना चाहिये ।
- 5.2.11 विभिन्न प्रकार के अन्य क्षेत्रों को न्यादर्श के लिये चयनित करना चाहिये ।

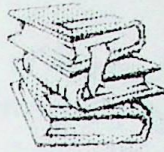
(BIBLIOGRAPHY)

संदर्भ ग्रन्थ सूची



(BIBLIOGRAPHY)
संदर्भ ग्रन्थ सूची

सिद्धांत अथवा प्रयोग
(BIBLIOGRAPHY)



(BIBLIOGRAPHY)
संदर्भ ग्रंथ सूची

- ❖ AMATO PAUL R. AND ROGERS, STACY J. - *Journal of Family Issues* 1999, Vol 20 (1) 69-86p
- ❖ AMINABHAV VIJAYALXMI A. & KULKARNI VIDYA R.- *Journal of Projective Psychology and Mental Health*, 2000 July, Vol 7 (2) 153-158p
- ❖ BERGLER, ADMUND, - *Conflict in Marriage*, New York, 1st 1938.
- ❖ BOWMAN, HENRY A, - *Marriage for Moderns* 3rd Edition, New York, 1954, P.-88
- ❖ BOND, JENNIFER M. AND NICKS, SANDRA D. - *Psychological Reports*, 1999 Feb. Vol. 84 (1) P-42-44
- ❖ BUUNK, BRAM P. AND MUSTSARES, WIM - *Journal of Family Psychology*, 1999 Vol. 13 (2) 165-174P
- ❖ BALLARD-REISH DEBORAH S. AND WEIGAL DENIAL J. - *Handbook of interpersonal Commitment and relationship stability perspective on Individual deference Publisher New York*, 1999 XVIII 532, 407-424P
- ❖ D'AMATO M.R. - *Experimental psychology*, Page - 11.
- ❖ DAFTARI K.L. - *The social institution in Ancient India*, 1947. Page -165
- ❖ DESAI NEERA, - *Women in Morden India*, Bombay, 1957, P-244.
- ❖ DEVILA JOANNE, - *Karney Benjamin R. and Brabudbury, Thomasn Jounal of Presonality and social Psychology*, 1999, Vol-76 (5) 783-802 p
- ❖ DUBE S.C. - *Indian Villages*, Routledge and kegen Paul, 1955.

- ❖ **FELDMAN**, - *Work in the Lives of Married Women*. National Manpower Council, New York, Calumbia University Press 1958.
- ❖ **GOODE WILLIAMS** - *The Famiy* New Delhi, Prentice Hall of India Private Ltd. 1965.
- ❖ **GOODE & HOTT**, - *Methode in Social research* 209. MC. Groaw Hill Book Co. Ltd. New York. 1952.
- ❖ **GLENN, NORVAL D.** - *Journal of Marriage and the Family* - Vol 60(3) P-569-546.
- ❖ **GOTTMAN, JOHN MORDECHAI AND LEVESON, ROBERT WAYHE** - *Family Process* Vol 38 (2) P-159-165.
- ❖ **HAMILTON, GILBERT V. & McGowan K.**, *What is Wrong with Marriage?* New York 1929
- ❖ **HATE (MRS.) C.A.**, - *The Socio Economic Condition of educated women in Bombay City*, 1930.
- ❖ **HAVE MAN & West**, *They went to College*, 1952
- ❖ **HARBA JOSEPH. Lorenz, Fredrick O. and Pachacova, Zdenka**, *Journal of Marriage and the Family*. 2000 May Vol 62 (2) 520-531
- ❖ **HUSTON TED L** - *Journal of Marriage and the family studies* 2000 Vol - 62 (2) 298-319 Page - 11.
- ❖ **JEFCOTT, SEER, SMITH** - *Married Women Working*. 1962 - P 171. London George Allen and Unwin Ltd.
- ❖ **KAPADIA K.M.**, *Marriage and Family in India* (2nd Edition), Bombay, Oxford University 1958.
- ❖ **KAPADIA K.M.**, *Hindu Family in Transition* - Socological , Bulletin Vol. 8 No. 2.
- ❖ **KAPOOR PROMILLA**, - *Socio-psychological Study of the change in the attitudes of educated earning Hindu Woman*, 1957, P-244.
- ❖ **LAZARUS, RICHARD S.**, *Adjustment and Personality*, New York Prentice Mcgraw Hill Co. 1961

- ❖ **LANDIS PAUL H.**, *Your Marriage and Family living*, New York McGraw Hill Co. 1946.
- ❖ **LANDIS JODSON T.**, *Length of Time required to Achive Adjustment in Marriage 1946. American Sociological Review* Vol. II, No.-6. .
- ❖ **LOCKE MACKAPRANG**, *Marital adjustment the employed wife.* 1949, P-536-7
- ❖ **LOCKE, HARVEY J. AND WILLIAMSON, ROBERT C.** - *Marrital Adjustment A factor Analysis stady Amrican Sociological Review* Vol -2 No. -1 Page No. 562 -9
- ❖ **MERCHANT K.T.**, - *Changing views on marriage and the famili*, 1935.
- ❖ **METHESON**, - *Introducation to Experimental psychology* 1970.
- ❖ **McCARTHY BARRY W.** - *Journal of Family psychotherapy* 1998. Vol 9 (4) 1-11 P.
- ❖ **NYE & HOFFMAN**, - *The Employed Mother in America* Chicago, Rand McNally and Co. 1963
- ❖ **PRABHU P.H.**, - *Hindu Social Organization* (3rd Edition), Bombay, Popular Book Depot, 1958.
- ❖ **RADHAKRISHNAN**, - *The Hindu View of Life*, London, George Allen and Unwin Ltd.
- ❖ **ROSS**, - *Hindu View Family in its, Urban Setting*, Bombay, Oxford University Press 1961.
- ❖ **ROSENQUEST, CARL M.**, - *Social problems*, New York Prentice Hall in 1938
- ❖ **ROSSI ALICES** - *A good women is hard to find* 1964 P-2
- ❖ **RUVOLO, ANN P**, - *Journal of Social and Personal Relationship.* Vol. 15 (4) 470-489 P.
- ❖ **SAIT, UNA, BERNARD**, - *New Horizones for the famiy* 1946.
- ❖ **SASTRY JAYA DEPT. OF SOCIOLOGY DURHAM, NC** - *Journal of Comparitive Family Studies* 1999 (win) Vol. 30 (1) 135-152.



1	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	1
2	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	2
3	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	3
4	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	4
5	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	5
6	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	6
7	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	7
8	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	8
9	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	9
10	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	10
11	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	11
12	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	12
13	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	13
14	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	14
15	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	15
16	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	16
17	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	17
18	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	18
19	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	19
20	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	20
21	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	21
22	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	22
23	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	23
24	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	24
25	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	25
26	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	26
27	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	27
28	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	28
29	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	29
30	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	30
31	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	31
32	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	32
33	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	33
34	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	34
35	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	35
36	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	36
37	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	37
38	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	38
39	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	39
40	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	40
41	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	41
42	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	42
43	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	43
44	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	44
45	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	45
46	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	46
47	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	47
48	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	48
49	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	49
50	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	50
51	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	51
52	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	52
53	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	53
54	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	54
55	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	55
56	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	56
57	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	57
58	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	58
59	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	59
60	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	60
61	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	61
62	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	62
63	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	63
64	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	64
65	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	65
66	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	66
67	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	67
68	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	68
69	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	69
70	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	70
71	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	71
72	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	72
73	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	73
74	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	74
75	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	75
76	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	76
77	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	77
78	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	78
79	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	79
80	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	80
81	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	81
82	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	82
83	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	83
84	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	84
85	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	85
86	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	86
87	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	87
88	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	88
89	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	89
90	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	90
91	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	91
92	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	92
93	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	93
94	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	94
95	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	95
96	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	96
97	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	97
98	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	98
99	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	99
100	THE HISTORY OF THE HINDU RELIGION	100

- ❖ **SCHUTZ, ASTRID** - *Journal of Social Personal Relationship* 1999 (Apr) Vol. 16 (2) 193-208 p.
- ❖ **SOKOLSKI, DAWN M. AND HENDRIK, SUSAN S.**-*Family Therapy* 1999 Vol. 26 (1) 39-49.
- ❖ **SUSSMAN, LINN M. AND ALEXGNDER; CHARLENE M.**- *Journal of Mental Health Counseling* 1999 Vol. 21 (2) 173-185.
- ❖ **SCHUMM WALTER R. WEBB, FARRELL J. AND BOLLMAN, STEPHEN R.** - *Psychological Reports*, 1998 Vol. 83 (2) 319-327.
- ❖ **TERMEN LEWIS M.et. al.,** - *Sociological Factors in Marital Happiness*, New York Megraw Hill Co. 1938.
- ❖ **TOWNSEND J.C.,** - *Introducation to Experimental methods* Page - 32.
- ❖ **TURGEON, LYSE, JULIEN AND DION ERIC** - *Family Process* 1998 (Fal) Vol 37 (3) Page - 323-334.
- ❖ **WEIGEL, DENIEL AND BALLARD - REISCH DEBORAH** *Journal of Scoial and presonal relationship* 1999 Vol 16 (2) Page - 175-191 p.
- ❖ **WILKIE, JANE RIBLETT, RERREE, MYRA MARK AND RED CHIFF KATHEYAN STROTHER** - *Journal of marrioge and Family* Vol 60 (3) Page - 577-594 p.
- ❖ **WHITE JAMS M.** - *Journal of Comparitive Family studies* 1999 Vol 30 (2) Page - 163-175 p.
- ❖ आचार्य वराह मिहिर - *लघु जातक*, गंगा पुस्तकालय, वाराणसी, 1958
- ❖ आचार्य वराह मिहिर - *बृहज्जातक*, ठाकुर दास एण्ड सन्स, वाराणसी, संवत् 2031.
- ❖ आर्य भारती - *स्मृतियों में नारी*, विश्वभारती परिषद्, वाराणसी 1989
- ❖ ओझा गोपेश कुमार - *फलदीपिका*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली 1975
- ❖ कवि जयदेव - *जातक चंद्रिका*, श्री कृष्णदास, बम्बई 1970

- ❖ कवि कालिदास - उत्तर कालामृत, गोपाल दास एण्ड कम्पनी, दिल्ली 1976
- ❖ कालिदास - कुमार सम्भवम् 6/13
- ❖ केदार नाथ - विवाह का समय
- ❖ खेम राज रुद्रमणि - सिद्धांत शिरोमणी, श्री कृष्ण दास, बम्बई, 1995
- ❖ कोठारी तथा कोठारी - सांख्यिकी सिद्धांत तथा व्यवहार, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ एकादमी भोपाल, पृ. 63
- ❖ कपिल एच. के. - अनुसंधान विधियां, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा 1956
- ❖ कपिल एच. के. - अनुसंधान विधियां, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा 1981
- ❖ कपूर प्रमिला - भारत में विवाह एवं कामकाजी महिलाएं, राजकमल, प्रकाशन प्राइवेट लि., नई दिल्ली, 1976.
- ❖ खरे एवं सिन्हा - सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, पुस्तक भवन, रीवा, 1981.
- ❖ गैरेट हैनरी ई. - शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याण पब्लिशर्स, दिल्ली, 1989.
- ❖ गुप्त रमेश चंद्र - शिक्षा में सांख्यिकी गणना, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ.
- ❖ गुप्ता एम. एल. एवं शर्मा डी. डी. - भारतीय समाज, साहित्य भवन, आगरा.
- ❖ चतुर्वेदी शुकदेव - प्रश्न मार्ग-1, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1978-79.
- ❖ चतुर्वेदी शुकदेव - प्रश्न मार्ग-2, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
- ❖ चतुर्वेदी शुकदेव - भुवन दीपक, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1976.

- ❖ चतुर्वेदी मुरलीधर - होरा रत्नम्, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1996.
- ❖ चतुर्वेदी मुरलीधर - सारावली, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1986
- ❖ जोशी आचार्य चक्रधर - गदावली, श्री धर विद्यामन्दिर देव प्रयाग, 1958.
- ❖ झा अच्युतानंद - जातका भरणम्, चौखम्भा, संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी.
- ❖ झा अच्युतानंद - बृहज्जातक, चौखम्भा, संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी.
- ❖ झा अच्युतानंद - बृहत् संहिता, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी.
- ❖ झा जीवनाथ - भाव कौतुहल हरि प्रासद, कालकादेवी चौक, बम्बई.
- ❖ झा मधुकान्त - मानसागरी, चौखम्भा विद्याभवन, बनारस, 1957.
- ❖ तिलारा कुंवर सिंह - सामाजिक अनुसंधान, प्रकाशन केन्द्र न्यू बिल्डिंग अमीनाबाद, लखनऊ, 1968.
- ❖ द्विवेदी सुधाकर - गणक तरंगिणी, गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, काशी
- ❖ द्विवेदी भोजराज - ज्योतिष और विवाह योग
- ❖ दीक्षित - भारतीय ज्योतिष, शिवनाथ झारखण्डी, हिन्दी समिति, उ.प्र. सरकार लखनऊ.
- ❖ दैवज्ञ नीलकंठ - ताजिक, नीलकण्ठी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, बनारस, 1950.
- ❖ दैवज्ञ राम कृष्ण - प्रश्न चन्द्रेश्वर, गंगा विष्णु श्री कृष्ण दास, बम्बई.
- ❖ दैवज्ञ जीवनाथ - भाव प्रकाश, खिलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी.
- ❖ दैवज्ञ श्री राम - मुहुर्त चिन्तामणि, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली.
- ❖ नेने गोपाल शास्त्री - मनुस्मृति, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, बनारस प्रथम संस्करण, विक्रम संवत् 2054.

- ❖ पाण्डे राजबलि - हिन्दू संस्कार चौखम्बा संस्कृत संस्थान, बनारस पंचम संस्करण, 1995
- ❖ पुरोहित पंडित माधव प्रसाद - सूर्यसिद्धान्त, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1997
- ❖ पाण्डे के. पी. शिक्षा में सरल सांख्यिकी - विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1965
- ❖ बघेल डी. एस. एवं पाण्डे के. सी. - सामाजिक अनुसंधान तथा सांख्यिकी के तत्त्व, पुष्पराज प्रकाशन, रीवा, 1976
- ❖ बाजपेयी एस. आर. - सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण, किताब घर कानपुर, दशम संस्करण.
- ❖ बैदयनाथ - जातक पारिजात, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी.
- ❖ भागवत महेश - आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, भावदीपिका, अर्चना प्रिन्टर्स, आगरा, दशम संस्करण.
- ❖ भटनागर एवं राय पारसनाथ - सामाजिक अनुसंधान विधियां
- ❖ भारस्कराचार्य - भावदीपिका, गोयल एण्ड कंपनी, दिल्ली
- ❖ मालवीय धर्मेश्वर - चमत्कार चिंतामणि, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी 1975
- ❖ मालवीय सुधाकर - पारस्कर गृह्य सूत्रम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी 1995.
- ❖ महाजन धर्मवीर - सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकीय, शिक्षा साहित्य प्रकाशन, मेरठ 1985
- ❖ महाराज शंभू सिंह - प्रश्न ज्ञान प्रदीप, श्री कृष्णदास, बम्बई
- ❖ मिश्र आचार्य रामजन्य - नारद संहिता, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी

- ❖ मिश्र सुरेश चन्द्र - बृहत्पाराशर होरा शास्त्रम् - रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली 1996
- ❖ मिश्र सुरेश चन्द्र - बृहत् संहिता, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- ❖ मिश्र सुरेश चन्द्र - ज्योतिष सर्वस्व, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- ❖ मिश्र सुरेश चन्द्र - लघुपाराशरी, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1996
- ❖ मिश्र नारायण - याज्ञवल्क्य स्मृति, चौखम्बा संस्कृत संस्थान बनारस, प्रथम संस्करण, विक्रम संवत् 2050.
- ❖ मुखर्जी रविन्द्रनाथ - सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन दिल्ली. षष्ठम् संस्करण, 1989
- ❖ मुखर्जी रविन्द्रनाथ - भारतीय समाज व संस्कृति, विवेक प्रकाशन दिल्ली. अष्टम् संस्करण, 1970.
- ❖ मुखर्जी आर. एन. - सामाजिक शोध व सांख्यिकी, पे.437
- ❖ राय पारसनाथ - अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा 1975
- ❖ रमन बी. वी. - एस्ट्रोलॉजी एण्ड मार्टन थॉट, राजेश्वरी, बैंगलोर
- ❖ वर्मा कल्याण - सारावली, खिलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी
- ❖ वैद्य श्रीराम सुन्दर - वर वधू मेलापक दर्पण, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी.
- ❖ वर्मा प्रीति श्रीवास्तव डी. एन. - अनुसंधान विधियां पृष्ठ 18.
- ❖ वर्मा प्रीति श्रीवास्तव डी. एन. - आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, पृष्ठ 28
- ❖ वर्मा ओम प्रकाश - सामाजिक अनुसंधान, सरस्वती सदन मसूरी, 1967
- ❖ शर्मा दैवल महादेव - जातक तत्त्व, भुवनेश्वरी मन्त्रालय, रतलाम.
- ❖ शर्मा काशीनाथ - लघु पाराशरी, मध्य पाराशरी.
- ❖ शर्मा रधुनंदन प्रसाद (गौड़) - दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष

- ❖ शास्त्री सुब्रह्मण्यम - बृहज्जातक, बैंगलोर, 1971
- ❖ शास्त्री डा. नेमिचन्द्र - भारतीय ज्योतिष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली - 1997
- ❖ शर्मा रामस्वरूप - अथर्ववेद, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, नूतन संस्करण 1990
- ❖ शर्मा एन. डी. एवं बाजपेयी एस. आर. - सांख्यिकी सिद्धांत, किताब घर कानपुर, 1968, पंचम संस्करण.
- ❖ शुक्ला एस. एम. सांख्यिकी सिद्धांत - साहित्य भवन, आगरा 1966 चतुर्थ, संस्करण
- ❖ सिंह महेन्द्र प्रताप - मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी - लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 1979 आगरा.
- ❖ त्रिपाठी अवध बिहारी - बृहत्संहिता, संस्कृत विश्व विद्यालय, बनारस.
- ❖ त्रिपाठी रमागोविन्द - संस्कार तत्त्व समीक्षा, विश्वविद्यालय बनारस, दिसं. 1986.

परिशिष्ट

आर्यभट्ट

नव दम्पत्तियों (पति-पत्नि)के वैवाहिक समायोजन संबंधी ज्योतिषीय
प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	पत्नि	पति
1.	35	
2.	32	55
3.	70	40
4.	80	75
5.	70	65
6.	40	80
7.	70	45
8.	62	60
9.	70	67
10.	65	62
11.	45	50
12.	50	70
13.	60	45
14.	65	50
15.	27	45
16.	42	37
17.	60	57
18.	30	55
19.	70	50
20.	80	80
21.	75	85
22.	50	60
23.	42	45
24.	70	65
25.	26	55
26.	27	55
27.	45	45
28.	70	45
29.	55	55
30.	65	37
31.	55	70
32.	70	70
33.	50	75
34.	70	57
35.	65	75
३६.	40	90
		20

संस्कृत-विश्वकोश-प्रस्तावना (संस्कृत-विश्वकोश-प्रस्तावना) का प्रस्तावना

क्र.सं.	शब्द	अर्थ
१	अ	१
२	आ	२
३	इ	३
४	ई	४
५	उ	५
६	ऊ	६
७	ए	७
८	ऐ	८
९	ओ	९
१०	अं	१०
११	अः	११
१२	आं	१२
१३	आः	१३
१४	इं	१४
१५	इः	१५
१६	ईं	१६
१७	ईः	१७
१८	उं	१८
१९	उः	१९
२०	ऊं	२०
२१	ऊः	२१
२२	एं	२२
२३	एः	२३
२४	ऐं	२४
२५	ऐः	२५
२६	ओं	२६
२७	ओः	२७
२८	अं	२८
२९	अः	२९
३०	आं	३०
३१	आः	३१
३२	इं	३२
३३	इः	३३
३४	ईं	३४
३५	ईः	३५
३६	उं	३६
३७	उः	३७
३८	ऊं	३८
३९	ऊः	३९
४०	एं	४०
४१	एः	४१
४२	ऐं	४२
४३	ऐः	४३
४४	ओं	४४
४५	ओः	४५
४६	अं	४६
४७	अः	४७
४८	आं	४८
४९	आः	४९
५०	इं	५०
५१	इः	५१
५२	ईं	५२
५३	ईः	५३
५४	उं	५४
५५	उः	५५
५६	ऊं	५६
५७	ऊः	५७
५८	एं	५८
५९	एः	५९
६०	ऐं	६०
६१	ऐः	६१
६२	ओं	६२
६३	ओः	६३
६४	अं	६४
६५	अः	६५
६६	आं	६६
६७	आः	६७
६८	इं	६८
६९	इः	६९
७०	ईं	७०
७१	ईः	७१
७२	उं	७२
७३	उः	७३
७४	ऊं	७४
७५	ऊः	७५
७६	एं	७६
७७	एः	७७
७८	ऐं	७८
७९	ऐः	७९
८०	ओं	८०
८१	ओः	८१
८२	अं	८२
८३	अः	८३
८४	आं	८४
८५	आः	८५
८६	इं	८६
८७	इः	८७
८८	ईं	८८
८९	ईः	८९
९०	उं	९०
९१	उः	९१
९२	ऊं	९२
९३	ऊः	९३
९४	एं	९४
९५	एः	९५
९६	ऐं	९६
९७	ऐः	९७
९८	ओं	९८
९९	ओः	९९
१००	अं	१००

क्रमांक	पत्ति	पत्ति
37.	80	65
38.	60	40
39.	32	20
40.	50	52
41.	57	57
42.	60	62
43.	32	42
44.	42	52
45.	55	37
46.	35	55
47.	45	47
48.	45	65
49.	47	55
50.	27	32
51.	67	55
52.	62	57
53.	82	65
54.	28	37
55.	37	42
56.	55	62
57.	52	57
58.	72	55
59.	80	65
60.	70	47
61.	45	60
62.	25	40
63.	40	48
64.	50	60
65.	70	70
66.	55	65
67.	55	57
68.	77	55
69.	70	75
70.	42	37
71.	80	80
72.	45	35
73.	65	75

क्रमांक	पत्ति	पति
74.	25	45
75.	70	72
76.	65	65
77.	60	60
78.	55	65
79.	57	60
80.	55	55
81.	57	62
82.	52	47
83.	67	47
84.	47	67
85.	55	65
86.	35	52
87.	27	25
88.	47	32
89.	55	35
90.	27	32
91.	45	45
92.	55	70
93.	40	80
94.	47	62
95.	65	40
96.	50	40
97.	55	40
98.	55	45
99.	55	70
100.	55	55
101.	80	47
102.	67	55
103.	45	55
104.	61	55
105.	35	45
106.	35	65
107.	70	70
108.	42	22
109.	32	35
110.	32	37
111.	55	62

क्रमांक	पत्ति	पति
112.	32	
113.	70	47
114.	37	52
115.	72	55
116.	80	80
117.	72	82
118.	60	65
119.	62	65
120.	55	55
121.	70	70
122.	47	75
123.	65	40
124.	55	55
125.	45	60
126.	55	60
127.	65	45
128.	52	35
129.	62	52
130.	52	47
131.	30	80
132.	75	55
133.	30	85
134.	72	25
135.	65	50
136.	47	55
137.	42	55
138.	25	37
139.	42	32
140.	70	55
141.	28	62
142.	42	32
143.	32	36
144.	55	27
145.	65	77
146.	29	60
147.	47	42
148.	57	62
149.	45	42
150.	37	57
		62

श्री	श्री	श्री
१	१	१
२	२	२
३	३	३
४	४	४
५	५	५
६	६	६
७	७	७
८	८	८
९	९	९
१०	१०	१०
११	११	११
१२	१२	१२
१३	१३	१३
१४	१४	१४
१५	१५	१५
१६	१६	१६
१७	१७	१७
१८	१८	१८
१९	१९	१९
२०	२०	२०
२१	२१	२१
२२	२२	२२
२३	२३	२३
२४	२४	२४
२५	२५	२५
२६	२६	२६
२७	२७	२७
२८	२८	२८
२९	२९	२९
३०	३०	३०
३१	३१	३१
३२	३२	३२
३३	३३	३३
३४	३४	३४
३५	३५	३५
३६	३६	३६
३७	३७	३७
३८	३८	३८
३९	३९	३९
४०	४०	४०
४१	४१	४१
४२	४२	४२
४३	४३	४३
४४	४४	४४
४५	४५	४५
४६	४६	४६
४७	४७	४७
४८	४८	४८
४९	४९	४९
५०	५०	५०
५१	५१	५१
५२	५२	५२
५३	५३	५३
५४	५४	५४
५५	५५	५५
५६	५६	५६
५७	५७	५७
५८	५८	५८
५९	५९	५९
६०	६०	६०
६१	६१	६१
६२	६२	६२
६३	६३	६३
६४	६४	६४
६५	६५	६५
६६	६६	६६
६७	६७	६७
६८	६८	६८
६९	६९	६९
७०	७०	७०
७१	७१	७१
७२	७२	७२
७३	७३	७३
७४	७४	७४
७५	७५	७५
७६	७६	७६
७७	७७	७७
७८	७८	७८
७९	७९	७९
८०	८०	८०
८१	८१	८१
८२	८२	८२
८३	८३	८३
८४	८४	८४
८५	८५	८५
८६	८६	८६
८७	८७	८७
८८	८८	८८
८९	८९	८९
९०	९०	९०
९१	९१	९१
९२	९२	९२
९३	९३	९३
९४	९४	९४
९५	९५	९५
९६	९६	९६
९७	९७	९७
९८	९८	९८
९९	९९	९९
१००	१००	१००

नव दम्पतियों (पति-पत्नि)के वैवाहिक समायोजन संबंधी
मनोवैज्ञानिक प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	पत्नि	पति
1.	91	55
2.	92	56
3.	93	58
4.	94	59
5.	95	60
6.	96	59
7.	97	55
8.	81	59
9.	82	60
10.	83	61
11.	84	62
12.	85	63
13.	86	64
14.	87	65
15.	88	66
16.	89	67
17.	90	68
18.	81	69
19.	82	70
20.	83	70
21.	71	69
22.	72	68
23.	73	67
24.	74	66
25.	75	65
26.	76	64
27.	77	63
28.	78	62
29.	79	61
30.	80	69
31.	81	70
32.	82	70
33.	83	70
34.	84	69
35.	85	65

क्रमांक	पत्नि	पति
36.	61	62
37.	62	63
38.	63	62
39.	64	63
40.	65	62
41.	66	65
42.	67	65
43.	68	70
44.	69	70
45.	70	69
46.	61	69
47.	62	70
48.	63	70
49.	64	70
50.	65	72
51.	66	71
52.	67	73
53.	68	74
54.	69	75
55.	70	76
56.	61	77
57.	62	35
58.	63	40
59.	64	37
60.	65	35
61.	66	40
62.	67	39
63.	68	35
64.	69	36
65.	70	33
66.	51	32
67.	52	35
68.	53	40
69.	54	40
70.	55	40
71.	56	39
72.	57	38
73.	58	37

क्रमांक	पत्नि	पति
74.	59	32
75.	60	33
76.	51	32
77.	52	35
78.	53	36
79.	54	35
80.	55	40
81.	31	40
82.	32	51
83.	33	52
84.	34	53
85.	61	31
86.	62	32
87.	63	33
88.	64	34
89.	65	35
90.	66	36
91.	67	37
92.	68	38
93.	69	39
94.	70	40
95.	56	55
96.	57	56
97.	58	57
98.	59	55
99.	60	58
100.	51	60
101.	52	55
102.	53	58
103.	54	55
104.	55	60
105.	56	59
106.	57	60
107.	58	55
108.	59	52
109.	60	55
110.	35	54
111.	30	55



क्रमांक	पत्ति	पत्ति.
112.	29	
113.	41	51
114.	42	71
115.	43	80
116.	44	75
117.	45	75
118.	46	76
119.	47	77
120.	48	75
121.	49	75
122.	50	81
123.	50	82
124.	49	83
125.	48	84
126.	47	85
127.	46	86
128.	31	87
129.	32	88
130.	33	89
131.	34	90
132.	35	91
133.	36	92
134.	37	93
135.	38	94
136.	39	95
137.	40	91
138.	28	92
139.	27	93
140.	26	94
141.	41	95
142.	42	25
143.	43	30
144.	44	25
145.	45	30
146.	46	25
147.	47	18
148.	48	19
149.	49	19
150.	50	20

सं.	पद	अर्थ
१	अ	अ
२	इ	इ
३	उ	उ
४	ए	ए
५	ओ	ओ
६	अ	अ
७	इ	इ
८	उ	उ
९	ए	ए
१०	ओ	ओ
११	अ	अ
१२	इ	इ
१३	उ	उ
१४	ए	ए
१५	ओ	ओ
१६	अ	अ
१७	इ	इ
१८	उ	उ
१९	ए	ए
२०	ओ	ओ
२१	अ	अ
२२	इ	इ
२३	उ	उ
२४	ए	ए
२५	ओ	ओ
२६	अ	अ
२७	इ	इ
२८	उ	उ
२९	ए	ए
३०	ओ	ओ
३१	अ	अ
३२	इ	इ
३३	उ	उ
३४	ए	ए
३५	ओ	ओ
३६	अ	अ
३७	इ	इ
३८	उ	उ
३९	ए	ए
४०	ओ	ओ
४१	अ	अ
४२	इ	इ
४३	उ	उ
४४	ए	ए
४५	ओ	ओ
४६	अ	अ
४७	इ	इ
४८	उ	उ
४९	ए	ए
५०	ओ	ओ
५१	अ	अ
५२	इ	इ
५३	उ	उ
५४	ए	ए
५५	ओ	ओ
५६	अ	अ
५७	इ	इ
५८	उ	उ
५९	ए	ए
६०	ओ	ओ
६१	अ	अ
६२	इ	इ
६३	उ	उ
६४	ए	ए
६५	ओ	ओ
६६	अ	अ
६७	इ	इ
६८	उ	उ
६९	ए	ए
७०	ओ	ओ
७१	अ	अ
७२	इ	इ
७३	उ	उ
७४	ए	ए
७५	ओ	ओ
७६	अ	अ
७७	इ	इ
७८	उ	उ
७९	ए	ए
८०	ओ	ओ
८१	अ	अ
८२	इ	इ
८३	उ	उ
८४	ए	ए
८५	ओ	ओ
८६	अ	अ
८७	इ	इ
८८	उ	उ
८९	ए	ए
९०	ओ	ओ
९१	अ	अ
९२	इ	इ
९३	उ	उ
९४	ए	ए
९५	ओ	ओ
९६	अ	अ
९७	इ	इ
९८	उ	उ
९९	ए	ए
१००	ओ	ओ

ज्योतिष शास्त्रीय पद्धति पर आधारित वैवाहिक समायोजन मापनी

1. लग्न - शुभ प्रभाव, शुभ दृष्ट,
लग्नेश - उच्चंगत केन्द्र, या त्रिकोण आदि
शुभ ग्रहों से युत (अंक - 10)
2. सप्तम भाव एवं सप्तमेश (अंक - 10)
3. चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश (अंक - 10)
4. पंचम भाव एवं पंचमेश (अंक - 10)
5. नवम भाव एवं नवमेश (अंक - 10)
6. दशम भाव एवं दशमेश (अंक - 10)
7. सप्तम भाव के कारक स्त्री के लिये गुरु एवं पुरुष के लिये शुक्र
की शुभता (अंक - 10)
8. मंगल दोष न होने पर (दोनों में होने पर - 10 अंक)
(दोनों में न होने पर - 10 अंक)
9. गुण मैत्री - 0-18 (0 अंक) 18 -22, (5 अंक) 22 से अधिक
(10 अंक)
10. राशि स्वामी (मैत्री) मित्र क्षेत्री, (अंक - 10)
सम - (अंक - 5)
शत्रु - (अंक - 0)
(नैसर्गिक मैत्री के अनुसार)

नक्षत्र	अ	भ	क१	क३	रो	मृ२	मृ२	आ	पु३	पु१	पुष्य	आश	म	पूफा	उ	उ	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वा	वि३	वि१	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पू	उ	उ	श्र	ध२	ध२	श	पू	पू	उ	रेव	
अ	२८	३३	२८	१८	२१	२२	२६	१७	१८	२२	३१	२७	२१	२६	१६	११	९	१३	२२	२६	२२	१९	२६	१४	१३	२६	२४	२६	२६	२०	२०	१५	१६	१४	२४	२६	
भ	३४	२८	२९	१९	२२	१४	१८	२६	२६	३०	२३	२४	२०	१८	२६	२१	२०	५	१४	२९	२२	१९	१७	१९	२०	१९	२७	२८	२७	१०	१०	२०	२४	२२	१७	२६	
क१	२७	२९	२८	१८	१०	१८	२२	२०	२३	२६	२७	२३	१६	१९	२०	१५	१६	१८	२७	१६	१९	१६	२१	२६	२४	१८	१४	१५	१२	२५	२५	२७	१९	१७	१९	१२	
क३	१८	२०	१९	२८	२१	२६	१७	१७	१८	२२	२४	२०	१८	२१	२२	२१	२१	२३	२२	११	१४	२१	२६	३१	२०	१३	९	१३	११	२३	२९	३१	२३	२०	२२	१३	
रो	२३	२३	९	१८	२८	३६	२७	२३	२३	२७	२७	१३	१२	२६	२७	२५	२६	२०	१९	१५	९	१६	३०	२४	१४	२०	११	१६	१८	२०	२६	२४	३०	२७	२६	१९	
मृ२	२३	१४	१८	२७	३५	२८	१९	२४	२३	२७	२०	२२	२०	१६	२५	२३	२६	१३	११	२५	१७	२३	२२	२५	१५	११	१७	२१	२६	१२	१९	२७	२९	२६	१७	२७	
मृ२	२७	१८	२२	१८	२७	२०	२८	३३	३१	१९	१२	१५	२३	१९	२७	३०	३४	२१	१४	२७	२०	१४	१२	१४	२३	१९	२५	२१	२६	१३	१४	२२	२४	२६	१७	२७	
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८	२४	२६	३४	२८	२५	१३	२०	१३	२१	२८	२१	२४	२४	२७	२०	२७	२०	१३	१७	३	१६	२८	२८	२३	२३	१८	१९	१२	१७	१९	२७	२७	
पुन३	१९	२६	२३	२०	२२	२४	३२	२४	२८	१६	२३	१७	२२	२६	२०	२३	२४	२६	१९	२७	२१	१४	२०	६	१४	२७	२७	२२	२३	१८	१९	११	१७	१९	२७	२७	
पुन१	२१	२८	२३	२२	२५	२६	१९	१०	१४	२८	३५	२८	१६	२०	१४	१७	१८	२०	१९	२७	२१	२०	२६	११	८	२१	२१	२६	२७	२२	१२	७	११	१७	३५	२४	
पुष्य	३०	२१	२६	२३	२५	१८	११	१८	२१	३५	२८	३०	१८	१४	२३	२६	२७	१२	११	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	२२	२७	२५	१३	४	१४	१८	२४	१८	२७	
आश्वि	२६	२३	२२	१९	१२	२१	१४	१२	१६	२८	३०	२८	१५	१५	१७	१९	२०	२४	२४	१२	१६	१४	२०	२५	२२	१५	७	११	१२	२७	१८	१८	१२	१८	२०	१३	
मघा	२१	२०	१७	१७	११	१८	२२	२१	२१	१६	१८	१७	२८	३०	२६	१५	१६	२१	२४	११	१६	२२	२५	३२	२४	१९	९	५	६	१८	२३	२४	१७	१८	१९	१२	
पूफा	२५	१९	२०	२१	२३	१५	१९	२७	२६	२३	१८	१७	३०	२८	३४	२३	२१	७	१०	२४	१८	२४	२२	२४	१८	१७	२५	२१	१९	४	९	१८	२३	२३	१७	२५	
उफा१	१६	२५	२०	२१	२५	२३	२७	२०	२०	१७	२६	१९	२६	३४	२८	१७	१६	१३	१६	२५	१६	२२	३१	१७	९	२५	२६	२२	२१	१२	१७	११	१५	१६	२७	२५	
उफा३	१३	२१	१६	२१	२५	२३	३०	२३	२३	१९	२८	२१	१७	२५	१९	२८	२७	२४	१६	२५	१६	१८	२८	१३	१४	२९	३०	२६	२५	१६	१६	१०	१४	१८	२९	२७	
हस्त	११	२०	१७	२२	२५	२६	३३	२२	२३	१९	२८	२२	१७	२१	१६	२६	२८	२८	२०	२६	१८	२०	२६	१२	१५	२७	२८	२८	२४	२५	२१	२१	६	१५	१९	२७	२८
चि२	१४	६	१९	२३	२०	१३	२०	२६	२५	२१	१३	२६	२२	८	१४	२४	२८	२८	२०	२०	२६	२८	१२	२५	२७	१३	२१	१७	१९	१७	१७	२४	१७	२१	११	२२	
चि२	२३	१५	२८	२३	२०	१३	१४	२०	१९	२१	१३	२५	२५	११	१७	१७	२१	२१	२८	२८	३४	२३	७	२१	२७	१३	२२	२५	२७	२५	१९	२६	१९	१४	४	१५	
स्वाती	२८	२९	१७	१२	१५	२६	२७	२६	२७	२८	२८	१४	१२	२४	२५	२५	२७	२१	२८	२८	२०	१०	२१	१६	२३	२७	१९	२२	२३	२९	२३	२१	२७	२१	२०	१३	
वि३	२३	२३	२०	१५	१०	१९	२०	२०	२१	२२	२२	१८	१७	१९	१७	१७	१९	२७	३४	२०	२८	१८	१७	२०	२७	२१	१४	१७	१७	३१	२५	२६	२१	१५	१३	६	
वि१	१७	१७	१४	१९	१४	२३	१३	१२	१३	१९	१९	१४	२१	२३	२१	१८	१९	२७	२२	८	१७	२८	२८	३१	२१	१५	८	१२	१२	२६	२५	२५	२०	२०	१८	११	
अनु	२४	१४	१९	२४	२७	२०	११	१६	१९	२५	१८	२०	२४	२०	२९	२५	२५	११	६	२१	१७	२८	२८	३१	१५	१३	२१	२५	२६	१३	१३	२१	२६	२५	१८	२६	
ज्येष्ठा	१२	१७	२४	२९	२२	२३	१३	३	५	१०	२०	२५	३१	२३	१६	१३	१२	२५	१९	१५	१९	३१	३१	२८	१४	१७	१६	२०	२१	२६	२५	१८	११	१०	२१	२१	
मू	१२	२०	२४	१९	१३	१४	२२	१५	१३	९	१८	२४	२४	१८	९	१३	१४	२६	२६	२२	२६	२२	१६	१५	२८	२८	२६	१५	१६	२०	२८	२१	१४	१६	२५	२८	
पूषा	२६	१९	१८	१२	१९	११	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८	२६	१२	१२	२७	२०	१६	१६	१८	२८	२८	३४	२३	२४	८	१६	२३	३०	३२	२३	३२	
उषा१	२५	२७	१४	८	११	१८	२५	२७	२७	२३	२४	९	९	२५	२६	२९	२८	२१	२१	१९	१३	१०	२४	१८	२६	३४	२८	१७	१५	१५	२३	२३	२९	३१	३२	२३	
उषा३	२८	२९	१५	१३	१६	२२	२०	२२	२२	२८	२९	१४	५	२१	२२	२५	२४	१७	२४	२२	१६	१४	२८	२२	१६	२५	१९	१८	२६	२६	१७	१७	२३	३०	३१	२२	
श्र	२७	२७	१३	११	१७	२६	२३	२१	२२	२८	२६	१५	६	१८	२०	२३	२४	१८	२५	२२	१६	१४	२८	२३	१७	२३	१४	२५	२८	३०	२०	१८	२३	३०	२९	२२	
ध२	२१	११	२६	२३	२०	१३	१०	१६	१७	२३	१३	२८	१८	४	१२	१६	२०	१६	२३	२७	३०	२८	१५	२८	२१	९	१६	२६	३०	२८	१८	२३	१९	२६	१५	२३	
ध२	२१	११	२६	३०	२७	२०	१३	१९	१९	१५	५	२०	२४	१०	१८	१७	२२	१८	१९	२३	२५	२६	१३	२६	२९	१७	२४	२४	१८	१९	२५	३३	२८	१९	९	१७	१७
श	१६	२१	२८	३२	२५	२७	२१	१२	१३	८	१६	२०	२५	१९	१२	११	१०	२५	२६	२१	२६	२६	२२	१९	२२	२४	२४	१८	१९	२५	३३	२८	१९	९	१७	१७	
पूषा३	१८	२५	२०	२४	३१	३१	२४	१७	१८	१३	२१	१४	१८	२४	१६	१५	१७	१८	१९	२८	२१	२१	२७	११	१५	३१	३०	२९	३०	२५	१७	७	१६	२८	३३	३०	
पूषा१	१४	२१	१६	१९	२६	२६	२५	१८	१९	१८	२६	१८	१६	२२	१४	१६	१८	१९	१२	२१	१४	२१	२७	११	१५	३१	३०	२९	३०	२५	१७	७	१६	२८	३३	३४	
उषा	२४	१५	१८	२१	२५	१७	१६	२५	२७	२६	१९	२०	२४	२४	१९	२०	२४	२४	१९	१५	१६	१४	२०	२४	२२	३०	२१	२०	२२	२२	१४	१६	१८	२९	३४	२८	
रेवती	२५	२४	१९	१४	१७	२६	२५	२४	२५																												

ॐ वरवध्वोर्नक्षत्रस्य विवाह मेलापक विचारोपयोगीशतपद चक्रम् ॐ

अक्ष.	पू.चे.	ली.लू.	अ.इ.	ओ.वा.	वे.वो.	कु.घ.	के.को.	हू.हे.	डी.डू.	मा.मी.	मो.टा.	टे.टो.	पू.ष.	पे.पो.	रू.रे.	ती.तू.	ना.नी.	नो.य.	ये.यो.	भू.धा.	मे.भो.	खी.खू.	गा.गी.	गो.सा.	से.सो.	दू.य.	दे.दो.
नक्षत्रा	अ.	म.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.पा.	उ.पा.	श्रवण	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.
राशयः	मेष	मे.	मे.१	वृ.	वृ.२	मिथुन	मि.३	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह१	क.	क.२	तुला	तु.३	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध.१	म.	म.२	कुम्भ	कु.३	मी.	मी.
वर्णाः	क्ष.	क्ष.	क्ष.१	वै.	वै.२	शू.	शू.३	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१	वै.	वै.२	शू.	शू.३	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१	वै.	वै.२	शू.	शू.३	ब्रा.	ब्रा.
वश्याः	च.	च.	च.	च.	च.२	मानव	मा.३	ज.	ज.	व.	व.	व.१	मानव	मानव	मानव	मा.३	की.	की.	मानव	म.१	च.	च.१॥	ज.२	मा.	मा.३	ज.	ज.
योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जा	मेष	मार्जा.	मूषक	मूषक	गौ.	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ.	गज
रा.स्वा	मं.	मं.	मं.१	शु.	शु.२	बु.	बु.३	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.१	बु.	बु.२	शु.	शु.३	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.१	श.३	श.	श.	श.३	गु.	गु.
गणाः	दे.	मनु.	राक्षस	म.	दे.	मनु.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	दे.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.
नाडयः	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

नैसर्गिक ग्रहमैत्री चक्रम्

प्र.	वि.	वि.	वि.
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥
१॥	१॥	१॥	१॥

योनौ बोधक चक्रम् ।। गुण ४ वर

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जा	मूषक	गौ.	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जा	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ.	३	३	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	२	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	२	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

विवाहेवर्णगुणज्ञानाय चक्रम्

वर्ण के गुण १। वर

वर्णाः	ब्रा	क्ष.	वै.	शू
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्री	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण २। वर

वश्याः	च.	मा.	ज.	ब.	की
चतुः	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जल.	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

तारा के गुण ३। वर

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१	३	१	३	१	३	३
२	३	३	१	३	१	३	१	३	३
३	१	१	०	१	०	१	०	१	१
४	३	३	१	३	१	३	१	३	३
५	१	१	०	१	०	१	०	१	१
६	३	३	१	३	१	३	१	३	३
७	१	१	०	१	०	१	०	१	१
८	३	३	१	३	१	३	१	३	३
९	३	३	१	३	१	३	१	३	३

ग्रह मैत्री के गुण ५। वर

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

भकूट के गुण ७। वर

रा.	नेष	वृष	मि.	क.	सि.	क.	तु.	बु.	धनु	म.	कु.	मी.
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

नाडी के गुण ८। वर गणमैत्री के गुण ६ वर

नाडी	आ	म.	अं.	गणा	दे.	म.	रा.
अग्नि	०	८	८	देवता	१	५	१
वायु	८	०	८	मनुष्य	१	१	०
अन्य	८	८	०	रजसु	०	०	१

ग्रहमेलापकम्- लग्नेव्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता पत्नी विनाशकृत् । इदं लग्नचंद्राभ्यां विचार्यम् । वा सप्तमेशो ६-८-१२ गतोऽनिष्टः । द्वितीयस्यभौम विचारश्चद्वयोरपि । अयेतेषां परिहारः- जामित्रेच-यदासीरिल्लेग्रेवाहिवुकेऽथवा अष्टमेद्वादशेवापे-भौमदोषविनाशकृत् । शनिभौमोऽथवा कश्चित्पापो वातादृशो भवेत् । ध्वेव भवनेध्वेव भौम-दोष विनाशकृत् ।

।। अथ मेलापके विशेषस्तदाह ।।

अज्ञातजन्मानुणां नामिभं परिकल्पयेत् । तेनैवचिन्तयेत् सर्वराशिकूटाद जन्मवत् । । १ । । जन्मभंजमधिष्येन नामधिष्येननामभम् । व्यत्ययेनयदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेदिति । । २ । । रक्षः स्त्री नृपुमाप्यदावशमुखैः षड्भिर्युतंशोभनं स्त्रीमात्रानिकटेनूरुमशुभं खटोडुमैत्र्योः शुभम् । दूयर्कताग्र सुवर्णमहरिपुकेगी युग्ममयार्कके रौप्यं कांस्यमयैक नाडियुजिगी स्वर्णादि-दत्त्वोद्भवेत् ।

गुणैः षोडशभिर्निधनं मध्यमंविंशतिस्तथा । श्रेष्ठं त्रिंशदगुणंयावत्परतस्तत्तमोत्तमम् । सप्तमकूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽथकथ्यते । निधं गुणैर्विंशतिभिर्मध्यंवाणाधिकैर्मतम् । । तत्परीः पंचभिः श्रेष्ठं तत्तः श्रेष्ठतरंगुणैः । वरस्य शुक्र विचारश्च आवश्यक इति । ।

Confidential

MARITAL ADJUSTMENT INVENTORY

[Literate]
(ENGLISH VERSION)
Form A and B

Constructed and Standardised by
HAR MOHAN SINGH
M.A., PH.D
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
R.B.S. COLLEGE, AGRA

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, Kacheri Ghar, AGRA - 282004

Copyright (c) 1972 by National Psychological Corporation, Kacheri Ghat, Agra-4.
All rights reserved. The reproduction of any part is a violation of the copyright Act.

MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY

MAHARISHI
ADJUSTMENT INVENTORY
Form A-1001

MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY
Form A-1001
MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY
Form A-1001

MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY

MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY
Form A-1001

MAHARISHI ADJUSTMENT INVENTORY
Form A-1001

Name

Age Sex

Education

Occupation Income

Rural/Urban

Scoring Table :-

Question No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	Total
Score											

INSTRUCATIONS FOR FILLING THE INVENTORY FORM A & B

Below are given ten questions which should be replied in yes or no. After giving your consent for yes or on, mark yes (✓) on the right place best (fitting) explaining your opinion towards the issue. the rating scale ranges from + 10 (most favourable) to + 1 (least favourable); Avoid doubtful situations.

AN EXAMPLE ; Do you quarrel with your wife/husband ?

Yes

No.

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

Since I sometimes quarel with my wife hence I have replied in yes and have marked (✓) on 4th place on the scale.

Meaning of the Terms :

Number		Meaning of Number
10	stands for	most favourable
9	"	significantly favourable
8	"	more than slightly favourable
7	"	slightly favourable
6	"	just favourable
5	"	favourable
4	"	definitely favourable
3	"	comparatively favourable
2	"	more than least favourable
and 1	"	least favourable

निर्देश Instruction

इस प्रश्नावली में वैवाहिक समायोजन संबंधी 10 प्रश्न दिये गये हैं प्रत्येक प्रश्न के लिये सकारात्मक (+), नकारात्मक (-) विकल्प है । यदि आपका उत्तर सकारात्मक है और जितना सकारात्मक है तो आप (+) चिन्ह के समक्ष दिये अंक में से उस अंक पर (✓) सही का चिन्ह लगाएं और यदि आपका उत्तर नकारात्मक (-) है तो आप (-) चिन्ह के सामने दिये अंक पर सही (✓) का चिन्ह लगाएं । इस प्रश्नावली संबंधी सभी जानकारीयां गुप्त रखी जाएंगी केवल शोधकार्य हेतु इसका उपयोग किया जाएगा । अतः निश्चितता से उत्तर दें ।

फार्म - A (पतियों के लिये)

1. क्या आप अपनी पत्नी को मुख्य अवसरों जैसे जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ आदि पर ऐसे उपहार देते हैं जो उन्होंने सोचा भी न हो ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
2. क्या आप दूसरे के सामने ही उनकी आलोचना करना पसंद करते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
3. क्या आप अपनी पत्नी को घरेलू मामलों में खर्च करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
4. क्या आप अपनी पत्नी की प्रसन्नता, थकान, चिंता और तनाव के प्रति लापरवाह रहते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
5. क्या आप पत्नी के संरचात्मक कार्यों में हिस्सा लेते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
6. क्या आप अपनी पत्नी की तैयारियों / क्षमताओं की अन्य महिलाओं से तुलना करते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
7. क्या आप उनके शैक्षणिक जीवन में उनके मित्र उनकी पुस्तकों उनके विचारों और उनकी समस्याओं का स्वागत करते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
8. क्या आप उनके साथ बाहर जाने या साथ रहने के अवसरों को टालते रहते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
9. क्या आप उस अवसर की प्रतीक्षा करते हैं जबकि आप उनकी प्रशंसा कर सकें ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
10. क्या आप अपनी पत्नी की खरीददारी, लेख, पसंद और वस्त्र चयन में मदद करते हैं ?
हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

नाम -
जन्म तिथि
जन्म समय

जन्म स्थान
विवाह की अवधि
नौकरी / व्यवसाय

फार्म - B (पत्नियों के लिये)

1. क्या आप अपने पति को उनके व्यवसायिक मामलों में उनके मित्र समूह या उनकी पसंद आदि की पूर्ण स्वतंत्रता देती हैं -
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
2. क्या आप अपने घर को रोचक और आकर्षक बनाने का उत्तम प्रयास करती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
3. क्या आप इतनी आदर्श ग्रहणी है कि पति के सोचने से पूर्व ही टेबल पर सामान रख देती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
4. क्या आप इतनी समझदार व ग्रहणशील है कि आप उनके साथ व्यापार संबंधी चर्चा भी कर सकती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
5. क्या आप आर्थिक संकट आने पर अपने पति से विवाद को नजर अंदाज करती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
6. क्या आप अपने पति के रिश्तेदारों / माता पिता को अपने घर में नापसंद करती है ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
7. क्या आप अपने पति की रुचियों पसंद-नापसंद की परवाह नहीं करती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
8. क्या आप सामान्य रुचिकर विषयों पर उनके द्वारा दी गई राय को नहीं मानती हैं ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
9. क्या आप अपने पति की रुचियों का ख्याल नहीं रखती इसलिए हो सकता है कि आप उनकी खुशियों में शामिल नहीं हो पाती ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
10. क्या आप इतनी रुढ़िवादी है कि, उनकी बौद्धिक (शैक्षणिक) रुचियों में मददगार नहीं हो सकती ?
 हां (+) 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 नहीं (-) 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

नाम -
जन्म तिथि
जन्म समय

जन्म स्थान
विवाह की अवधि
नौकरी / व्यवसाय



